तसईलिखे
नागरमें
तेहोड
गजूकी
ड़राधा
महरि
रती
जेही
हेसर
जान
होत
सुराधाह
दोहा
तेतोचो
यह
सों
कवि
बनू
तुसो
पदानि
सहि

श्रीगणेशायनमः॥अथ बिहारीसतसईलिष्य
ते॥दोहा॥मेरी भव बाधा हरौ राधा नागरि सो
॥जा तन की झांई परै स्याम हरित दुति होइ॥१॥
टीका॥यह मंगलाचरन है तहां श्रीराधाजू की
असतुति अर्थ करत ता कवि करतु है॥तहां राधा
ओर रहत हैं॥याते जा तन की झांई परैं स्याम हरि
त दुति होइ॥या पद तें वृषभान सुता की परती
ति भई॥१॥कवित्त॥जाकी प्रभा अवलोकत हैं
तिहूं लोक की सुंदरता गहि वारी॥कृष्ण कहै सर
सी रुह नैंन को नाम महामुद मंगलकारी॥जात
न की झलकैं झलकैं हरित दुति स्याम की होत
निहारी॥श्री वृषभान कुमारि कृपा कै सु राधा ह
रौ भव बाधा हमारी॥२॥अथ स्वकिया॥दोहा॥
रालि द्यौस हौस रहै मानु न ठिक ठहराय॥जेतौ औ
गुन ढूंढिये गुनै हाथ परि जाय॥२॥टीका॥यह
स्वकिया नायका है नायका को वचन सषी सों
नायक को औगुन हू गुन भासतु है॥२॥कवि
जौ हूं कु कौ तो धरै ईलटकै कै करै मनुहारि अनू
ठी अनूठी॥औगुन दैं हूं हाथन आवतु सौ
गुन कौ रहै सिंधु सी एठी॥सील नतु भाउ सदा नि
रहै मिस कौ लैं अभी पर रामनैं बूठी॥हौ स हि

१० स०
यैं निस द्यौस रहै मनमोहन सौं कवहूं न हीय
री ॥२॥ अथ वैस संधि वर्नन ॥ तिय की छिन छिनि
[illegible]सो रवय पुन्य का[illegible]मदौंन ॥ व[illegible]पुन्य
न पाइय नु वैस संधि संकौंन ॥३॥ टीका ॥ यह
नाइका की लरिकाई अरु तरुनाई वैस की सं
धि है सो सषी नाइक सौं कहतु है ॥३॥ कवित्त ॥
उत सैसव जरा सित जे जव लौं न हि हू सैसी ता सि
वावतु है ॥ तव लौं वह अंतर कै समयो अ नि
उत्तम वैस वनावतु है ॥ इत हूं अव वैस कि सो
र दिनेस उ हूं वय अंतर आवतु है ॥ सु कतो
कौ कछू रव तु नतें विवसं कम कौ छिनु पा
वतु है ॥३॥ दोहा ॥ छुटी न सिसुता की झलक
झलकौ जोवन अंग दीपति देह दुहूंन मिलि
दिपत ताफता रंग ॥४॥ टीका ॥ यह दोऊ वैस कै
संग मु है सो सषी सषी सौं कहतु है अथवा ना
यक सौं सषी न वेदन करत है ॥४॥ कवित्त ॥ वा
हि वहै वतियानु की है कछु कहरैं मुस को
टरी है ॥ सुधी चितौंनि विलोकन है परि लो
लता रंच कजांनी परी है ॥ छूटी नहीं सिसुता
की प्रभा नव जोवन की दुति जांनी परी है ॥ सं
ग दुहूंन वै ताफता रंग सु दीपतन की दुति रंग भ

है ॥ ४ ॥ मुग्धा दोहा ॥ लालन अलोलिक कल रुक
ई लषि लषि सषी सिहांनि ॥ आजु कालिह मैं है
पियत उरउ कसौं ही भांनि ॥ ५ ॥ टीका ॥ यह
दोहा नायका कैं जोवन अंकुरि न है सो सषी
नाइका सौं निवेदन करतु है नायका अंकुरि
त जोवना कहियै ॥ ५ ॥ कवित्त ॥ कैसी सुहाई अ
लालरिकाई जोवन जोतिन सौं ही भई है ॥
धाल विनोदन तैं उचरी तचिकां म कलामर
सौं ही भई है ॥ वा हि विलोकि सिहांति सषी वनिय
नि की वांनि हसौं ही भई है ॥ आजि ही कालि मैं
बाल बधू की कछू छतिया उकसौं ही भई है ॥ ५
दोहा ॥ हरि हिंडोरे गगन तैं परी परी सी टूटि
धरी धाइ पिय बीच ही करी परी रस लूटि ॥ ६
टीका ॥ यह नाइका मुग्धा है हिंडोरै तैं डोइ कां
कौं देषि कैं भाजिवे कौं भई सो टूटि परी सषी कौं
वचन सषी सों ॥ ६ ॥ कवित्त ॥ बाल छबीली स
षीन कैं संग वनी ठनी झूलत रंग हिंडोरे ॥ बाले
की चूंनरी चारु कसूंभी सुगंध सनी दमकै तन
गोरै ॥ नंदलाल लषि ऊंचे तैं टूटि परी ज्यों पा
री अति लाज हिंडोरे ॥ का हू पिया रे नैं बीच ही
धाय करी रस लूटि लई भरि कोरै ॥ ६ ॥ ग्यातनौ
वना ॥ दोहा ॥ भाम कउ मरोहीं भयो कछु कप

स्यौं भरूप्याइ॥ सीप हराकें मिसु हियौ निसंदि
न हेरत जाइ॥७॥ टीका॥ यह नाइका मुग्धा
ग्यातजोवना सषी नाइकसों कहतु है सषी
कौ वचन सषीसों॥७॥ कवित्त॥ प्यौ रैनंदा
लाल वह वाल अलबेली नवेली नवजो
बन की जोति दिन द्वैक ते भरत है॥ दंपति च
रित्र दुरि चितवनि लागी काम कौ कहांनी क
छु कांन निधरति है॥ रंच कउ रोजन की कोर
उकसों ही भई नैसकु लजों हीसी चितौनि हेर
रति है॥ सष की वचा दडीठि निज छाती वार
वार गुंज हार मिसि करि हेरि वौ करतु है॥७॥
अथ नउढा दोहा॥ अपनें अंग के जांनि कैं।
जोवन नृपति प्रवीन॥ तन मन नैंन नितंब कौ
बडौ इजाफा कीन॥८॥ टीका॥ यह नाइका न
वजोवन बिना मुग्धा सषी कौ वचन सषी
सौं॥८॥ कवित्त॥ जोवन रूप सहाय सवी॥
न बिचछिन ताइ हरी तिठई है॥ राजल स्यौन
वला तन कौं करि संतु की सपति लूटि लई है
॥ हरि कियौ सिसुता कौ सहायक चातुरता चि
त चाहूं भई है॥ नैंन उरोज नितंबन कौं अपनें
गनि कैं वृदवारि भई है॥८॥ दोहा॥ अरुनें टरत
नव रपरे दई मुर क मन मैं न॥ होडा होडी वढि ॥२॥

चलेचितुचतुराईनैंन॥९॥टीका॥यहनाइ
काकैंजोवनआयोहैसुचतुराईअरुनेत्र
बढ़नलागेसषीसषीसोंकहतुहै॥९॥कवि
नैननिकीबढ़वारिलषैंचितुचातुरीकीउम
गीअधिकाई॥चातुरीकीअधिकाईलषैंत
वनैननिओरगहीसरसाई॥छमकहैंवरुवा
थोउहैंनइतेपरचौसमनोजकीपाई॥होडा
यहोडांचलेबढ़िमानौंविपलोचनऐंचि
ऐचांनकपाई॥९॥दोहा॥निरषिनवोढा
नारितनछुटतलरिकईलेस॥भोप्यारो।
प्रीतमुतियनुमानौंचलतविदेस॥१०॥टी
यहनायकानवोढाहैयाकोजोवनआवत
देषिलोतिनिरासमईहै.सोसषीसषीसोंकह
तिहै॥१०॥कवित्त॥कुंदनसीदिपैदेहकी
दीपतिमैंनमनौंनिजमोहनीघालतु॥छू
टतसीलरिकाईकछूतरुनापनैंरंगउरो
जउछालतु॥बालबधूतनजोवनआवतु
सोतिनकैंउरसूलसैंसालतु॥प्रांननुतैंअ
तिप्यारोलग्योपतिमानौंकहूंपरदेसकों
चालतु॥११॥दोहा॥गाढेगाढेकुचनुविनु
कोपियहियठहराइ॥उकसौंहैंईंवोहियैंदई
गवैउकसाइ॥१२॥टीका॥यहनाइकानवोढा

हैनाइककीयाहीसैंवक्रुनआसक्तिहैसोस
षीनाइकासौंकहतिहै॥१॥कबित्त॥पीन
पयोधरमूंदरसैंनियतौउरऊपरकैजवबै
॥कोवसिहैपियकैंहियभामनिसुंदररूप
अनूपतवै॥नैंकबिलोवनलोलभयेनव
जौवनजोतिजगीनअवै॥तैंउकसैंउरजा
ननहीपियकेहियतेंउकसायसवै॥१॥दो
हा॥दततनौउरउरजभरुभरुनरुनईबिकास॥
बोम्नुसौतिनुकेहियैंआवतस्वीउसोस
१२॥टीका॥यहनाइकानवजोवनभूषिता
हैयाकौदेषिकैंसौतिनुकैंदुषहोतहैसोस
षीनायकेसौंकहतुहै॥१४॥कबित्त॥नोसी
नुहीधनीरतिराइभयौअतितोवसप्यारे
विहारी॥वैसविलासजग्योनवतैंयहतोन
नवातअनूपनिहारी॥वाढतहैनवनाग
रितोउरजाननकोउरमैंभरभारी॥तामरसौ
तिनुसासउसासनपीरहीहोतदुषारी॥१४॥
॥दोहा॥मानरूंमुक्रुदिषरावनीदुलहीकोअ
नुराग॥सासससदनमनननदनअंसौतिनु
हियोसुहाग॥१३॥टीका॥यहनाइकानवो
ढायाकेजोवनदेषिनायक्याकैंवसभयो
अरुसौतिनहूंकोसुहागइनलीनोसोसषी॥३॥

सषीसौंकहतिहै ॥३॥ कवित्त ॥ गौनैं आई इल
हनिलौंनैं तन वारी मनौं जगर मगर होत भ
वन कौ भागु है ॥ विधि नैं सुधारि धरी चातुरी की
चोप जाकैं रूप आगैं रती रति कौ न लागु है ॥
मेरैं जांनि मुंह हरि षरां वनी कौ नेगु जांनि पिय स्यौ
कौनौं अनुरागु है ॥ मास लैं भवन दीनौं प्यारैं ना
ऊनन दीनौं अरू पीति पनु दीनौं दीनौं सौति
सुहागु है ॥३॥ दोहा ॥ देह दुलहिया की च
ढै ज्यौं ज्यौं जोवन जोति ॥ त्यौं त्यौं लषि सौतैं स
वै बदन मलिन दुति होति ॥४॥ टीका ॥ यह ना
यका नवोढा नवजोवन भूषिता है याकौ जो
वन आवत देषि सौतिनु के मुंह फीके परतु हैं
सो सषी सषी सौं कहति है ॥४॥ कवित्त ॥ माधुर
गौंन गहैं पद पंकज मत्त गयंदुन हूटन लागे
॥ मैंन के टौनैं सवैं नभये तिनके सम ऊषम
हू षन लागे ॥ त्यौं त्यौं निरषि मई मलनी दुति सौ
तिनके मुष सूषन लागे ॥ जोवन जोति जगी ति
य के तन सौतिन के तन सूछिम लागे ॥४॥ दो
ज्यौं ज्यौं जोवन जेठ दिन कुच मिति अति अधि
काइ ॥ त्यौं त्यौं छिन छिन कटि छपै पाछीन पर त
नितंनाइ ॥५॥ टीका ॥ यह नायका आरूढ
जोवना है याकौ जोवन बढ्यौ देषि सषी सषी सौं

र०स० कहतिहै॥१५॥कवित्त॥वातनरूपकीरासिल
॥४॥ सैतिहूंलोकमैंऔरइतीकलनहीकिन॥वांनि
कवैसलुनाईविलोकिकेतोरतनवारंहिवार
हितृतिन॥त्यौंवनजेठहीआवतज्यौंजौंउ
राजनकोपरवांनवढैदिन॥त्यौंहीत्यौंहोंन
लगीकविकलमछिपाकटिछीनबरीदिन
हीदिन॥१५॥दोहा॥नवनागरितनमुलक
लेंहिजोवनआंमिलजोर॥घटितेंवढिव
ढिघटिकरीरकमऔरकीऔर॥१६॥टीका
यहनांइकाकेतनमैंजोवनआयोसुअंग
वढिगयेहैंतेघटिगयेघटिहेतेवढिगये
यहआंमिलकोप्रसंगकरिसषीसषीसोंक
हतुहैसषाकेवचननायकसोंसंभवै॥१६॥
कवित्त॥सुवरनवेलीसोनवेलीकोललिततन
तुराजनसुदेसअतिसोभासरसायोहै॥पायो
हैऊकमछितिपालमीनकेतनकोजोवने
प्रवे[illegible]लेतहांनायककेआयोहै॥औरही
तेऔररीतिरसिकवनायकीनीअमलज
गायोसवहीकेमनभायोहै॥घटिहेनेवढि
कीवीवढिलैघरायदीनौंकहैकविकलम
ऐसोचलनचलायोहै॥१६॥दोहा॥भेंटतन
वनैतनमांवतोचिततेरसतनअतिप्यार॥१७॥ ॥४॥

रनल गाय लगाय उर रहूघनन्व मन रहज्ञार
।७।। टीका।। यह नाइका मध्या या कैं लाज का
मरोउ सिधाए है सो सषी सषी सौं कहति है।।
७।। कवित्त।। प्यारी कौ नेह लग्यौ पियू प्यारे सौं
ध्यांन मैं ध्यांन रहै दिन राती।। मेटि वे कौं उपचा
र वनैं न गुरु लोगनु के उपहास सकाती।। जांनि
कैं घीनमके तनकौं तिन के मिलिवे कौं हियैं
अकुलाती।। भूषन वास अवास के कौंम मैं
वांसुरी वार लगावत छाती।।७।। दोहा।। छूटै
नैं लाज न लालचौ प्यौ लषि नेह रगेह।। सट
पटो ति लोचन षरे भरे सकोच सनेह।।८।।
टीका।। यह नाइका मध्या या के लाज का मस
मांन है सो सषी सषी सौं कहति है।।८।। कवि
माय कै मैं मन भांवन कौं लषि प्यारी निसंक
कै देषिस कैं ना।। देषि के कौं न रसे हियरा दिष
सां लन लगी चित चैन रहै ना।। छूटै नै ला
ज चहूं टै न लालच लोक कीली क उलथी
परै ना।। नातै सकोच सनेह भरे अकुलात
षरे जलजात से नैंना।।८।। दोहा।। समर सभर स
सकोच वेस विवस भई अकुलाइ।। फिरि पि
रिउरु कति फिरि डिरि डरि उरुकत जाइ।।८।। उरत
।।टीका।। यह नाइका मध्या है लाज का मस

बि॰स॰ मानहै सोसषीसषीसौं कहतिहै ॥१९॥ क॰
॥५॥ प्रांन न मांनवसीपियमूरति नैंन निमांरु
सकोच विवेकौ ॥ झांकिझरोषां दुरैफिरिझां
कै दुरै व झुक्योंठ हरातन एकौ ॥ त्रास ह्रैते गु
रलोगुनकौउत लालचमोहन केलविवेकौ
॥ लाजयौं कांम कै वांम दुवीच परीयौं चल
चलहाल हियेकौ ॥१९॥ दोहा ॥ नई लनु ति
कुलकौ सकुच विकलभई अकुलाइ ॥ दुहूं
वोर ऐंचीफिरै फिरकीलौं दिन जाइ ॥२०॥
॥ टीका ॥ यह नाइ काम ध्या है लाज कांमस
मानहै यार किया कहियत को कहियै नई लग
नि कुलकौ सकुच यापदते ॥ सोसषीसषीसौं
कहति है ॥२०॥ कवित्त नई लगी लगनि रामि
क मन मोहनसौं उर अभिलाष नकी उमंग
म रत है ॥ कुलकौ समार कीलुरति आवे पै
सीरीति होत आनिहींकी जियै कलन धरत
है ॥ देविवेकौं टरन डुरत मनहीं मन मैं भरत
उसासपे प्रकासन करत है ॥ बालन कुल
होकांनि वीचफिरकीलौं बालबधूयनत उ
त ऐंची ऐंची फिरवौ करत है ॥२०॥ दोहा ॥
[illegible] छवीलेलाल कौ नवलनेह लहि ना ॥५॥

रि॥ बाहत चूंमत लाय उर पहरत धरत उना
रि॥२१॥ टीका॥ यह नाइका कौ सखी. इ नाइका
में अधिक है सो छला कौ पायवा के मिलवे कौ
सुष मांनत है लाज तें मिलिवे कौ प्रवेस ना
य कतें न। ही नाइका मध्या परकीया हू होय तो
होय सषी कौ वचन सषी सौं॥२१॥ कवित्त॥ नां
गर सौं नव नेह लग्यो नव नागरि आलीन
हूं सौं दुरावै॥ देषिवे कौं अकुलात हियें अति ला
ज निसौं वनि पैन हि आवै॥ नंद लला कौ छला
लहि कें यतना कि कें नैंन निमेष लगावै चूं
मति छ्वै विति आंषि निसौं कव हूं पहरे कव हू
उर लावै॥२१॥ दोहा॥ वाले की वाते चली
सुनत सषीनु के टोल॥ गोयें हूं लोयन हसति
विहसि जात कपोल॥२२॥ टीका॥ नायका
मध्या सषी कौ वचन सषी सौं॥२२॥ कवित्त॥ सो
है सषीनु समाज में सुंदरि जाहि विषें रति रूप ल
जायो॥ एक कही विस सवे गुन आगर चोप रिवे
ल न हा वनि आयो॥ वाले की बात सुनी नव
हील विकै मुख आंचर सीनैं दुरायो॥ नैंननि
लाज कपोल निहां सी दुहूं मिलि कें अति रं
ग दिषायो॥२२॥ दोहा॥ उर उरझ्यो चित चोर

सोंगुरगुरजंनकीलाज॥ चढीहिंडोरैसैहियैं
कियेंवनैंयहकाज॥२३॥टीका॥यहनाइका
मध्यासषीकोवचनसषीसों॥२३॥कवित्त॥नं
दकिसोरकौरूपचुंभ्यौचितुयौंउरम्यौसुमुरं
नहिमोरे॥संकहियेंगुरलोगनुकीयहकानक
रैंअतिलाजनिहोरैं॥मैंनमरूरसौंसुरझांति
कछूनवसांतिफसीविधिओरैं॥बलगलो
चंनकौंदिनद्वैंतेंचढ्यौचितुवारविचारहिं
डोरैं॥२३॥दोहा॥सटपटीनिसीसमिसुषीमु
षघूंघटपटटोकि॥पावककनरसीमकिकैं
गईझरोषाझांकि॥२४॥टीका॥यहनाइकाम
ध्यालाजकोंमसमानहेनायकाकोवच
नसषीसों॥२४॥कवित्त॥मोहनीसीमुरली
कीधुनिसुनिश्रवननिलजकनआयससि
मुषासटपटसैं॥नैंसकउझकिझांकिआंन
नअवलोकिवेकोंउरदाविलीनोंआयआ
नसटपटसैं॥कहेकविहलसवालजानोंक
निकाईदेषिवेकोंइगव्याकुलमदनचटप
टसौं॥दंपतिकीतरफफरफकिधोंपावक
कीझांकिगईझमकिकैंझरोषांमटपटसौं
२४॥दोहा॥विहसिवुलायविलोकिउतप्रो ॥६॥

टाभियरसघूंमि॥ उलकिपसीजेंनस्तनकौ।
पियचूंम्यौमुषचूंमि॥२५॥टीका॥यहनायकाप्रौ
टाहैसुनेहकीअधिकाईपियनैंचूम्यौवाहीस्त
नकौमुहचूंमिकैंआंनंदमांनतहैसात्वकभा
वहहैयावातसत्यहहैहोइ॥२५॥कवित्त॥स्तनप्रे
मउमाहतैंप्यारीफिरैसवमांमहियैंफूलसा
ती॥स्तनकौआंननचूंम्योपियानियचूंमतचूं
म्योमहारसमांती॥वाहिउनैमुसकाइबुलां
ययौंहीसुषपायललचावतीछाती॥गातपसी
जिरोमांचितहोतभईअनुरागकैरंगमैं
राती॥२५॥दोहा॥कोरिजतननकीजैंतऊनन
कीतपतिनजाइ॥तोलौंभीजिचीरज्यौंरहै
नयौंलपटाइ॥२६॥टीका॥यहनाइकाप्रौढाहै
याकैकामकौअधिकारहैनाइकाकैवचन
सषीसौं॥२६॥कवित्त॥कियेंकोरिजतननित
नकीनतपतिजायअंगनकीपीरअतिउरम
रसानिहै॥दूरितेविलोकैंचितचौगुनौंउमं
गोचाउदिगआयेंमेटिवेकौंअतिआकुलानि
है॥जीवनसफलजौलौंलीजियेसुजानम
रिकीजियेनन्यारेक्यौंहूंयौंहीसुषपातहै॥भी
जैपटकीसीभांतिप्रांनपतिआठौंजामरहौ
लिपटानेंछातीनुम्हांसोंसिरातहै॥२६॥दोहा

वि॰ स॰ ॥ छिनकुउघारनछिनछिवनराषनछिनकु
॥१७॥ छिपाइ॥ सवदिनपियषेडितअधरदर्पन
देषनजाइ॥२७॥ टीका॥ यहनाइकाप्रोढाहैना
यकसौंसनेहअधिकहैयातैंनायककेतेसु
रतिकेचिंह्ननकौंमनलगावतहैसषीकोव
चेनसषीसौं॥२७॥ कवित्त॥ रतिरतिरंगपतिसं
गमिलिकीनीअंगअंगमनमथकीनरंमरंग
सरसै॥ भोरभयेंवालसजनीगनमैंवैठीवेनि
साकीवातैंसुमरिजियमेंसरसै॥ प्यारेकेदसन
कोअधरपरचिंह्ननाहिआरसीलैवारवार
देषैरसवरसै॥ कवहूंउघारैकवहूंकढांकिरा
षैअनुरागमैंउमगिपांनपल्लवकौंपूरसै॥२७॥
॥ दोहा॥ दुषिहाइनुचरचानहीआंननआं
ननआंन॥ लगीरहतढूकाहियेकांननकां
ननकांन॥२८॥ टीका॥ यहनायकाप्रोढानाइ
काकौवचनसषीसौं॥२८॥ कवित्त॥ लालम
नभांवनसौंमिलिकरिआतुरसकेलिमेंम
नोरथविविधिमनमांनहीं॥ इमप्रांनप्यारे
नैकमेरीवोरटसौनाकौचरहचरमेरेरचवा
इनकौंठांनई॥ कुंजनमैंवीथीनकाषिरकीषि
वारहरिलगिरहेनिसदिनढूंकाहियेकांनई
॥ देषोमाईयनिदुषहाईनुकेऊलटंजुआंन ॥१७॥

आंन आंन प्रति आंन चर चा नहीं॥२८॥दोहा॥
पऊंचे मंडी ढिग न सु भटतौ रोकि सकै सवु ना
हि॥लाष नहूं की भीर मैं आंषि वही चलि जा
हि॥२९॥टीका॥यह नाइका प्रौढा नाइका को वच
न सषी सौं तथा पर किया ह्वै हो इ॥२९॥कवित्त॥
भीर भई सुभ काज समाज मैं लाषन आंनि जुरे
नर नारी॥दोउन को उमगे मन चाह सों प्रेम कै
भार भरी अति भारी॥काहू की रोकी चितौं नि
रहै न विलोकत आपस मैं पिय प्यारी॥डीठि
उहीं ठहराति भटू सब तैं कछू प्रीति की रीति हि
न्यारी॥२९॥दोहा॥सोवत लषि मन मांन धरि
ढिग सोयो प्यो आय॥रही सपन की मिलि नि मि
लि पिय हिय सौं लपटाय॥३०॥टीका॥यह नाइका
प्रौढा है मांननी व्है कै सोइ रही है पाछै नायक
ढिग आय सोयो तव सपनैं की मिलनि कौं मि
स करिकै लपटाइ गई अरु मांन हूं राष्यो सो
सषी सषी सौं कहति है॥३०॥कवित्त॥मांन कि
यौ जिय मांनैं न क्यौं हूं री आली रही वहु मांनि
मनाइ कै॥सो इगई रिस ही जिय मैं धरि सोय र
ह्यो ढिग मोहन आइ कै॥बाल वधू सपनैं कैसु
भाइ रही पिय के हिय सौं लपटाइ कै॥रोम रही
मै सरसायो रच्यो को कहि तैं नव नैं जु रही छवि छा
इ कै॥३०॥दोहा॥आपनी गरज निवो लियत

वि॰स॰
॥८॥

कहा निहारौं तोहि ॥ तू प्यारौ मो जीय कौ मो
ज्यौं प्यारौ मोहि ॥ २ ॥ टीका ॥ यह नाइका प्रौढा
है सो नाइक सौं अपनैं जिय की विचित्रता कह
ति है ता कौं विना देषें मेरो जिय रहत नांहीं या
तैं आपनौ जिय राषिबे कौं तो सौं बोलत हौं ना
इका कौ वचन नायक सौं ॥ २ ॥ कवित्त ॥ आप
नैं आपनैं प्रांन सबही कौं प्यारे होत जात
भांति राषिबे कौं सोई चाहियतु है ॥ ऐसी कछू
वांनि आंनि परी मेरे प्रांनन कौं तोहि देषें जौ
लौं तौ लौं चैंन लहियतु है ॥ करत उपाव हूं तौ
तिनही के राषिबे कौं हम प्रांन प्यारे कित न्या
रे रहियतु है ॥ तातैं लाल बोलियतु आपनीयै
?रज ताकौ कछु तुम सौं निहोरा कहियतु है
३ ॥ दोहा ॥ जात सयान अयान कै वैठग
हि ठगैं न ॥ को लखै चायन लाल कौं लषिल
लचौंहैं नैंन ॥ ३ ॥ टीका ॥ यह नाइका प्रौढा है
सषी सिछा देतु है ताकौ उतर कहत है कि वे
तेऊ देषि कैं कौ करत ललचात नांहीं सनेह त
कौ अधिक नायका कौ वचन सषी सौं ॥ ३ ॥ ३ ॥
कवित्त ॥ कौंन रहै ठग म्हारी सी बारकैं म्हैलन
कौं जे विवेक कलै ॥ काहि न वे विसरावैं सब सु
ष मोहन वे कहि कैं अवलै ॥ होन सयांन अयं ॥८॥

नसवैचतुराईअनेकनएकचलैं ॥ होत
अलीमनमोहनलालकैंलोलविलोचन
देषतकौंनछलैं ॥ ३२ ॥ टीका ॥ यहकोंटोमो
पायगाडिलीनीमरतजिवाय ॥ प्रीतिजना
वतभीतिसौंमीतजुकाअोञाय ॥ ३३ ॥ टी०
यहनायकाप्रोढाऊढानायकाकोवचन
सषीसौं ॥ ३३ ॥ कवित्त ॥ जादिनतैंमिलिमैंन
कीमूरतिछाडिगयौवहछैलसुहायो ॥ ता
दिनतैंअकुलातहैंलोचनदेषिवेकौंकहुं
दाउनपायो ॥ मोपगमैंमगमैंलगिकैंयह
कारनैंआजिअमीवरसायौ ॥ प्रीतिजना
वतयौंभयभीतिहैमोहनमीतजुकाढन
आयो ॥ ३३ ॥ दोहा ॥ कीनैंहूंकोरिकजतन
अवकहिकाढैकौंन ॥ मोमनमोहनरूप
मिलिपानीमैंकौलौंन ॥ ३४ ॥ टीका ॥ यह
नायकापरकियाऊढाअपनेमनकीआ
सक्तिसषीसौंकहतहै ॥ ३४ ॥ कवित्त ॥ जादि
नसौंवनवानिकसौंनिरष्योबलवीरका
लिंद्रीकेतीरमैं ॥ तादिनतेनसुहायकछूसु
षिकौंवंवनैंसुरह्योनसरीरमैं ॥ नैंनमांक

रि॰ स॰ ॥९॥ वसीवहमूरतिजायपरयौमनुतौछ्वविछांरि

मैं ॥ कोरिकियैंकहेकैसेंविलागयोसषीलौं

नज्योंनीरमैं ॥ ३४ ॥ दोहा ॥ कारेवरनडराव

नेंकितिआवतयहगेह ॥ कैवालषोसषीलि

षेलगेथरथरादेह ॥ ३५ ॥ टीका ॥ यहनाय

कापरकियाहैतुंगुप्तानायककोंदेषिसात्व

कभयोहैतिनकोंसषीसोंदुरायवेकोंकह

तहै ॥ ३५ ॥ कवित्त ॥ आपुकारेरंगगोरेचिर

मकोछुराधरैंवोदिवेकोंकारीकामरीयही

विसांति ॥ सीसपरफैंटाएकपीरोसोअमैंठि

वांध्योतापेएकवरहीकीपंषियाफरेरांति

॥ मरकतचलतडरपांवनैंकोस्वांगकि

येंजवजवयहीवोरआवतअहीरजाति

॥ तवतवदेषिसषीकेउवेरदेषोयाहिदे

षेंरुलागेदेहपुलकिथरहराति ॥ ३५ ॥ दो

केसरकेसरिकुसमकेरहेअंगलपटाय ॥

लगेजांनिनषआंनिषुलिकितवोलतनत्र

नषाय ॥ ३६ ॥ टीका ॥ यहनायकापरकिया

गुवरुतगुप्तानायकाकोवचनषंडितासों

नायककेंप्रतछिसषीनायकासोंकहेषंडि ॥९॥

हूतोसंभवै ॥ ३६ ॥ कवित्त ॥ तोहितैवोनिप
रीऐनपेवेकीऐसेंहीकींसतराइरहेंगे ॥
कीजियेतोनिरधारकछूकीधौंमोंहचढायकें
बोलबषांनें ॥ केसरिसौंउबट्यौतनसोकहूं
केसरिकैंकरिहैंलपटांनें ॥ आवरीतोहिरि
षांउंनजीकछेवावरीतवेनषछूतजांनें ॥
३६ ॥ दोहा ॥ रह्यौमोकूंमिलनौंरह्यौयोंकहि
गहेमरोर ॥ उतनैंचलिहिवरांहनौंइतचित
ईमोचोर ॥ ३७ ॥ टीका ॥ यहनायकापरकिया
वाकविदग्धासुक्रियाकरिगईहेसोनायकस
षीसौंकहतुहै ॥ ३७ ॥ कवित्त ॥ तादिनतेंवहवा
लगलीमैंमिलीकुतीकाल्हिगईचितचोरि
कैं ॥ एकहीठौरकरीइकठौरीमनौंविधिरूपकौ
[illegible]सिवटोरिकैं ॥ छाड्यौमयाकरिवौमिलिबौ
ऊपरीमनिसौंकह्यौभौंहमरोरिकैं ॥ यौंसजा
नीसोउराहनौंदैपरिमोतनहेरिगईमुषमो
रिकैं ॥ ३७ ॥ दोहा ॥ हूसमांसगुनसषिनपेसां
ईचलतसँबार ॥ लैकरवीनप्रवीनतियरा पा
रागमलार ॥ ३८ ॥ टीका ॥ यहनायकापरकिया
क्रियाविदग्धाहैसुक्रियाहूंहोयतौहोय ॥ ३८
॥ कवित्त ॥ नीतसमैंपरदेसकौंपीकोपयानुसु

र॰प्र॰ १ ज्यौंवहरांवनलागी॥ यारितुमेंहरिक्यौंहूंरहे
घरहेवताऊजिमनावनलागी॥ औरसुपाव
नकौनकछूनवसाजिकैंवीनवजांवनला
गी॥ प्यारीप्रवीनभरैसुरमेघमलारअलापि
कैंगांवनलागी॥३९॥दोहा॥ फेरिकछूकरिपौ
रितैंफिरिचितईमुसकाय॥ आईजांमनलैंन
टी जियनेहूहियैंजमाय॥३९॥टीका॥ वेलीति
येकरआनिअचांनककंचनवेलीसीवाल
अकेली॥ जोवनजोतिजगीअतिकीरति
कीउतिपायनिपेली॥ कंठमसौंमुरिकैंचि
तईसुमनौंमुसिकानिमैंमोंहनीमेली॥ जां
मनुलैरसजांमनदैयोंगईजियनेहजमा
यनवेली॥३९॥दोहा॥ न्हायपहरिपटरोर
कियवैंदीमिसुपरनाम॥ दृगचलायघरकौ
चलतंविदाकियेघनस्यांम॥४०॥टीका॥ य
हनायकापरकियाक्रियाविदग्धासषीकौ
वचनसषीसौं॥४०॥कवित॥ न्हायपटपहरि
मृगाछीचारुचातुरीसौंउठिमनभांवनकौं
मुरिमुसिकानीहे॥ कमकहेवेंदीकेमुधारि
मु॰१ वेकौंमिसुकरिकीनीप्रनपतिहूंतांसौंनीहे ॥१९

कहा करौं आलीक छुक हतन वनैन क्यौं हूं नैं
सी उ हि सरस मनोहर रीतिदरांनी है ॥ घरकौ चल
न वारू लोचन चला चल कै चातुरी सौं वाहि
विराकी नौरधि दरानी है ॥ ४० ॥ ललिता ॥
दोहा ॥ पूछैं क्यों रूषी परति सगि वगि रहीस
नेह ॥ मन मोहन छवि पर करी कहे कह्यां नी
देह ॥ ४१ ॥ टीका यह नायका लछिता है रू
षाई करिकैं सषीसौं दुरावत है सषी को वच
न नायका सौं ॥ ४१ ॥ कवित्त ॥ पूछैतें क्यौं वह
रावति दुरावन कहा तैं अनौषी रूषाई नै ठांनी ॥
प्यारे के प्रेम मैं पागि रही अव होत कहा मुकरै
हम जांनी ॥ वैसो उर अंतर की दुरै प्रीति सने
ह की रीति रहै नहीं छांनी ॥ तू मनमोहन की ।
छवि पै जु करी सु कहै यह देह कह्यांनी ॥ ४२
दोहा ॥ और आपकनी निर्कनि गनी घनी ।
सिरताज ॥ मनी धनी के नेह की वनी छनी प
टलाज ॥ ४२ ॥ टीका ॥ यह नायका लछिता स
षी को वचन नायका सौं न यका को हितु या सौं
अधिक है सु नेत्रनु की सोभा औरै मई है या
ते तैं गर्विता हू होय सषी सषी हू सौं कहै

स.
॥२॥

४२॥कवित्त केलि कलोलन के रंग मैं सुरूप भी
नमसागर मीर रजनी है॥ निमम नीदरसांतमरू
आरसातन भासरसातिघनी है॥ औरही सौ
मइगंतन ओपअने तनैकी सिरमोरगनी है
॥ कोऊ के प्रेम की सोहै मनी पटलाज मैं चा
रुघनी सीवनी है॥४२॥दोहा॥ प्रेम अतोल
डुलै न हीमुह बोलै अन षाय॥ चितव नि
मूरति बसी चितवनि मांह लषाय॥४३॥टी
यह नायका परकिया है लछिना है सषी के
वचन नायका सौ॥४३॥कवित्त॥ बोलै न क्यौं
न कितौ अनषाय कैं होत कहा अब साधैं
षाई॥ तेरै हियें थिर प्रेम की बांनि सुजांनी
परी री डरै न डुराई॥ तूं हरि के हिय मां करही
मितेरीई तां मुरहै सुषदाई॥ प्यारे की मूरति
तो चित मां रुवसी सु चितौंनि मैं देत दिषाइ
॥४३॥दोहा॥ रूपी मिसरोषमुषकहतन
रवैंन॥ रूपवे सें होत येने ह चीकनै नैन॥
४४॥टीका॥ यरन यकालछिनापरकिया
ई करि सषी सौं डुरावति है॥४५॥कवित्त॥
कुटी मरोरि सु भ्रमोरि रिसमिसुकै रकपारि ॥११॥

सषाईमाधिकहै रूषवैनहै॥ आंतुकोपद्वेमतु
षीतिहीकोधरैतनुकेमेंऊडरावोकछुपनमो
डरैनहै॥ हरिकेसनेहसोनीकेसंधोंरहतछो
नीकहैरतप्रगारछबीलीछविछैनहै॥ रूषो
रूषकरिरूषीवानिठानिवेठीपरिरूषकैसेहो
मनेहचीकनैएनैनहैं॥४४॥ दोहा वरहैसब
नियकीकहनठोरकुठोरलषैन॥ छिन और दि
नऔरसयेछवि छाईनैन॥४५॥ टीका यह
नायकापरकियालछितासषीनायकासो
कहतहैजोनायकानायकसोंकहैतोषंडित
हहोय॥४५॥ कवित्त देषतनाहिनैठोरकुठौर
रहैजितहीतितचाहिचकेहै॥ औरदीप
औरसीदीसतकंमत आरसमैविथके
है॥ लाजतनैसिथलाईगहैच्वनैवमनाहि
नैयोवहकेहै॥ रतकहैजियकीसववातविलै
ननयेछविछाकछकेहै॥४५॥ दोहा नाम
सुनतहीकिगयोतनओरेमनऔर॥ दवे
हीचितचढिरह्योअवैचढ़ायेत्योर॥४६
टीका यहनायकासषीसोंमिसकोमिसु
कैदिवैसतेहडरावतिहैपैनामसुनतेदि

स-
॥१२॥

कैवनितिअसक्रियाओरहीभांतिभईयातेंस
षीनैनीकैकैकरिनांनिनायकालछिनासषी
कोवचनसषीनायकासों॥४८॥कवित॥
नेहकीरीतियहैनवनागरिनैंकुलगैंनिव
रैननिवेरैं॥नांमतुनैंहीमयोमनुओर
हीओरैमयोतनुचेतननेरैं॥ - - - - - -
- - - - - - - - - - - - - - - - - -
- - - - - - - - - - क्योंहमनैंसुनराय
विलोकतहोतकहाअबत्योरतरेरैं॥४६
दोहा॥रहिमुहफेरिकहैरियातहितसमुहें
चितनारि॥डीठिपरसउरिपीठिकेपुलकैतन
हुकारि॥४७॥टीका॥यहनायकापरकिय
हैसषीकैदेषतपीठिदेवैठीडुरायबेकोंपिरोमा
चपीठिपैभयेतेदेषिसषीकहतहैनायकास
छिता॥४७॥कवितहितकोनिरषिपनुहरषै
हि[illegible]कोमनुहमतोधर्योईतनुप्रेमकौप्र
नीतिकौं॥नि[illegible]कैनुराचतिहैवातवहाद
तिहकाहकोंदुरावतिनवेलीनिहनीतिकौं
माहैहतन[illegible]भावरहिमुहफेरिनै[illegible]तिसनमु
[illegible]वी[illegible]सर[illegible]नीतिकौं॥डीठिके[illegible]रसहीनेंउ

दीयहु पीठि पै पुलक पांति प्रगट कहत तेरी प्री
तिकौं ॥ ४७ ॥ कुलटा ॥ दोहा ॥ लखि लौनैं नायक न
ये केको यनु हीयन आजु ॥ कौन गरीब निवा
जिबौ कत त्यौर तिराजु ॥ ४८ ॥ टीका ॥ नायक
पर कियाकु लटा कौं नु गरीब निवाजिबौ याप
द तैं बहुत नायकन की प्रतीति भई सषी कौ व
चन नायका सौं ॥ ४८ ॥ कवित्त ॥ सरसी रुह षं
न मीन कुरंग प्रभाय नु की सह जैं हरिबौ ॥ यत
नैं पर वाह के चाय हु सो बहु बोर चलाचल
कौ करिबौ ॥ कितधौं रंति नाथ सनाथ भयो
वह कौं मुसकाति जिन पेंढरिबौ ॥ इनु सुंदर लो
चन कोर नु सौं लषि कौं नु पै आजु मया क
रिबौ ॥ ४८ ॥ दोहा ॥ कित हि फिरि दोर तदृबि ये नि
चले नैं करहैं न ॥ एक जरारे कौं न पै करत
कजा कौं नैंन ॥ ४९ ॥ टीका ॥ यह नायका परवि
या कुलटा कौं न पै करत कजो को या पर दौंव
ऊ तं नायकन सौं प्रीति जानी सषी कौ वच
न नायक सौं ॥ ४९ ॥ कवित्त ॥ कौंन न वे रंनि
दर निसंक कै विहार करैं काहू तें न रुरैं ॥
व तु वित हरलैं नये ॥ नृपति मनोज के प्र
बल अ सि नाह कहै घायल क... ...ते र

१०.४. क[illegible]रैनये॥ घूंघट की वोट गहैं घात है रि फेरि षि
१३ [illegible]रि चै रत ही देषियतु नि कनै रहैं नये॥ चंचल
तारे अनियारे कजरारे भारे कौन पर करत कं
मा की तेरे नैन नये॥ ४९॥ दोहा॥ षेलन सिषये अ
लि भले चतुर अहेरी मार॥ कानन चारी नैन म्रु
ग नागर नरनु सिकार॥ ५०॥ टीका॥ यह नाय
का पर किया कुलटा सषी को वचन नायका सौं
है नागर नरनु सिकार या परतें व कुलटा नायक
नु की प्रतीति भई॥ ५०॥ कवित्त॥ कानन [illegible] वारि
कहां वैठे ते पर दौस ढरैं पुर मैं मृग पाये॥ औ
र अमेड अचूक है नैं गुन आगर नागर मा
रि गिराये॥ घायल कै फिरि ले तसु ध्यान फले
न थकैं श्रुति को तिग छाये॥ नीके मन ने [illegible]
वी जक रौ लये षेलन नैंनन कुरंग सिषाये॥
५॥ मुदिता॥ दोहा॥ चलत देत आभार सुनि
[illegible]ही परौसि हि नाह॥ लसी तमासे की द्रगनि
हांसी आंसुन मांह॥ ५१॥ टीका॥ यह नायका
परकिया मुदिता है चाहती वात भई जो न
[illegible]नता की हांसी भई सषी को वचन सर्व
सें॥ ५१॥ कवित्त॥ देषि परौसी का वीक नी चा ६३

हनिप्यारीहियेपरीप्रेमकीफांसी॥त्यौंपि
आनविरिमलत्यौविलषीविरहातुरमां
संउसांसी॥वाहीपरोसीसौंबोलिकहीपति
हंइततोसौंहमारीनिसांसी॥त्यौंलसीअ
तुजनैनकेनैननुआंसूनमांऊनमांसके
ली॥५१॥अनुसयाना॥दोहा॥सनेह
लीत्योवनौऊषौंलईतुषारि॥हरीहरीब
रहरिअजौंधरियरहिजियनारि॥५२॥टी
यहनायकाअनुसयानासंकेतकीठौरजा
नजानिसोचुकरतहैसोसषीसमाधांनुक
रतुहैवतुतर॥५२॥कवित्त॥बीननफूल
सहेलीकेसंगचलीमृगलोचनीमोरमरी
केलिथलीउजरीअवरीअवलोकि
मासमरीअलिसौंउचरीहै॥बीतिगयेउ
उकेसोसनोअरूऊष्योउघारिल
सिगहि॥यौंहहरैमतिधीरधरीअवहीतो
अबहरिप्यारीहरीहै॥५२॥दोहा॥फिरिपि
विलबीकैलषतिफिरिफिरिलेतउसास
सांइसिरकचसेतज्योंवीत्यौबनकपा
न॥५३॥टीका॥यहनायकाअनु पा॥

र॰ म रकीओरवीतीजांनिविलोबीहेसोसषीसें
२१ सोंकहतुहे ॥५३॥ कवित बालमकेमिरबेके
रोनहजोसेतअसेंलेत हुनिनुनिमिरहुनि
मुरमातिहे ॥ बीनतहेतूलअैसूलसेस
लतहियेमांनिदुषमूलफूलजिमकुमिला
तहे ॥ वारवारकहतअलीसोंकेसोमदी
रतिकेविकेविलासकीथलीयोंचालीजा
तहे ॥ वेलषिविलषिकेंउसासेलेतवाल
वधूलेषिवनुवांस्योमनुअतिअ तों त
हे ॥५३॥ अनुकूलनायक ॥ दोहा ॥ नहिह
रिलोंहियराधरोनहिहरलोंअरधंग ॥ येक
नहीकरिराषियेअंगअंगप्रतिअंग ॥५४
टीका यहनायकाअनुकूलहेसोनायकके
मनकोविचारजांनिये ॥५४॥ कवित राषिये
नाहरिलोंहियराधरिओरसवेअंगहोहि
उधारी ॥ जोहरिलोंधरिये अरधंग तौ
हीवारवढेसुषभारी ॥ तातेयहेजियमभाव
तिहेकरियेनहिवाहिहिलोनेकहूंन्यारी
सैअंगमिलायकेंएकनहीकरिराषिये
धरी ॥५४॥ दक्षिननायक ॥ दोहा
[illegible] निसिसररवीरमनेरतिकरसम

प ॥ लहाछेह... गतिनुकीसवतुलेष
रुपाम ॥ ५४ ॥ टीका ॥ यहनायकुदरि... हा
गुरसमंडलमैं अपनीचतुराइकरिकैंस
बकों प्रसन्नराष्यौ एककैं आधीनकाहूनै
नजान्यौंसषीकोवचनसषीसों ॥ ५५ ॥ क
...कीपुतलनितुहाइछविछाईतेसी
तरंरयनिजोंक्रिविसरविलासहे ॥ ग
पिकासंगरसरंगकीउमंगामैंरसि... ॥
... यहनुरमतरसरासहे ॥ अवला अ
नेकनिमेंकीनीनेंरलालनकघू अरसुन
चातुरीकीकलायोंप्रकासहे ॥ सब सी
कींवाहगहैकैं संगनाच्योंसबनबिलो:
कैरकोऊकसवहीकैंपासहे ॥ ५५ ॥ दोहा ॥
सठनायकु ॥ वेईगडिगारैंपरीउपटौहार
हियेंन ॥ आन्योंमोरिमतंगमनुमारिगु
दिनमैंन ॥ ५६ ॥ टीका ॥ यहनायकुसठहेवि
न... हारकेचिकमीठीवातकहिडराव
... हनायककोवचननायकासौंजोनाइ
कानाइकसोंकहेतोघंडिताहहेस ॥ ५६
कबित ॥ ... जेमनमोहनमयककैमु

आयेलालनमोहनतुसिंगा… चारुमेरेमनमा
न्योहै॥ आनसवलितडगांहूम…जरित
गतिसिथलकलितरूपमोहनीसोंस…
है॥ इलम प्रानप्यारेरह्योउरपैउपरि…
विनगुनहाररअरगरेंजान्यौहै॥ वेईगति
गाउँपरीजोमतेगुमनुमतेगुउ…
तारिमारिआन्यौंहै॥ ५६॥ दोहा॥ वालक
है…नीभईलोइनकोइनुमाह॥ लाल
तुम्हारेइगनकोपरीइगनिमेंछांह॥ ५७
॥ टीका॥ यहप्रस्तुतरनायकुसठनायकाष
डिता॥ ५७॥ कवित्त॥ चारुनिकाईलषैजिन
कीरदलागतओपरतोपलकीहै॥ वंदन
कीछविमेंदकरीनिदरीइतिविद्रुमकेर।
लकीहै॥ प्रानपियारीकहाइतुनैननि।
आजुललाईइतीललकीहै॥ लोचन
लालतुम्हारेलषेतिनकीइतआंनिप्रभा
कलकीहै॥ ५७॥ दोहा॥ सकतनतुव…
वचनमोरसकोरसषोइ॥ षिनषिनओ
टेषीरलो…वरोसवादिलहोइ॥ ५८॥ टी…
…नाइकसतुमापराधआयोहै…

क्रोधतें कुटुवैन कहति है ताकौं भीरी वा
को . . कोउ निवारनु करतु है नायका अधी
रा जानिये नायकु कौ वचन नायका सौं ॥
५८ कवित्त काहे तैं भौंहतनें नीम ईतिया
कौं बापै कीजतु कोपयती कौ ॥ नेरे तौ न
. . बोलसु हातेए मोर महाउ सगाथ
जोकी ॥ कोरिकरौ किंनि मां मिनि कं सां
. हा . . न होतु मोरम हीकौ ॥ ज्यौं ही
ज्यौं धीरत्र बरौ करि औरिये त्यौं ही त्यौं हो
त सपारिलनी कौ ॥ ५८ ॥ धृष्टनायकु ॥
दोहा ॥ मारौ मतु हारि तु मरी गात्यौ घरी
मिठी हि । वाकौ अति अन्माइ रौसु सि
माहूट विनु नांहि ॥ ५९ ॥ टीका ॥ यह नाय
कु कौ वचन सखी सौं है या तें गुनक थंन ।
मैं नीकें संभवैतु है वा कौं यापद तैं पसे छ
सौं प्रतीति भई ॥ ५९ ॥ कवित्त ॥ मारौ तो फ
वनि की छूटि कासौं त्व मनु हारि बनो
. ते ताबे ॥ गारि जो देइ कहा कहिये मघ . .

...वतेकसुधाकेरांतपावे॥वारतिसूरतिके
मतराहदुमेरेहियेंअतिभोरस्वभाव॥...ल
सुभावसुहागिलकोरसुहूंरिसदूंहसिहंस
सिखावे॥५५॥दोहा॥नरिकालवेंमिसनुल
...रमोहिगआय॥गयोअचानकआगु
...छातीछेतुछुवाय॥६०॥टीका॥यहनायकसु
...नायककीकर्त्तव्यतानायकासधासो
कहतहे॥६०॥कवित्त॥गोरसकेमिसु...
ह्वेवनगेलनुछाडतुछेलचवाई॥मोनमेर
मेंकहाकहोंजेसीकरीनसुधाकै[redacted]ल
लालगराई॥मोहिगआयहेरैंईहरैंकछु
कीनीसनेहसनीचतुराई॥छोहौंतेंवेके
ऊकमंआंतिअचानकआगुरीछाती।
छुवाई॥६१॥पतिउपपति॥दोहा॥कुंजभ
वनतजिकुंजकोंचलियेनंदकिसोर॥फूल
नकलीगुलावकीचटकाहटचहुवोर॥६२॥
॥टीका॥यहनायकासुकियाहूहोयनायक
कोवचननायकसों॥६३॥कवित्त॥नकिलन
कलीगुंजलजातकीकछूकमईमोरनुकोउ
नमिजअवननिधारियो॥धूलिनगु...

निकानैंकौसुग[illegible]बपोन[illegible]चरकासबदुमे
दु[illegible]रियें ॥ कलधुंनिकरनअनेरष
[illegible]रनिअनंतछबितसतैबिहारीयोंबि
[illegible]रियें ॥ आगमबिमानकौबिलोकियेछवी
लेलालसुंदरनिकुंजतजिसदनसिधारियें
[illegible] ॥ रूपनिवेदननायकाकौनायकसें
[illegible] ॥ रहीलरूकेलालहौंलषिवहवा[illegible]
रूप ॥ कितौमिलेसुर[illegible]दईपतेसलौनैंगो
रूप ॥ २ ॥ टीका यहनायकाकोरूपसषीना
यकसौंनिवेदनिकरतिहैसलौनैंरूपमैंमि
गासुयहअद्भुतहै ॥ ६२ ॥ कवित्त जैसीजहां
चाहियतैसीनहांवनीविधिहूपैंधुनि
आषरकेन्याइवनिआईहै ॥ सुघरसुहा
ईकापैवरनिवनाईजानतरतिहूनैजाकी
तिलसमतानपाईहै ॥ बालछविछाईसुं
दरतामैंऔरअधिकाईदईदईयालुना
[illegible]दरतामैंऔरअधिकाईहै ॥ सुंदरकन्हा
ईहौंतौनिरषिविकाईवहरूपकीनिका
ईमानौंदेहधरिआईहै ॥ ६२ ॥ रूपनिवेद

नायकाकौनायकसै ॥ दोहा ॥ मोहिम
नेमोरी मिहेतु रुकि रुंकि इकवार ॥ [illegible]
झांवन हारवहृये नैनारिझवार ॥ ६२ ॥ टी
यहनायकाकौ रूपसषीनायकेसोंनि
वेदनकरतुहेसषीकोप्रयोजनप्रीतिकराय
वो ॥ ६२ ॥ कवित्त सुंदरमोकहियेनै तिहू
रमेंइकुनंदकुलारोईहै ॥ यामेंकहाकहुन
वतिहैकछुपैमकोपंथुनियेरोईहै ॥ नैक
झरोषाकैझांकिवलायलैंमोहिभरोसोझ
हारोईहै ॥ रिझवारहैतोद्यारीमिहिगवह
रूपरिझांवनहारोईहै ॥ ६३ ॥ दोहा ॥ होरी
मीलघिरीमिहेंछबिहिछबीलेलाल ॥ सो
नजुहीसीहोतिदुतिमिलतमालतीमाल
६४ ॥ टीका ॥ गातवर्ननैनाइकाकेअंगकी
छबिसषीनायकुसोंनिवेदनुकरतिहै ॥ ६[illegible]
कवित्त नीकीलसैहृषभानललीनवजोव
नजोतिजगीअंगअंगगहि ॥ ताहिविलोकि
ललामसनुमेरोतेमोइबरयौअतिरीझि
तेरंगाहि ॥ छेलछबीलेलषैंछबिरीझिरै ॥ १७ ॥

क्यों न हियें रस भा[illegible]तुमें गहि ॥ मालती माल
ते[illegible]तसों मिलि सौं न जुही के प्रकासनि
रें गहि ॥ ६४ ॥ दोहा ॥ अंग अंग नग मग मगत
[illegible]चसिषा सी दिह ॥ दीपावदी ये हूं रहै वडो त
औरो गह ॥ ६५ ॥ टीका ॥ यह नायका की छवि दे
[illegible]कोसषी नायक सों निवेदन करत है ॥ क
कवित्त ॥ दीपसिषा सी लोइ अैसी ह्रसरीन को
रही द्रगनि समोय मांनैं मोह नील मनि है
॥ औरन जवाहर के रूप न ललित अंग अं
गनि मिलि निजगजोतिसी जगति है ॥ दीपहु
वडो ह्रै मये देह कोउ जास होत वडोई प्रका
स चकचौंधी सी लगति है ॥ दीपति की ड्रुति
मसिमवन अषिल जाल रंध्रिन कै वाहर
की ओर उझलति है ॥ ६५ ॥ दोहा ॥ वोहि

रुषैं लोइन लगैं कैं नगुवनि की जोति ॥ जा
के नन की छांह है गनौं क छांह षी होति ॥ ६
॥ टीका ॥ यह नाइका की दीपति सषी नाइका सों
निवेदन करति है अरु नाइका सषी सो कहै तो गु
न कथन है संभवे ॥ ६६ ॥ कवित्त ॥ आजु छवि क्या
गरी विलोकी है जु नागरी के अंग अंग रूप की
तरंगै उमगति है ॥ हंस डोरन प्यारे वरनन तिन
की नीति को हहै जोवन की जोति जगाजोति ली
जगति है ॥ को है ऐसी और तिय सुरन रनाग
पुर वाके आगे जा की दुति दुगनि षगति है ॥
जा के लौनैं तन की ललित परछांही स आगे
सरद जुन्हाई परछांही सी लगति है ॥ ६६ ॥ दो
भई जु छवि मिन वसन मिलि वरनि सकै सुनि
वैन ॥ अंग ओप आंगी दुरी आंगी आंग दुरैं न
६७ ॥ टीका ॥ यह नाइका की सोभा सषी नाइका कु
सों निवेदनु करति है ॥ ६७ ॥ कवित्त हरि कैं चेत
वेली सी वाल की देह की दीपति कों वरनै कहि
है ॥ अंत नाहि मिली दुति कंचुकी की सु अंवर
प में ओप रही कवि है ॥ कछु जात कही न ही
अंग प्रभा अरु चीर मिलें जु भई छवि है ॥ वह
आंगी गई है छवि अंग की ओप में आंग के हां दू
विहै ॥ ६८ ॥ दोहा ॥ सौं न जुही सी जगमगति

बि०स० गअँगजोबनजोति॥ सुरंगकसूंभीकंचुकी
॥१२॥ दुरंगदेहदुतिहोति॥६९॥ टीका यहनाइकाके
अंगकीसोभासषीनाइकासोंनिवेदनुकर
तिहै॥६९॥ कवित्त॥ सुवरनवेलीसीनवेलीकी
दुतिजोबनकीजोतिमिलिअतिसरसातिहै
॥ चुहचुहीचूनरीमैंगहगहीगातकीगुराई
नदुरातिअतिरसबरसातिहै॥ रूपकीतरंग
अंगअंगतेंउमगिसोभाहोतबड़रंगलोंब
सोतिअरसातिहै॥ कंचुकीकसूंभीप्यारीप
हिरैसुरंगतऊमिलिअंगरंगसोंदुरंगदर
सातिहै॥६९॥ दोहा कहिलहिकौंनसकैदु
रीसोंनजाइमैंजाइ॥ तनकीसहजसुबासुव
व गदेतीजोबनाइ॥७०॥ टीका यहनाइकाके
तनकीदीप्तिअरुसहजसुगंधसषीसषीसों
कहतिहै॥७०॥ कवित्त॥ बेलतचोरमिहचनी
बेलदुरीतियसोंनचमेलीमैंजाइकैं॥ रंगमेंरं
गरह्योमिलिकैसुकिहूंविधिरंचनहोतलषा
इकैं॥ भौंरनकीअवलीचहूंघांतेसुगंधकेलो
भरहीमंडराइकैं॥ कोलहिमोबहिकुंजमैंबा
हिजौदेतीनअंगसुबासबताइकैं॥७०॥ दोहा
देषीसोंनजुहीफिरतिसोंनजुहीसेअंग॥ दु
तिलपटनुपटसेतहूंकरतचिनौंदीरंग॥७० ॥१२॥

॥टीका॥ यह नाइका के अंग की गुराई सषी ना
इकु सौं निवेदनु करति है ॥७०॥ कवित्त ॥ सहज
सिंगार दुति लसत अपार लषि मनिहूं कैं मन
भावउपजै अनंग को ॥ अति सुकुमारयातैं ल
चकनु लौं कुंभारसहिनसकनु विवि उर्जउतं
ग को ॥ रूप की रसालनु मदेषी मोन वाललां
लु कहा कहैं वनकवरन वाके अंग को ॥ चा
रु तन सुषपहिरति विन वाहि नन दुति मिलि
होनु कैं सरियारंग को ॥७०॥ दोहा ॥ दीठिनु पर
त समान दुति कनकु कनकु से गात ॥ भूषन क
र करकस लगति परसि पिछानै जात ॥७१॥
॥टीका॥ यह नाइका के अंग की दीप्ति सषी ना
इकु सौं कहति है अरु नाइकु हू सषी सौं कहै तौ सं
भव ॥७१॥ कवित्त ॥ आजु लाल एक ब्रजवाल मैं
विलोकी जाकी ललितनु नाई लषि लोचननि
हानु है ॥ साजनु सिंगार रचि पचि कैं प्रवीन आ
ली तिनहूं के वैन सब वहेरतु हरातु है ॥ करन वि
वारु पैन होत निरधार कछू जैसोई कनकु तै
सी वंनक कैं गातु है ॥ कौं वै रैं करेरे कैं वितान पं
ह चौं नियतु कर परसे तैं आभूषन जानैं जातु
है ॥७१॥ दोहा ॥ करत मलिन आछी छविहिं ह
रत जु सहजु विकासु ॥ अंगराग अंगनि लग्यो ज्यौं

वि॰सि॰ ॥२७॥ आरसी उसास ॥७२॥ टीका यह नाइकाके अं
ग मैं केसरि लगी है नाइककों इननैं हूं अंत
राइ सुहातु नही यह जो निसषी नाइकुसों कहै
ॐ तो सें भवें जो केसरि लगावति नाइका
सुषी सों कहै तो रूपगर्विता होइ ॥७२॥ कवि
मैनकी मोंहनी सी लषि न्याइ ही मोंहन री
झिरहैं रसपागे ॥ जोवन रूप सुहाग सनी ख
विसों तिनु कैं उर दाह हनि दागे केसरि लागे
ते अंग लषात जों आरसी दीषे उसांस के ला
गे ॥ ऊजरी लागे न और कछू नव नागरि ते
री गुराई के आगे ॥७२॥ दोहा ॥ पहरि भूषन
कनक के कहि आवत इह हेत ॥ दर्पन के से
मोरचे देह दिषाई देत ॥७३॥ टीका ॥ यह सषी
नाइका के अंग की निकाई नाइका सों कहति
है औ भूषन को अंतराइ जो नाइक कहै नाइ
का सों कहै तो वनै ॥७३॥ कवित ॥ हित कीनो
वात हित ही सों कहि आवतु है तातें तो सों क
हतु छवीली पेम पागि कैं ॥ तेरी समता कों रति
रंभा उरवसी हैं न तेरे अनुराग प्यारो रह्यो अ
नुरागि कैं ॥ लोनों तेरो रूप तामें सोनें के लग
है नेतु कत पहरति इकें अवही हितपागि कैं ॥
नीके नीके तन पर फीके फीके लागत हैं मोर ॥१॥

वारहेहैं मानौ मुकर मैं लागि कै ॥७३॥ दोहा ॥
कंचन तन घन वर रच्यौ रंग मिलि रंग जां नी
जाति सुवास ही के सारिला ई अंग ॥७४॥ टीका ॥
यह नाइका के अंग की गुराई सखी नाइका सौं क
हति है अथवा चलिवे की उनाइल करि अंग
राग कौ निवारनु करति है कै अंतराइ जोनि
नाइक नाइका सौं कहतु है ॥७४॥ कवित्त ॥ जो
कछु तोतन मैं तरुनी सु रंनी नलहै रति रूप न
काई ॥ तांपर जोवन जोति जगे कवि को वरनैं
कवि की सरसाई ॥ रंग मैं रंग समोइ गयो जव
कंचन सेन नमैं घसि लाई ॥ अंग सुगंधन की
न लहै सरि के सरि वासु ही नैं लखि पाई ॥७४॥
दोहा ॥ कै क हूर मन मैं रही मिलि तन दुति मु
कतालि ॥ छिन छिन षरी विचछनौं लहत तंबो
इ तनु आलि ॥७५॥ टीका ॥ यह अंग दीप्ति की
निकाई सखी नाइक सौं कहति है सषी है सौं क
हे तो वनैं ॥७५॥ कवित्त ॥ कुंदन से गात जलें
जोतु से नयन जाकी दीपति जु काई सी भवन
मांझ वै रही ॥ कंचन की चौकी पर वैठी वर स्वाल
साऐं सकल सिंगार जोति जगमगि कै रही ॥
मोतिन की माल सजनी नैं पहराई सु तो तन दु
ति मिलत कहूर की सी कै रही ॥ एक अचलीच

वि०स० चतुरजकीसीचकिरहीएककरिवेकोंनिह
॥१९॥ चैतिनूकाहाथलैरही॥७५॥दोहा॥सोहतधो
नीसेतमैंकनकवरनतनवाल॥सारदवार
दवीजुरीमारदकीजनुलाल॥७६॥टीका॥यह
नाइकाकीगुराईसषीनाइकुसोंकहतिहै॥७६॥
कवित्त॥कंचनवरनतनवनकअनूपमांनौ
रूपकीअवधिमनमथकीरसालहै॥एकधो
नीसेतमैंअनेकछविछितवालमानौहेमम
उलीमैंचंपककीमालहै॥सरदघटानुमध्य
दांमिनीलसतिकिधौंछीरसिंधुमांझवडवा
नलकीज्वालहै॥सुरसरिसोतमैंसुधानिधि
कीकलाकिधौंसंकरकेअंगलसेपारवतीवा
लहै॥७६॥दोहा॥कहाकुसमुकोकौमुदीकि
तेकआरसीजोति॥जाकीउजराईलषैआंषि
उजरीहोति॥७७॥टीका॥यहनाइकाकीउजराई
सषीनाइकुसोंकहतिहैनारकहूकेहैनोसंभवे
७७॥कवित्त॥वालवेनीवरवांनिकवैसदईवि
धितेसीयसुंदरनारी॥फूलनकीदुतितूलान
होतिअतूलपभाअंगेअंगनिछोरी॥चेतकी
चांदिनीचारुकितीअरुआरसीहूरतीजो
तिनपाई॥न्यारहीउजरीहोतिहैआंषिनिहा
रतवाननकीउजराई॥७७॥दोहा॥वरवासस ॥१९॥

कुमारनासवविधिरहीसमाइ॥ पंखुरीलगीगु
लावकीगातनमजांनीजाइ॥७८॥टीका॥यहना
इकाकीसहजसुगंधजोवनकीअरुनाईसुकमा
रतासषीनाइकुसौंनिवेदनुकरतिहैजोनाइ
ककीसेजकीपांषुरीजांनिसषीनाइकुसौंक
हैतौलछिनाहोइ॥७८॥कवित्त॥बीनतिफूलनम
रेउरफूलंषभातसमैंसुषसेजतेंजागी॥आवै
नहांमनमोहनप्यारोषुभालबिरीकिरहीसव
नुरागी॥वैसीईरंगसुगंधहवैसियेवैसियेको
मलताइसपागी॥कौंनहूंभांतिसौंजांनिपरीन
गुलाबकीपांषुरीगातसौंलागी॥७८॥दोहा॥रं
चनलंबियतुपहरियौकंचनसेतनबाल॥कुं
मिलांनैंजांनीपरतिउरचंपेकीमाल॥७९॥टी॰
यहनाइकाकेअंगकीगुराईऐसीहैजुचंपेके
फूलेनिकीमालाजोनीनाहीजातिसोसषीना
इकुसौंकहतिहै॥७९॥कवित्त॥लाईवनाइषवी
नअलीनवचंपकमालसुगंधभरीहै॥लेअप
नेकरमैंनवनागरिहसकैहैउरमैंपहरीहै॥
कंचनसेतनकीछविमांझगईमिलिरंचनहीं
उघरीहै॥चाहिरहीसजनीचकिसीकुंमिलं
नीइगईतवजांनीपरीहै॥७९॥दोहा॥लिष
नवेठिजाकीसवीगहिहिगारवगरूर॥भयेन

केतेजगतकेचतुरचतेरेकूर॥८०॥टीका॥य
हनाइकाकीनिकाईसषीनाइकुसौंकहति
हैअरुप्रगटकरतिहैकिवाहिदेषतसात्विक
भावहोतहैजौवैसंधिकहियेतौहूसंभवैया
तेंचतेरेनपैक्योंहूलिषतवनतनाही॥८०॥
कवित्त॥रूपकीअवधिऐसीऔरनवनाई
विधिजाकेलषिवेकोंलालदेवतामनाइवौ॥
ताकीसोभालिषिवेकौंवैठतुगरबुकरिआन
नहींमनहोतघूमिघननाइवौ॥ऐसीभांति
आईआइकूरकहवाइगयेचतुरचितेरेतिनैं
कैंहैलोंगनाइवौ॥हलसघानप्यारेवहचि
त्रनीविचित्रगतिकाहूपैनवन्योंवाकेचित्रा
कौंवनाइवौ॥८१॥दोहा॥अंगअंगछविकील
पटउपटतजातअछेह॥षरीपातरीहूतऊ
लगैभरीसीदेह॥८२॥टीका॥यहनाइकाकी
नाजुकताअरुदीप्तिसषीनाइकुसौंकहतिहै
८२॥कवित्त॥कंचनकुंजकुरंगकलानिधिकं
वुकीसोभासमाईसमाइहरीसी॥वानवनाग
रिकीनिसद्यौसरहैदुतिमैंननिमांझधरीसी॥
अंगनिअंगउमंगेअछेहप्रभाकीतरंगसरंग
भरीसी॥पातरीवाकीअंगेठिनईछविपुंजनली
गतिदेहभरीसी॥८३॥दोहा॥अंगअंगप्रतिविं
वपरिदरपनसेसवगात॥दुहरेतिहरेचौहरे ।२०।

ध्रुपन जांनें जात॥८२॥टीका॥यह नाइका के अंगकी उजराई सषी नाइकसों कहै सषी सों कहै सो सब भांति है भवै जो नाइका सषी सों कहै तौ रूप गर्विता होइ॥८२॥कवित्त॥बदनें विलोकि ससिं समता लहैं न कैधौं हूं लोचन निहारें जलजात हू लजातु है॥नागरि नवेली नष सिष लौं निकाई भरी वानि कुं विचित्र लषि लोचन सिरातु है॥ हम पांन प्यारे अति उजल लसत वाके मुकर से गात महा सोभा सरसातु है॥अंग अंग प्रति प्रतिबिंब पर कैं ऊधौ रएक रूप नू पनें अनेक जांनें जातु है॥८२॥दोहा॥बाल छबीली तियनु में बैठी आपु छिपाइ॥अरगट ही पानूस सी परगट होति लषाइ॥८३॥टीका॥यह नाइका के अंग की दीप्ति सषी नाइकसों निवेदनु करति है नाइकु कहै तो संभवे॥८३॥कवि॥लौनें तन वारी वनवारी में निहारी प्यारी सुनि रही वाकी उजराई मेरे मन में॥कहै कवि हसि रहीं वाकी उजराई मेरे मन में॥ ऐसी ललित लुनाई लषें मेरें जो निदामिनी दुरी है जाय घन में॥छबि सों छबीली गुरनारि नु कीस कुचैन बैठी आपु अंगनि दुराइ तियगन में॥अरगट होति परगट पट दीप ग लों जोति जगमिगि रही अषिल भवन में॥८३॥दोहा॥मां

बि॰स॰
॥२१॥

नकुं विधि तन नअछुछु विरचछु राषिवे काज॥
डग पग पौंछन कौं किये भूषन पांयंदाज॥८३
॥टीका॥ यह नाइका केतन की छवि सषी नाइक
सौं कहतु है अरु सषी को वचन सषी सौं नाइक
कौ वे वचन नाइ कहै सौं होइ सषी हू सौं होइ नो सं
भवै॥८४॥कवित्त॥ तू ही तीनौं लोक की लुनाई
लुटि लाई देषें रूप की निकाई नंदलाल लला
लु चाए है॥ नेरी द्रुति आगें आली केचन के गह
ने पन्नी के फीके लागें ऐसे गातु छवि छाये हैं
॥ डीठि के परस ही तें मैले होत अंग ऐसी उज्ज
लता सहित विरचि नें बनाए हैं॥ तिनकी निका
ई रषवे राषिवे को हेत येतो ज्ञान को मानौं प
ग पौंछनां बनाए है॥८४॥दोहा॥ पत्रा ही तिथि
पाइये वा घर के चहुँ पास॥ नित प्रति पून्यौ
ई रहत आनन ओप उजास॥८५॥टीका॥ यह
नाइका के मुष कौ प्रकास सषी नाइक सौं कहति
है नाइक कहै सषी सौं कहै तौ सुमिरनु जानिये
॥कवित्त॥ ताते मांझ आनन की ओप को उजा
स रहैं गेह आसपास अति चांदनी विहार कै
॥ तिथि निरधार करिवे कौं केते सुघरगानि कवी
लि हूं मैं ब्रेर हत विचार कै॥ पत्रा षोलि देषि ना
सु तिथि कौ वताव फेरि पून्यौ ई कहत वह को
मुदी निहारि कै॥ कव हूं क पत्रा देषें कव हूं वद ॥८५॥

न प्रभाकहनसकति एकवातनिरधारिकै ॥
८५ ॥ दोहा ॥ लीनैं कुंसाहससहसकीनैं ञ्चत
न हजार ॥ लौं इन्दु लौं इनु सिंधु तनन पैरिनु पा
वत पार ॥ ८६ ॥ टीका ॥ यह नाइका के अंगनकी नु
हरनाई देषिकैं नाइकके नैन अदेषिकैं तहांई थ
कि तु कै रहतु है सो नाइकु सषीसों कहै सषी ना
इकसों कहै सषीसषीसों कहै ॥ ८६ ॥ कवित्त ॥ जो
नन की छबि कौं कवि कोविद के ते किती उपम
न वृतावत ॥ तानन की छबि कटि देषिबे कौं न वनैं न
लगै नउतै रन धावत ॥ साहस कै रिसपौं बघ
नैं वरू भांति अनेक उपाव वनावत ॥ सोभा
के सागर मांझ परे अबपैरत कैसैं हूं पार न पा
वत ॥ ८६ ॥ दोहा ॥ सहज सेत पचतोरिया पह
रत अति छबि होति ॥ जल चादरि के दीप लौं
जगमगात तनु जोति ॥ ८७ ॥ टीका ॥ यह नाइका
कौ तन की दीप्ति सषी नाइकसों कहतु है नाइ
कु है सषीसों कहै तो पूर्वानुराग जानियैं जो ना
इका सषीसों कहै तो रूपगर्विता होइ सषी सषी
सों कहै तो ऊंसं भवे ॥ ८७ ॥ कवित्त ॥ कनकवर
न तंन वन कवि चव वाल बाल मके उरवीज
आनंद के वोति है ॥ वाके आगैं वोरनि के गात
की निकाई लागै मन कैं निकट धरैं लागति
ज्यों पोति है ॥ जव पहरति पचतोरिया की स

रीतबतनकीयोंसहजजगमगतिजोतिहै।।
हलसंप्रांनप्यारेंछबिछाजतविमलजलंबा
टरिकेदीपतिपरगटहोतिहै ८७।।स्वप्नदरस
नदोहा।।देषैंजागितिनोवैमियेसांकरलगीक
पाट।।कितकेंआवतजांनभजिकोजांनेंकि
हिंवाट।।८८।।टीका।।यहस्वप्नदरसननाइका
सषीसोंकहतिहै।।८८।।कवित्त।।स्वेकनीरूप
रैजवहीतवहींढिगआंनिटिकेषगिकैं।।हे
रिहसेंरसकोंवरसेंवतरायमहाहितसोंपगि
कैं।।जागोतोडीठिपरैंनकछूअरुत्योंहीक
पाटरहेंलगिकैं।।यहजानेंकोआवतथोंकि
तकैंधुनिजातकवैकितकैंभगिकैं।।८९।।दो
सोवतसपनेंस्यांमघनहिलिमिलिहरतवियो
ग।।तवहीटरिकितहूंगईनीदोनीदननजोग
८९।।टीका।।यहस्वप्नदरसननाइकासषीसों
कहतिहैनींदकीनिंदाकरतिहै।।८९।।कवित्त
आलीविछोहमयोजवतैंछतियांवकुभांति
वियोगतईरी।।आजुललामनमोहनसोंसप
नेंमेंअचांनकभेटभईरी।।मैंसुविथ्थावहरा
यवेकोंहिलिकेंमिलिकेंरसकेलिवईरी।।नी
दहूंनीरविलायजवैतवहीकछूभागिगई
सुगईरी।।९०।।साक्षातदरसना।।दोहा।।नाय
कानायककौ।।लटकिछुटकिलटकतचल 

तुटटनमुकटकीछांह॥चटकुमरयौनटमिलि
गयोअटकमस्कवटमांह॥१०॥टीका॥यहसो
स्यानदरसनजैसीछविसोंदेष्यौहैनाइकुतैसें
हीनाइकासषीसोंकहतिहै॥१०॥कवित॥लट
किलटकिचलिनिरषतुवारवारफेरिफेरि
वाछांहमंजुलमुकटकी॥केसरिकीषोरिपर
कलितरुचिरभारकुंडललिलतसोहैवनमा
लटटकी॥कैगईविपनमगअटकमटकमें
टतवहीतेनैननिमेंषुभीसोभानठकी॥भूली
सुधिघटकीरीलोकलाजसटकीरीअटकी
हियेमेंफहरानिपीरेपटकी॥१०॥साक्षात्दर
सननाइकाकौदोहा॥चुनरीस्यांमससतारन
ममुषससिकीउनहारि॥नेहदवावततीर
लौंनिरषिनिसासीनारि॥११॥टीका॥यहसांवी
नदरसनजैसेंनाइकादेषीहैतैसेंहीनाइकु
सषीसोंकहतुहै॥११॥कवित॥उन्नतपीनउरोज
नकौजुगकोकनुकीछविपावतुहैं॥मुषसोर
तुसोमजुकैयाहंसीदुतिदीपगुमोदवढाव
तुहै॥कविवसविराजतचूंनरीस्यांमससार
कर्योमुलषावतुहै॥वहजामिनिसीगजगा
मिनिदेषतनीदस्योंनेहदवावतुहै॥११॥इष्टा
नुरागनायकाकौदोहा॥सनिकज्जलचषझं
षलगनउपज्योसुदिनसनेह॥क्योंनन्पति

वि०सं० कै भोग वैं लहि सुदेस सवु देह ॥ २४ ॥ टीका ॥ यह इ
॥२३॥ ष्टानुराग है नाइका के नेत्र अंजन सहित देषि
नाइका सौं कहतु है नाइका परकिया नाइका
सषी सौं कहै तौ संभवै ॥ २४ ॥ कवित्त ॥ देषी एक ब
निता बिचित्र बरवांनि कसौं जाकी जोति हीसौं
जोति मगिर ह्यौ गेऊ है ॥ बिहसि बिहसि मृदु बो
लत सरस बांनी बरसतु मानौं अमी वृंदनु कौ
मेऊ है ॥ कहै कवि हंस कौंन नृपति है भोग
कै रेरजे धांनी सकल सुदेसु पाई देऊ है ॥ नैंन
मीन लगन पै अंजन तुल सतु शानि चैसे सुभजो
ग समै उपज्यो जु नेऊ है ॥ २५ ॥ इष्टानुराग नाइका
कौ दोहा ॥ मोहूं सौं तजि मो हग चले लागि उहि
गैल ॥ छिन कु छ्वाइ छ्वि गुरु डरी छ्लै छबीली
छैल ॥ २६ ॥ टीका ॥ यह इष्टानुराग है नाइका कौ
देषि नाइका कौं अनुराग उपज्यो है सु नाइका
सषी सौं कहति है नाइका परकिया ऊढा ॥ २६
॥ कवित्त ॥ जा घरी तैं मोहनी कौ मंजु डारि दीनौं
उनि रूप की मिठाई ता घरी तैं कल न मनै हैं ॥ त्यौं
ज्यौं हव करि रोकि रही ओट अंचल की त्यौं त्यौं
अति बेल करि उनही कौं हलै हैं ॥ मोहूं सौं जु
ऊतौ नातौ पलक मैं करि हीतौ छोडि सब तौ
तौ वाकी गैल लागि चले हैं ॥ नैंद कौ कुंवर स्या
ली वी सवि सिठ गुहैरी देषत ही देषि मेरे दोऊ नैं ॥ २३ ॥

न छूले हैं ॥८३॥ चेष्टा दोहा ॥ केरि कछू कौं रपो
रितें फिरि चितई मुसकाइ ॥ आई जामुन लैंन
ज्यिन ने है गई जमाइ ॥८४॥ टीका ॥ यह नाइका
परकिया जु चेष्टा याकी देषी है सो नाइका सषी
सौं कहतु है ॥८४॥ कवित्त ॥ वेली लियें कर आई
[illegible] अचांनक कंचन वेली सी बाल अकेली
॥ जोवन जोति जगी अति की रति की दुति ले
जिहि पाइ निपेली ॥ कठमसौं मुरि कैं चितई
सु मनौं मुसकांनि मैं मोहनी मेली ॥ जांमुन
लैरस जामुन दैयों गई ज्यिय नेह जमाइ नवेली
८४ ॥ दोहा ॥ चितवनि भोरे भाइ की गोरे मुह मु
सकांनि ॥ लागनि लटकि अली गरैं चितव
टकनि नित आंनि ॥८५॥ टीका ॥ यह नाइका
की चेष्टा सषी नाइका सौं कहति है नाइका कुंहस
षी सौं कहै है पूर्वानुराग हहो दसअव
स्थानु के भेद मैं सु मिरनु जानियें ॥८५॥ कवित्त
भूलत नन क्यों हूं मोहि वा की सुषदांनि वांनि
वह अंगरांनि अंगुरीन चटकाय कैं ॥ वह गो
रे वदरारे वदन की मुसकांनि वह चष हवेह
चितवनि भोरे भाइ कैं ॥ घूंघट करे निकर कै
मल र मारि वृह लट कि मिलनि सजनी सौं
लपटाइ कैं ॥ ऐसी भांति जब तें मैं निरषी है तन

वि०स० ॥२४॥

वहीतैं पलपल मांम षट कत सब आइ कै
२५ ॥दोहा॥ उमी भीर रह्यो भेरि कैं कित हूं कैड
न आइ ॥ फिरै डीठि तुरि डीठि सों सब की डीठि
बचाइ ॥ २६ ॥ टीका ॥ यह नाइका के चितैवे की
चतुराई सषी संषी सों कहै तौ होइ नाइका
परकिया ॥ २६ ॥ कवित्त ॥ सौंनैं से गात सुहाई
सी वैस सनेह सनी रस कों वरसावै ॥ चाह के
चाइ तु की चतुराई कहौं लौं कहौं कटतें नहि
आवै ॥ भीर भई अति भारी तऊ मन भायो करै
कोऊ भेद न पावै ॥ घात गहैं तुरि रीठि सों डी
ठि फिरैं सब की वह डीठि बचावै ॥ २६ ॥ दोहा ॥
गडी कुटंब की भीर मैं रही बैठि दै पीठि ॥ तऊ
पलक परजात सज नेह सों ही डीठि ॥ २७ ॥ टी
यह नाइका के सनेह निकाई अरु चितैवे की
चतुराई नाइकु कहै तु है नाइका परकिया ॥
२७ ॥ कवित्त ॥ प्यारी प्रवीन सनेह सनी न षतै
सिष लै सुष की निधि त्यौं ही ॥ कैसें हूं मोउ र
तैं नटरै नु तु भी चित चाह निनेह निबौरी
॥ बैठी वधू गुस्मा रितु मैं तऊ नारि न वाइ ष
रीस कुवौं ही ॥ लाजन पगी पल एक न तऊ परा ॥
जात इतै वह डीठि हसों ही ॥ २७ ॥ दोहा ॥ नहि न
चाइ चित वतिउगनि नहि वोलन न मुसकाइ ॥
ज्यों ज्यों रूप रूपो करै त्यों त्यों चितवि कनाइ ॥ २८ ॥

९८ ॥ टीका ॥ यह नाइका की चेष्टा नाइक सखी
सौं कहतु है कि वह रूप आई मेरे चित्त कौं चिक
नावति है ॥ ९८ ॥ कवित्त ॥ जोरत नैना चै नन
चाइ न हि चाह भरी मृदु मुसिकानि कौं नु भा
उ हरस्या तु है ॥ बोलत न कैहूं मन मोहन मधु
र बैन मोर तै नु भृकुटी मरोरत निगातु है ॥
कहै कवि हुलसत्वा की गरबीली वांनि कै छूस
हूजै वसी कर कौं मंत्र जान्यौं जातु है ॥ ज्यों ही
ज्यों रहत प्रान प्यारी राधा रूप रूपा कौ रत्यौं
ही त्यौं बेरी इबेरी चितु चिकनातु है ॥ ९८ ॥ सौ
चिनई ललचौं हैं च षनु उठि घूंघट पट मां
हा ॥ छल सों चली छुवाइ कै छिनु कछुबी ली
छाह ॥ ९९ ॥ टीका ॥ यह नाइका परकिया है जु
वे छोक रि गई सो नाइकु सखी सों कहतु है
९९ ॥ कवित्त ॥ हूर न सुधा निधि सो वदन दिपा
करि घूंघट के पट मैं ढ्कै निरषि निसंक चि तव
नि लचौं हीं चाह ची कवी जनमा इकै ॥ कहै क
वि हुलस मृदु मुल कि अली की वोर चलि कोहू
छल सौं छबीली छांह छ्वाइ कैं ॥ हा हा कहि को
ही जाहि येती छवि सों ही वह मोहि नैंन टंरत
रही जु री झि छाइ कैं ॥ १०० ॥ दोहा ॥ त्रिवलीना
भि दिषाइ कै सिर ढकि सकुचि समाहि ॥ ग
ली अली की ओट कै चली भली विधि चाहि

बि॰ स॰ ॥२५॥

१००॥टीका॥यह नाइका पर किआकी चेसटा देषी है सुनाइकु सषी सौं कहतु है॥१००॥कबित॥आजु मैं अचांनक बिलोकी ब्रजबाल एक बाकी दुति रही मेरे उर मैं बिहारि कै॥दामिनी लहैन चारु चातुरी कला इ नेक कांम हू की कामिनी करोरि डारौं वारि कै॥त्रिवली उघारि कैं दिषाइ कैं गंभीर नाभि घूंघट निकुरि कीनौ सकुचि समारि कै॥भांति भली सो करी गली मैं गजगामिनी अली की बोट गहैं चली गई यौं निहारि कै॥१००॥दोहा॥उगकुटि गतिसी चलि ठटुकि चितई चली निहारि॥लियें जाति चितु चोरटी यहै गोरटी नारि॥१०१॥टीका॥यह नाइका की चेष्टा सषी नाइक सौं कहतु है॥१०१॥कबित॥मनमथ बानसे चपल अनियारे चष अधर अरुन दुति अति सरसाति है॥सौंनें से सुदेस तन बौंनें से उरोज लौंनें कौन की न मति लषि कौं ललचाति है॥उगुए कुटि गतसी चली फिरि ठाढी भई वकुरि बिलोकि चली मुरि मुसकाति है॥जोवन मरोर भरी गोरटी गयंद गौनकौं नु यह चोरटी चुराये चितु जाति है॥१०२॥दोहा॥मौंह उचे आचरु उलटि मोरि मोरि॥२५॥

मुहमोरि॥नीठिनीठिमीलरिगईउ़ीठिठीठिसैं
जोरि॥१०२॥टीका॥यहनाइकाकीक्रियाजु
देषीहैसोनाइकुकौचित्तमैंवसीहैवारवार
सषीसौंकहतुहैनाइकापरक्रिया॥१०२॥कवि
रूपकीअपारप्यारीछटीनिजगेह छारजा
कीछुविपररतिवारियंकरोरिकै॥मोहिदेषि
नैसकुलजारकैंचटाइमौंहवाहीचितवु
निमांझलीनौंचितचोरिकैं॥मोरिमोरिमु
हजमुहांनीअंगुरांनीपुनि आलिसवलि
तनैननवटुरारेटोरिकैं॥नीठिनीठिगईमीं
नमीनरसरोजमुषीदीठिसौंमिलाइडीठिनि
कैनेकुजोरिकै॥१०४॥दोहा॥ऐंचतिसीचि
तवनितैभई ओटअचलमाइ॥फिरिउझक
निकौंमृगनयनिदृगमिलगनियांलाइ॥
१०३॥टीका॥यहनाइकाकीचितवनिदेषिना
इकुकेचितमैंवसीहैसुनाइकसषीसौंकह
तुहैवेसैंहीफिरिचितवेयहअभिलाष॥
१०४॥कवित्त॥षिरकीउघारिनवनागरिनिहा
रिपनतौवनवारीमनमथछविछायकै
॥विहसिविलोकीससिवदनीलजाइकैसुषै
चनिहीमनुभईओटअंचलमाइकें॥लगनिल
गाइचितुलैगईचुराइकैंविहारीलालरयोठ

गकौंसीछ्रीषाइकैं॥ उनचितवनसबकानवि
सराइकैंसुफिरिअवलोकिबेकीआसुउरला
इकैं॥१०३॥दोहा॥ बैठाहेउमदाहउनअल
नबुझैबडवागि॥ जाहीसौंलाग्यौहियोना
हीक्यौंउरलागि॥१०४॥टीका॥ यहनाइकाकौं
देषिसषीसौंआलिंगनुकरतिहैसोसषीउ
गटकरतुहैनाइकासौं॥१०४॥कवित्त॥ आंगम
रोरिभुजाभरिभेंटतमोसौंकहाइठलाति
हैठाली॥ पांनीकीआगिसिराइजुपांनीसौं
रीतिकहौकबतैंयहचाली॥ जाहउनेउम
दाहभलीविधिठाटौहैदेषिबहैबनमाली
॥ जाहीसौंनेरौलग्यौहियकौहितुताकैंहि
यैंकिनलागतिआली॥१०४॥दोहा॥ देषौ
अनदेषोकियोअंगअंगसबदिषाइ॥ पैठ
तिसीतनमैंसकुचिबैठीचितैलगाइ॥१०५
टीका॥ यहनाइकापरकियाकौचितैबोल
जकरिबाद्यौसोनाइकसषीसौंकहतुहै॥
१०५॥कवित्त॥ सोहतुसरूपसनीबैठीहौछ
बीलीबालहैंहूतहांनिकस्यौअचानकेही॥
आइकैं॥ मेरीओरदेषिउनदेष्यौअनदेष्यौ
करिमुसिक्यानीअंगअंगसकलदिषाइकैं
॥ पैठतिसीतनमैंसकुचिमनऔंचितैसीचि 

नवनि चाहियै ही सिमटि लजाइ कैं ॥ वह मुस
कांनी चितवनि सकुचि नक्यौं हूं टरति निरही
मेरे हियें मैं डराइ कैं ॥ १०५ ॥ दोहा ॥ चिलकिचि
कनियाचट कसौं लफति सटक लौं आइ ॥ ना
रि सलौंनी सांवरी नागनिलौं डसि जाइ ॥ १०६ ॥
॥ टीका ॥ यह नाइका की सांवरी छवि देषि नाइ
क आसक्त भयो सु सषी सौं कहतु है ॥ १०६ ॥ क
विलकनु चारु चिकनाई की चटक भरी चल
नलफनि जैसें लगलचकनि है ॥ सांवरी सलौं
नी अनिलौनी अन्यौं हौं नी वैस सोभा सनी सी
समनैंसि हित लसनि है ॥ कुटिलसुभाइ चितव
नि पैंम विषभरी नागनि सौं इहि ब्रजनागरि
वसति है मन कौं डसति अरु तन कौं लहरि आ
वै लागत न जंत्र मंत्र चरमु न गति है ॥ १०६ ॥ नै
त्र लगनि दोहा ॥ मैं हूं जान्यौ लोइननु जुरत वा
ढिहै जोति ॥ को हैं जानत डीठि कौं डीठि किरकि
री होति ॥ १०७ ॥ टीका ॥ यह नाइका अपनें नेत्र
नु की आसक्ति सषी सौं कहति है अरु यह प्रगट
करति है कि जब तें आंषि देषी तब तें और कछू
सूझतु नांही ॥ १०७ ॥ कवित्त ॥ जा दिन तें आली
तें कही कि मनमोहन के लोचन सलौंनै देषें
अति हित बाढि है ॥ जा दिन तें मैं हूं यह जानी चा
रि नैंन भयें जोति को प्रकास कछु अधिकाई चा
ढि है ॥ जोरत ही नैंन भयें विथा तन मैं वगई म

दनऊतासनवरतडारिजातिहै॥ कौनयहऔ
ननतुहोंडीठिहीकौंडीठिबीरहोतकिरकिटी
कोऊसकतनकाढिहै॥१०७॥ दोहा त्यौंत्यौं
प्यासेईरहतज्यौंज्यौंपियतअघाय॥ सगुनस
लौनेंरूपकौंजनुचषतृषाबुझाय॥१०८॥ टीका
यहनाइकाकेनेचलगेहैंसुसषीसषीसोंकह
तुहै॥१०८॥ कवित्त हरिमुषचंदत्यौंचकोरकै
रहतिजांनिलोचनकमलगतिभौंरनकीम
हतुहैं॥ देषनहूंदेषतरहतदिषसाध लगी॥
होतअनमेषयौविशेषउमहतुहै॥ दोनौंकठ
हलसपानप्यारेकौसलौनौंरूपतानैंनवुझत
चषाकलनलहतुहै॥ अपतनहोतक्यौंहूंमा
ईरीनइननमेरेपियतेंअघायत्यौंत्यौंप्यासेईर
हतुहै॥१०८॥ दोहा॥ अलिइनलोइनुसरनु
कौंयहेविषमसंचारु॥ लगेंलगायेंएकसेदोक
नकरतसुमार॥१०९॥ टीका यहअपनेंनैनन
कीअवस्थासषीसोंकहतिहैनाइकाकहैअ
थवानाइकुकहै॥११०॥ कवित्त सरुजाकैंला
गेताहिसुधिनरहेनकछूजोहनतुनाकेउर
रंचकविथानहै॥ तिननतेंअधिककुसमायुध
केपांचौंवांनजनेकेलगेतेंटरैमुनिनकेध्यान
है॥ हलसपांनप्यारेकीतुहाईजियजांनिआ
लीसवहीनेंविषमविसेषनैंनवांनहै॥ इहंन

विकलकरैंजनननलगैनआंन इहूंभांतिग्रेह
लागैचैंनहूंसमांनहै॥१०२॥दोहा॥द्रगनु
लगतवेधनहियहिंविकलकरतअंगआंन
॥एतेरेसवतैंविषमईछनतीछनवांन॥१०३
टीका॥इहनाइकाकेनेत्रदेषिनाइककूंविक
लताईभईसषीनाइकासोंकहतिहै अथवा
नाइकुनाइकासोंकहै॥१०४॥कवित्त मोंहकमां
नविनांजिहतेंछुटिटेंढेचलेंउकूंओरअंतै
रे॥नैंननिऔनिअबूकलगैंहियभेदतक्यौं
हूंफिरैंनहिफेरै॥औरसवैअंगव्याकुलकैस
रसाततिविथापहरातघनेरे॥रीतिगहेसवतैंवि
षमैंविषमैंसरतीछनईछनतेरे॥१०५॥सोरठा
कौडाआसूबूंदकसिसांकरबरुनीसजल॥की
नैंबदननिमूंदद्रगमलिंगडारैंरहत॥१०६॥टीका
यहनाइकाकेनेत्रनाइककौंदेषिविवसभयेहैं
आसक्तहैसषीसषीसोंकहतिहै॥१०७॥कवित्त
तैंजबतैंब्रषभांनसुताहरिकेद्रगनैंकनिहारि
हरेहैं॥तबतैंनहलैंनचलैंरहैंबाहीचितौं
निकीचाहभरेहैं।कोउकियेअंसुवानकीहू
रजंजीरबहीबरुनीजकरेहैं।मैंकअबेउनकी
सुधिलेकूमलिंगमनोंमुहमुद्रिपरेहैं॥१०८॥
॥दोहा॥कहतसवैकविकमलसेमोमतनैंनप
षांन॥ततरकुकतइनवियलगतउपजतवि

रहहसांन॥१२॥टीका॥यहनेअलमानिहैयहवं
चननाइककहैतौवनैंनाइकाकहैतौहूसंभवै
१२॥कवित्त॥वरनवरनद्रगकहतसकलनका
विकमलकुरंगमीनषंजनसमांनहैं॥कहैक
विहसारचिपचिचतुराननेलोचनएपांह
नवनायेमेरेजांनहैं॥कमलसोंकमलल
गायदेषोकैयोवेरएकआंककवौंहूंउपनन
कसांनहैं॥लागतहीवियनैंनवहीउपछि
उठैलगनिअगनियानेंप्रगटप्रमांनहैं॥१२॥
दोहा॥सवहीसोंसमुहातिछिनुचलतिसव
नुदेपीठि॥वाहीसोंठहरातियहकविलनुवा
लौंडीठि॥१३॥टीका॥यहनाइकोलछिनासंस
षीनाइकसोंकहतिहैसषीकोवचनसषीहू
सोंवनै॥१३॥कवित्त॥नालमनमोहनकी
विपरहतोवलिरीफिरहीमोहिवहरातिहैंभो
रीज्यों॥प्रीतिउरअंतरकीप्रगटविलोकियतु
सोंहकियेंकैसंनिवहतचोराचोरीज्यों॥सवकों
लषतमिलैंकाहूसोंननेरीडीठिपीठिदैवल
तपुनिसवहीकीओरीज्यों॥इतउतहेरिचित
चोरहीकीओरआइरहतहैठहराइमेंचकी
कदोरीज्यों॥१३॥दोहा॥टरैंटारतेंटरतन
हजेंदारदरैंनं॥क्योंहूंआंननआंनसोंनैंना
लागननैंन॥१४॥टीका॥यहनाइकआपनें

नेत्रनकीआसक्तकहतुहै अरुनाइकाकेअम
हैकिनाइककीओरसौंआसक्तहैसोनाइकाकोअ
मुहरिकरतुहैजोनाइकानाइकसोंकहैतौउ
दाहरनकहूंसंभवै ॥२४॥ कवित्त ॥ औरनैंवांनिप
रीसुपरीनटरैवहकोटिउपाइकियेंहूं ॥ कुम
कहैजितरीझिरचेतितनैंनचलेंनकहूं औ
ननआंनसोंयेडगनैंकनलागतकेंहूं ॥ त्यौं
हींढरैंजिहढारटरैंनहिहूसरैढारटरैंसपनैं
हूं ॥२४॥ दोहा ॥ हरिछबिजलजबतैंपरेतबतैं
छिनबिछुरैंन ॥ भरतढरतबूडततरतरहतघ
रीलौंनैंन ॥२५॥ टीका ॥ यहनाइकाअपनैंनें
त्रनकीआसक्तिसषीनाइकसोंकहतुहै ॥२५
॥ कवित्त ॥ आजुनिरष्योमैंब्रजराजकोकुंवरकी
कन्नाकेअंगअंगआलीमनहिहरतुहै ॥ छ
मप्रांनप्यारेकीदुहाईबानिकाइदेषैंकोरिर
तिपतिअतिलाजनमरतुहै ॥ नाकीसोभास
लिलमंजबतैंनयनअरेतबतेघरीलौंछिन
हूंनबिसरतुहै ॥ ऐसेभयेरततहीकरतअनें
कभावभरतढरतपुनिबूडततरतुहै ॥२५॥
दोहा ॥ नैंनलगेतिहिलगनिछुटनछुटैंछुटेंप्र
आंन ॥ कामनआवतएककहूंतेरेसेकसयांन
॥२६ ॥ टीका ॥ यहनाइकानबोढासषीसिछादेतु

ललुवेहं आंनकियेंकहें ६

वि॰स॰ हैनासौंअपनीइहतेकहतिहै॥२६॥कवित्त
॥२९॥ नैंनतुअैसोगह्यौहितकौपनुचैनुलहैअ
वनैंहरिहेरैं॥प्रांनछुटैहूंनवांनछूटैजुगुरुनौं
नहूंसेउपहासघनेरैं॥कोकुलकांनिकहीव
पुरीगईलाजलजाईनआवतुनेरैं॥नेरेमट
अवसेकुसयांनयेतकहूंकोमनआवननमेरैं
॥२६॥दोहा॥लालनतुम्हारेरूपकीकहौरीतियह
कौन॥जासौंलागतपलकुपललागतपलकुप
लौन॥७॥टीका॥यहनाइकाकीअवस्थासषी
नाइकुसौंकहतिहैकिजवतेंतुमदेषेहौनवतें
वाकेपलकहूंनांहीलागतुहैंनाइकाहूनाइकु
सौंकहैसोसंभवै॥७॥कवित्त॥वारकदेषैंसुभौन
रहैहिषसाधलगैकुलकौनिमगे॥मोहनीरी
तिकछूमनमोहनुरावरेरूपकीयोंउमगे॥कौन
ठगौरीनहीकितकौकरमैंनवसीकरमंत्रपगै
॥जाकीकहूंपलएकलगैपलनाकीपलौपल
कैनलगै॥७॥दोहा॥हेहियरहनहं ईछेईन
रनुगतपजगजो॥डीठिहिडीठिलगेदईदेह
दूवरीहोइ॥८॥टीका॥यहनाइकाकेनैननाइ
ककौंदेषिकेलगेअरुदेहदूवरीहोतहैसुना
इकाअथवानाइकुसषीसौंकहतुहैसषीसषी
हूंसौंकहैतोवनैंअरुसुनतहै॥८॥कवित्त॥देष
तदेषतहूंनलनहैकलपैंममकूरउठैअनिभा ॥२९॥

री॥ देषे बिनां न सुहाइ कछु पुनि हाइ रहै अति
होतु दुषारी॥ आकुल कै अकुलाइ महा पुनु
जाइ रहै निसि नीद बिसारी॥ नैंन लगैं तन हूव
रो होइ अनोषी सनेह की रीति बिहारी॥१८॥ दे
शनि अंषियां दुषियांनु कौं सुष सरस्यो ईनां हि
॥ देषैं वनैं न देषतैं अनदेषैं अकुलाहि॥१९॥
॥टीका॥ यह नैंन पालै वनाइका अथवा नाइ
क सषी सौं कहै॥१९॥कवित्त लागत न पलक
लक रूप लषि बे की चाही ध्यांन पगति जग
ति दिन राति है॥ ज्यों ज्यों निरषति त्यौं त्यौं अम
हति भूषी क्यौं हूं होत न अघाहु पी परी परील
लचाति है॥ औ टम येंवरत विंष मवि रहा गनि
में मीन जल हीन की सी गति दरसाति है॥ सि
र्यो न सुष दृनि दुषि हाई आंषिन कौं देषें न अ
घात अनदेषें अकुलाति है॥१९॥दोहा॥ देषतु
कछू कौतिगु इतै देषौ नैंक निहारि॥ कब की
इकटक डटि रही टटिया अंगुरिनु फारि॥२०॥
॥टीका॥ यह नाइका कहूं कै नाइकु कौं देष
ति है सो सषी नाइकु कौं वाहि दिषावत है स
षी कौ वचन नाइकु सौं प्रीति कराइवे कौ वचन
जनु॥२०॥कवित्त॥ मैं न कहूं नैंक अंन मन मोह
न नूपमा गी छवि नैंन नि मैं पुभी हज वाल री

बि॰स॰ झिवारिकैं॥वगरकौवासुसासुननदकौत्रा
॥३०॥ सुनातैंनिरबिसकैनप्यारीवदनउघारिकैं
॥विनदेषैंकलनपरतियातेंदेषिवेकौंकह्यौ
हैउपाउदेषौइनधौंनिहारिकैं॥कवकीनिमे
षभूलनलोचनलगाइइतउटिरहीटाटीकर
पत्रवसौंफारिकैं॥२०॥दोहा॥चकीजकीसी
ह्वैरहीवूझैंवोलतनीठि॥कहूंडीठिलागीलि
काहूकीडीठि॥२१॥टीका॥यहनाइकालछित
हैसषीनाइकसोंकहतुहैसषीहूसोंकहै॥
२१॥कवित्त॥आजुचकीसीजकीसीकहाकेधुं
अंगसम्हारिहिराईसीहेरी॥वूझैंहूंनीठिक
२ हैमुषवैंनसैनचलैजतुचित्रउकेरी॥मेरीन
षैयहतेरीनईगतिमोमतिसोंवसहूहनधे
री॥डीठिलगीकिधौंकाहूकीतोहिकिडीठि
लगीकहूंकाहूसोंतेरी॥२१॥दोहा॥नेहनतैं
ननिकौंकछूउपजीवडीवलाइ॥नीरभरेनि
तिवतिरहैंतऊनप्यासवुझाइ॥२२॥टीका॥यह
नाइकाअथवानाइकअपनैंनेत्रनुकीअव
स्थासषीसोंकहैसषीसषीसोंइनकीअवस्था
कहैतौहूसंभवै॥२२॥कवित्त॥एकपलकौनलल
गैपलकैंललकैंलषिवेकैंहेलागीचटी॥:
नीरभरेनिसद्यौसरहैंनमिटैतौउनहरितृषा
उपटी॥आदहैजामनपैनरकैउपवारहूसौं॥३०॥

निघटै न घटी ॥ यह प्रीति लगी न हिआं बिन कूं
कोऊ पावक ब्याधि बुझै बगरी ॥ २२ ॥ दोहा ॥ कै
वा आवत इहि गली रहौं चलौ चलैं न ॥ २२ स १
न की साधैं रहैं रूपे हौ हि न नैंन ॥ २३ ॥ टीका
यह नाइका अपने नेत्रनु की दसा सखी सौं क
हति है देखौ तौ लाज तें देखौ नांहि सकति त्य
नु देखैं अकुलात हैं मध्या परकिया ॥ २३ ॥ कवि
का हू अली बकुवै रग [illegible] ली इहि आवत चा
गा रुसि रुकिये हूं ॥ देखिवे कौं तवरी नवहौं लल
चाइ रहौं न चलाये चलैं हूं ॥ लाज अचांनक
आइ उहै पछितात यहै अपने जिय मैं हूं ॥
सौं हैं चितवे की साधें रहैं उरस्रु थे बिलोचन हे
तन कैं हूं ॥ २३ ॥ दोहा ॥ साजें मोहन मोह कौं मे
ही करत कुचैन ॥ कहा करौं उलटे परे टौने नैंलौ
नैंन ॥ २४ ॥ टीका ॥ यह नाइका प्रोढा परकिया
नाइक कौं देखिवे की ब्या के अकुलातु है सुषी म
सखी सौं कहति है ॥ २४ ॥ कवित्त ॥ बूझति हौ स
नि भाइ सखी इह सी बर कैं सिषई कहि कौं नैं ॥
मैं सजु मोहन मोहि वे कौं वडु आंखें लेन साजवना
इ सलौंनैं ॥ देखत ही ललचाइ रहे अब ए अ
पनैं सपनैं हूं न हौंनैं ॥ मोहि कौं दैन लगे उपनैं
न हैं ज्यौं उलटे परजात हैं टौनैं ॥ २४ ॥ दोहा ॥ मे
हसैं उड़ि मो ऊंडग बलै लागि उहि गैल ॥ छि

वि०स०
॥३१॥

नंदकुमार इक विग्रह डरी छवि लेहु छबीले छैल ॥
२५ ॥ टीका ॥ यह नाइका अपनैं नेत्रनु की आ
सक्ति सषी सौं कहति है ॥ २५ ॥ कवित्त ॥ जा घरी
तैं मोहनी कौ मंत्र डारि दीनौं ऊन रूप की बि
ठाई ता घरी तैं फलु मलै है ॥ केतो हठ करि रो
कि हारी ओट अंचल की त्यौं त्यौं अति बल
करि उनहीं कौं चलै है ॥ मोहि सौं जु रूठे तौ ना
तो पलक मैं करि हां तो छोडि सब तौं तौ वा
की गैल लागि चलै है ॥ नंद कौ कुंवर आली
षी सखि लै ठगु है री देखत ही देखि मेरे दोऊ नै
न छलै है ॥ २५ ॥ दोहा ॥ जो मन लगे हरि रूप के
करी साटि जु रिझाइ ॥ हौं इन्है वेची वीच ही लो
इनु वडी वलाइ ॥ २६ ॥ टीका ॥ नेत्र लग निना
इका को वचन नाइका सौं तथा सषी सौं ॥ २६ ॥
कवित्त ॥ नंद किसोर की मोहनी मूरति देषत ही
अति मो मन भाई ॥ नैन लगे लो भलगे डगां
आगे ई जाइ मिले मिलि साटि मिलाई ॥ आप
नौं स्वारथ साधो सवै विधि हौं इनि वीच ही वे
ची री माई ॥ केसौ करौं न कछू वनि आवति
नैंन निकैं मन मैं ते ठगाई ॥ २६ ॥ दोहा ॥ जसु अ
पजसु देखत नहीं देषत सामल गात ॥ कहा क
रौं लालच भरे चपल नैन चलि जात ॥ २७ ॥
टीका ॥ यह नाइका कौं सिक्षा देत है ता सौं अ ॥३१॥

पनैंनेत्रनुकीआसक्तिकहतिहै॥२७॥कवित्त
सानुरिसानतुकैननदीजेऊंसषीनुंसिषवैस
षीसीषकेबैना॥हैहूजुवासचवाइमईचकु
चौरचलैंउपहासकीसैंना॥देषतसुंदरसांव
रीमूरतिलोकअलोककीलीकलबैना॥कै
सीकरौंहटकेनरहैंचलिजाततऊलचिलात
चीनैंना॥२७॥दोहा नैंनानैंकनमांनहींकितो
कह्योसमुझाइ॥ततमनहारैंहूहसैंतिनुसौं
कहांवसाइ॥२८॥टीका यहनाइकाअपनेंनेत्र
नकीआसक्तिसषीसौंकहतुहै॥२८॥कवित्त
सहियेंजगकेउपहासनितैंरहियेंगुरुलोगन
मांझगसैं॥उरआंनियहैअपनैंउरहौंसमु
झाइरहीनहिनैंकत्रसैं॥अरुरंचकमेरोक
ह्योंसजनीयनुनैंननिपेहरिहेरिहसैंईहसैं
२८॥दोहा सकैसताइनतमविरहनिसदिन
सरससनेह॥रहैवहैलागीदृगनिदीपसिषा
सीदेह॥२९॥टीका यहनाइकुनाइकाकोध्य
नैंकरतुहैतऊविरहघटतुनांहीसुनाइकु
षीसौंकहतुहै॥२९॥कवित्त वामृगलोचनीकै
विछुरैंजुभईगतिसोनहिजातउचारी॥सुष
हसापरिहरनैनेहनिवातथलीउरअंनरधा
री॥जहपिदीपसिषासमनैंननिलागीरहैतन
कीदुतिप्यारी॥नहपिसूनैकछूनहियेंभरिपु

वि० स० रि रह्यौ विरहानल भारी ॥ २९ ॥ दोहा ॥ लाजल
॥३२॥ गो मन मोन हीनै ना मो वस नाहि ॥ ऐसु हनो
रतु रंगलौ चै चतहू चलिजांहि ॥ ३० ॥ टीका
यह नाइका सषी सौं अपनी आसक्ति के अनु की
अवस्था कहति है ॥ ३० ॥ कवित्त ॥ देषत वा नट
नागर की छवि फो दिपरै अटके न रहांही ॥ लो
चन लोल तुरी मुह जोर सुलाज लगाम कौं
मांनत नांही ॥ ऐं चत ही अपनै इनि कौं बलि
ये कन कै उत ही चलिजांही ॥ केसी करौं न हि
मौ वस ए कुल कांनि के चोरु फतैं न डुरांही ॥
३० ॥ चित लगनि दोहा ॥ फिरि फिरि चितव
त ही रहतु टूटी लाज की लाव ॥ अंग अंग छ
वि झौंर मैं भयौ भौंर की नाव ॥ ३१ ॥ टीका ॥ यह ना
इकु नाइका के अंग अंग की छवि पै रीझ्यो है
सु अपनै चित्त की आसक्ति सषी सौं कहतु है
३१ ॥ कवित्त ॥ जोवन महा नद रस रूप कौ सलिल
भस्यौ नरिलतन रंग हाउ भावन कौ भाव है ॥ अं
ग अंग छवि की उमंग झौंर भारी भौंर चपल के
टाछ तहां फस्यो चितु नाव है ॥ चलि पैन सक
ति चमतु रहै वाही ठौर तरकि तिनूं कौं जिम
टूटी लाज लाव है ॥ लागत न क्यों हूं कूल कां
नि की विसाल बली धीरज प्रबल पतवारी ॥ ३२ ॥

कोनुरावहै॥२१॥दोहा॥यतनतैंउतउतनतैंइतै
छिननकहूंठहराति॥जकनंपरतचकिरी
मईफिरआवतफिरिंजाति॥२१॥टीका॥यह
नाइकामध्यापरकियाहैसुयाकीबिबस्थास
षीसषीसौंकहतिहैजोसषीनाइकसौंकहै
तौहमभवै॥२१॥कवित्त॥जबतैंअटकीन
टनागरसौंतबतैंनकहूंमनलावतिहै॥ठ
हरांतिनहींछिनएककहूंनिसबासरज्यौंब
हरावतिहै॥कबहूंयतनतैंउतनेधावतहैकब
हूंउतनतैंइतैआवतिहै॥चकरीजिमज्यौंभ्रत
मानबधूपलकौनकहूंकलपावतिहै॥२२
दोहा॥कोजानैंकैहैंकहौब्रजउपजीज्यौंति
आगि॥मनलागैंनैंननतुलगैचल्यौनगलगि
लागि॥२३॥टीका॥यहनाइकअथवानाइका
केहृहानुरागनैंबिरहभयोहैसुबिरहकीअ
गनिसौंमनव्याकुलभयौसुसषीसौंकहतिहै॥
२३॥कवित्त॥हीसैंनप्रेमबरैंबिनुईंधनउन्नत
केआगैनसिषाहै॥नैसकुनैंननतुलागनहीम
नंआनिसबैअंगनदाहहै॥लोचननीरहरैंन
बुझैउपलीब्रजमैंकौउआगिमहाहै॥देषिकै
हीठिपरैंनकछुअबजानैंकैंआगैंथौकै
हिकहाहै॥२४॥दोहा॥डरनटरैनीरनपरेह
रैंनकालबिपाकु॥छिनकुछाकउछकेन

वि०स० ॥३३॥ फिरि बरौ विषम छबि छाकु ॥३४॥ टीका यह नेह
लगनि है सु नायक कुं अथवा नाइका सखी सौं क
है है कि छबि कौ छाकु बरौ विषम है सो विषम
ता वरननु करतु है ॥३४॥ कवित्त सुधि कौं न ध
रै नी इनै सकौ न परै महा मय तैं नर है सु षनि
कै रनु वाकु है । कहै कवि हेम कौं हूं एकै वेर छ
कै सुनौ उछु कैननैं कौन तमैं कौ परिपाकु है ।
सीरो लागैं वैर निसि दिनन र फरै बलगनि ॥
ति हरै धरै काहू कौ नु थाकु है ॥ और मनवारे
नैं तो मेरे मतवारे यह सब ही नैं विकट विषम
छबि छाकु है ॥३४॥ दोहा उडी गुडी लखि लाल
की अंगना अंगन समाइ ॥ बौरी लौं दौरी फि
रत छुवत छबीली छांह ॥३५॥ टीका यह नाइ
का परकिया दोहा है सु नाइक की अंग की छा
ह छुवै तैं नाइक के मिलै ही कौ सुष मानत है
सखी सौं कहति है ॥३५॥ कवित्त नंदलालन बैनो
गरषै निज रूप रिझाइ ढगैरी सी नाई ॥ बारि र
जात बनैं ग्रह तैं न बिलोकि वेकौं अनि ही अ
कुलाई ॥ प्यारे की चंग यतैं मैं उडी लखि मोद भरी
निज आंगन आई ॥ होन गुडी की जिनैं जित छो
ह नितैं तित छी वकौं डोलत धाई ॥३५॥ दोहा व
लन घेरु घर घर न तक घरी नु घर ठहराइ ॥ सम
झि उही घर कौं चलै भूलि उही घर जाइ ॥३६॥ ॥३३॥

॥टीका॥यहनाइकाप्रौढापरकियाहैजहांचित
लाग्योहैनहांजानिहैसषीसषीसोंकहतिहै
३६॥कवित्त॥बालविधीरसकैचसकैवसकै
नसकैनसकैमनुकोंसमुझावै॥होतुघरैघर
घरनकेघरएकघरीरहिबोनहिभावै॥रंनि
दिनांकलकांमकिरैनकहूकलकाकलषै
बिनपावै॥जांनिचलैतौउहीघरआवतन
लिपरैतौउहीघरआवै॥३६॥दोहा॥यातें।
कांकांतेउहांनेंकोधरतिनधीर॥निसदिन
उठीसीफिरतिवाटीघाटीपीर॥३७॥टीका॥य
हनाइकाकेचितमेंलगनिलगीहैसुयाकौम
नकहूंकलपावतुनांहीयाकीदसासषीसों
कहतुहै॥३७॥कवित्त॥सोभामनमोहनकीप
रमरसालचितुचुभीबृजबालकैनछिनवि
सरैकहूं॥बरसतजलतरसतआरेबिवकों
कहोऐसीलगनिडुरायेंनडुरैकहूं॥घरतें
वगरआवैवगरतेंघरधावैफिरैज्योंविप
लपलकलनलहैकहूं॥बादीमनमथपी
रनेंसुकोधरैनधीरउठीसीफिरतवाटीछि
ननरहैकहूं॥३८॥दोहा॥पलनचलैजकसीर
हैथकिसीरहीउसास॥अबहीतनरितुवौं
केहूंमनपठयौकिहिपास॥३८॥टीका॥यहवि
जलगनिसषीनाइकासोंकहतिहै॥३८॥कवि
सासनउसासनिहैवासकीसमारहैनऐसी

वि॰ स॰ ककैं कौंनके धौं हित मैं हितै रही ॥ किनै है सी
॥३४॥ ते री मनु रीतौं सो लगत तन अवरीं नसुधि
बुधि का ह कयौं विनै रही ॥ चित्र की सी लिषी ठा
ढी जकि अचेत भई पलक निगति नूं लीच
किन चितै रही ॥ का हहै रि हरी मति विसरी
सबै सुर ति हूं तो तेरी यह गति देषियत किनै
रही ॥ ३९ ॥ दोहा ॥ मौं ज्यौं आवति निकट नि
उत्ताल सि स्यौं त्यौं षरी ॥ झमकि झमकि टहलै करै ल
गी रहै चटवाल ॥ ३९ ॥ टीका यह नाइका की ढी नवु
टी है सु सषी सषी सौं कहति है ॥ ३९ ॥ कवित्त गौ
नौ भयें दिन कै उ भये हिय मै पिय पेम की जो
ति सी जागी ॥ वासर ज्यौं वहरावति नींदि विधी
सब के रस मैं अनुरागी ॥ आवतु ज्यौं ज्यौं न
जीक निसा तिय त्यौं त्यौं उछाह उमंग निपा
गी ॥ सत्वर काज करै ग्रह के रवनी र निकेलि
केला ह कलागी ॥ ३९ ॥ दोहा ॥ भ्रकुटी मटक
न पीत पट चटक लटक नी चाल ॥ चंचल चि
तवनि चोरि चित लियो विहारी लाल ॥ ४० ॥
टीका यह नाइका प्रौढा है नाइक की सोभा दे
षि मोहित भई है सु अपनै चित्त की हत्ति सषी
सौं कहति है ॥ ४० ॥ कवित्त ॥ कहवे की हो इतो क
हूं री एक बात कान्हि वनि ठनि वा निकसौं का
हू इत कैं गयो ॥ सांवरौ सलोनौं तनु सुंदर वद ॥ ३४ ॥

नसोभासदनविलोकतमदनमदनैगयौ॥
चलनिकीलटकनिपीतपटुचटकनिमो
हनिकीमठकानिचेटकसोकैगयो॥चपलच
षनिबेहचहीचितवनिचाहिअलीरीविह
रीलालचोरिचितलैगयो॥४०॥दोहा॥छुटन
नपैयतुवसिछिनकुनेहनगरयहचाल॥मा
सोकिरिकिरिमारियेखूनीफिरैखुस्याल॥४१
॥टीका॥यहलगनिकौवर्ननुहैजाकौंलगति
हैताकौंअधिकुदुषहैअरुजाकीलगतिहै
ताकेमनहूमैंनाहीसुनाइकाअथवानाइ
कुसषीसौंकहतिहै॥४१॥कवित॥छिनुवसैं
छूटियेनविनवसैचटपटीनेहनागरीमैं
यहैअटपटीरीतिहै॥लीजतछिडाइमनु
रतनेजतनुनाहिअतेनुमहीपतिअथि
कअनीतिहै॥मरेहीकौंमारियतुखुसीनयो
खूनीफिरैजीतेहीकौहारिअरुहारेहीकी
जीतिहै॥सरवसुदीजैतऊपरवसपारियतु
जैहांकछूलोकपरलोककीनभीतिहै॥
४१॥दोहा॥कौंवसियनिर्वाहियेनीतिनेह
पुरनाहि॥लगालगीलोइनुकरैंनाहकम
नवंधिजाहि॥४२॥टीका॥यहलगनिहैनेत्र
नुकेलगेमनवंधतुहैयहअदभुतअनीति
हैसुनाइकाअथवानाइकसषीसौंकहतु

बि॰स॰ है॥४२॥कवित्त॥पावक प्रचंड जातें भागेंहूं न
॥३५॥ छूटियतु बरियंतु ज्यों ज्यों उपचारु कीजिय
तु है॥प्रबल कजाकनु पै मगन चलन पैयेवि
नु बितु दीजे तऊ हित भीजियतु है॥ऐसे वे
मतुरकै सें बसिये निबह्यिये क्यों है पैये अनी
ति छिन छिन छीजियतु है॥ लगनिकरनु
धारनैंन मैंन मनु बारें नाह कवि बारौ मनु
बांधि लीजियतु है॥४२॥दोहा॥ मैं तो सों कै
वा कह्यो तूं जनि इहिं पत्याइ॥लगालगी
करि लोइननु उर मैं लाई लाइ॥४३॥टीका
यह लगनि है नाइका अथवा नाइक अपनें
मन सों कहै सखी सों कहै वों न ही॥४३॥कवि
त्त॥सो मैं कही ही कै उबरस मझाइ मन नैंन
नु कैं मत लागे मारी बिना पायवौ॥नव तोनें
सीष मानी इनहीं की मति ठानी अब कहा है
न परबस पछितायवौ॥लगालगी इनकी
भीउर कौं लगाइ दीनी लगनि अगनि तातें
कहां भगि जायवौ॥कीजत जतन नसीरो ज्यों
त्यों होत दुष नीरो निसदिन अनतनु सतावे
नन आयवौ॥४३॥दोहा॥सारी डारी नील की
ओट अचूक चुकैं न॥मो मन मृग करबर
गहैं अहे अहेरी नैंन॥४४॥टीका॥यह नाइ
का कैने कबै बिना इकु कौ मनु हायरह तु ना ॥३५॥

हीसुसषीसषीसौंकहैहैकरवरकौप्रसंगक
रिकै॥४४॥कवित्त॥चाइचढेजौवनकेवनमें
विहारकरैंकान्हकेनैरोकेरहैंविक्रमअथ
थके॥भ्रकुटीकुटीलचालअंजनुअसिन
वासनरलकवाछिगहैंआयुधसुहथके॥
सारीनीलीटारीवोटओवनअंचांनकही
करतअचूकचोटरहतनथथके॥मोमन
कुरंगुकौंपकरिलेनकौंह्यांहथ्यीराधेतेरेनैं
नएअहेरीमनमथके॥४५॥दोहा॥कमकि
चढतिउनरतअटीनैंकनथ्याकैंहेहे॥भ नि
ईरहतनटकौवुटाअटकौनागरनैहै॥४५
॥टीका॥नाइकाप्रोढानाइकाकीसोभादेषि
आसक्तिभईसुदेषिवेकौंउनरतिचढतिहै
सुयाकीविवस्थासषीसषीसौंकहतिहै॥
४५॥कवित्त॥कांन्हरकौवदनविलोकिकैंवि
कांनीवालनादिननेदेषिवेकेजतनकरतु
है॥सुरभीचराइवेजआइवेकौवेरजांनिरस
वेसहोतसवकाजविसरतुहै॥सांकगुरन
नकीनिसांककैनठाढीरहैछिनइतछिन
उतयाविधिटरतुहै॥नटकेवटाज्योंनटना
गरकेपंमपागीउचेअटाकमकिचढतउ
तरतुहै॥४५॥श्रवनानुराग॥जैनवहोनदिषा
दिषीमईअमीइकआंका॥रगैतिरोछीडी

ठि अवकै बोली कै डंक ॥४६॥ टीका यह सर्वा
नुराग जे चितवनि संजोग मैं सुषदही तै बियो
ग मैं सुष आयै सालति है सु नाइकु अथवा
नाइको सषी सों कहै है बिरह की दसा अव
स्था तुम मैं सुमिरतु कहिये ॥४८॥ कवित्त रंगर
ली मैं भली विधि सौं बकुलो तिन के सुषदैन
हैं भौंहीं ॥ नैंन कुंज भये प्रतिकूल बिजोकि
हियैं दुष सूल सलैं ई ॥ नेह कैं आहार सीली
चितौंनि हू तीर कआं क अमी सम तैंई ॥ बी
सवि सैं विष साइक कै उर मोल तिबांकी बि
लोकनि बैरी ॥४६॥ दोहा ॥ नैंको उहि न जुरी ॥
करी हरषि जु री तुम माल ॥ उर मैं बास छुट्यौ
नहीं बासु छुटैं हूं न लाल ॥४७॥ टीका ॥ यह स्वी
नुराग है नाइका की षीतु सषी नाइकु सौंक
हति है कि तुम्हारी माला सौं अबै सो हितु मा
नतु है तौ तुम सौं कहा कहै ॥४७॥ कवित्त जा
दिन वा हि अलीन कै देषत री झि दियें हितु
मानि कैं भारी ॥ आपने ही तैं उतारि दई तुम
फूल की माल रसाल बिहारी ॥ ता दिन तैं व
ह वारि सिंगार कैं षोंन न हू तैं लगी अति
प्यारी ॥ बासु गई कुंमिलाइ गई पै करी न न त
उर तैं छिन न्यारी ॥४७॥ दोहा ॥ छिन छिन मैं
षटकतु सुहिय षरी भीर मैं जात ॥ कहिंबु च 

लीवितुहीचितैञोरनिहीमैंवात॥४७॥टीका
यहनाइकापरकीयाहैकहूंभीरमैंनाइकनें
देषीहैसुवानैंजुचेष्टाकीनीसुइनदेषीपैवा
नसुनीनहीसुसषीसौंकहतुहै॥४८॥कवि
त्त॥आजुमिलीब्रजबालञचानकमोमतिवा
केसनहगहीहै॥जानिकतीञतिभीरमैंतु
हरिमोतननेहरिहियेंउमहीहै॥लाजनैंपै
नविलोकिसकीउनकीनीनतैंकरसरीतिस
हीहै॥ञोरनहूंमैंगईजुकछूकहिमैंनसुनी
पछितावोयहीहै॥४९॥दोहा॥वनतनकौंनि
कसतलसतुहसतुहसतुइतुञाइ॥दगषंज
नगहिलैगयोचितवनिचैंपुलगाइ॥५०॥
टीका॥यहनाइकाप्रोढाहैजाछविसौंश्रीकृष्ण
देषेहैंतैसैंहीञपनेंनेत्रनुकीलगनिसषी
सौंकहतिहै॥५१॥कवित्त॥आजुकहौंवना
कौंइतकैवानिवानिकसौंजसुधाकौकका
ई॥मोरकिरीटिलसैमुरलीलकुटीञरुपी
तपटीछविछाई॥मोढिगञाइभयोरसभ
इहरैंमुसिकाइसुत्योसुषदाई॥चौंपकीचा
हनिचैंपुलगाइकैलैगयोनैंनममोलनि
माई॥५२॥दोहा॥जवजववैसुधिकीजियें
तवसववहीसुधिजाहि॥आंषिनुआंषिलगी

रहैं आंषौ लागति नाहि ॥५०॥ टीका ॥ यह स्वी-
नुराग नाइका अथवा नाइका सषी सों अपनी
बात कहै है ॥५०॥ कवित्त ॥ यह प्रीति की रीति म
नो षीक छू जानी न जाति कहा गति है ॥ चित
चाह की चौ पचेटी यैसे है अरु ऐंम विथा उर
पागति है ॥ नित आंषि निसौं वेई आंषैं लगी
रहे आंषिन कैसें हूं लागति हैं ॥ जब ही जब
बै सुधि की जति हैं त वही सब ही सुधि भागति
है ॥५०॥ दोहा ॥ जहीं जहां ठाढौ लष्यो स्याम सुभ
ग सिर मोर ॥ बिन हूं उन छिनु गहि रहतु दृग
नि अजौं वह ठौर ॥५१॥ टीका ॥ यह पूर्वानुरा
ग लक्ष्य देषे हैं नेई ठौर श्री लक्ष्य की भावना
करिकै नेत्रनु कौ आय हनु करति है सुना
इका सषी सों कहति है ॥५१॥ कवित्त ॥ केलि सुष
सागर मैं केलि रंगरली परि पूरन बिबिधि बि
धि करती मनोरथनु ॥ नैन मन बाट तौ उम
गि अनुराग भागु लागतु हो मघवास ची कौ
अनुहूतें अनु ॥ लक्ष प्रान प्यारे की दुहाई अ
ति छबि छायौ जिन जिन कुंज निमिलतु हो
री स्याम घनु ॥ तेई तेई कुंज अब उनहूं बिलो
कै बिनु माई गहि राषति घरी कलौं अजौं
दृगनु ॥५१॥ दोहा ॥ सघन कुंज छाये सुषद स ॥२७॥

रसिजसुरभिसमीर॥ मनु केजानु अजीव
है उहिं जमुनाकेनीर॥ अथ टीका॥ यह पूर्वानु
रागु है सु जमुनाके नीर संजोग मैं जु चित की
वृत्ति होत है सु वही भावना करि वैसैं ही हो त
है सु नाइका सषी सौं कहति है॥ ५२॥ कवित्त॥
सघन निकुंज छांये सुघद सुहाये अरु मंडित
सरस गुंज पुंज मधुपन की॥ वफु छित्तमं जे अ
रविंदुन के हेट आवे त्रिविधि वयारि लै सुगं
धकुसमन की॥ ललितकाल ललित छवि वलित
लहलहात जेऊ तनी विहार भूमि नंद के सुव
न की॥ छल यानं प्यारे की सौं वही जमुनाकैनी
र अंजहं नि रषि व है गति होत मनकी॥ ५२
कि रि बूझति कहि कहा कह्यौ सांवरैं गात॥ क
हा करत देषे कहां अली चली क्यौं वात॥ ५४
टीका॥ यह पूर्वानु रागसषी कौ वचन नांइक
सौं॥ ५३॥ कवित्त॥ मदन गुपाल की वि लोकि छ
विछा की वाल पगी प्रेम हरन सम्हार विसरा
ई री॥ वेई वातें बूझि करि बूझि फेरि बू
झि फेरि बूझिवे की रट सी लगाई री॥ हा हा क
हि सांवरैं कुंवर तोसौं कहा कह्यौ कैसो हो स
माज वाके संग सुषदाई री॥ करत कहा होकि
हि ठौर कौंन वानिक सौं कैसी कैसी भांति मेरी

बि० स०

॥३८॥ चरचा चलाईऐ॥५३॥ सषी कौ वचन नाइका
सौं दोहा॥ मन न धरत मेरौ कह्यौ तू आपनैं स
यांन॥ अहे परनि परि प्रेम की परहथ पांरिन
प्रांन॥५४॥ टीका यह सषी नाइका सौं कहति है
कि प्रीति के प्रसंग नैं प्रांन पराये हाथ परत हैं
सु तू मति करै तौ यह प्रसंग है कि सषी प्रीति क
रत मनैं क्यौं करति है सु मनैं नांही करति प्रीति
दिढावति है कि प्रांन परायें हाथ परैंगे जौ तौ
फेरि हूं टेंगे नहीं सषी नाइका सौं कहै तौ वनैं
कि प्रेम की परनि मैं तौ परि क्यौं न प्रांन तु है नां
र कु ना हि पराये हाथ मति पारै॥५४॥ कवित
तू न हि मांनति मेरौ कह्यौ अपनैं मन मांनि स
यांन तु भारी॥ देषि वे कौ ललचाव तिर्यांक
हु घौस नितैं यह रौस बिहारी॥ नेह कहूं नेंह
नेहन सौं लगि जैहै तौ फेरि न कै है छुडारी
॥ वे चवि प्रांन तु क्यौं परहाथ फसै मति प्रेम
फंदा ब्रजनारी॥५४॥ नाइका कौ वचन सषी
सौं दोहा॥ बिनु बिनु वचनन हरत हठीला
लन हग वरजोर॥ सावधांन के वट पराये
जागत के चोर॥५५॥ टीका यह नाइका नाइ
का केने वचनु पै आसक्ति है सु नाइका के नेह
या के मन कौ जोरावरी हरि लितु हैं सु नाइका
सषी सौं कहति है॥५५॥ कवित्त॥ राषति सल ॥३८॥

कैमिलिमरनमही पतिसौंरूनतुसरकिजा
नकाननकीओरहै ।। चपरिहरनव्रजवाल
[illegible] नुकेमनधनेमारनमदोरिभरुजोव
नमरोरहै ।। जानहूंगूसैंसावधानकौंविव
सकरैंचपलचितौनिसरवेधनसजोरहैं ।।
मोसोंकहिआलीव्रजलीडिलेकेलोलड़ा
ठग़हैंकजाकहैंइकैनहैंकिचोरहै ।। ५५ ।। ना
इकाकोवचनसषीसों ।। नावकसरसेलाइके
तिलकुनरुनिइतनाकि ।। पावकमरसीन
मूकिकैगईमरोबानांकि ।। ५६ ।। टीका यहना
इकनैंनाइकाकरोषानांकतेदेषीसुजैसीभांति
देषीहैतैसीयेसषीसौंकहतुहै ।। ५६ ।। कवित्त
साजिकैसिंगारभरीछविभारहियेंविरहाग्नि
निवारिगईहै ।। चौंपभरीकछुचोषसौंआई
मरोषकनैंकनिहारिगईहै ।। जांकनैंकलषी
जबतैंनवतैंसुधिमोहिविसारिगईहै ।। पाव
कज्वालसीबालविलोकिकैनावकतीरसेमा
रिगईहै ।। ५६ ।। नाइककोध्यांननाइकाकौं ।। दो
कवकीध्यांनलगीलषौंयहघरलगिहैका
हि ।। उरियतुभ्रंगीकीटलौंमतिवहूईकैजा
हि ।। ५७ ।। टीका यहनाइकानाइककेध्यांनमें
लीनकैरहीहैसुसषीसषीसोंकहतिहै ।। ५७
।। कवित्त ।। ठाढीविलोकतिहींकवकीयहदर

बि० स०
॥३९॥

नप्रेमहियेंदरिवौ॥ पाइनकी पुतरी के रही
बिसरौ उरसूंचलकौ धरिवौ॥ ध्यांन ही ध्यां
नमैंजोकवहूंयह होइ यहीतौ कहा करिवौ
॥याकौ घरी अवलागि है का हिकहा गति कै
है यह है टरिवौ॥५७॥ नाइककौ ध्यांन नाइका
कौ दोहा॥ सरसतु पौंछतिलषिरहतु लगि
कपोलकै ध्यांन॥ कर लै प्यौ पटलविमल।
प्यारी पठये पान॥५८॥ टीका यह नाइक कौ स्या
मति नाइका सौं अधिक है सु वाके हाथ के पा
नदै षि नु चेष्टा करतु है सु सषी सौं कहतु है सु
मिरनु जानियै॥५९॥ कबित्त ध्यांन पियारे की प्र
रीतिया पटये करि हेतु हियें सरसे॥ पाइलपा
न षरे सु थरे तिनकी छवि देषि हियौ न रसै॥
पौंछतु है पटु लै कवहूं दरसै कवहूं परसै॥
ध्यांन कपोलन कौ कवहूं कौ चुंवनु यौं रस
कौं वरसै॥५८॥ मुरली दोहा॥ अधरधरनतें हरि
के परतै ओठ डीठि पट जोति॥ हरित वांसकी
वासुरी इंद्रधनुषरंग होति॥५९॥ टीका यह ना
इका श्रीकृस्न कौं मुरली वजावत देषि रीझी है
सु वह सोभा भांति भांति करि कहति है सषी सौं
॥५९॥ कबित्त वलिदैषि री वांनि कसौं वुनिकैं व
अराजकौ लाडिलौ आवतु है॥ तु षवे रकी वा
रुमरी चितु सौं वलि नैंनचकोर सिरावतु है॥॥३९॥

जवडीठिकौ ओढनु कौ पट कौ सुसिकौं नि
कौ रंग मिलावतु है॥ नव वौ सुरी वांस हरे की
ललीसु रची पके रंग दिषावतु है॥ ७९॥ दोहा॥
कितीनु गोकुल कुलवधू काहि न किंहि सि
षदीन॥ कौनैं तजी न कुलगली कै मुरली सु
रलीन॥ ८०॥ टीका॥ यह मुरली की धुनि परी सो
है सु सषी सिष्या देति है तासों वा सुर की मोह
न नाक हतिहे॥ ८१॥ कवित्त॥ गोकुल मैं न किती
कुलनारि पती ब्रत पालनहारी प्रवीनी॥ औ
रुजसीषन कौनैं सुनी सुति सील की पद्धति
कौंनैं न लीनी॥ पेषत वा नटनागर की छवि
कौन भई उहि रूप अधीनी॥ वा मुरली धुनि
कांन परें कुलकांनि विदा करि कौनैं न कीनी
८२॥ दोहा॥ लई सौंह सी सुनन की तजि मुरली
धुनि आंन॥ कियें रहति नित राति दिनु कांन
न लागे कांन॥ ८३॥ टीका॥ यह मुरली सुनी है तैं
वैन कछू और सुनत नै ही सषी सषी सो कहै
ति है॥ ८४॥ कवित्त॥ मोहन की मुरली की अली
जब तैं मधुरी धुनि कांन परी है॥ बाल भई तै
वही नैं लटू यह काज समाज सबै बिसरी है
॥ कांन सुहात न आंन कछू सुनिवे की मनौं म
न आंन करी है॥ ८५॥ दोहा॥ उरलीनैं अति च
टपटी सुनि मुरली धुनि धाइ॥ हौं निकसी ऊ

३॥ कांननु कांनन औरु कियें रहै कां मषरी कुलकांन करी है॥

वि०स० लसीमृतौगोकुलसीउरलाइ॥८१॥टीका॥य
॥४०॥ हमुरलीसुनिसवका मछोडि कुलसीनिकसी
कहनदेष्योनवनुकोअवस्थाभईहैसुलषी
सोंकहतिहै॥८२॥कवित्त॥भौंनकेकौंनमेंबैठी
कतीहौंकछुग्रहकाजकेसाजपगीरी॥नार
ककोंकरीनवहीमुरलीधुनिप्रांननुआ
निषगीरी॥हौंलविवेकौंउझोहमरीनिकरी
व्रहडीटिपरयोनटगीरी॥नैंननुकोंजरकान
नुकोंमनकौंनवतैंनलवेलीलगीरी॥८२॥
परस्परावलोकनदोहा॥फूलेफटकततनेक
रीपलकटाछनरवार॥करतवचावतविय
नयनपाइकघाइहजार॥८३॥टीका॥यहदो
ऊनुकनेत्रआपसमेंकटाछनुकीचोटक
रतुहैओरनुकीदृष्टिवचावतहैसषीसषी
सोंकहतिहै॥८२॥कवित्त॥अंजनुअंगककै
कछनीसिषयेनवृंदावननाइककों॥फांद
तफूलेनिसांकगहैंकरवालकटाछसहाइके
हैं॥ओरकौंटालकरीपलकैंललकैंअति
जौमसोंलाइकहै॥विपलोचनचोरवचाव
तहैंतियनैंनकिमैंनकेपाइकहै॥८२॥दोहा
कहेतननटतरीझतषिझतमिलतलपिलतनल
जियात॥भरेभौंनमेंकरतहैंनैंननुहीसववा
त॥८४॥टीका॥यहदोऊभरेघरमैंनैंननुही
मेंसववातकरतुहैसुसषीसषीसोंकहतिहै॥४०॥

६४॥कवित्त॥ मर्ख्यो है भवन तऊ पावन न मेडु
को ऊठ महत दोऊ पौंसने हमनी पात है॥
हिलत मिलत न ठुनिबि रत्न जिमि लत रस ऊ
लसत लसत सकात मुसिकात है॥ हांकरत
नांकरत रीझत षिझत छिन भीजत लजात न
जिकात है विकात है॥ प्रेम पगे हूरन प्रवीन
षांन प्यारी पीउ नैंन न तुही त्रिभुन करत सब बी
त है॥६४॥दोहा॥ डीठि वरत बांधी अटन चढि
धावत न डरात॥ इतै उतै चित दुहुनु के नट
लौं आवत जात॥६५॥टीका॥ यह दोऊनु के
चित लगे हैं सु परस्पर अपने अटा पर तैं निस
कर्षत हैं उन कौ मनु इत आवत है इन कौ म
नु उत जात है सु सषी सषी सौं कहति है॥६५॥क॰
प्रीति पुंज वंढे आप आपने अटान चढे नि
रषै मैं आनु जैसें मोंन वित रत है॥ औरु को उ
जोंन न तिन की अनेक गति छैल वल भरे
ऐसी दूरनि हरत है॥ बांधे डीठि वरंत न उरत
लगा येंट की नट कौसी कला देषो प्रगट क
रत है॥ दुऊन के चित चलि आवत दुऊ की औ
र धावत फल सि आनि धीरज धरत है॥६५॥:
दोहा जुरे दुऊन के दृग झमकि रुके न झीनै ची
र॥ हलु की फौज हरौल ज्यौं परत गोल पर भी
र॥६६॥टीका॥ यह दुऊनु के नैन घूंघट की ओ
ट पै लिकैं मिलि गये हैं सु सषी सौं कहति है॥६६

वि०स० ॥४२॥

॥कवित्त॥ बैठी अलीगन मैं नवनागरि आयौ
तहां चलि प्यारौ बिहारी॥ लाल की डीठि बचा
इवे कौं मुष घूंघट ओट कै त्यौं न निहारी॥ नैन
सौं नैन उमंगि मिले न रहै पट ओट किंतौ प
चिहारी॥ रो किस कै न हहरै लल की फौज ज्यौं गो
ल पै आनि पर्यौ भरू भारी॥ ६६॥ दोहा॥ हस्यौ
षरे समीप कौ लेत मांनि मन मोदु॥ हौतु दुहं
नु के दृगनि ही बतरस हंसी बिनोदु॥ ६७॥ टीका
यह दोउ नै अनु हीमैं बातैं करतु हैं मिलैं कौ
सुष मानति है सु सषी सषी सौं कहति है॥ ६७
॥कवित्त॥ प्रेम सुष भाउ दुहूंन के कैसें हूं मो पै
बनैं न बषांनत हैं॥ चारु कला चितु चातुरी॥
की रस भाइ भरी उर आनत हैं॥ नेह पिहरिष
रहैं तऊ वे समीप ही कौ सुष मांनत हैं॥ नैंननु
ही बतराइ हहसैं अनि री किरली मनि ठानत
हैं॥ ६७॥ दोहा॥ उन हरि की हसि कै इतै इन सौं
पी मुसिकाइ॥ नैंन मिलैं मन मिलि गये दोऊ
मिलवत गाइ॥ ६८॥ टीका॥ यह दोऊ गाय मिल
वत मन मिलि गये सु सषी सौं कहति है॥ ६८॥ क०
उनि हंसि हां कीय कहीं की हैं न ई सी गाइ मो पै
न घिरति काल्हि केते उघूटये है॥ इन मुसिका
इ कही अकुटीन चाहूए लोगाई हैं हमारी हि
लै औरसौं वनये है॥ कहै कवि कैसे मिलेवै न ॥४१॥
नै

अरुनैंन सौं नैंन री झिरस बस भये हैं ॥ खुली
सुधि भौंन कौन गौंन की सम्हार रही गाइ मि
लवत दोऊ मन न मिलि गये हैं ॥ ६८ ॥ दोहा ॥ नेह
पिचवा इनु चीकनी चलनि चहूं दिसि नैंन
॥ नेह पिनछाँडे नेह क्रन केहसी रसीले नैं
न ॥ ६९ ॥ टीका ॥ यह नाइका परकिया है सु दोऊ
दोऊ नु के नेत्र देषत हैं न बदहसत रीहैं सु स
षी सषी सौं कहति है ॥ ६९ ॥ कवित्त ॥ नेह की पात
लगी जब नैंनन बनें रस रीति रहै न हिंदांकी ॥
देषत ही अति मोद भरें उरकौं नकौरे कुल कां
नि की हांकी ॥ जद पि सैंन च बाइ सनीउ पहा
स समैं तब लैं चहुं घां की ॥ त हू पिछांउ मनैं न
ऊँके रसीली हसी सु बिलोकनि बांकी ॥ ६९ ॥
॥ दोहा ॥ ऊंठे जांनि नसं ग रहे मनु मुह निकसे बै
न ॥ याही तैं मांनौं किये बातनु कौं बिधि नैंन ॥
७० ॥ टीका ॥ यह दोऊ आपस मैंन त्रनुहीं मैं बात
करत हैं सु सषी सषी सौं कहति है कबि की उक्ति
होइ ॥ ७० ॥ कवित्त ॥ इत ब्रजराज कौ कुंवर रसरा
सि उत बनी ब्रषभांन की कुंवरि बांनि बांनि के
॥ ठाढे हित बाढे आप आपनें अटांनि पर क
रत कटाछ मन मथ की कलांनि कै ॥ बरननैं
निकसे नैं मूढे होन मेरे जांन बैंन नु कौं संग ऊ
कल्यौन यह जांनि कै ॥ परम प्रबीन दोऊ याही
तैं परस्पर लोचनु हीं मैं बतरांन सषमांनि कै ॥

७०॥दोहा॥ चितवत जितवत हितभरे हियें कि
यें निरीछै नैंन॥ भीजे तन दोऊ कंपत क्यौंहूं
जपनि वरैं न॥७१॥टीका॥ यह दोऊ परस्प
र आसक्त हैं जु करत देषत हैं सषी सषी
सौं कहति है नाइका परकिया॥७१॥कवित्त॥
जमुना के तीर नर नारिनु की भारी भीर तद
पि निरषि विनु हरषै रहैं न है॥ कहै कवि ह
ल चित चौंपसौं उगत अनुराग सौं पगत।
उमगत मन मैं न है॥ यों ही दिनु चितवत हि
य हेत जितवत चितवत चाइ सौं निरीछै कि
यें नैंन हैं॥ भीजे पट कंपत न काहू तैं सुचप
न दोऊ अधिक न पतकौं हूं जपनि वरैं न है
७१॥स्वयंदूतदोहा॥ घामु घरीक निवारियें
कलित ललित अलिपुंज॥ जमुना तीर तमा
ल तरु मिलत मालती कुंज॥७२॥टीका॥ यह ना
इका परकीया वाकविदग्धा स्वयंदूत नाइकौ
कौ वचन नाइक सौं॥७२॥कवित्त॥ चारु तमा
ल कलिंदी के तीर औ सीर सुगंध समीर रहै
मन॥ मालती मल्ली निकुंजनि मैं मिलि गुंज
त मत्त मधुव्रत के गन॥ फूलनि के भरसौं झुकि
लता रही वेलि लगी लपटाइ तमालन॥ औ
रै विरामु घरी कु रहौ यह आतपु नैंक निवा
रियै लालन॥७२॥दोहा॥ छैछिगुनी पहुँचौ॥ 

गिलन अनिदीनना दिषाइ॥ बलबावन को
बौंनसुमि को बलि नु म्है पत्याइ॥७३॥ टीका॥ य
ह नाइक के चित कौ हति ललचौंही है पि नाइ
का श्री ति बढाय बिकौं कहति है अरु सापरा
ध देषि षंडिता ह्वै कहै तौ संभवे॥७३॥ कबित्त॥
जानत है सब कौऊ सबै गुन आगरे हो तुम्हे
से बिहारी॥ दीन कै आवत हो प हिलै मनुहा
रि कहौ अति कै मनुहारी॥ कै संहकै पर मो छि
गुनी पुनि व्याह गहो यह री ति निहारी॥ व्यौंत
सुनै बलि बावन कौ बलि कौं नु कैरे परतीति नि
हारी॥७३॥ दूती दोहा॥ लाई लाल बिलोकि
ये जिय की जीवनि मूलि॥ रही भौंन के कौंन
मैं सोंन जुही सी फूलि॥७४॥ टीका॥ यह नाइका
कौं सषी लै आई है सु नाइक सौं कहति है॥७४
कबित्त॥ जाहि बिलोकिकैं प्यारे बिहारी सम्हा
रतु म्है सब भूलि रही है॥ आई सु जीवनि मूलि
बिलोकिये तो हित सों अनुकूल रही है॥ बैठी
दुकूल मैं अंग दुराइ तऊ तन की दुति फूलि
रही है॥ चौंधत लोचन भौंन के कौंन मैं सोंन
जुही मनो फूलि रही है॥७४॥ दोहा॥ रही पैज की
नी जु मैं दीनी जु म्है मिलाइ॥ राष ऊ चंपक
माल लौं लाल हियैं लपटाइ॥७५॥ टीका॥ यह स
षी नाइका कौं लै आई है सु नाइक सौं कहति है

वि॰स॰ ७४॥ कवित्त जाकी प्रभानके पुंजनिसौं जगि
॥४३॥ जोतिरही सबकुं जगमगीहे॥ कोरिउपाइनदा
इनसौं मिलई तुमकौं ब्रषभांनललीहे॥ मे
तुकरी सुसखीसब पंजमिलै रसकेलिकरी
सफलीहे॥ चंपकमालन्यौंलालनलगाइकैं
राधेहियेंयहरूपरलीहे॥ ७५॥ प्रथमसमा
गमदोहा॥ दोऊवाहभरेकछू चाहनकयें
कहैन॥ नहिंजाचकसुनिसरमसौं वाहिरनि
कसतनवैंन॥ ७६॥ टीका यहप्रथमदरसन
मैंलाजकेअधिकतैंदोऊकछूकहिसकत
नाहीसषीसषीसौंकहतिहे॥ ७६॥ कवित्त ग्रा
सुदुहूंमिलिकैंसजनीमनसौंमनसौंकरी
घोरमिलायौ॥ दादेदगेसेरहेटकलाइकैंने
हकौमेहनहीबरसायौ॥ वाहभरेदोऊवा
हैंकयौकछुबोलुनयौंमुषग्रावनपायौ॥
॥ सरमज्यौंश्रीवेनभौंनतैंवाहिरद्वारसुनेंज
वजाचकआयौ॥ ७६॥ सिषनषजूरौदोहा॥
करसमस्टिकचमुजउलटिषयेंसीसपटुटा
रि॥ कोकोमनवांधेनयहजूरावांधनहारि॥
७७॥ टीका यहजूरोवांधतनाइकानाइकनैं
देषीहैसुसषीसौंकहतुहैजानिवर्ननहोइ
७७॥ कवित्त नैनुच्येंनमनकेंसेवानषरसौं
नघरेग्रंमननकौ ओपकछूजैसेचंदहरेकी ॥४३॥

॥ कलुकलनतालीमुक्तउरजउतंगगोरेभुलउ
लीकेंचुकीसकजरंगसूरेकी॥ कहैकविहंस
मटकीलीचारुचितवनिचटकीलीचूंनरी
चेटककचोषेचूरेकी॥ सीसपटुटारिमुक्तउ
लटिसमेटिकेचक्यौंनमनवांधेवहवांधनि
मेंजूरेकी॥७७॥ केसवर्ननदोहा॥ सहजस
चिक्कनस्यांमरुचिसुचिसुगंधसुकुमार॥ ग
ननतुमनपथुअपथुलषिविथुरेसुथरेबा
र॥७८॥ टीका यहनाइकाकेकेसनपेआस
क्तनाइकुहैसुनाइकासौंकहतुहैअथवा
सषीसौंकहतुहै॥७८॥ कवित्त निंदतहैनम
पुंजप्रभाजिनकीछविहेरिसिलीमुषहारे
॥ स्यांमसुगंधसुभाइसचिक्कनसोहनसुंदर
लांबेलछारे॥ मैंनमनौंअपनैंकरकेमष
तूलकेबौंरबनाइसंवारे॥ देषतहीमनथ
किरह्यौनवनागरिकेसनुदेसतिहारे॥७९
॥ दोहा॥ वेईकरब्यौरनिवहैब्यौरौकौनविचा
ही र॥ जिनतेंउर[illegible]ज्योमाहियौनिनहीसुरझेवा
र॥८०॥ टीका यहनाइककीआसक्तिनाइका
केहाथनुपैहैसुबारब्यौरनदेषिनाइकुस
षीसौंकहतुहै॥८१॥ कवित्त पांनलसैंसर
सीरुहसेतिनऊपरमोडगमोरमयेहै॥ के
लिकवीसीषरीसुथरीनषचंदप्रभानिछपे

बि०स० हे॥बेईहैंहाथबहैचलिबोकहियातैंबिचा
॥४४॥ रकहाधौंठयेहैं॥मेरोहियोउरझ्योजिनसों
जिनऔरनिहासुरझेकचयेहैं॥७९॥दोहाछु
टेछुटावतजगततेंसटकारेसुकुमार॥मनुबं
धतबैंनीबंधैनीलछबीलेबार॥८०॥टीका
यहनाइकाकेबारनपैनाइककोमनरीझ्योहै
सुनाइकासोंकहतुहैअथवासखीइहसोंक
हैकविकीउक्तिहै॥८०॥कवित्ततोहैतुहैसु
कुमारमहाउपमाकोसिवारनलागननेरे॥
मेचकलालैसुगंधसैछबिदैबननैननफिरेन
हिफेरे॥छुटेछुटावतहैंजगतैंइनकेकछूको
तिगुटौनैंसेहेरे॥नीरजनैंनीकहाकहिकेम
नुबांधतबैंनीबंधेकचनेरे॥८०॥दोहाकुटिल
अलककछुटिपरतमुखबढिगोइतोउदोत॥
बंकबकारीदेतज्योंदामरुपैयाहोत॥८१॥टी०
यहमुखपरबारछूटेतेंसोभाअधिकभईहैसु
सखीसखीसोंकहतिहैसखीनाइकसोंकहैना
इकानाइकासोंकहैहैकविकीउक्तिहै॥८१॥
कवित्त॥जागिमगिरहीचंदकीअमंददुतिचां
दिनीनहोतीहोतिआठौंजामधांमतें॥ताप
रसुदेससाजैसकलसिंगारुचारुज्याइबस
कीघनस्यामब्रजबामतें॥हसप्रांनप्यारेकी ॥४४॥
ल

सोंनापैयहछूटनहीकुटिलअलकसोभा
लहीअभिरामनैं॥येनैमानवहिगसौउमगि
उहोनवंकदीयैंतैंवकारीज्यौंरूपयाहोनदांम
नैं॥१९॥ललाटवर्ननदोहा॥षोरिपनिचअकु
टीधनुषवधिकुसमसरतजिकोनि॥हनतुतरु
निम्रगनिलकसरसुरकमालभरितांनि॥२०
टीका॥यहनाइकाकुलटाहैललाटस्रंगारहैस
षीनाइकोसोंकहतिहैनाइकुनाइकासौंक
हैहनतुतरुनम्रगयापदतैंकुलटानांनियं
टर॥कबित्त॥कुंचितभौंहकमांनलसैंतिहिं
कौंजिहिकैसरिषोरिवनाई॥ताकौलैनीरक
षोतिलकैसुरकैगहिताप्रभालललगाई॥ष
लतजोवनकेवनमैंइहिसाजिसिकारमनौ
जअराई॥हेरिहनैजुप्रवीनकुरंगनिहीनद
याउरकैकठिनाई॥२१॥दोहा॥नीकोललतु
ललाटपरटीकोजटितजराइ॥छबिहिवढा
वतरविमनौंससिमंडलमैंआइ॥२२॥टीका
यहललाटपरटीकोहैताकीउपमासषीनाइ
कसौंकहतिहैनाइकसषीसोंकहैनाइकामैं
कहैंकविकीउक्तिहैहोइ॥२३॥कबित्त॥जोवन
जोतिजगमगहोतिसिंगाररूपभाररसावतु
है॥रीझिरहैंलषिलालकेलोचनमोइहिये
भरिआवतुहै॥सोइहतटीकोजराइजयो

वि०स० तियभालुमहाछबिछावतुहै॥मांनऊचंद
॥४५॥ केमंडलमैंदिननाइकसोभछावतुहै॥८२
॥झुलमुलीदोहा॥झीनैंपटमैंझुलमुलीझल
कतिओपअपार॥सुरतरूकीमानोंसिंधुमें
लसीसुपल्लवडार॥८४॥टीका॥यहझुलमुली
[illegible] निकोबर्ननुहैसुउपमासषी
नाइकसोंकहैनाइकुनाइकासोंकहैसषीसों
कहैकविकीउक्ति॥८४॥कवित्त॥जाकेकरनाभ
रनब्रषकेदिवाकरसेनैनइंदीवरनिकीछबि
सरसांनिहै॥अधरसुधाधरंसुधाधरसेबद
नमैंकिलितललितकपोलनिकीकांतिहै॥
अंतरलेलितझीनैंबसनमैंझुलमुलीकहैक
बिहसझलकतिऐसीभांतिहै॥मेरेजांनसा
गरमैंडारकल्पद्रुमकीपल्लवनिसहितप्रग
टहरसांतिहै॥८४॥बैंदीदोहा॥तियमुषलषि
हीरांजरीबैंदीबढतबिनोद॥सुतसनेहमानों
लियेबुधपूरनविधुगोद॥८५॥टीका॥यहना
इकाकेभालहीराकीबैंदीहैसुसषीसोंभाउ
पमानाइकसोंकहतिहैकविकीउक्तिहोइना
इकासोंनाइककहैहै॥८५॥कवित्त॥कनकेबर
नतनजगरमगरहोतओपकोउजासुभौन
आसपासकीनोंहै॥सकलसकेलिरूपविर
चीविरंचिबालषीनेकटिकठिनउरोजजगपी॥४५॥

नौं है ॥ ललित ललाट पर हीरा की लसनि बेंदी कहै है कवि लछमन देषें मनु नेह भीनौं है ॥ मेरे जांन इंदु भरि अंक बुधलीनौं है ॥ ८५ ॥ दोहा
कहत सबै बेंदी दियें आंकु दसगुनौं होतु ॥
तिय ललाट बेंदी दियें अगनित बढत उदोतु ॥ ८६ ॥ टीका यह बेंदी दियें नें मुष की सोभा अधिक बाढति है सु नाइक सषी सौं कहतु है अथवा सषी नाइका सौं कहै अथवा सषी नाइक सौं कहै कवि की उक्ति होय ॥ ८६ ॥ कवित ॥
जौ बनसौं मिलि जगमगति अपार ओपमन मुनिहू को मनु देषें रसभोनु है ॥ कहै कवि लछमन छबि पुंजनि सौं छाजि रहौ सरस सिंगार रूव रस सुधा सोनु है ॥ सबको उ ऐसें ही कहतु महि मंडल में बेंदी के दीयें तें आंकु दसगुनौं होतु है ॥ वहै नवनागरि के ललित लिलाट पर बेंदी लागें वाकौ अनगनित उदोतु है ८६ ॥ दोहा ॥ भाल लाल बेंदी ललित अछत रहे विराजि ॥ इंदु कला कुज में बसी मनौ राहु भय भाजि ॥ ८७ ॥ टीका यह नाइका के ललाट बेंदी अछतन की सोभा है सु सषी नाइक सौं कहति है कवि हू की उक्ति होइ ॥ ८७ ॥ कवित ॥
उदय समै के राका चंद सौ बदतु ते सीन ई तरु

वि॰स॰ नाईकी उमग गोरे रंग मैं॥ कंचन किनारी ता
॥४९॥ री कां करे जी सारी मैं उरिट रसति के सी मंग उ
त मंग मैं॥ भाल पर रोचन को बिंदु छवि दे नु ता
पे अछत लसैं ज्यों गंग सरसुति संग मैं॥ आसन
नि तम को सुधाकर की कला मानो वसी है नि
संक अवनी सुत के अंग मैं॥८७॥दोहा॥ भाल
लाल बेंदी छवि छुटे वार छवि देनु॥ गह्यो राह
अति आह करि मनु ससि सूर समेतु॥८८॥टी॰
यह नाइका के ललाट पै लाल बेंदी है अरु
ता पै बार छुटे हैं सु सोभा सषी कहति है ना
इका सौं अथवा सषी सौं अरु कवि हू की उक्ति
होइ॥८८॥कवित्त॥ नव नागरि के मुष चंद की
चारु प्रभा सरसी रुहि तें सरसी॥ दुति बेंदी वि
राजति भाल पै लाल विलोकत का हि कै रेव
वसी॥ अरुना परस्याम सुदेस सिरोरुहै हू हि
लये अति चोपल सी॥ मनौं ज्यों निगहै अति
आह कै राहु नै एकत ही दोऊ भानससी॥८८॥
दोहा॥ पच रंग रंग बेंदी षरी उठति ऊगि मुष जो
ति॥ पहिरैं चीरु चिनौं दिया चटक चौगुनी हो
ति॥८९॥टीका यह नाइका नाइकनै जैसी छवि
सौं देषी है तैसी ये भांति सषी सों कहतु है सषी
नाइक सों कहै सषी सों कहै॥८०॥कवित्त॥ ले
लित लिलार लसै पंच रंग बेंदी षरी ऊगि ऊ
गि उठति अमंद मुष जोति है॥ षंजन ने षंजन ॥४९॥

सहित अनियारे नैंन अधर अरुन गोरें गरें की
री पोति है ॥ गों हैं गहि वे की छवि सों हैं वे उठों
हैं कुच लने च कत कटि मुनि मन रस भोति है
॥ गहरें सरूपन न पहरें चिनों टी चीर चोगु
नी नि काई की चटक चोरू देति है ॥ ८९ ॥ सोरठा
मंगल विंदु सुरंग मुष ससि के सरि आउगुर
॥ इकनारी लहि संग रसमय लो चन जगत
९० ॥ टीका यह सिषन ष में लिलाट को शृंगार
है सुसषी सों कहति है कवि की उक्ति होइ
९० ॥ कवित्त मंगल वे विंदु सुरंग विराजत भामि
नि भाल महा छवि छायो ॥ आंनन चंद कला
परि पूरन केसरि आउ मनों गुर आयो ॥ ल
षकहै इकनारी मैं आइ मनों परि पूरन जो
गलषायो ॥ नैंन भरे रस की वरषा करि चैंन
समूह हियें उमगायो ॥ ९० ॥ डिठौना दोहा ॥
लौंने मुह डीठिन लगे यों कहि दीनों ईठि ॥ दू
नी ह्वैं लागन लगी दियें डिठौना डीठि ॥ ९१ ॥
टीका यह डिठौना को वर्नन नाइका सों
कहै सषी सों कहै सषी सषी सों कहै ॥ ९१ ॥ कवि
लो हि लषें रति की दुति लाजति राजति ओप
सिंगार कियें ते ॥ मोंहनु कौं वरनी नंपरै छवि
मोंहनु न्यारही मोल लियें ते ॥ सुंदर आंनन
डीठि न लागे कह्यो अलि यों हितु मांनि हियें

वि०स० तैं॥तौमुषपैआवनलागनलागीहूनीकैडी
॥४७॥ ठिडिठौनादियैतै॥१०॥दोहा॥पियतियतौहां
सिकैंकपोलपौडिठौनादीनि॥चंदमुषीमु
षचंदतैंभलौचंदसमकीनि॥१०॥टीका॥यहडि
ठैनावरननुनाइकुनाइकासौंकहैहैअथवा
श्रृंगारुकरतौसषीसौकहै॥१०॥कवित्त॥प्यारी
कौचारुसिंगारुनिहारिहियेंपतिकैअतिमो
दभर्‌यौहै॥वाहिचषौडाकहीमुसिकाइसही
विधिरूपसकेलिधर्‌यौहै॥जामुषकीअकलं
कप्रभासकलंकमयंकुषरौनिदर्‌यौहै॥सो
मुषनेंवडिठौनेंदैआजुभलौयहचंदसमा
नकर्‌यौहै॥१२॥मुषवर्ननदोहा॥होहावद
नउघारिहगसफलकरेसवकोइ॥रोजसरो
जननकेपरेहंसीससीकीहोइ॥१३॥टीका॥यहमु
षवर्ननहैसषीनाइकासौंकहैहैनवोढाके
प्रसंगमैंवनैंमानुछुडावेकौंहूंकहैतौवनै॥
१३॥कवित्त॥लोचनलहेहैकौफलसफलहमा
रोकरिप्यारीप्रानपतिकौंसनेहरसलीनकरि
॥नैईपाईपरमनिकाईकीअवधिअवहुती
वृषभानकीकुंवरिअरवीनकरि॥टारिघूंघ १८
टकौहाहाहेउघारिमुषनिजुछविपानिप
मैंपीकेहगमीनकरि॥कंजछविछीनकरि
ससिदीमलीनकरिसौतिनुकौंदीनकरिप्या
रकौंअधीनकरि॥१३॥दोहा॥मुषउघरिनहां ॥४७॥

सुदिन मन मुष सुषमा की ओर ॥ चितैर हत चहूं ओर नैं निहचल ष्ष्ष नु चकोर ॥ ९४ ॥
टीका यह मुष वर्नन सषी नाइका सों कहै के विर्क उत्तिकि है हो इ ॥ ९४ ॥ कवित्त मुष को समूह वृषभांन की कुंवरि तेरे मुष कोइ का मनुग मगनु अमंद है ॥ याही तें विलोकि छवि हर विलट्ट के मट्ट भांवरी भरतु फिरै ष्या रो नंदनंद है ॥ ह्यौं से हूं निसा कों रहै विधिन विनान कहूं देषें उमगतु अति ओनंद को हेदे है ॥ सकल विलास छोडि एक आस लागे रहे भौंर जानें कमल चकोर जानें चंद है ॥
९४ ॥ दोहा छपी छबीली मुष लसें नीनें अंचल चीर ॥ मनों कला निधि झलमलें कालिंदी के तीर ॥ ९५ ॥ टीका यह नाइका के मुष को वर्नन सषी नाइका सों कहै नाइका हू सों कहै ॥
९५ ॥ कवित्त भांवती तिहारी कों गई ही लैन गिरधर नाहि देषें मेरो मन परयौ छबि नीर में ॥ रूसबांन प्यारे तरुनाई की लुनाई होति जगर मगर वाके सौंने से सरीर में ॥ पंजे नभ वरकी रकी बषानि हारि वदन उरावै टी जैनैं नीले चीर में ॥ मेरे जान भ्रन कला निसी झिलमिलात दरस सुधा निधि कलिंदी के नीर में ॥ ९५ ॥ दोनों दोहा किय हार ल चितवी

वि० स० इलगिवज्ञिपाइलतुवपाइ॥तुनिसुनिसुनि
॥४८॥ मुषमधुरधुनिकोंनलालनललचाइ॥८६॥
॥टीका॥यहनाइककीआमलिजांनिसषीनाइकासोंप्रीतिवढाइवेकोंकहतिहैवानीवनतुहे॥८६॥कवित्त गजगतितेरीहेरीलटतवहीभयेतापेसुनीपाइलकीमनकसुहाईरी॥नवहीतेंवाके उरलागीअतिचटपटीतुवमिलिवेकोंललकेंतुदेककाईरी॥वानीकेसुवनिहूनेमधुरसरसधुनिकालिहिकहूतेरीउनवांनीसुनिपाईरी॥काहेनेनवाकेउरमदनमरूरउठ्योहीतेहोंकहनजरूरतोसोंआईरी॥८६॥दोहा छिनकछबीलेलालवहनहिंजोलगिवतरानि॥ऊषमहषपियूषकीतोलगिभूषनजानि॥८७॥टीका॥यहनाइकाकीवानीकीमधुराईसषीनाइकसोंकहतिहे॥८७॥कवित्त जाकीसुनेंधुनिवीनकहागहिलोजपिकीवनभागतिहे॥जोसुनिकेंकविलोकहेमुनिकीमनसाअनुरागतिहे॥जोसोंछवीलेललातुमसोंवहेंवालनवातेनुपागतिहे॥तोलोंमहषविषूषकीभूषनकेंसेहूभागतिहे॥८७॥दोहा जरीकोरगोरेवदनवढीषरीछविदेषु॥लसतमनोविजुरीकियेंसारदससिपरिवेषु॥८८॥टीका॥यहनाइकाके॥४८॥

ऊषकी

गुषपरकिनारीकीसोभासषीनाइकसौंकहति है॥१९७॥कवित्त॥ आजुमैं निहारी व्रषभानकीदुलारीदुतिधारीअतिसकलसिंगारतनसाजिकैं॥ जगमगजोतिनवजोबनकीदेषतहीद्रगनिकौंगयोदुषदंदुसवुभाजिकैं॥ तनसुषसारीतापैकंचनकिनारीगोरेआननकेवहैंकोरकवीछविछाजिकैं॥ सरदकीपून्योंकेसुधानिधिकेआसपासमानोंरह्योदामिनीकौमंडलविराजिकैं॥१९८॥मौंहवर्ननदोहा॥ नासामोरिनचाइ द्रगंकरीककाकीसौंहकांटोसीकसकतिहियंगडीकटीलीभौंह॥१९९॥टीका॥ यहनाइकाकीभौंहनचारवेकीछिहाहैबिनाइकुंसषीसोंकहतुहै॥१९९॥कवित्त॥ मोतनहेरिपरोसनिसोंवनरातिकछूवनितारसछाकी॥ यैकरतीरतिकीदुतिहोतिनवाकीनिकाईलषेंसमताकी॥ नोकचढाइदवाइकैंओढनचाइकरीद्रगसौंहककाकी॥ बाछविकीवहकटीलीसीभौंहकरेजमैंसालसीसालतिवाकी॥१९९॥नैनवर्नन॥ वारौंवलिलोद्रगनिपै अलिपंजनम्रगमीन॥ आधीडीठिचितौंनिजिहिकियेलालआधीन॥२००॥टीका॥ यहनाइकाकेनैननुकीअधिकुलीचितवनिदेबिनाइकुआधीनभयोसुसषीनाइ

ब्रि०स० कासौंकहै २०० कारेरूपकारेरत्ना
४९ रेअनियारेमोहैंसहजढरारेमनमथमनवा:
रेहैं लाजभरभरेभारेचपलनिहारेतारेसा
चेकेसेढारेप्यारेरूपकेउज्यारेहैं औधीचि
नवनिहीमैंआधीनकियौनैंहरिटौनैंसेवसी
करकेलौनैंयेनिहारेहैं कमलकुरंगमीन
खंजनभवरब्रषभानकीकुंवरितेरेनैंननु
पैवारेहैं २०० चमचमातचंचलनय
नविचघूंघटपटझीन मानुकुंसुरसरिता
विमलजउछलतजुगमीन २०१ य
हनाइकाकेनैननुकीसोभासषीनाइकसौं
कहैनाइकहैनाइकासौंकहैसषीसौंकहै
१ रूपकीरसालआजुदेषी अजबा
लयेककेतीसोभासनीवाकेसौंनैंसुसरीर
मैं टारौनटरनवहभाउमोहियेनैंकोंहूंदे
वीनुषदाकिगुरुलोगनुकीभीरमैं कहैक
विछमअतिचपलविसालवाकेलोचन
जुगलमलकतगीनैंचीरमैं कौनमनहो
रछविनिरषिआधीनविधिमीनउछलत
मानौंसुरसरिनीरमे २०१ करेचा
हसौंचुटकिकैषरेउडौंहैंमैंन लाजनवावे
नेरफरनकरतपुटीसनिन २०२ य ४९

हनाइकामधानाइकाकेनेत्रनाञ औरषा
हनैंदोऊनुकेवसषुदीसीकरतहैमुसषीह
सोकहैतोषनें ॥२०२॥ कवित्त नैंननवनाग
रिकेनेरलतुरंगअंगछविकीतरंगरुंगरं
गनिथरेंधरें ॥ मदनप्रवीनतिन्हैंफेरिवोसधा
वतुहैघूंघटकीओटऐसोकोतिगुकरेंक
रें ॥ कीनेंचाहआउगीसोंचुरकिचपलहोत
परहीउठौहैंनेहउमगतननाईभरेंकरन
षुदीसीपगधरतहैरहें ॥२०२॥ दोहा सायक
समममायकनैयनरंगेत्रिविधिरंगगात ॥
झषौविलषिदुरिजातजलखलषिजलजात
लजात ॥२०३॥ टीका यहनाइकाकेनेत्रनुकी
सोभासषीनाइकसोंकहैनाइकासोंकहैस
षीसोंनाइकुकहै ॥२०३॥ कवित्त सायकसे
घायकहैंतीषननेरलडगसेतस्यामअरु
नत्रिविधिरंगगातहैं ॥ कहैकविहृसजाके
उरमेंभिदतताहिसुधिनरहतिगातघूमि
मननातहैं ॥ येनेपुरमोयेहैंविषमविषअं
जनसौंयाहीतेंविसेषविथाउरसरसातहैं
॥ सफरीविलोकिजलविलषिदुरतिअगम
टकनविपनलजातजलजातहैं ॥२०३॥
दोहा ॥ वरनेसरसैंनकेअ्रेसदेपसैंन ॥ हरनी
केनैंनानुतैंहरिनीकेयेनैंन ॥४॥ टीका य

यनाइका केनेत्रनु कीसोभा सखीनाइक
॥५०॥ सोंकहति है ॥२०४॥ कबित्त ॥ चेरे कीनें षंज
नकमेरे कीनें कंजपुंज उपमा कौंने रेखा
लिरंचकुलगैंन है ॥ सोहत बिसाल ये रसा
लसाल सो तितु देषें मनु हरत करत चैन
चैन है ॥ चपल कटाछ बरजीतन मदन स
र सुषके निकर और देषे ऐसे मैंन है ॥ काम
दुषदैंदनी के ब्रषभांन नंदनी के हरिनी के
नैंननु मैं हरिनी के नैंन है ॥४॥ दोहा ॥ रंजन सिं
गार मंजन कियें कंजन भंजनु दैंन ॥ अंज
न रंजन हूं बिना षंजन गंजन नैंन ॥५॥ टीका
यह नाइका के नैनुनु की सोभा सखी नाइक
सों कहै है नाइकनु नाइका सों कहै है सखी सों कहै
५ ॥ कबित्त ॥ कंज [illegible] कुरंग गुमाननु गंजन पी
मन रंजन हैं अनियारे ॥ षंजन मीननु के मद
भंजन अंजन है बिनये कजरारे ॥ लाज से मा
सुसील हंसी रस रंग भरे बिधि मैंन सुधारे ॥
[illegible] कहै उपमा कहिये तिय या जग मैं दृग ते
रे उज्यारे ॥५॥ दोहा ॥ जोग जुगति सिषये सबै
मनौं महा मुनि मैंन ॥ चाहत पिय अद्वैतता से
वत कानन नैंन ॥६॥ टीका ॥ यह नाइका के ने
त्रनु की सोभा अलतक नाई को बिलासु पिय
की चाह सखी नाइक सों कहति है सखी सखी ॥५०॥

सोंकहै॥२०६॥कवित्त॥नीनौंउपरेसुमहामु
निमीनकेतननकौजोगकेलाकुसलविमल
विलसंतहै॥ननमनमोहनेसोंयेकमयोचाह
नहैंकाननेकौंसेवतजगतजोनिवंतहै॥हम
प्रांनप्यारेकीदुहाईजिकैंदेषतहीविरहक
लेसदुषसकलनेसंतहैं॥सरलसुभाइउरम
रुधरैंस्यामछविप्यारीतेरेनैंनमनहरनम
हंतहैं॥२०६॥पुतरीवर्ननदोहा॥सवअंगु
कोरिराषीसुघरनाइकनेहसिषाइ॥रसजुतेन
निअनंतगतिपुतरीपातुरराइ॥२०७॥टीका
यहनाइकाकीपुतरीनुकीसोभाअरूनेहकी
अधिकाईसषीनाइकसोंकहति॥२०७॥कवि
चारुप्रभापलकैंमननकेंम[illegible]दुपीतपटीप
हिरैंसुथरीहै॥नाइकनेहसिषाइसवेरस
मेरसधाइप्रवीनकरीहै॥हमकहैंप्रति
चाइनुसोंगतिलेतिमनोंवकुमाइभरीहै॥
लेतिरिझाइमनोंअतिचातुरपातुरराइकि
थौंपुतरीहै॥२०७॥कटाछदोहा॥लागतकु
टिलकटाछसरवेंनहोइवेहाल॥कढतनु
हियहिदुसालकरितऊरहतनटसाल॥२०८
टीका यहनाइकाकेनेत्रनाइकाकेहृदयमेंदु
मेहैंसुसषीनाइकासोंकहतिहैनाइकुसषीसों
कहैनाइकासोंकहै॥२०८॥कवित्त॥भेदंसूधे
रनीरनैतीननकोनवढावैंपीरजानियहैवा

नजियसकलउरातहै॥ लागैं ब्रजनागरिके
कुटिलकटाछसरज्यौंनहौंहिविकलवि
हालसबगातहैं॥ विक्रमनिधानेअतिपार
थकेवांनहूनेमेरेजांन इनकेअनीषेउतपा
तहैं॥ रिषियैनघाइउरकटकेंडुमालकरिषे
तेपैरेषोनटसालरहिजातहैं॥२०८॥ नासा
वेधकवर्ननदोहा॥ वेधकअनियारेनयन
वेधतकरिनिनषेधु॥ वरबटवेधतमोहियो
तोनासाकौवेधु॥२०९॥ टीका॥ यहनाइका
केवेहकीसोभानाइकनाइकासौंकहतुहै
२०९॥ कवित्त॥ अनियारेनैंनवरवेधतवि
रानैंमनकहाअचिरजुपैनैंसहजसुभाइ
कौ॥ तोहिनिरषिवृषभांनकीकुंवरिअरहु
नकीनरंगहीमेरेउरछाइकौ॥ वरवटमेरो
हियोवेधतुहैप्यारीतेरीनासिकाकोवेधुम
तुरहैकौंधिराइकौ॥ सोहैकिधौंनेहकीनि
काईकोनिकेतकिधौंसुषमंथुरमैंसुषिरुकी
नौंआइकौ॥२१०॥ नासाभूषन॥ वेसरिमोती
दुतिझलकपरीओठपरआइ॥ चूंनौहोइन
चतुरतियक्यौंपटपोंछ्योजाइ॥२११॥ टीका॥ य
हनाइकाकेओठपैवेसरउज्जलुहैंजुमोतीकी
झलकझलकाईकेमध्यखेतनहीं भकतिहैसुय
हचूंनौजांनिपोंछतिहैसषीयाकीभांतिहूरि॥५१॥

करनिहै अथवा मोतीकी फरन करै पिसषीसौं
कहै तौ रूपगर्विता है इह सषीको वचन नाइ
कासौं ॥१०॥ कवित्त ॥ जो जुसिंगारु रूव न्यौं तिय नै
रौ ज्यु म्मन गजौ तिसमूह हकरै ॥ हे पतिप्यारु सी
वारहीं षारहियौ हरिकौ कहिबौ न हरै वे
सरिके मुकता की प्रभा अति उज्जल आनि
परी अधरै ॥ होइन हूं नौ लग्यौ म्रगलोच
निको पटसो अबपौं छिपरै ॥१०॥ नथ दोहा
इहि ह्वैही मोती सुगथ तह नथ्थ गर विनि सौ क
॥ जेहि पहिरें जग हरगग प्रसतिहिनसतिह सति
सीनांक ॥११॥ टीका यहनाइकाकी नथ्थकी
सोभा सषी कहति है अन्योक्ति कवित्ताइहमैं
वनै ॥११॥ कवित्त ॥ सुरैनि समैनतनांकयाहीतै
कहत मुक तनिजु नमु कतिपु रीसी हरस
तिहै ॥ कहै कविहलम मनु मोहन कौं मोहि
वेकौ मोहिनीकी मिछि मानौं सोभा सरसति
है ॥ तोपहिरें तैं जगनयन प्रसति अति उति
वरसतिमानौं नासिका हसति है ॥ ये हे नथ
उरमैं निसक तह गरवुकरि ह्वैहीमुकताके ग
थ्य सहित लसति है ॥१॥ सीकव र्नन दोहा
जटित नीलमनि जगमगति सींकै सुहाई नां
क ॥ मनौं अली चंपककली वसिरसु लेतनि सौं
क ॥१२॥ टीका यहनाइकाकी नांकमैं सींकहै

बि० स० नाकी उपमा कवि की उक्ति ॥ २१ ॥ कवित्त ॥ सरन
॥५२॥ मयंक के अंक मैं लसतु कीधौं नैंक निरषत ही
हरतु चित्त चैतु है ॥ प्रफुलित पंक मैं सो है करही
टा किधौं तिल कौ सुमन सुष सोरभ सम तु है ॥ नी
जमनि जरित छवि लीनी तेरी नांक पर सौ कैधौं
कौ लसति महासो भौं निकेतु है ॥ मेरे जांन सुकलि
ने चंपक की कलिका पै बैठौ अलि सावकु नि
सांक रस लेतु है ॥ २२ ॥ लौंग दोहा ॥ जरद पि लौंग
ललित लौन तजु न छन पहरि इक आंक ॥ सदा संक
वसि थिर रहै चढी सी नांक ॥ २३ ॥ टीका ॥ यह ना
इका की नांक मैं लौंग देषि कैं रि नांक चढी सी
देषि कैं सषी नाइक सौं कहति है ॥ २४ ॥ कवित्त
किधौं रतन छवि दीप कौ सुमेरु जाकी जगरु
मगरु जोति सरन प्रकासिका ॥ कहै कवि हेम
चारु चंपक की कलिका है सहज सुगंध निक
सति जामैं सुवासिका ॥ जरद पिलवंग अति ललि
तौ लसति तऊ न मति पहरि उरपति उर दा
सिका ॥ मान के भरम भूलि मौंहनु बिलोकि र
हे मग नैंनी निरषि चढी सी तेरी नासिका ॥ २५
श्रवण वर्नन दोहा ॥ लसतु सेत सारी ढपे न
रलन तरयौंना कांन ॥ पर्यौ मनौं सुरसरि सलिल
रवि प्रतिबिंब विहांन ॥ २६ ॥ टीका ॥ यह तरयौंना
वर्नन सषी कौ वचन नाइक हू कौ वचन कवि ५२
हू की उक्ति है ॥ २७ ॥ कवित्त ॥ छवि सौं निहारी अप ॥५३॥

भांन की दुलारी आजु सकल सिंगार साजु व
न्यो है सुठांन कौ ॥ कहै कवि छ्ठस चारु आभा की
निकाई लषैं गरतु विलास रस पुरवनितान कौ
॥ सो है तनु सुदेस अति झीनी सेत सारी द्युति
रुलतैं यों नाकलंक तुवा के कांन कांन कौ ॥ मे
रै जांन देवनदी जल मैं कलमला हु पेषियें अग
ट प्रतिबिंब भोर भांन कौ ॥ २४ ॥ कर्न भूषन दो
साल तिहै नट साल सी क्यों हूं निकसति नांहि
॥ मन मथ्थ नेजा नोंक सी षुभी षुभी जियमांहि
२५ ॥ टीका यह नारका की षुभी की सोभा नाइकु
सषी सों कहतु है ॥ २५ ॥ कविता राधिका प्यारी
के आंनन पेंछवि ती निहं लोक की आंनि षु
भी है ॥ मैं निरषी जबतें तबतें मनि मेरी लुभा
इ तेहीं ही षुभी है ॥ रूप के वोर हथ्थ कांन मैं वा के
विराजति आप अनूप षुभी है ॥ साल तिहै सु
मनौंज के नेजे की नोंक मनों उरमांक षुभी है
२५ ॥ तरिवन वर्नन दोहा ॥ तरिवन कनक क
पोल दुति बिच बीच ही बिकांन ॥ लाल लाल च
मकति चुनी चौका चीन्ह समांन ॥ २६ ॥ टीका
यह तरिवन की सोभा सषी नाइका सों कहै ना
इका सों कहैं अरु नाइका सषी सों कहै तो सुर
नगो पनाहो इ सषी कहै तो लछिता होइ ॥ २६
कवित आजु केवी वनुक वेरन न नवन नितेरी व

वि०स०
॥५३॥

बिकी छटानु की घटासी उमगति है ॥ रमकति
सरस सिंगार की अपार ओप जोबन की कांति
जगजोति सी जगति है ॥ कनकुतरयौंन नुकौ
ललित कपोल की दुति में समाइ गयें अर
मु नगति है ॥ लसम ब्रांन प्यारे की सोंचा रुच
मकति ये तो लालु लालु चुनी चौका चिकसी
लगति है ॥२६॥ मुरासा ॥ दोहा ॥ लसै मुरास
तिय स्रवन यौं मुकतन दुति पाइ ॥ मानौं परस
कपोल के रहे स्वेद कन छाइ ॥ ॥ ॥ टीका ॥ यह सौ
तिनु को मुरासा नाइका के स्रवन मैं है ता की सो
भा देषि सषी नाइका सौं कहति है अथवा ना
इका के कपोल पै स्वेद देषि सषी नाइका सौं मु
रासा को वर्ननु करि कहै तौ लछिता जानिये
८ ॥ कवित्त ॥ आजु नवनागरी की आगरी वि
लोकी छवि देषि वे कौं नैंन ललचाय लल
कतु हैं ॥ कहै कवि हम वही बांनि कुविलोकि
वगरी रूपगे न पलैं न गन पलकतु है ॥ नरुनी
के स्रवन अमोल मुकताफल के करे ना भर
न ऐसी आभा छलकतु हैं मेरे ज्ञांन पर सि
कपोल इनके उर उलह्यौ प्रस्वेद तें ई वुद झल
कतु हैं ॥९७॥ मुसिकानि ॥ दोहा ॥ नव ससिवरूप
भरे षरे तो मांगत मुसिकांनि ॥ नजनन लोचन
लालची ये ललचौंही वांनि ॥ ॥ ॥ टीका ॥ यह नाइ ॥५३॥

काअथवानाइकुमुसिकांनिदेष्योचाहतु
हैसुअपनैंनेत्रनुकीआसक्तिकहतुहै॥८
॥कवित्त॥ देषतहीअनमेषरहैंउमडेसेप्रेरन
विचारनगोंहूं॥ रावरेरूपअनूपमोंपूरिर
हेहैजऊनषतैंसिषलोंहूं॥ मांगतहैरतनैं
परनोमधुरीमुसिकांनिअघानेनत्योंहूं॥ नैं
नभयेअतिलालचीयेललचांनिकीवांनि
नछांडतक्योंहूं॥१८ ॥हास्यदोहा॥ नैंकहंसें
हीबांनिनजिलष्योपरनमुषनीठि॥ चौका
चमकनिचौंधिमेंपरतिचौंधिसीडीठि॥१९
टीका यहअप्रकारनहांसीजांनिगुरुसषी
नाइकासौंसिछाकेप्रसंगमैंचौंकाकीचम
ककीवडाईकरेअथवानाइकुनाइकासौं
कहैतौसंभवै॥२०॥कवित्त सीसफूलरमक
नुतिलकुमलमलातुज्योतिकोसमूहजग
मगतुअमंदुहै॥ भालकीतिलकचारुमल
ककपोलनुकौउमग्योपरतुअतिद्युतिको
चंदुहै॥ हाहावलिनैंकमुसिकांनिकीनिवा
रिवानिचकितकैरहतुचतुरनंदनंदुहै॥
चौकाकीचमकहीवषनुचकचौंधीहोति
चाह्योनपरतुनीकैंचारुमुषचंदुहै॥२१॥
दोहागाथा॥ डारेंठोडीगाढगहिनैनवटोही
मारि॥ तिलकचौंधिमैंरूपठगुमांहीफांसी

वि०स० ॥५४॥

डारि॥२०॥टीका॥यहठोडीकीगाडकौवर्ननना
इकुनाइकासोंकहैसषीसौंकहैनाइकासोंकहै
२०॥कवित्त॥केसनुकेवनकेउपकूलनहींअ
कुटीगिरिओटविचारै॥चारुलिलाकुसिंगा
रकीचौंधिमैंदेनदगानेहिहारैं॥फांसलगैरैंसु
सिकांनिकीपारिकैठोडीकीगाडकुवागहिडा
रै॥प्यारीमहाठगुनेरोसरूपुदयानजिनैंनवे
टोहिनुमारैं॥२०॥लीलादोहा॥ललितस्यांम
लीलाललनवटीचिवुकछविहन॥मधुछ
कोमधुकरूपरयोमनौंगुलावप्रसून॥२१॥
दोहा॥यहनाइकाकीठोडीपेलीलाकीसोभा
सषीनाइकसौंकहतिहै॥२१॥कवित्त॥कुंकुम
गारिकियोमनौंदेकुमहासुकुमारसुगंधुकौ
भौंना॥रूपसुधाभरयोचंदसौआंननपीतम
केमनकोललचौंना॥ठोडीकीगाडमैंस्यांम
लविंदुनिहारतछसथकेमनगौंना केम
धुपानगुलावकेफूलमैंमत्तपरयोमनौंभौं
रकौछौंना॥२१॥दोहा॥षरीलसतिगोरीगरैं
धसतिपांनकीपीक॥मनौंगुलीवंदलालकी
लालललालदुतिलीक॥२२॥टीका॥यहकंठ
वर्ननुहैसुकुमारतासषीनाइकासौंकहैअ
थवानाइकासौंकहै॥२२॥कवित्त॥प्यारेमैं
प्यारीतिहारीलषीनषतैंसिषलौंसुनिकाई ॥५४॥
भरीहै॥केसरिकीसुकुमारिमनौंछविपुंजसौं

आपविरंचिकरीहै॥गोरेक्षेरोरेगरेंमनुमो
हतिमोहतिपीककीलीकपरीहै॥चारुगुली
वेदलालेकीलालमनोंहुतिकीप्रतिलीकप
रीहै॥२२॥कुचवर्नन॥कुचगिरिचढिअति
थकितव्हैचलीडीठिमुषचाड॥फिरिनटरी
परियेरहीपरीचिबुककीगाड॥२३॥टीका॥
यहच्यंगदेषतेदेषतेद्दष्टिठोडीकीगाडमेंजा
इपरीसुदूरनतेंहीसोनाइकअपनीअवस्था
नाइकासोंकहेअथवासषीसोंकहे॥२३॥क
डीठिनदीत्रिवलीतरिनीठिरुमावलिकोंन
नतेंनिकरीहै॥पीनउरोजपहारचढीअतिथा
कितऊनउहीठहरीहै॥चाहिचलीमुषमंड
लकीछविबीचहीलेविधिऐसीकरीहै॥ठो
डीकीगाडमेंजाइपरीसुपरीयेपरीनतहींते
टरीहै॥२३॥दोहा॥चलननपावतुनिगमम
गुजगुउपज्योअतिचासु॥कुचउतंगगिरिव
रगह्योमेंनामेंनमवासु॥२४॥टीका॥यहकु
चवर्ननुनाइकुनाइकासोंकहेसषीसोंकहे
तोहूवनें॥२४॥कवित्त॥छुटतेमालमुनिरे
नुकेमनध्यानविसातिलेकोनिव्रयोहै॥वे
दकोपंथुचलेकहिकेसेंसबैजगमेंअतित्री
सुरयोहै॥छमकहेत्रिवलीसरितारुमली
वनपासगेंदामुचव्योहै॥उच्चउरोजपहार

वि०स० केछोरमनोजमहीपमवासुगयोहै ॥२४॥
॥५५॥ कंचुकी ॥ दोहा ॥ उन्नतकुचविकंचुकीचुपरी
सीरीसेत ॥ कविअंकनिकेअरथलौंप्रगटरि
षाईदेत ॥२५॥ टीका यहकंचुकीकेबीचकु
चसोभाउपमानेहतिनकीषभादेषिनाइ
कुनाइकासोंकहैसषीनाइकासोंकहैसषी
नाइकसोंकहै ॥२५॥ कवित्त कंचनवरनम
न्हरनअडोलगरूवैसेगोलनगोरेसीसस्याम
नाधरतुहै ॥ उन्नतकरेरेषरेचीकनैतुनाई
भरेमदनवेसीकरसेमनकोहरतुहै ॥ ऐसेकु
चनीनौसेतकंचुकीतिलौंछौमौरुप्यारीये
डुरायेनदुरतउघरतुहै ॥ कहैकविहमजै
सेंसुकविकेआंकमनुमेंअरथउमगिडी
ठिप्रगटपरतुहै ॥२५॥ उरबसीदोहा ॥ उरमा
निककीउरबसीडटतघटतइगादागु ॥ फल
कनिवाहिरभरिमनौंतियहियकोअनुराग
२६ ॥ टीका यहउरबसीकीसोभासषीनाइ
कसौंकहतिहैजोसषीनाइकासौंकहैनौति
यपटुसंबोधनुहैरेनाइकालछिताजोनि
यै ॥२६॥ कवित्त आज्ञाकीनिकाईवरनत
नवनतमोपेरूपकीतरंगनिअनंदउवरसा
योहै ॥ अंगअंगआभूषनजोतिजगमगहो
तिऐसोतोवनावरतिरंभाहूनपायोहै ॥ मा ॥५५॥

निककौलसीउरवसीतियउरपरइगनुकौ
उघटंउदेषननमायोहै॥मेरेजानपूरनकैअं
नरकौअनुरागुहियोभरिवाहिरछ्लकिछ
विछायोहै॥२६॥हाथवर्ननदोहा॥वडेकहा
षतआपसौंगरदेगोपीनाथ॥तोवदिहौंजौं
राषिहौहौहाथनुलषिमनुहाथ॥२७॥टी
यहनाइकाकेहाथकीसोभासषीनाइकसौं
कहतिहै॥२८॥कवित्त चारुहथेरीनुकीछ
विपैरहोनिरमोपलहूकीरजाई॥कोरिप
रीनुहूतैंमृधरीअंगुरीनुभरीअतिकोमलं
नाई॥राषिहौहाथनवेलीकेहाथलषेंमनु
तोवदिहौंचतुराई॥रूपमयांननुकोअपनेंम
नसांमनिसांकधरोगरुवाई॥२७॥दोहा न
षरुचिचूरनुडारिकैठगुलगाइनिजुसाथ
॥रह्यौराषिहठिलेगयोहथ्यांहथीमनुहाथ
२९॥टीका यहहाथकीसोभादेषिनाइकको
मनुहाथनाहीरह्योसुनाइकुअपनेंमनकी
गतिसषीसौंकहैहैनाइकाहूसौंकहे॥२९
कवित्त॥वुंदनुसेंमहिंदीकेसुरंगउहीअ
सनाईकेरंगरचेकें॥रिषवसीकरमंत्रदिषा
इकैंसाथलगाइलियोअपनेंके॥चारुनष
ऊतिचूरनुडारिअधीनकियोवऊभांति

मुरैकैं ॥ रावेंहूपैदूरह्यौमनहाथुहरयौंहरयौ
हाथुगयौसुमिलैकै ॥ २८ ॥ अंगुरीवर्ण
नं दोहा ॥ गोरीछिंगुनीअरूननषछलासपां
मछबिदेश ॥ लहतिमुकिरतिपलकुयहनै
नत्रवैंनीसेइ ॥ २९ ॥ टीका यहनाइकाकीआं
गुरीकीसोभानाइकुकहतुहैनाइकासौं ॥ २९
कवित्त ॥ कौंवरीगोरीलसैछिंगुनीअरूनां
लप्रभानषकीसुषदैंनी ॥ तापरस्यांमछल्ला
कीपवीछविनैननुकौंलषिलागतिऐंनी ॥
लोचनमंतलहैंरतिमुकिंनिमेषककदेषतहीं
म्रगनैनी ॥ नोकरमाझविराजतिराधिकेकी ती
रथराजकीरीतिचवैंनी ॥ २९ ॥ लोटदोहा
वुटतनिकसिकुचकोरईचिकटतगोरभु
जमूल ॥ मनुलुटिगोलोटनचटतचौंटतऊं
चेफूल ॥ ३० ॥ टीका यहनाइकाजोछविसोदे
षीहैसुसषीसोंकहतुहै ॥ ३० ॥ कवित्त वेनऔ
जुलषीवृषभांनसुताजेगिजोतिरहीचहुं
फूलनिकी ॥ चिकुंटीचितमैंउकसायैंभुजाव
हचौंटनउन्नतफूलनिकी ॥ बढितीकरिते
कुचकोरनुकीरुचिवारुषभाभुजमूलनिकी
॥ लुटिगोमनुलोटविलोकतहीछविमोहि
नकैसहूमूलनिकी ॥ ३० ॥ दोहा करउठाइघूं
घटकरतउसरतपटगुझरौट ॥ सुषमोटैं ॥ ५६ ॥

टीलखनखघिललनीकीलोट ॥३१॥ टीका यहनाइकाकीलोटकीसोभानाइकनेंदेषीहैं सुसषीसषीसोंकहतिहै ॥३१॥ कवित्त जाति हीवालगलीमें अलीसंगआवत मोहनुदे ष्यौअगोटे॥ ज्यौंकियेघूंघटहाथउठाइकेंयौ उसरीपटकीगुरुरोटैं॥ सोछविमोपेकहीन परैकछुकोरनुकोरिलुटीसुषमोटैं॥ लाल लप्यौअतिमोदहियेंनवनागरिकीनिरषी जबलोटैं॥३१॥ कटिवर्ननंदोहा॥ लगीअन लगीलीजुविधिकरीषरीकटिषीन॥ कियेंम नौवेहीकसरिकुचनितंबअतिपीन ॥३२॥ टी यहनाइकाकेअंगजोवनआयेतेंघटिव दिकेगयेहेंसुसषीनाइकसोंकहतिहैकवि हकीउक्तिहोइ॥३२॥ कवित्त रूपसांचेंटोरर चिपचिकेंसुधारेविधिअंगअंगसकलसु देसरसमीनेंहैं॥ तापेनरूनाई नवनाईक छूऔरैविधिषीनकरेपीनअरूपीनकरेषी नेंहैं॥ छोलिछोलिलाकुंअतिसुछिमकेरा ष्योताहिलचकतजांनिकेंजतनअमेकीनें हैं॥ करिहाकीकसनाकीसाधिकेंकंसरिमा नौंउरजनितंबअतिपीनकरिदीनेंहें॥३२॥ दोहा॥ लहलहातितनतरुनईलचलगलौं

वि॰स॰ ॥५७॥

लफिजाइ॥लगेलालाइलोइनभरीलोइनले
तिलगाइ॥३३॥टीका॥यहनाइकाकीसोभादे
षीहैसुनाइकुसषीसोंकहैतोसंभवै॥३३॥
॥कवित्त॥लकलकेतनमैंलहलहातनर
नईनाकीनईअरुनईरेहीछबिछाइकैं॥
कुचनुकेभारचपिलगलौंलफनिजवव
लतिगयंदगतिसहजसुभाइकैं॥कहैकवि
लसनषासिपलौंलुनाईभरीमानोंमहा
मोहनीनैदेहधरीआइकैं॥सुछिमलस
तुअचारिकोसोआंकुअैसेलगेलांकुवा
रीलेतिलोइनलगाइकै॥३३॥दोहा॥बुधि
अनुमानप्रमानस्रुतिकीयेंनीठिठहराइ
॥सुछिमकटिपरब्रह्मकीअलषलषीन
हिजाइ॥३४॥टीका॥यहकटिवर्ननसषीसषी
सोंकहैनाइकासोंकहैकविकीउक्तिहोइ
३४॥कवित्त॥दोऊषंभुन्यारेन्यारेअलगल
गाइधरेनाहीआधिनिरधारहोतिनविना
मनेंकौनचतुराईसोविरंचिनिरमईयहला
सोनटरस्तुसज्जनीनुहूकेषीननेनैं॥यंहनि
रषीनपरनिक्किसोदरीकीषीनकटिजान
तसुजाननीठिबुधिअनुमानतें॥देषतनको
ऊजियजांनियसोऊपरब्रह्मकीअलषवे ॥५७॥

द्रवचन प्रमानेते ॥ ३४ ॥ जंघदोहा ॥ जंघजु
गललोइन निरेकरे मनों विधिमैं नृ ॥ केलि
नरूनि दुषदैंनये केलिकला सुषदैंन ॥ ३५
॥ टीका ॥ यहजंघनकी सोभा नाइका सषीसों
कहै नाइका सों कहै सषीनाइका सों कहै ॥
३५ ॥ कवित्त ॥ कारे करे रे कुरूप करीकर क्यों
समहोत प्रभा इनकी के ॥ सोहत सुंदर पीन
स चिक्कन मोहन है मन मोहन पीके ॥ केलिक
लोलकला के निधांन महा दुषदाइ कहै क
दली के ॥ नो जुगजंघविरंचि मनोजवनोइ
करे निरलोइन ही के ॥ ३५ ॥ दोहा ॥ पाइ महाव
रदैंन कों नाइनि वैठी आइ ॥ फिरि फिरि जां
नि महावरी एडी मीडन जाइ ॥ ३६ ॥ टीका ॥ यह
पाइन की सहज अरुनाई कौ अधिक्य सषी
सषीसों कहति है नाइका है सो कहै तो संभवे
३६ ॥ कवित्त ॥ पाइ महावर दैंन कौ नाइनि वा
इनि सों उमही अति आई ॥ येडीगही ठकुराइ
नि की कर जामें नृरीति हलो कलुनाई ॥ जांनि
महावर मीडत ज्यों ही ज्यों धोवति त्यों सरसा
तिललाई ॥ कोमलता इप्रभा प्रगुनाइ किलो
कि सवै चतुराई ॥ ३६ ॥ दोहा ॥ कौहर सी येडी
नि की लाली देषि सुभाइ ॥ पाइ महावर देइ कौ
षपरी

वि०स०
।५८।

आपमईवेपाइ॥३७॥टीका॥यहनाइका
कीएड़ीनुकीसोभासषीनाइकसौंकहतिहै
हैसषीसोंकहै॥३९॥कवित्त॥कोंहरूकहाहै
वेंधुजीवकोविलोवेंधाचाहैलाजैमितेकम
लमुदितफूलिफूलिके॥मांनिकपंवारीविं
बाकेसेपटतरहोतऐसीउतिसहजउठलि
ऊलिके॥चाइनिसोंपाइनिमहावरूलगाइ
वेकोंआईठकुराइनिनिकटअनुकूलके॥
कहेकविलसचारूचरननिलोकनहीना
इनिविचारीगईसवसुधिभूलिके॥३७॥दो
अरूनवरूनतरूनीचरनअंगुरीअतिसु
कुमार॥चुवतिसुरंगरंगसीमनौंचपिवि
छियनिकेभार॥३८॥टीका॥यहचरनांगुली
नुकीसोभानाइकुसषीसोंकहतुहैनाइक
हूसोंकहै॥३८॥कवित्त॥मंदगतिहेरेंकैहंसन ल
लेहतकलसमदगयंदनुकोगरवुगारतुहै
॥हेसप्रोनप्यारेचारूचरननिहारैंवाकेजल
जसमूहहजियलाजहियरतुहै॥अतिसुकु
मारतरूनीकीपगुअंगुरिनुऐसोअरूनाई
कोउजासुभघरतुहै॥मेरेजांनपस्योविछि
यनिकोअपारभारूताहीतेंउमगिरंगुनिचु
स्योपरतुहै॥३९॥दोहा॥पगपगमगअगमन
परतचरनअरूनदुतिकूल॥ठोरठोरलषिय ॥५८॥

तउठे डुपहरिया के फूल ॥ ३८ ॥ टीका ॥ यह नाइका
के चरननु में अरुनता की अधिकाई सषी सों
कहति है नाइकु नाइका सों कहै सषी सों कहै नाइका
सषी सों कहै ॥ ३९ ॥ कवित्त ॥ पलिका तें उतरि अवी
न प्रान प्यारी धाम धरनी में सहज चलति ग॥
ति है ॥ चल सौंन प्यारे ऐसे कोंनि गनि हारि नव
चरन अरुन दुति अति उमगति है ॥ जहीं जहीं
औरी छवि पनि अगोंडी अंग्रिनिनि की झल
क जग जोति सी जगति है ॥ तहीं तहीं फूल डु
पहरिया से देषियत कौंन कीन मति देषें प्रेम
सौं पगति है ॥ ३९ ॥ दोहा ॥ सोहत अंगुठाइ कें अ
नवट जसौं जराइ ॥ जीत्यो तरिवन दुति सुढ
रि पस्यो तरनि मनौ पाइ ॥ ४० ॥ टीका ॥ यह नाइक
के स्रृंगार कौ आरंभु है सु एकु ही अनौंटु प
ह्यो है ता की उपमा सषी नाइकु ही सों कहति
है ॥ ४० ॥ कवित्त ॥ प्यारी सिंगार संवारतु वैठी अ
वोंन क आयो न हीं रघि दांनी ॥ ज्यौं ही जनी अ
रुग्यौं ही रही नव नागरि नंदकिसोर के रूप दु
मांनी ॥ नीके जराउ अनौंट लसे पग के अंगु
ठा उपमा सु वषांनी ॥ पाइ पर्यौ है मनौं रवि आ
इकें तेज की हारि नलौं नासो मांनी ॥ ४० ॥ सु
कुमारता दोहा ॥ सरस कुसम मडरात अलि
न झुकि झपरि लपटात ॥ दरसत अति सुकुमा
र तनु परसत मन न पत्यात ॥ ४१ ॥ टीका ॥ यह

वि॰स॰ सुकुमारता विशेष है अरु कोऊ कसबी ना
॥५२॥ इक कौ अमन मिलौ जांनति है सु नाइक की
सषी भ्रमर के प्रसंग करि अन्योक्ति सो वाकौ
असुनि सारनु करति है ॥४१॥ दोहा ॥ सुरभ कौ
आगारु उपवन कौ सिंगारु चारु सौरभ विवि
धि उमग तुजा कौ गातु है ॥ सरस कुसुमनु सर
स अति सोभा सान्यौं निरषि लुभांनौं अति रे
षैं न अघातु है ॥ कहै कवि हरि सु अति रीझ पगौ
आसपास रहै मउ रानों न कपटि लपटातु है
॥ इरस तु वाकौ तनु अति सुकुमारता तैं पर
सनु वाकौ मनु कैसों हूं न पत्यातु है ॥४१॥ दोहा
भूषन भार सम्हारि है कौं इहि तन सुकुमार
॥ सूधे पाइ न परत धर सोभा ही के भार ॥४२
॥ टीका ॥ यह सुकुमारता है सु सषी नाइका सौं
कहति है प्रयोजनु यहै है कि भूषन पहिरत
विलंबु न होइ या तैं वेगि चलै ॥४२॥ कवित्त ॥
विरच्यौ विरंचि तेरो अति सुकुमार तनु ज्यौ
प्यौ तिहू लोक की लुनाई कौ सकेलि है ॥ दे
ष प्रान प्यारे की सौं तेरीय रहु तिराषी मेरे म
रे. न मोह न हूनैं नैंनतु मैं लिहै ॥ सोभा ही के भा
र सूधे पग न परत मग केऊ ठौर रत्न चेकति
लग ज्यौं नवेलि है ॥ हितू हौं तौ हितु करि तूझ
ति हौं हाहा कहै कैसें आभूषननु कौ भारी ॥५२॥

भारीभारमेल्लिहै ॥४३॥ दोहा ॥ मैंवरजीकैवा
रवृइतकनलेनुकरोट ॥ पसुरीलगैंगुलाबु
कीपरिहैगातनषरोट ॥४४॥ टीका ॥ यहनाइकावि
प्रछनसौंदाहैसयनमैंथिरतानाहीयानैंस
षीइसहिषाइसयनुकरावतिहै ॥४३॥ कवित्त
मैंवरजीबहुवारओहेनहिमाननितूवकहौ
घोंकरेगी ॥ लैनिकरोटइतैसुरिकैंओरवीउ
रकौलोंइतैकधरेगी ॥ कोमलआपनेंअंग
निहारितवैसुकुमारिसुकौंसमरेगी ॥ पांषु
रीगातगुलाबकीजोगठिजैहैकहूंतोषरो
टपरेगी ॥४४॥ दोहा ॥ नजकधरतहरिहियध
रिनाजुककमलाबाल ॥ भजतभारभयभीत
कैघनचंदनवनमाल ॥४४॥ टीका ॥ यहनाइ
ककेहरयमैंजुनाइकावसतिहैताकीप्रीति
कोअधिकारसषीसषीसोंकहतिहैसषीना
इकासोंकहैतोप्रीतिनिवेदनु ॥४४॥ कवित्त
निनुभाकिनिकेहितकौंकमलापतिसंततं
चितविचारुकरैं ॥ अतिचंदनुअंगलगावे
चितविचारुकरैं ॥ अतिचंदनुअंगलगावे
नहीवहूलनुकीनहिमालधरैं ॥ अरुजो
कवहूंकसिंगारसजैंकविहल्लमतकलंकै
सैपरे ॥ हहिसोचहियैंनिसद्यौसडरेंअतिनाजु
कश्रीमतिभारभरे ॥४४॥ दोहा ॥ छालेपरिवे
केडरनिसकेनहाथपसिवाइ ॥ मनकनिहियै

बि० स० गुलाब के झमाकमै ग़त पाइ ॥४५॥ टीका य
॥६०॥ ह नाइका के चरननु की सुकुमारता सखी ना
इकु सौं कहति है सखी ह्नसौं कहै ॥४५॥ कवित्त
पौंन लगैं अति पंख कौ होति चलत चलिकै सैं
बयारि करैं ॥ सम कहै कहूं कैसरि अंग लगै
पैतौ सोति उछाह मरैं ॥ प्यारी के नाजुक पाइ
निहारि कैं हाथ लगावति दासी डरैं ॥ धोबति
फूल गुलाब के लैये न ऊकन कैं मति छाले
परैं ॥४५॥ सिछा दोहा ॥ लग्यो सु मनु कै है
सुफलु आन पुरो मनि वारि ॥ वारी वारी आ
पनी सींचि सुहृदता वारि ॥४६॥ टीका यह स
खी कौ वचन नाइका सौं है सिछा ॥४६॥ कवि
वारी है न बावरी तू देति लइ वा ह्यौ कौं मानु
करिवे कौ उर मोसरू विचारियै ॥ अव ही तो
नेह वेलि न बलकन गाई ता हि जतन नजतन
हट करि पोषि पारियै ॥ लाग्यो है सु मनु सुनै
हो हिगो सुफलु अव कहै कवि केसरि तु आ
न उनिवारियै ॥ सीख मांनि मेरी मनि सौति नु
के चौंन करै प्यारी प्रीति रस ही सौं सींचि हि
तु वारियै ॥४६॥ दोहा ॥ दीयौ अरघु नीचैं च
लौ संकट भानै जाइ ॥ सुचिती कै औरै सबै
ससिहि विलोकैं आइ ॥४७॥ टीका ॥ यह नाइ
का के सुख की सोभा सखी कहति है ॥४७॥ कवित्त ॥६०॥

ह जिनि साकर ग्रथी है यौ अवनी चैं चलौ
वलि संकर भानैं ॥ और नु की दुषि ताई मिटै
जिनि साधि उपास मनोरथ ठानैं ॥ चंद उतै इ
नतो मुष चंद्र कितै विन वैं चित सो वसमानैं
॥ वे अपनैं ब्रत हू रे करैं जु रही चकि आं चर
दे उर आनैं ॥ ४७ ॥ दोहा ॥ हू रहि हों हीं सषि ल
षों च हि नु अटा वलि वाल ॥ सब हि तु विनु
ही ससि उदै दीजतु अरघु अकाल ॥ ४८ ॥ दो॰
यह नाइका के मुष की सोभा की अधिकाई है
सु सषी नाइक सों कहति है ॥ ४८ ॥ कवित्त ॥ हौं
ही अटा च ढि हौं ससि देषने तू सजनी रहि औ
गन हीन न ॥ और कितीक वनी कि बनी व
निता सब देषत चंद उदौ छिन ॥ तो मुष देषि
उछाह भरी सब दैं हिंगी अरघु मयंक उदै विन
॥ और न के मत भंग करै मति हो हि गोप
न कु मानें कह्यौ किन ॥ ४८ ॥ दोहा ॥ कहा ल
डैं ते दृग करे परे लाल वेहाल ॥ कहुं मुरलि
का पीत पट कहूं मुकट वन माल ॥ ४९ ॥ दो॰
यह नाइका के नैन देषि नाइक की जु दसा भ
ई सु सषी नाइका सों कहति है प्रयोजन कि
नेरी चाह है तू वलि ॥ ४९ ॥ कवित्त ॥ तेरी चि
जवतें नवतैं उह भाव रह्यौ चितु चेतु रह्यौ

है॥ पीतपटी लकुटी कितहूं अरु मोरकिरीट
कहूं बिसर्यौ है॥ नलि गई बनमाल हू की सु
धि हाल लषैं मनु मेरी इर्यौ है॥ लाडिलीनैं
न लडैते कहा करे देषि नो लाल बिहाल पर्यौ
है ॥४९॥ विनयदोहा॥ पियमन रुचि कैवौ क
ठिन तन रुचि हीन सिंगारु॥ लाष करो आंषि न
बढैं बढैं बढायें बारु॥५०॥ टीका॥ यह नाइका
सिंगार करत है षी सु सषी नाइका सौं कहति
है अथवा सौतिनिकौ श्रृंगारु देषि याकैं ईरषा
भई सु सषी सौं कहति है यामैं प्रेम गर्बिता हू
होइ॥५०॥ कवित॥ वेआ कुंजसदन विलोक
तु है तुव मगतेरो नाम मोहन रटतु वारवा
रही॥ उठि चलि हेलि मिलि मानि रंग रली आ
ली मेरो कह्यो मानि अनगवति कहा रही॥ पि
य मन बस करिबो ई है कठिन अरु नन नउ निस
रस निमाजें उ सिंगार रही॥ कहै कवि लस कीजे
लाष कुजतन नन ऊलो चन न बढन बढायें ब
ढें बार रही॥५०॥ मनाइबौ दोहा॥ गहि लीग
रवन कौ जियेस मै सुहा गही पाइ॥ जियकी
जीव निजे हसो मोहन छौ है सु हाइ॥५१॥ टी
यह सषी कौ सिषा है अरु जो ज्य ष्टाकनिष्टा
के भेद मैं यासौं नइ कै कौ हितु देषि सौतिनि क
है तौ हू सम वै ईरषा संचारी हू होइ॥५१॥ कवि॥६१॥

अलिहौंसमुझावतितौहियहैनजिमानहहारु
घरेहिहमैं॥फलकौंनलेहैवेलिजोवनकौम
नमोंहनसौंमिलिक्यौंनरमै॥लइबावरीपाइ
सुहागसमैंजिनिएतौगुमानधरैजियमैं॥स
वकीवहजेरमैंजीवनिमूरिसुछांहसुहाइन
माहसमै॥५१॥मिलैवौदोहा॥सघनकुंजघ
नघनतिमरअधिकअंधेरीराति॥नऊनदु
रिहैस्यामयहदीपसिषासीजाति॥५२॥टीका
यहनाइकुनाइकानिसंककुंजमैंवैठेहैंसु
रुसषीनाइकसौंकहतिहैयाकीदीपिवनेनु
करिसिछाकहतिहैअथवानाइकुअंतरंग
सषीसौंकहैयाकौंकुंजमैंलैचलितहौंस
षीसौंकहिवौसंभवै॥५२॥कवित्त॥रैनिअंधे
रीनेहहैसोपरैकरकुंजसवैतनपुंजनिछा
ई॥घूमघनेंघुमडेघनहूंरअमंदमईतमकी
सरसाई॥मेचकसाजिसिंगारकैंजहदिपिआ
ईससंककियेंचतुराई॥दीपसिषासमदीप
तिलालनऊपहवालदुरैनदुराई॥५२॥मि
लिवौदोहा॥फूलीफालीफूलनसीफिरतिजि
विमलविकास॥भोरनरैंयांहौहितेचलत
लोहिपियपास॥५३॥टीका॥येहमनाइवोस
षीनाइकासौंकहतिहै॥५३॥कवित्त॥निरषि
निकाईतेरीहौंतौविकाईवलितुहअलवे

लीकछुमेरौकह्यौवरैगी॥नेरीउनिरतिनर
तीकलागैसाचीकहिकौलौंऐसोहठउरध
रैगी॥फूलीफलीफिरतिसिंगारसजैंसोतिने
रीतिनकैगुमानकहितूधौंकवहरैगी॥मोर
कीतरैयांसमदेषियैंगीप्यारीसहितुकरिज
वतूंपियाओरवरैगी॥५३॥सिंगारवौदोहा
ननभूषनअंजननइगउपगनिमहावररंगु
॥नहिसोभाकौंसाजियतुकहिवेहीकौंअं
गु॥५४॥टीकायहनाइकाकेअंगकीस्वभा
विकसोभासषीकहतिहैनाइकासषीसौंक
हैतोरूपगर्बिताहोइबिछिपतहाउहसंभ
वे॥५४॥कवित्तसहजअरुनगुलफनितैंउ
ठतिछटातिनकौंनिकटकहाजावककौरं
गुहै॥गातनकीगुराईआगेंकंचनकेआभूष
नफीकेसेतगतरंचसोभाकौनसंगुहै॥अं
जनहूंआंजेबिनुनैनकजरारेदेषेंनरूनी
अनेकनिकोहोतुमनभंगुहै॥तोतननासिंगार
कछुसोभाकौनसाजियतुजानिअहिवातही
कौअंगुहै॥५४॥दोहा॥वेंदीभालतमोरमु
षसीससिलसिलेबार॥इगआंजेराजेपरीयु
हीसहजसिंगार॥५५॥टीका॥यहनाइकाकी
सहजसोभासषीनाइकसौंकहतिहै॥५५॥का०
बैंदीछबिछाजतिहैललितलिलारपरनीकी॥६॥

नवजोवनकीजोतिनिरिखनिहै॥सितसिलेस्यामसटकारेसुकुमारबारनिरषिसिवारपांतिसिरनिसरतिहैं॥अंनमहलअधरञतिञरुनतमोरभरेषंजनसेडगनुमैंअंजनधरतिहै॥सहजसिंगारयेहीराजतञपारडतिसोतिनुकीआंषिनुमैंछारसीपरनिहै॥५५॥कुमिवोदोहा॥परीपातुरीकोनकीकोनवहोकवानि॥आकककलीनरलीकरेञलीञलीजियजांनि॥५६॥टीका॥यहनाइकाकेमनमेंनाइककोञभ्यासनिजांनिभ्रमुभयोहैसुसषीनिवारनुकरतिहै॥५६॥कवित्त॥बोतकहैकोकहुंयोंईजोआंनिकैंनमनमोईसुसांचीकैजांनिहै॥जांनिपरीषरीकोनकीपातरीसीषीकिनेकहिधौंयहबांनिहै॥छोडिहैंक्योंमृडुमालतीवेलिमलीरसरूपरलीसुषदांनिहै॥आकरकलीपैञलीसुषपाइञलीकहिरंगरलीकवमांनिहै॥५६॥दोहा॥नोरसराओंआंनवसकरैकुटिलमतिकूर॥नीवनिवोरीलगैक्योंवोरीचाषिञंगूर॥५७॥टीका॥यहनाइकाकेमनमेंनाइकञभ्यासकिहैयहहैनिश्चयहैसुसषीनाइकासोंकहतिहैयहभ्रमुनिवारनुकरतिहै॥५७॥कवित्त॥तेरोईध्यानधरैनंदनंदनकांननहंसुनैंतेरीकथा

र०स० है॥ नीरसरंगमें पागिरह्यो निसिवासरतेरेई ह
॥६४॥ पसेराहै॥ नाहितू औरसोंराच्योकहैकहिमोसों
हहामनेआईकहाहै॥ बावरीरहिबिविचारीहि
येंकोऊदोषहिछाडिनिवैरहिचाहै॥ ५८॥
आलंबनदोहा॥ गलीअंधेरीसांकरीभोभ
टभेरीआनि॥ परेपिछानेंपरस्परदोऊपरस
पिछानि॥ ५९॥ टीका॥ यहअंधेरीगलीमेंजा
मातिभेटभईसुसषीसषीसोंकहतिहैस्वरस
कोपहिचांनिवोदोऊनुकोआगेंमिलापहै
यहसंगिनाइकापरकीयारसकीहलीनाहीं
तिहै॥ ५८॥ कवित्त॥ रैंनिअंधेरीघनेंघुमडेघन
भूमिमहानघुपुंजछयेहैं॥ जैसीयैसांकरील
वीगलीभरभेटअचांनकदोऊभयेहैं॥ गा
तसोंगातहिलागतहीजियजांनिहियेंलप
टाइगयेहैं॥ राधिकामाधौजूमाधौजूराधि
काआपुहीतेंपहिचांनिलयेहैं॥ ५८॥ उदीप
दोहा॥ उयोसरदराकाससीकरतक्योंनचित
चेतु॥ मनौमदनछितिपालकोछांहगीरछ
बिहेतु॥ ५९॥ टीका॥ यहमानवतीसोंसषीको
वचननाइकाकोमानुछुडाइवोप्रयोजनु॥
५९॥ कवित्त॥ वलिआजुसुहाईवनीराकाकीरं
निविहारसमोसुषसाजतुहै॥ वुहरेबिरीदइ
उदोतभयोअनाइगहैछबिसोंछबिछाज ॥६४॥

है॥ अवलोकनजाहिरिसैलनिपानिकौमा
नुकहूंउरिभाजतुहै॥ यहमानौंमनोजमही
छितिपालकौमानिकछत्रुविराजतुहै॥ ५९
॥ दोहा॥ डिगतुपानिडगुलातगिरिलखिसब
ब्रजबेहाल॥ कंपकिसोरीदरसिहरषेलजाय
लाल॥ ६०॥ टीका॥ यहसात्विकभावसखीकौ
वचनसखीसौं॥ ६०॥ कवित्त॥ लोपुरुन्योंवलि
कौमघवानवकोपकैमेघसबैसुकेलाये
॥ गोधनुका क्रधलौतवहीसबकेउरकेभय
हरिमगाये॥ पानिडुगैंडगुलातलखौगिरि
लोगसबैब्रजकेअकुलाये॥ गोपकिसोरीनि
हारिसुकेपिवगातबरेनंदलालललजाये॥
६०॥ दोहा॥ सुरतनतालननैननकीउरझौनतु
रंगहराइ॥ येरीरागविगारिगोवैरीवोलसुन
इ॥ ६१॥ टीका॥ यहसात्विकभाउनाइकाकौव
चनसखीसौंअरुसखीकोवचननाइकासौंही
रतोलछिनासखीसखीहूसौंकहैतौसंभवै
परकिया॥ ६२॥ कवित्त॥ लैकेरवीनप्रवीनतिया
सुरसाधिकेगानकौठाठुठयोहै॥ बारपैआ
इकैनाहीसमैंमनमोहनकाहूकौनाउलयौ
है॥ नानकहूंअरुतालकेकहूंसुरतौकछूऔ
रतेंऔरभयोहै॥ वैरीअबांनकबोलसुना

वं॰ स॰ इकैं नंद कौ रागु विरागा रिगयो है ॥६१॥ दोहा
॥६४॥ ध्यांन ग्यांनि दिंग ग्यांन पति सुदि नर रतिनि
नरानि ॥ पलकु कपति पुलकनि पलकु पल
कु पसीजनि माति ॥६२॥ टीका यह नाइकानि
रहनी ध्यांन करि मिलनि है तवही सात्विक
भाव होतु है सु सषी सषी सों कहति है सषी ना
इका सौं कहै तो हू सं भवै ॥६२॥ कवित्त॥ वाहरि
के विछुरें गति ऐसी भई सु वषांन कहां लगि
कीजै ॥ ध्यांन ही ध्यांन में वदनु वी मिलि पी
पी के रस रंग मै भीजै ॥ रैनि दिना रहै मोद भरी
वह कोइ वियोगनि क्यौं न तजीजै ॥ कंपिन कै
कवेहू लल कै कवेहूं पुलकै कवहूं कपसी
जै ॥६२॥ दोहा स्वेद सलिल रोमंच कुस गहि
दुलही अरु नाथ ॥ हियौ दियौ संग साथ कै
हथलेवा ही हाथ ॥६२॥ टीका यह विवाह स
मय दोऊंनु के अति सनेह कौ अधिक्यतें सा
त्विक भाव भयौ सु सषी सषी सों कहति है ॥
६३॥ कवित्त॥ मंडप मंडल ली रचि साधि कै वे
द विधांन सौं दांनु दियौ है ॥ स्वेद भयौ सोइ नी
र नयौ उहै पुलकैं कुस पुंज लियौ है ॥ मैन मु
नि द्वयो गुपत्यौ रस के लिहियैं अभिलाष
कियौ है ॥ दोऊंनु ले अपनौ अपनौ यौं दियौ
हथलेवा इहां हियौ है ॥६३॥ दोहा ॥ नव्यौ ॥ ॥

आंच अति विरह की रह्यौ प्रेम रस भीजि ॥ नैं
ननु के मग जलु वहै हियौ पसीजि पसीजि
६४ ॥ टीका ॥ यह नाइका अथवा नाइका कुं वियो
गतें असुवा वहि नहैं तिन को उत्प्रेछा करतु
है सुसषी सषी सौं कहै ॥ ६४ ॥ कवित्त जा दिन तें
ब्रज नागरि को मनु नंद किसोर के नेह गह्यौ
॥ ता दिन तें दिन रैंनि द रैं असुवा तिन को य
ह मेदु लह्यौ ॥ आंच न चौ विरहा नल की हि
न के रस में अतिभीजि रह्यौ ॥ ता तें पसीजि हि
यौ वियनैं ननु के मग नीर वह्यौ ॥ ६४ ॥ दोहा
मैं यह तो ही मैं लषी भगत अपूरव वाल ॥ ल
हि प्रसाद माल जु भौ तनु कदंव की माल ॥ ६५
टीका ॥ यह सात्विक भाव सषी को वचन नाइका
सौं परकिया लछिता होइ ॥ ६४ ॥ कवित्त ॥ कौरि
झवारि न पेम पगी रंगि लाल न के रंग लाल भ
ई है ॥ कौन हू की छवि देषि गुपाल की कोवनि
तान विहाल भई है ॥ मैं निरषी यह तो तन आ
नु अपूरव भक्ति रसाल भई है ॥ माल प्रसाद
को पाव नहीं सव देह कदंव की माल भई है ॥
६५ ॥ नाइका कौ वचन सषी सौं दोहा ॥ दौरी ल
ई सुनन की कहि गोरी मुसकात ॥ थोरी थोरी
सकुच सौं भोरी भोरी वात ॥ ६६ ॥ टीका ॥ यह ना

कापोढ़ानाइकाकीचेष्टादेषीहैसुसषीसौं
कहतिहै ॥६६॥ कवित्त ॥ जादिनतेंवहसांवरो
नैंसुकनैंनमिलैमुसिकाइगयोहै ॥ तादिन
तेंकविहलकरैमनुवारीकेहाथविकाइ
गयोहै ॥ चोरीसीलाजगहैंहितचीकनीभो
रीसीवातसुनाइगयोहै ॥ कांननकौंअवत
तियकीसुनिवेहीकीढोरीलगाइगयोहै ॥
६६ ॥ दोहा ॥ जौलौंलहैंनकुलकथाढिकुतौ
लौंठहराइ ॥ देषेंआवततेंदेषहीक्यौंहूंरह्योन
जाइ ॥६७॥ टीका ॥ यहनाइकाप्रौढ़ाअपनीइ
ढतासषीसौंकहतिहै अरुनाइककोसुरूप
ऐसोसुंदरहैजुदेषैंतेंक्यौंहूंरह्योनाहीजात
नाइकाकोवचनसषीसौं ॥६७॥ कवित्त जौलौं
नडीठिपरैमनमोहनहौंनचहौंसषितौलौं
सयांनहि ॥ डीकहुंढांनिपतीव्रतकौकरिलै
कुलकांनिकथाकेवषांनहि ॥ लोचनवौंहूं
नरोकेरहैंजवदेषतवामृदुमूरतिकांन्हहि
॥ देषैंविनानरह्योनपरैकैसेंहूंमेरोकह्योकि
निसांचुकैमांनहि ॥६८ ॥ नाइककोवचनसषी
सौं ॥ दोहा ॥ रहिनसकयोकसुकरिरह्योवसक
रिलीनोंमार ॥ भेदिदुसारकियोहियौतनदुति
भेदेंसार ॥७०॥ टीका ॥ यहनाइकाकेननकीढ ॥६५

निनाइकुसषीसौं कहतु है ॥ ६८ ॥ कवित्त ॥ राधि
का रंग भरी कौं मनौं विधि नी नहूं लोक कौ रू
प दियोई ॥ नाहि अली अवलोकि नही वियनें
नतु प्रेमपियूषपियोई ॥ जदपि के नौ रच्यौ क
सु कै धरि कै अति धीर जु मेरो हियोई ॥ नदपि
वा तन की दुति मे इक सार नैं मेरि हु सार कि
योई ॥ ६९ ॥ सोरठा ॥ नौतन अधिक अनूप रूप
लग्यौ सब जगत कौ ॥ मो दृग लागे रूप दृगनि
लगी अति चटपटी ॥ ६९ ॥ टीका ॥ यह नाइका
के रूप सौं नाइक के दृग लगे हैं सु अपनें नेत्र
नु की तलफनि कहतु है नाइक कौ वचन नाइ
का सौं ॥ ६९ ॥ कवित्त ॥ सुंदरता की तुही परमा
विधि नैं रमि की दुति पाइन पेली ॥ कोर मनी
रमनीयतिहूं पुर राधिके तो सम हो इ जु है
ली ॥ नौतन मोहे हैं लुनाई की षानि लग्यो ति हूं
लोक कौ रूप नवेली ॥ त्यौं तिहि रूप लगे मम
नैंन लगी मम नैंननि त्यौं तलवेली ॥ ६९ ॥ दो
सहित सनेह सकोच सुष स्वेद कंप मुसिकानि
॥ प्रांन पान करि आपनें पान धरे मो पानि
७० ॥ टीका ॥ यह नाइक कौं पान देत नाइका कै
सात्विक भाव भयौ अरु नाइक के प्रांन वा वि
हसनि कै देषि वसि भये सु सषी सौं नाइक कह
तु है सु मित्र जु जांनियें ॥ ७० ॥ कवित्त ॥ वा मृग लो

वि॰सं॰ चनिके सब अंग गृअ नैंग विलास बसी कर हेरे
॥६६॥ ॥ खेट सकोच सनैं कविहेस सनेह भरे सुषपुं
ज घनेरे ॥ कंपत गात कछू मुसिकानि चदाइ कें
भौंह विलोचन फेरे ॥ मोकर पानि दये हितु सों
उनि प्रांन लये अपनें कर मेरे ॥७०॥ दोहा ॥ ऊंच
चिते सराहियतु गिरह कबूतर लेत ॥ झलकि
तदृग मुलकित वदनु तनु पुलकित किंहि हे
त ॥७१॥ टीका ॥ यह नाइक कौ कबूतर देखि
नाइका कैं सात्विक भाव भयौ सु सषी नाइका
सौं कहति है परकीया लक्षिता ॥७१॥ कवित्त
अंमर मैं सोभा साजि उडत है पारावत बाजी
करें रंग मैं गिरह आछी लेतु है ॥ तिन्हैं सब
कोऊ नैंन ऊंचे करि चाहतु हैं री फिरि फिरु
घर सराहतु सहेतु हैं ॥ चाहिवौ सराहिवौ बिस
रि गयौ तोहि प्यारी देषत रही हरे चित चेतु है
॥ झलकि नैंन मुलकित है अधरन तेरे सांची
कहि अंग पुलकित कौंन हेतु है ॥७१॥ दोहा
रहौ गुही वेंनी लषें गुहिवे के त्यौं नार ॥ लागे नी
र चुचान जे नीठ सुकाये वार ॥७२॥ टीका ॥ यह
नाइक सषी भेष कै नाइका कौ श्रृंगार करन
लाग्यौ वेंनी गुहत सात्विक भाव भयौ तव ना
इका नैं जान्यौ सु नाइक सौं कहति है ॥७२॥ क
गोपी कौ वेषवन[illegible]इ सु पालज्यौं श्री हरि भौंन सु ॥६६॥

नाहिंग आये॥ हौंस जिआं ननि नीकैं सिंगा
रु कहै सु करौं कहै वैं न सुहाये॥ वेंनी गुहाव
न प्यारी के यौ सुघरापन येकिन तें तुम पाये॥
नीर चुचांन लगे अ वहीस टकारे सेवार जेना
ठि सुकाये॥ लीलाहाव दोहा॥ राधा हरि हरि
राधिका वन आये संकेत॥ दंपति रति विपरी
ति सुष सहज सुरतहूं लेत॥ ७३॥ टीका॥ यह ली
लाहाव रति विपरीति समय सषी सषी सौं क
हति है॥ ७३॥ कवित्त॥ देषिवे कौं देह द्वै पै येक
मन एक प्रांन रूप सील वेस गुन चातुरी समे
तु है॥ जैसें दोऊ सांचे मन राचे प्रीति रीति
रंग आजु लौं न देषे कहूं ऐसो हियहेत है॥
राधा माधो माधो राधा अद लिवदलि षे
लनि वनि आये कुंज केलि के निकेत है॥ कैहै
कवि हम दोऊ सहज सुरति करि रति विपरी
ति के विविधि सुष लेत हैं॥ ७३॥ सात्विक भा
व दोहा॥ मैं क उनै उठि वैठिये के हार है गहि गै
ऊ॥ छुरी जानि नहदी छिन कुमहदी स्वेक न
है ऊ॥ ७४॥ टीका॥ यह नाइक कौं देषि नाइका
कौं सात्विक भाव भयौ है सु सषी नाइका सौं नि
वेदन करति है नाइका हू सनेह कैं अधिकपतें
नाइक सौं कहै॥ ७४॥ कवित्त॥ आजु लौं कैसे
हू जांनि परी न चली जव तैं रसरीति चला॥ दे

बिनु मूंदे उमग्यो अवही कंप छवि छोरनि स्वेद
जला ॥ वैठकुनैं कत नेउ ठिकै उघरीयह आव
ति ओसमकला ॥ जानि छुटी अवहीन हरीम हदी
छिनु सकनदे कुलला ॥ ७४ ॥ दोहा ॥ पहिरत ही गो
रेगरें यों दौरी दुति लाल ॥ मनौं परसि पुलकि
त भई वौंलिसिरी की माल ॥ ७५ ॥ टीका ॥ यह नाइ
क के कंठ की माला के सपरस सों नाइका कैं सा
त्विक भाव भयो है सु सषी नाइक सों कहति है ॥
७५ ॥ कवित्त ॥ सोरभ सहित चुनि चुनि कैं कुसम
चारु आपनैं करन मनमोहन गुही वनाइ ॥
मैं तौ जाइ दीनी उनि लीनी अति आदरसौं प
हिरी हियेमैं प्रान प्यारी हित सरसाइ ॥ हम सपं
न प्यारे वाके गोरें गरें नाही बिनु उपजी म वल
दुति रही ओसी छवि छाइ ॥ मेरे जांन लाल वौं
लसिरी की ललित माल पुलकित भई वाके तन
न को परसु पाइ ॥ ७५ ॥ दोहा ॥ हितु करि तुम पठयो
लगें वा विजना की वाइ ॥ टली तपति तन की
तउ चलो पसीना न्हाइ ॥ ७६ ॥ टीका ॥ यह नाइक
कैं वीजना की व्यार लगें नाइका कैं सात्विक भा
व भयो सु सषी नाइक सौं कहति है ॥ ७६ ॥ कवित्त
मोरपषौं वनिकोर चिकें हितु कै पठयो तुम प्या
रे विहारी ॥ ताहि विलोकित ही तिय की तनता
प टरी उमग्यो सुड़ भारी ॥ हौं तौ विलोकि च
चे मेरही अवलौंन [illegible] ढंग तिओसी निहारी ॥ वावि ॥ ६१ ॥

जनाकीवयारिलगैवह काइपसीनाकेनी
रमैंनारी॥७६॥दोहा॥इहवसंतनपरीअरीगर
मनसीतलवान॥कहिक्योंफलकैंदेषियतुउ
नकिपसीजेगात॥७७॥टीका॥यहसात्विकभा
वदेषिसषीनाइकासौंकहतिहै परकीयाउछि
ताजांनियै॥७७॥कवित्त॥सोहतुसमानसमै
यहतौवसंतरितुनाहिनैंगरमअरुसीरकैन
आतिहै॥कहैकविहमसेवुलिहमसौंतौसांची
कहिकोहैतेंछवीलीभईतेरीअैसीगतिहैं
॥कबहूंतपतगातकवहूंपुलकहोतकवहूं
पसीजिआवैकवहूंकपतिहै॥जांनीहैरीजां
नीहितसांनीअंरगांनीरहिदेषिरधिरांनी
पंमरसमैंपगतिहै॥७८॥मदहावदोहा॥तनी
संकसकुचितनचितनचितवोलतवाकुंक
वाकुं॥दिनछिनदाछाकीरहतिछुटतुनछि
नुछबिछाकु॥७९॥टीका॥यहनाइकाकौंछवि
कोगर्वहैसुसषीसषीसौंकहैनाइकासौंसषी
कहैमदहावजोनाइककीछविकोछाकु॥सषी
कहैतोलछितहोइ॥७९॥कवित्त॥कहूंहूं
मनवातहिऊतरुदैतिनाऽलाइटकीअनि
मेषतकै॥अरुकांनिकैरैनअलीनहूंकीनः
जिलाजमरोषानिकैउमकै॥सवसंकतेजीम
कुचैनहियैमुहंआवैतुवाकुकुवाकवकै॥र
हैरैनिदिनाव्रषभांनसुतांछविछाकछकीन

वि०सं० छिनै उमकै ७८ ।। विभ्रमहाउ दोहा ।। रहीर
।। ६८ ।। हैं डीठि गथरी भरीमथ नियां वारि ।। फेरतिके
रि उलटी रई नई विलोव निहारि ।। ७९ ।। टीका
यह नाइका कौ विभ्रमहाउ देषि सषी नाइका
सौं कहति है सषी सषी हू सौं कहै ।। ७९ ।। कवित्त
पास दहैंडी धरी पै रही जे लसौं भरि कैं जु मथ्यौ
नील ई है ।। घ्यौ मसौं ने तील पेटि दई उलटी क
रि फेरति ता मैं रई है ।। मोहि तौ लागति नी की
महाउ रस रस प्रेम की रीति ठई है ।। सांवरी स्व
ति की रिस वारि न इत्तू विलोवन हारि भई है ।।
७९ ।। कुटमितहाउ दोहा ।। लहि सूनैं घर करग
हत दिषादिषी की ईठि ।। गडी सु चित नाही क
रति करि ललचौंही डीठि ।। ८० ।। टीका यह सु
रतारंभ समै नाइका की जु चेष्टा देषी सु नाइ
क सषी सौं कहत है परकीया हू कुटंमितहाउ
८० ।। कवित्त ।। देषी ही दिषी की डीठि अचांनके डी
ठि परी अकिली घर मांही ।। साहसु कै अपनें
उर मैं अति मोहि गजाइ लई गहि बांही ।। लैसि
सि की सहराइ करै उहिं तीछन नैन कियै चहूं
घां ही ।। कै ललचा वनी डीठि करी वह नाही हि
यै तें टरै अव नांही ।। ८० ।। वोधकहाउ दोहा ।। :
हरषि न वेली लीलन विलल न निरषि अमिल संग
साथ ।। आंषिन हूं मैं हंसि धरयौ सीस हियैं धरि
हाथ ।। ८१ ।। टीका ।। यह वोधकहाउ नाइका कौ ।। ६८

ढा परकीया नाइकै कौं देषि जु चेष्टा कीनी सु
सषी सषी सौं कहति है ॥८०॥ कवित्त ॥ ऊषिल समा
ष मैं देषि गुपाल हि गोप कुमारि करी चतुरा
ई ॥ बैंन कछू न कहै मुष तैं लषि फूली मनौं नि
धि नी निधि पाई ॥ हाथ धर्यौ हियपै पहिलैं पु
नि सी सछियौ रसरीति वढाई ॥ आंषि निहीं मैं
कछू विहसी पिय कौं जिय की सब वातन वुनाई
८१॥ दोहा ॥ लषि गुरजन विच कमल सौं सी
स छुवायौ स्यांम ॥ हरि सन्मुष करि आरसी हि
यें लगाई वाम ॥८२॥ टीका यह नाइका प्रौढा
परकीया हूं उन्हूं जु चेष्टा कीनी सु सषी सषी सौं
कहति है ॥८२॥ कवित्त ॥ आगें ई दुहूं मिलि कैं स
जनी कछु सैंन तु ही समझ्यौ समझायौ ॥ गो
री लषी गुरु नारि नु मैं सरसी रुह सौं सिरु स्यां
म छुवायौ ॥ सो लषि कैं वृषभान सुता हियो
ऊनरु मेरु सु काहूं न पायौ ॥ हेम के हेंहरि
कै सनमुष है कर दर्पन वाम हियें सौं लगायौ ॥
८२ ॥ केलि किंचित हाउ दोहा ॥ सुनि पग धु
नि चितई इतै न्हाति दियें ही पीठि ॥ चकी झकी
सकुचौ उरी हसी लजीली डीठि ॥८३॥ टी० यह
नाइका जा समैं नाइक नैं देषी ता समैं कीजु चे
ष्टा उनि कीनी सु नाइक सषी सौं कहतु है ॥८३
कवित्त ॥ काम की वाम न्हाते अभिराम लसै उति

वि०प्र० जोवनकीरसमांनी॥ज्ञांनरीपाढिहियैंअ
॥६९॥ किलीसकिलीधुनिमोपगकीपहिचांनी
॥आहुविसौंचितईदुहिऔरसुकेसेंहूंमो
पैनजानिरषांनी॥चौकीचकीसकुचीडर
पीकरिडीठिलजौंहीतुकीमुसिकांनी॥८३
॥दोहा॥वालमवारेसोतिकैंसुनिपरनारि
विहार॥भोरसुअनरसरिसरलीरीझषी
झइकवार॥८४॥टीका॥यहनाककीवक्रना
इकनासुनिकैंनाइकाकैंदुषभयोऔरसो
तिकीवारीव्रथाभईसुनिसुषभयोसुसषी
सषीसोंकहतिहै॥८४॥कवित्त॥वैठीसषीउ
समाजुमैंप्यारीसिंगारकेसाजनुसौंसरसो
नी॥केहूंकहीतुवसोतिकेऔसरैंआंनवदू
कैगयौदधिदांनी॥सोसुनिकैंकविकहसक
हेरहसीविलषीकुलसीअकुलांनी॥येकही
वेरलसीमगलोचनिरीझिकैमुसिकांनी
रिसांनी॥८४॥दोहा॥पतिरतिकीवतियांकही
सषीलषीमुसिकाइ॥केकेसवेरसलारलीअ
लीचलीसुषुपाइ॥८५॥टीका॥यहनाइकाकौ
२ सुरतामेसमोजांनिसषीकछूमेसुकरिउठि
चलीसषीकोवचनसषीसों॥८५॥कवित्त॥
चौपरिषेलपगीवनिताव्रजराजविलोकित ॥६९॥

हीलखचांनौं ॥ मैंनतुमैंकछुकेलिकलो
लकीबातकहीमनमैंनभुलौनी ॥ प्यारीअली
नुकीओरलषीहंसियौंरसभाउहियेंरमभां
नौं ॥ देषिसवैसुषपाइचलीअपनैंग्रहऊकै
कछूऊरमुदांनौं ॥ ८५ ॥ दोहा ॥ लषिदैरतपि
यकरेकेटकुवासुछुडांवनकाज ॥ वरूनी
वनगाढेंडगानुरहीगुढैकरिलाज ॥ ८६ ॥
॥ टीका ॥ यहसुरतसमैयसषीसषीसौंकहति
है ॥ ८६ ॥ कवित्त ॥ रतिमंदिरमैंनवनागरिकौ
कमिलेरसंरंगहियेंढरिकै ॥ दलदैरतदेष्यौ
नहांपियकोकरूवासुछुडांवनकौंअरिकै
कविछमकैहैरहराइनहौंनसकीरहीधीर
जकौंधरिकैं ॥ गहिओटघनैंवरूनीवनकीर
हीनैंननुलाजगुढैकरिकैं ॥ ८६ ॥ दोहा ॥ भौं
हनित्रासतिमुहनटतिआंषिनेसौंलपटा
ति ॥ ऐंचिछुडावतिकरइचैआगैआवतिजा
ति ॥ ८७ ॥ टीका ॥ यहसुरतारंभसमैंप्रौढानाइके
काकीजुकियाचेष्टाहैसुसषीसषीसौंकह
तिहैनाइकासषीसौंकहैतौहसंभवै ॥ ८७ ॥
॥ कवित्त ॥ तियसूनैंअवाससरोजमुषीदुतिपुं
जनिकौंउमगावतिसी ॥ नहांलसअचानकै
आंनिगहीचहीमौंहनुसौंडरपावतिसी ॥

वि॰ स॰ ॥७०॥ अरु आंषिनि मैं लपटानि सी आंनन नाकरिता
क चढावनि सी ॥ वह ऐसें बिछुरात जि वांह इहीं
मिलि आतुर ची ढिग आवनि सी ॥७७॥ दोहा ॥ स
कुचि सुरतारंभ मैं बिछुरी लाजल जाइ ॥ दर
कि दार दुरि ढिग भई दीठ ढिठाई आइ ॥७८॥ टीका ॥
यह प्रौढा नाइका कौ सुरतारंभ सु सषी सषी
सौं कहति है ॥८८॥ कवित ॥ अति अभिरामस्या
१ मा स्यांम रति मंदिर मैं विहंसत उमगि अनंग रं
ग भरि कैं ॥ नषदान रददान चुंबन अधर पां
न आलिंगन करत अनेक भाइ भरि कैं ॥ सुर
त के आरंभ मही लाज लजवंती सषी निपट ल
जाइ जियगई कहूं टरि कैं ॥ दास सुहियै मैं गहि
निथरक कै कैं आइ ढीठ भई निकट ढिठाई
दीठि दरि कैं ॥७९॥ दोहा ॥ जदपि नाहि नाहीं
नहीं बदन लगी जक जानि ॥ तदपि भौंह हांसी
सी भरी हांसीयै ठहरानि ॥८०॥ टीका ॥ यह सु
रतारंभ नाइका प्रौढा सषी वचन सषी सौं ॥८०
॥ कवित ॥ वेदी सिंगार सजैं ब्रजनारि अचांन
क मोहनु आयो नहांहीं ॥ पानि गह्यो अवलो
कि अकेली ओलो कि केलि कला चित चा
ही ॥ जदपि वा न वनागरि के मुष लागी यहै
कंनां नननां ही ॥ तदपि हांसी भरी भ्रकुटी
नु मैं बीस विसे ठहरानि है हांही ॥८१॥ दोहा ॥ ७०॥

दीपउजेरेंहूं पतिहिरेहे नव [illegible] सन रतिकाज
॥ रहीलपटिछबिकीछटनुनैकौछुटीनला
जे ॥ ९१ ॥ टीका ॥ यह सुरतवर्नननाइकाकेतन
नकीदीपतिकौत्र्याधिक्यसषीकौवचनसषी
सौं ॥ ९१ ॥ कवित्त ॥ नैसोईप्रकासरतिमंदिरकेदी
पनकौनैसोईससहइजगमगानरतनकौ ॥
नैसीयैसुधानिधिसैमुषकीनिरषिजोतिमो
हनकेमनभाउउमग्योअतनकौ ॥ प्रीतमबि
हारीलालनैवेकौसुरतसुषनिजुकैवसनु २
ऊटकिहस्यौतनकौ ॥ छबिकीछटानुहीसौ
रहीलपटाइरांधानगनहूतनकीछुटीन
लाजतनकौ ॥ ९१ ॥ [illegible]
[illegible] सकुचितसरकिपियनि
कटनैंमुलकिकछुकमनतोरि ॥ करऋांचर
कीऋोटह्वैजमुहांनीमुहमोरि ॥ ९२ ॥ टीका
यहसुरतोतनाइकाप्रोटासषीकोवचनसषी
सौं ॥ ९२ ॥ कवित्त ॥ केलिकलाकुसलनैकुरंगनै
नीपिकवैंनीजाकीछबिपररतिवारियेकोरो
रिकै ॥ सैनसुषपागीऋनुरागीपतिसंगजागी
मैंनकेविलासनिसौंलैनिचितुचोरिकै ॥ स
रकीसकुचिमनमोंहनकेनिकटतैंकछुक
मुलकिऋंगुरांनीमनतोरिकै ॥ सोभाबहसो
पेक्यौंहूंजातिनबषांनीकरऋांचरकीऋो

वि० स०
॥७२॥

टजमुहांनीमुहमोरिकैं॥९२॥सुरतदोहा॥च
मकतमकहांसीससकमसकरूपटलपटा
नि॥योजिहिरतिसोरनिमुकतिओरमुकतिअ
तिहांनि॥९३॥टीका॥यहसुरतवर्ननताइक
कौवचनअथवाकविकीउक्ति॥९३॥कवित्त
किलकनिमुलकनिहेरनिहरनिचितचम
कनमकरूमकनिमुसिकांनिहै॥हिलनिमि
लनिअरूरसभरीकसकनिससकमसकरू
पटनिसुषदांनिहै॥लटकनिमटकनिउरनि
मुरनिकिलकुंजनिलफनिलनलकनिलपटा
निहै॥अैसीरीतिरतिसोईमुकतिकहावति
हैमुकतिकहावतिहैसोतोअतिहांनिहै॥
९३॥सुरतांतदोहा॥लेबिलबिअबियांअध
षुलि मुअांगमो रिअंगिराइ॥अधिकउठि
लेटनिलटकिआलसभरीजभाइ॥९४॥टीका
यहसुरतांतनाइकाकोऔटासषीकोवचन
सषीसों॥९४॥कवित्त॥सेनसुषपागीअनुरा
गीहरिसंगजागीसोभासरसांनीअरसांनी
अंसुहांनिहै॥बिछुरीअलककुकीआवतिपल
कमुनमथकीझलकअतिरसबरसांतिहै॥
ललितकपोलनपैलसतिनीकीपीकलीकदो
ऊभुजजोरिमुडमोरिजमुहातिहै॥अधिषु
लीआंषिनसोंआलीनिरषअवलोकिआधी
उठिसेजहीलटकि [redacted] लेटिजातिहै ॥७१॥

२४॥दोहा॥नीदिनीढिउढिवैढिहूंप्यौप्यारीप
रभाति॥दोऊनीदभरेघरेलागिलागिगिरिजा
न॥२५॥टीका॥यहसुरतांतनाइकाप्रौढासषी
कोवचनसषीसों॥२५॥कवित्त॥व्रषभांनलली
औजेराअलललारनिसंगरमैंनिसिसंगजगे॥क
विलेसकहैंकेलकामकलावकुभाइविलां
सहियेउमगे॥उठिबैठनसेजपैनीढितकउ
ढिपैनसकैंअतिप्रेमपगे॥सुषनीदभरेअरसा
नपरेवकुस्यौगिरिजातनगरैंहीलगे॥२५॥दोहा
रंगीसुरतरंगपियहियैंलगीजुगीसवराति॥
पैंडपैंडपरहदुकिकैंअंडभरीअंडराति॥२६॥
॥टीका॥यहसुरतांतसषीकोवचनसषीसों
जोसषीनाइकसोंकहैतोवांछिनाहोइ॥२६
॥कवित्त॥सवरैनिजगीहरिकंठलगीरतिरंग
रंगीअलसांतिपरीहै॥उगयेकचलैफिरिकैं
चितवेसुरकैंअंगिरातिमरोरभरीहै॥विथु
रीअलकैंमलकैंश्रमवारिकुकीपलकैंसुष
हारढरीहै॥लसिपीककीलीककपोलनिनी
कीलसेअतिसारीसलोटपरीहै॥२६॥दोहा
यौंदलमलितयतनिरदईदईकुसमसेगातु॥
करुघरिदेषोधरधराउरकोअज्यौंनजातु॥
२७॥टीका॥यहनाइकासुरतिमैंमर्दितअतिवि
कलभईहैसुसषीनाइकसोंकहतिहै॥२७॥अ

बिं०स० वैसम्रलवेलीमडुवेलीसीनवेलीघालमिल
७२ ईशुपालतुम्है कितनेउपाइकै रसिकरसालवि
तेमएनिरदई केलिकरैयोंकरेरीरसरीनिवरि
राइकै औसीदलमलीकुसमकीपोवुरीसीप
रीहैअचेनसवेसुधिविसराइकें वनियाकरा
होंकहोंछतियाकोधरधराअजहूंनमिटतु
विकटदेषौआइकें ९७ लेहिरतिसु
षुलगियेहियेंलषीलजोंहीनीठि षुलितनमा
मनेबंधिरहीवृहेअधषुलीडीठि ९८ य
हसुरतांतनाइकाकोवचनसषीसों ९८
केलिकलासुषमेलिषभानलसीपरजंकपेंर
षिकापारी अंगलगीनऊलजपगीरहीना
तिनवाइमहाछविधारी सौहेंवितेवकींमो
हरियोनवनेंसकमोहतउचाइनिहारी सोतनि
री अषियांअधषोलीवितौंनिहियेंनेनटरेन
हिटारी ९८॥रतिविपरीतिदोहा॥विननीर
ति विपरीतिकीकरीपरसिपियपाय हंसिअन
वोलेंहीदियोऊतरुदियोवताय ९९ य
हरतिविपरीतिसषीकोवचनसषीसों ९९
केलिकलाकुसलेकुरंगनयनीकेअंगअंगनी
तिकाईउतिरतिकीरतीकरी पहिरतअंतरति
विहरविविधिविधिमदनमहीपतिकीविजतिषि
दलाफिरी नहीरतिमेंहेरमेंप्यारीकेपरसिपाइस ७२

तिविपरीतिकीपियारेंविनतीकरी॥ प्यारीसुमि
काइग्रनवोलैंहीवतायोरिद्यौपीतमकेजी
चाहयहीमैंसहीकरी॥२९९॥रतिविपरीतिदो
ह॥ पस्यौजुरनविपरीतिरतिरूपीसुरतरनधीर॥
करतिकुलाहललकिंकिनीगह्यौमौंनमंजीर॥
३००॥टीका॥ यहविपरीतिरतिवर्ननहैनाइका
सौंदासषीकौवचनसषीसौं॥३०॥कवित्त॥श्रीवृ
षभांनसुतानंनजोतिजगेरतिलाजनलागी
मोंहविलासनिहासनिकैहरिसाजनकौसुषसा
जनिलागी॥ धीरमहारतिसंगरमैंविपरीतिरची
रतिराजनलागी॥ मौंनगह्यौविछियानित
हीरसनारसहीरसवाजनलागी॥३००॥दोह॥
रमनकह्यौहठिरमनिसौंरतिविपरीतिविला
स॥ चितइकरिलोचनसतरसगरवसलजम
हास॥३०१॥टीका॥यहनाइकानैंरतिविप
रीतिकीवातकहीसुनाइकानैंचितवनिमैं
जुचेष्टाकीनीसुसषीसषीसौंकहतिहै॥३०१
॥कवित्त॥ व्रषभानसुतानंदनंदललारसके
लिकलानिप्रवीनपरे॥ तिहिमंदिरमैंविपरीतिवि
मपगेरतिकंतविलासकैरंगढरे॥ रतिकीवि
परीतिकरौरमनीहसियैंजवप्यारेंनिहोरे
करे॥ नवप्यारीकियैललचिनैंनतिरीछेंगुमान
हसीछवलाजभरे॥३०१॥जुगलरसिनदोहा
तिनवतियंकतहीरहतवेसतरनमनयेक॥ च

हियतजुगलकिसोरलैषिलोचनजुगलच
नेका॥३०२॥टीका॥यहजुगलकिसोरकीसो
भाग्यसदोऊतुकेहितकौआधिकासषीसषी
सौंकहतिहै॥३०२॥कवित॥ नितश्रीवृष
भानसुतानेंदलालविराजतहैंछविपुंजघये
॥कविलसकहैमनसीलनवहैक्रमचातुरी
ताइकरंगरये॥सुघरईसिंहातिसवेसजनी
विधिसौंविनवैनअभिलाषनये॥यहरूप
विलोकिवेकोंतननमेंप्रतिरोमनिलोचनवैं
नभये॥३०३॥दोहा॥मिलिपरछांहीजोंक
सौंरहैदोऊतुकेगात॥हरिराधाइकसंगहीच
लेगलीमैंजात॥३०४॥टीका॥यहदोऊतुकौ
मिलिवौगलीमैंजातदेकहीजोनिपरतहैंतु
सषीसषीसौंकहतिहैनिमिचारकौमिल
तु॥३०५॥कवित॥दोऊरसभीजेरूपरीझेन
ननाईभरेतुकंकेसनेहउमगतगातहैं
॥दंपतिकरतचतुराईकेचरित्रचारुओर
कौतुजानैंयेप्रवीनतुकीबातहैं॥जहांपर
छांहीतहांप्यारीयेविलोकियतिजोंकहीं
लषातहैं॥कहैकविलसबोलिकुंजकैनि
संकभयेदोऊयेकसाथहीगलीमैंचलेजा
तहैं॥३०६॥दोहा॥नजिंजीरवहरिराधिका
तनेदुतिकरिअनुराग॥जिहिव्रजकेलिनि 

स्रा

कुंज मग पगै होतु प्रयागु ॥ ३०४ ॥ टीका ॥ यह स्रु
गलवर्नन है ॥ ३०४ ॥ कवित्त ॥ तीरथ निकट का स
है कौं न भ्रमर कतु कौन च्यार कहु ‹ वन सो भा
की हित गमैं ॥ राधा वन माली की सर सगे
स्याम दु तिसकलनि काई कौ लसतु सारज
गमैं ॥ तासौं करि प्रीति यह निगम बसि छिजु ग
विधिसंकरसे तिन हूं तैं अगमैं ॥ डग डग प्रवि
होत प्रगट प्रयागपगजिन परतके लि कुंज
के मग मैं ॥ ३०४ ॥ दोहा ॥ उनकौ हितु उनही व
नैं कीउ करौ अनेक ॥ फिरतु काक गोलक कुं
भयो दुहूं देह ज्यौं एक ॥ ३०५ ॥ टीका ॥ यह दोऊ
नके हितकी अधिकाई सषी सषी सौं कहति
है ॥ ३०५ ॥ कवित्त ॥ आजु लौं ऐसन देषे कहूं उ
नहीं पै वनैं उनके हितके पन ॥ और अनेक
उपाइ कियें हू पै होहि न ऐसे सनेह सनैं मन
॥ कोऊ न जाननें दोऊ हैं एक कही श्री वृषभान
सुता मन मोहन ॥ वा इस गोलक ज्यौं सजनी
फिरि वौ करै एक ही जीव दुहूं तन ॥ ३०५ ॥ प्रे
मगर्विता दोहा ॥ विषसौ तिनु देषत दई अप
नैं हिय तैं लाल ॥ फिर तिसवतु मैं डहडही उही
मरगजी माल ॥ ३०६ ॥ टीका ॥ यह नाइक की
माला पाइ अति प्रसन्न भई है सु सषी नाइक
सौं कहति है प्रेमगर्विता होइ ॥ ३०६ ॥ कवित्त

वि॰स॰ सौतिकेलंषतमनभांवनुमयाकैरीनीउरतैं
॥७४॥ उनारिपरगटकीनीरतिहै॥नवहीतैंरहसनि
विहसनिफूलसनिविलसनिलसनिगुमान
भरीआतिहै॥मनमैंमुदितफूलीतनमैंसमा
तनाहीचलतिचितौनिअनुरागउफलतिहै
॥मरगजीमालारहीउरधरैंबालवहउहै
रहीआलितुकेमुहमैंफिरतिहै॥२८॥दोहा
आपनैंकरगुहिआपुहीहठिपहिराईलाल
॥मौलसिरीऔरैचढीबौलसिरीकीमाल
२९॥टीका॥यहनाइकनैंआपनैंहाथबना
इकैबौलसिरीकीमालपहिराईताहिपाइ
ताकीसोभाअधिकभईसोसषीनाइकेसौंक
हैसषीसौंकहै॥३०॥कवित्त॥ आपनैंहाथ
निवीनिकैंफूलवनाइगुहीमनुलाइककी
ही॥मालसुबौलसिरीकीरसालसुगंधभरी
आतिहीछविछाई॥आलिनगनमैंलसिकैं
हठिप्यारीपियैंपैहियैंपहराई॥ओपअनूप
लेहीतरुनीबरनीनपरैअनुरागनिकाई॥
३१॥दोहा॥नीजपरबसौतिनुसजेभूषनवं
सनसरीर॥सबैमरगजैमुहकरीउहीमरग
जैचीर॥३२॥टीका॥यहनाइकाप्रेमगर्विता
मरगजेचीरतैंसरनकौंगर्बुभयौतातैंश्रंगा
रकीनौंसुसषीसषीसौंकहतिहै॥३३॥कवि॥७४॥

औरैगति औरै वचन भये वदन रंग और
धौसकनैं पिय चित चढी कहैं चढौ हैं तौ स
३०९ ॥ टीका ॥ यह नाइका नाइक के प्रेम
वैनें काहू कौं मन आंन तिनाही सु सषी स
षी सौं कहै नाइका है सौं कहै तौ बनैं ॥ ३०८
॥ कवित्त ॥ औरही चाल विलोकनि औरही
देषिये आंननहूं रंग और हि ॥ बोलनि औ
नही भांति गुमांन सन्यौं निधि निनिधि पाइ
कैं वौरहि ॥ कमैं हूं वानहि कृत रुहैं नि नडी
ठि कहूं ठहरानि हे ठौर हि ॥ कै कहि नानैं च
ढी पियके चित प्यारी चढायैं ही सीषनि सैं
रहै ॥ ३०९ ॥ दोहा ॥ कियौ जु चिवुक उठाइकैं
कंपित कर भरतार ॥ टेढीयै टेढी फिरति
टेढै तिलक लिलार ॥ १० ॥ टीका ॥ यह नाइका
प्रेम गर्विता सषी कौं वचन सषी सौं सुनेह
तैं सात्विक भाउ भयौ ॥ १० ॥ कवित्त ॥ ठोडी उठा
इ कर्‍यौ चित चाइ सौं नै दूलनां अति हीअ
नुरागे ॥ भाल लगावत ही अंगुरी करकेदु
भयो अति हेत सौं पागे ॥ आमैन आनैं मनैं
नवतैं नगनैं कहू आपनैं प्रेमकैं आगैं ॥
टेढीयै टेढी फिरै मृग नोचनि टेढौ ईढीकौ
लिलार सैं लागे ॥ १० ॥ गुनगर्विता दोहा ॥

सुघरसौतिवरुपगुननतुलहहनितगुनकु
लासु॥लषीसषीननडीठिकरिसगरवसज
लमहास॥११॥टीका॥यहनाइकागुनगर्विता
अपनेंगुनकेगुमानतेंसौतिकैंआगमकौ
दुषुनाहीमानतिप्रसन्नभईसषीकीओ
रचितवतिहैसषीकोवचनसषीसौं॥११॥
कवित्त॥ रूपकीरासिसषीनसमाजमेंसोहै
सिंगारसजैंव्रजनारी॥काहूकहीसुघरा
पनुकेंतुवसौतिनैंलीनैंविमाइविहारी॥यौं
सुनिकैंअनिहीफूलसीगुनचातुरीकीपरमा
वधिप्यारी॥लाजगुमानभरीमुसिकाइकैं
रंचकडीठिअलीननढारी॥१२॥रूपगुनग
र्विता दोहा॥ दुसहसौतिसालेहियैंगनतिनना
हविवाह॥ धरैंरूपगुनकौगरवुफिरतिअछे
हउछाह॥१२॥टीका॥यहनाइकाअपनेंरूपके
औरगुनकेगर्वुतेंऔरकौंचित्तमेंआंनतिना
हीसुसषीसषीसोंकहतिहै॥१२॥कवित्त॥नाहू
केब्याहमैंप्यारीअछेहउछाहभरीपरन्हूपन
ठोनति॥ जांनतिहैनिहचैंअपनेंजीकोवनि य
ताकरिहैनदहांनति॥रूपकेजोवनकेगुनके
अभिमांनतेंआंनहितामनआंनति॥जद
पिसौतियासालतकउरमैंवहतौउछुमांनति
१२॥सषीनकौंलषिवौसुरतलक्षिता दोहा॥ ॥७५॥

नटिनसीससाविनभईछुटीलुषनुकीमोट॥
चुपुकरियेचारीकरैमारीपरीसलोट॥१३॥टी
यहसुरतकीमरगजीसारीदेखिसषीनाइकासौं
कहैहैनिहैलछिताहोइ॥१३॥कवि॥ रसकीउमंग
भरीरंगभरीसोहतिहै अंगकीसिथलतउनिम्भ
जलछाईहै॥ क्रमतिकुकति अंगिरानिजमुहाति
मुसिकातिअरसानिसरसानिम्योनिकाईहै॥
मोटैलुटीलुषकीप्रगटभईतेरेसीसक्योंतू
मुकरतिमनमथकीदुहाईहै॥ अवचुपुकरि
प्यारीएईनोकरिचारीजै तू ओल्लुसारीमेंस
लोटपारिआईहै॥१३॥दोहा मोहिकरतिकत
बावरीकियैंदुराउदुरैन॥ कहैदेतिरंगिरातिके
रंगनिचुरतसेनैंन॥१४॥टीका यहनाइकाकै
नेत्रदेखिसषीकहैतौलछिताहोइजौनाइकै
कविद्यमाननाइकेकीसषीसोंनाइकाकहैतौ
षंडिताहोइ॥१४॥कवित्त सुरतकेचिह्नचतुरा
ईसौंलुकाइतनभूषनवनाइसंजेवसनहरे
नहैं॥ लसप्रानप्यारेकेसनेहसरसानैंताने
गानअरसानैंरसउमगिदुरतहैं॥ काहेकोंस
षोनीमोहिबावरीकरतिअवकियैंतेदुराउ
काहिकेसेकैदुरतुहै॥ प्रगटपुकारैरंगराति
केकहैनयेतौलोचनेलुगलमानौंरंगनिचु
रतहैं॥१४॥दोहा लाजगरवआलसउम

रि०सं० ॥७६॥ गमरे नैंन मुसिका[न]॥ रातिरमी रतिहै तिकाहि
चौरे प्रभा प्रभात॥५५॥टीका॥ यह नैंन अनुकौंभा
उदै विसषी नाइका सौं कहै है तौ खंडिता होइ जौ
नाइका नाइक सौं कहै है तौ षंडिता होइ॥५५॥कं०
सार मतें सरसल सत नभरे आलस रस महारंग
मगन है रैं हियो हरि लेत है॥ लालडोरे राजत
है औरें ओप साजत है फूले मुसकात है निका
इके निकेत है॥ मैंन की उमंग भरे जोवन के रंग
भरे लाज की तरंग भरे गरव समेत है॥ सैंन अनु
पागे निसि जागे इगतेरे वान राति रमी रति की
प्रभात कहे देत है॥५५॥ सषीनंकौल विवौहे
पट की हिंग कनढो पियतिसो रहति सुभग सुवेष
॥हेरदरदछुदछविदेतियदुसदेरदछुदकीरे
व॥५६॥कवित्त॥ आजु भट्ट रतिरंग के मैं हिरनद्र
मन मोहन के संग जागी॥ केलि विलास कला
सनि के वडभागिनि तें रिझयो अनुरागी॥ टोक
तिकौं पट की हिंग सौं अनिसो हनि चारु प्रभा
तिसौं पागी॥ दैति महा छवि की हद कौं यह रेषर
दछद की सद लागी॥५७॥दोहा॥ सुरति उराई उर
तिनहि प्रगट करति रतिरूप॥ छुटै पीक और
उदी लाली ओठ अनूप॥५७॥टीका॥ यह सुरति
के चिन्ह देषि सषी नाइका सौं कहति है पर कि
या जौ नाइका सषी सौं कहै तौ अन्य संभोग दु
खिता होइ॥५८॥कवित्त॥ नृपन चारु वेनाइक जे ॥७६॥

कच फूलनु है फिरि आड बनाई॥ हो तो कहा
परसै पर राधिके लीक कपोल की पोंछि कै
आई॥ देति कहै रतिरंग की भांति अथति पे मकी
रीति दुरैन दुराई॥ पान की पीक कछु टैं अधरानि
मै औरे कछू प्रगटी अरुनाई॥ ७॥ दोहा॥ मो
सो मिलवत चातुरी तू नहि भानति भेउ॥ कहे
देतु यह प्रगट ही प्रगट्यो पूस पसेउ॥ २८॥ टीका
यह नाइका के खेद लखि सषी सुरत भयौ जानि
कहति है लछिता जानिये॥ २८॥ कवित्त॥ आजु
पगी सुखपुंज में प्यारी सु कुंज में केलि करी मन
भाई॥ पीक गई छुटि ओठनु पै प्रगटी सुष मंडल
पै अरुनाई॥ भेद की बातन कहै किनि भामिनि मो
सो चलावति क्यों चतुराई॥ लोतन देतु कहे है प्र
गटै यह पूस के मास पसीजु मैं न्हाई॥ २८॥ दोहा
आजु कछू औरे भये छये नये ठिक ठैन॥ चित के
हित के चुगल ये नित के होंहि न नैन॥ २॥ टीका
यह नाइका के नैत्र देषि सषी कहै तो लछिता होइ जौ
नाइका नाइक सौ कहै तौ षंडिता होइ॥ २९॥ कुं
आलस के रस मैं विथके रंगे लाल के रंग सुरंग
भये हैं॥ हेत कहै चित के हित की चुगली ठिक
ठैन नये ई ठये हैं॥ निरखत हैं अरविंद प्रभा अरु
रागपराग मैं पागि गये हैं॥ होहिं न ये नित के स
जनी दृग आजु अपूरब औ पछये हैं॥ २९॥ दोहा

वि०स० मेरेबूझनवान त कनवहरावतिधाज॥जगजो
॥१७॥ नी विपरीति रतिलषिविंदुलीपियभाल॥२०

टीका॥ यहनाइकाप्रौढारतिविपरीतिकीनी सबीसौंदुरावतिहैसुप्रवीनसषीजोनिलई सुनाइकासौंकहतिहै॥२०॥सवैया हौंहितुकै छिवूझतिनोकछूनहिवहरावेतिवातहिमेरी छूटयौंकोचंदनजदोनके रैनवकेसंदवैविथो रोहछेरी॥नेहरिसौंविपरीतिरचीवहके दुरिहैअवतौहमैहेरी॥नीकैंहीजोनिपरी सवकौंपियभाललषेंविंदुलीतियतेरी॥२०

दोहा सहीरंगीलेरतिजगेजगीपगीसु
षचैन॥अलसौंहैसौहैंकियेकहेंहसौंहैनैं
न॥२१॥टीका॥ यहनाइकाकेनेत्रनुकीसोभा
हैविसषीसषीसोंकहैत्रछिता॥२१॥कवित
मोसौंछबीलीरसरीतिक्योंछिपावतिहैआं
ननपेंउमगिअरुनओपजागीहै॥अंगअंग
नितिधलअनंगसुषसंगसनेंरंगसनीहसअ
नुरागीउरलागीहै॥नसतहसौहैंअलसौहैं
अलसौहैंयेचपलेचषसौहैंकियेंकहतप्र
गटप्रेमपागीहै॥कहीनपरतिअतिअदभुत
छवियहसहीतूरंगीलेरतिजगेआजुजागी
है॥२१॥दोहा कोरिजतनकीजेतऊनागरिनेह
दुरैन॥कहेंदेतचितचीकनेंनईरुषाईनैन॥ ॥७७॥

२२ ॥टीका॥ यहनेअरेषिसषीनाइकासौंकहै
लछिता॥२२॥कबित्त॥ नैंमनमोहनसौंमिल
योमनमैंनवहीलषिपाई॥ रूकनिनोहि हियैंहि
तुमानिकैंमोसौंचलावतितचतुराई॥ कोरि
उपाइकरैंकिनिनागरिनेहकीडीठिदुरैनदुरा
ई॥ नैननुमांझलषाईनईयेहदेतकहैंचित
कीचिकनाई॥२२॥प्रौढासाहराधीरादो॰
मुहमिठासदृगचिकनईभौंहैंसरलसुभाइ
॥ तऊपरेआदरुषरौषिनषिनहियैसकाइ
२३॥टीका॥ यहनाइकासादराधीराप्रौढा
नाइकाकोवचननाइकासौं॥२३॥कबित्त॥ वेद
नकमलनैंअधिकहितसौंनैवैनमधुरैकं
ढतअमीजिनमैंचुचातुहै॥ भ्रकुटीसुभाइ
हीसरसलषिपतिकैंहैरीसकौरंचनविला
सुदरसातुहै॥ नेहकीनिसानीचितवनि
त्योंहीकैसेंहूंनमोपैयहमेडुलयौजातुहै
॥ज्यौंज्यौंअतिषरौषरौआदरुकरतिप्या
रीत्यौंत्यौंमेरोहियौषरौषरौईसकातुहै॥
२३॥दोहा॥ षरेअदबइठलाहटौउरउपजाव
तित्रास॥ दुसहसंकविसकीकरैजैसैंसोंठि
मिठास॥२४॥टीका॥ यहनाइकाअकेतगु
साधीराप्रौढानाइककोवचनसषीसौं॥२४
कबित्त॥ गांसुगाथेउरमैंजितनौकछुमैंतौ

वि॰स॰ ।।७८।।

नकूकवतीकवरीहै।।वानिसजीउत्नाहट
कीश्रवकाहैतैमोथौंनजांनीपरीहै।।श्रागु
हियेंउपजावैधरोश्रतिश्रादरसोंश्रभिमान
मरीहै।।सोंदबबावनमीढीलगैसठकोंऊक
हैविसहीकीउरीहै।।२४।।श्राकनिगुमाधि
रादोहा।।नहिनचाइचितवनिदृगनिनहि
वोलतिमुसिकाइ।।ज्योंज्योंरुषरूषौकरैत्यों
त्योंचितचिकनाइ।।२५।।टीका यहनाइकाप
राधीराश्राकनिगुमानाइकाकौवचनना
इकासोंसषीकौवचनंनाइकैसौंनाइकेहसौ
हौइ।।२५।।कवित्त जोरतिलोचननचाइचे
हचाइमरेश्रधमुसिकांनिकौनभाउदरसा
तुहै।।वोलतिकहूंमनमोहनमधुरवैंनमो
रतिनभ्रकुटीमरोरतिनगातुहै।।कहैकवि
रामवाकौगरवीलीबानिकैहूसहजवसी
करकौसोमत्रजान्योंजातुहै।।ज्योंज्योंहीरति
प्यारीराधारूषौरुषौरूषकरतिसोंहींत्यों
चौंरघरौचितचिकनातुहै।।२५।।दोहा।।चि
तवनिरूषदृगनिकीहांसिविनुमुसिकानि।।
मांनजनायोमांननीजांनियोपियजां
नि।।२६।।टीका यहनाइकामानवतीहैपैमा
नकेलछनकछुप्रगटकरेनाहीपैप्रवीन
नाइकनेजांनीसषीकौवचनसषीसोंसषीना।।७८।।

इकहू सौं कहै ॥२६॥ कबित्त ॥ वैसें ही चितौंनि
जैसें आगें चितवनि ही पैनै है चिकनाई की
नी इगनि निसांनी है ॥ मधुर वचन त्यौं ही बोल
नि बिहसि पैम रस मुसिकांनि कीनवांनि पहिचां
नी है ॥ ऐसी भांति भांति नीजनाई रूप मांनरी
ति जौंन मन प्यारे में पदेषन ही जांनी है ॥ साधि
कै रूषाई रिस ठांनी नैं सयांनी सो प्रवीन नु की
डीठि नैं रहनि कैं सैं ठांनी है ॥२६॥ दोहा ॥ येरीय
ह नेरी रई क्यौं हूं प्रघटनि न जाइ ॥ नेह नमरे हि
य राषियैं नु रूषौ ये लषाइ ॥२७॥ टीका ॥ यह म
नाइवौ सषी कौ वचन नाइका सौं नाइका धै
र्या धीरा अग्यातगुप्ता ॥२७॥ कबित्त ॥ कौंन
परी प्रघटनि छुटायें हूं छुटै न क्यौं हूं त्यौं त्यौं की
जै ऊनी त्यौं त्यौं हूंनी पैं बियनि है ॥ छेम पांन प्या
रे की डुहाई तेरी है पैंग नि मेरी मति सो चुनौं म
नी बिसेषियनि है ॥ जइ पिसने है भरे उर में बसा
ई प्यारे प्रीति सरसाई अन ले बियनि है ॥ त ऊ
तिय मो हतु में बैनन नु मैं नैन नतु मैं तेरे अंग अंग
मैं लषाई है बियति है ॥२७॥ सषि लिषम दोहा ॥
जो तिय तु मछिप भांवती राषी हियें बसाइ ॥
मो हि तु कांवति इगनि कै वह ई उझकति आ
इ ॥२८॥ टीका ॥ यह मान प्रमन नाइका नाइक की
आंषिन मैं आपनौं प्रतिबिंबु देषि औरस्त्री जां

वि०स० निकैंकहतिहैमानवतीहै ॥२७॥कवित नैंकम
॥४२॥ नैंकरौपाइपरौंहरिहैमनेंमोमोंरहीडुतिहै
॥राजकरौनितयाहीलियैरहौयामैंकहाकहै
नाइतिहै॥जोतुमराषीवसाइहियैंपियप्या
तिहारीकहावतिहै॥मांकतिरावरीश्रोंषिउ
श्रांनिवहैनियमोहिंतुकावतिहै॥२८॥परम
रमानदोहा॥चिरजीवौजोरीजुरैक्यौंनसनै
हंगभीर॥कोघटिवेवृषभांनजाएहलधरवी
वीर॥२९॥टीका॥यहपरस्परमानसषीकौ
वचनसषीसों॥२९॥कवित्त॥मानतक्यौंनह
मारीकहीजहांवोऊतुमात्मभरीगरुवाई॥
दोऊघरेंअतितेजभरेतहांकौनवडैहितकी
सरसाई॥कोघटिहैचिरजीवौकरौयहएक
सीजोरीविरंचिवनाई॥हैंउनवेवृषभांनसु
ताइतयेहलधारीकेवीरकन्हाई॥२९॥दोहा
दोऊअधिकाईभरेयेकैगोगहिराइ॥कौनम
नावैकोमनैंमनेंमतठहराइ॥३०॥टीका॥यह
परस्परमानहैदोऊअधिकाईभरेसुनाईका
मानवतीनाइकरूपमांनी॥अथवानाइककौ
मानदेषिवेकौगोहैसषीकोवचनसषीसोंअ
रुजोदोऊअन्यासक्तिहोहितौयौंहीकहिवे
संभवे॥३०॥कवित्त॥श्राजुचलीरसहीरसमैंर
सवातदुहूंनितुमोंकहियावे॥लैअपनौंअ ॥७२॥

प नैं रि स मैं च्य रु न्‍ना बो हियो ग्रव कौ तु र नावै॥
दो ऊ बरे अधिकाई मेरंग हैं ये कहीं गै को ऊ भेद
न पावै॥ कौन मनावैं मनैं कहि कै मन मानें उ
हू नु कौ मान नहीं भावै॥३०॥ मानडिठाइबौ दोहा
मान करति व स्न नि न हौ उलटि दिखाव मौंह
॥ करी न सौं ही जा हि गी सहज हसौं ही मौंह ॥
टीका यह मान डिठा वति है सु मान छुडाइबौ है
पूयो जनु है सषी कौ वचन नाइका सौं॥३१॥ कवि
रु सौक स्यो रुष नैं न चढाइ कै बैन कहैं मुष ते
अनषो हैं॥ मान कस्यो सु भली करी हौं न मनैं क
रौ ग्रोर दिषावै तिसो है॥ मोह सौ हू मैं न ऊ तर
दै तिसु देषों गी मोंहन कौ मुषु जो है॥ होइ गी
कैसरि सौं हीसु हागि नहां सी भरी जु सुभाइ की
सौं है॥३१॥ मान दोहा॥ रस के सैं रुष स सि मुषी
हँसि हँसि बोलति वैन॥ गूढ मान कहि क्यों दुरे
भये रूढ रंग नैन॥३२॥ टीका यह नाइका धी
रा कौ मान है सु सषी नाइक ही नाइका सौं कह
ति है॥३२॥ कवित्त॥ ऊपर कौ रस कौ सो कैं स्वार
थु भी ऊ कियें हित केस र सा ते॥ स्यों चितै हसि
बोलति भामि नि वैनं न कहै मुष मीठ सुधा ते॥ ने
ह के चिंन्ह जनाये सबै ग्ररस्वा सदवा इक नेह
कै नाते॥ मान हिये कौ दुरे कहि क्यों जु मजीठ कै
रंग भये दृग राते॥३२॥ मान बरिहास दोहा॥ कप
ट सतर सौं हैं करी मुष अनषो हैं वैन॥ सहज हँसौं

जांनिकैंसौंहैंकरतिननैंन ॥३३॥ टीका यहमान
परिहासहैनाइकाप्रौढासषीकौवचनसषीसौं
३३ ॥ कवित ॥ प्रीतमकीप्रीतिकीप्रतीतिलषिवेकौं
प्रानप्यारीकछुकीनौंपरिहासुरूठौमानठांनि
॥ कहैकविकलसऊरऊपररुषाइभरिवदनबिरौ
रिवैठीधरिकैंकपोलपांनि ॥ आपनीअलीनि
हूंसौंजोरतिनरुषमुषवैनअनषाइवेकीत्यौं
त्यौंगहीवांनि ॥ भृकुटीसतरकीनीकपटसौं
तिनिऐपैसौंहैंनकरतिदृगसहजहंसौंहैंजां
नि ॥३३॥ मानसोभाआसक्तिदोहा ॥ मननमना
वनकौंकरैदैनरुषाइरुठाइ ॥ कौतिगलाग्यौ
प्यौपियाविहंसिहूंरिझवतजाइ ॥३४॥ टीका यह
नाइकाकौमानदेषिवौप्रयोजनुहैसमानेउ
रतजाननहैनवहीफेरिरुठाइदेतुहैसुसषीसौं
कहतिहै ॥३४॥ कवित ॥ रोसभरीअंषियांनिहूं
कीअवलोकनिमाझमरयौरसभारी ॥ याहीतैंमा
नहूंकौरुषदेषिवेकौंनंदनंदहैयेंरुचिधारी ॥
होतिमनौंहींप्रियाजवहीतवसेंकरिदेतुरसा
रविहारी ॥ कौतिगलागपौइहीरसकैविहंसैंकै
रिझावतिराधिकाप्यारी ॥३४॥ गुरमानदोहा ॥
वाहीनिमितनामिटौमानकलहकौमूल ॥ भले
पधारेपांऊनैंकैगुडहरकौफूल ॥३५॥ टीका ॥
यहनाइकापरकीयाउपपतिकौविरहदुराइवेकौं
पतिसौंमानकीनौंसुसषीसषीसौंकहतिहैजौंना ॥८०॥

इकाकी सखी नाइकसौं कहैहै षंडिता होइ ॥ ३४

॥ कवित्त ॥ जो हीर जनी के घर वसे आनि घर वसे जानैं कौंन कहा मंत्रु कैसे पढ़ि आयो है ॥ वाही रजनी तें अव्यों मित्र आनन अनैसो मानसषी पंचिहारी काहूं मंत्र मन पायो है ॥ कहे कवि केसव अनैसो रूठनो सुन्यों न देख्यो जैसो उहि हलिर हारी उरमें दुरायो है ॥ पाउनें पधारे आछे फूलन तुडहर की के कहलकों मलवा वगर वगरायो है ॥ ३५ ॥ मं

ध्यम मान दोहा ॥ मोहूसौं वातन लगे लगी जीभ हि जिनाइ ॥ सोई लै उर लाइये लाल लागियत पाइ ॥ ३६ ॥ टीका ॥ यह मध्यम मान नाइका सौं वा तें कर तजो नाइका सौं आसक्त होनाइकनें ताही कौ नाम लीनौं सु नाइका नाइकसौं कहति है ॥

३६ ॥ कवित्त ॥ कैतो राषौ गोइ होइ प्रगट हियेकी भात जासौं रंग मगि विचुर ल्यो अनुरागि कै ॥ उध री रसिकर सरीति की छबी नीवाकी मनैं सुधि कीनी मोसौं वात निहूं लागिकें ॥ छक्म षोन प्यारे री प्रीति कौ धरमु यहै पायो अब मरमु भरमु गयो भागिकें ॥ पाइन्तु परति हरि वाही उर लैये जो हीर मनी कौ नाम रस्यो रसना मैं पागिकें ॥ ३६ ॥

दोहा ॥ कहे कहै न कहा कह्यो तोसौं नंदकिसोर ॥ वड वोली कित होति वलि वडे द्रगनि के जोर ॥ ३७ ॥ टीका ॥ यह मनाइवो सषीकौ वचन नाइकासौं ॥ ३७ ॥ कवित्त ॥ सांची कहि मोसैं अहे काहे तें

कहति नाहि तो सौं कहा कह्यौ मनमोहन कन्हा
ई री॥ कौंन ह्वै रही वोल तुं ऐसौ बोलत तुम मोंन मसो
स्ती री सिर रासि तें कहां तें गहि पाई री॥ हौं स मोन
प्यारौ अति हित कै मनाव तु है करि मनु हारि खा
न में वनाई री॥ मांनि कह्यौ मेरी वलि कलट नैंक
रि जौ पै तैं ही पाई वरी वेडी आंखि छूटि विछोई री॥
३७॥ दोहा॥ विधि विधि कौंन करै टरै नहीं परै हूं
मांन॥ चितै कितै तें लै धस्यौ इतौ इतेन मांन
३८॥ टीका॥ यह मनाइवे सषी कौ वचन नाइका
सौं॥ ३८॥ कवित्त॥ पाइ परे मनमोहन हूं वक भौं
ति हियें रस भाइ भरे तौ॥ प्रीति की वौंप वढाय
सखीनि कही समझाइ विवेक करि के तौ॥ लोचन
तेरे तऊ न लचे अनषाइन चे अति रोस रचे तौ
॥ नैंक चितै वगनें नि किते तें धस्यौ भरि मान इ
तेतन पैतौ॥ ३९॥ मान परिहास दोहा॥ हसि हस
इ उरलाइ उठि कहि न रूषी है वैंन॥ जकि तथकि त
कै तकि रहे तंकी तिलौंछे नैंन॥ ४०॥ टीका॥ यह मा
न परिहास नाइका के विद्यमान सषी नाइका सौं क
हति है जौ नाइका कौ अपराधु राइवे कौं करै तौ
हू संभवै॥ ४०॥ कवित्त मान कियौ हो हितौ मनावै
प्यारौ पाइ गहि ऐसे परिहास कौं जतन न कहा की
जियै॥ रसिक रसाल तेरे लोचन तिलौंछे वाहि
चेकन कै रह्यौ ऐसें नाह कन पी जियै॥ हाहा तौ
हि सौं है अव सूधी करि भौंहैं वैंन कहि न रूषौ ॥८१॥

हैंलालनकौंतीलाहलीजियै ॥ ज्येहमाईयेरी
सुषसरसाईयेरीरसुवरसाईदुषैसौतिनुकौंदी
जियै ॥ ३९ ॥ दोहा ॥ क्योंहूंसहबातननिलगैथाके
भेदउपाइ ॥ हठकठगढुगढवैसुचलिलीजैसु
रंगलगाइ ॥ ४० ॥ टीका ॥ यहगुरुमानहैसषीनाइ
कसौंकहतिहैकिवाकौमानुतुम्हारेचलैंछुटै
गौसषीकौवचननाइकसौं ॥ ४० ॥ कवित्त ॥ आजु
लख्यौहठकौगढुप्यारीनैंदेषतधीरजुकौंनकौ
धीजै ॥ कौंनहूंभांतिलगैसहबातनभेदउपाइ
थकेमतिछीजै ॥ लोचनहूतनक्योंहूंमिलैहरि
मानियैमंत्रबिलंबनकीजै ॥ आपुनहीचलिकै
वलिजाँउसुरंगलगाइलगाइजोलीजै ॥ ४० ॥ दो
चनेरसहुरसपाईयतुरसिकरसालीपास ॥ जै
सैंसांठेकीगेठिनगांठ्यौभरीमिठास ॥ ४१ ॥ टीका
यहमानवतीकौसीभासषीनाइकासौंकहति
हैप्रयोजनुयहहैकिनाइकुचलैंतौमानुछूटै
४१ ॥ कवित्त ॥ मानमीतिहारीमनमोहननिहारी
कहूंमोपैनकर्यौपरेसोभाकोबिलासुहै ॥ ना
सिकासकोरिमुहमोरिभ्रकुटीअनषिवैटीलो
चननुमारुअरुनाईकौप्रकासुहै ॥ रसिकरसा
लवारसीसीकीबिलौकौछविअनरसहूमेंअ
सौरसकौनिवासुहै ॥ कहैकविहमजैसैंसांठेकी
सरसरीतिगांठिहैंगठिनतऊपैयतुमिठासुहै
४१ ॥ दोहा ॥ हमहारीकैकैहहापाइनुपार्यौतौ

बे० स०
॥८२॥

न्हो॥ लेहिकहा अजहूंकियैतेहतनेरेंत्यौमन॥४२
॥टीका॥ यहऔरतगुरमानहैसषीकौवचनना
इकासौं॥४२॥कवित्त॥ चंदकचूरसीचारुछपा
रुमालतनीमदछीफूलीसुषदाइनि॥ हाहाकैहा
रिरहीसजनीवक्रभांतिनिहारिमनैवेकीभावति
॥जीवनजोसिगरेब्रजकौहरि षीनमसोकुपर्यो
हरियाइनि॥ लेहिकहाअजहूंबलितेहसौंत्यौं
हरेरोकियेंठकुराइनि॥४२॥दोहा॥ सौंहेंहूंहेर्यौ
नतैंकेतीह्याइसौंहि॥ एहोकौंवैठीकियौऐंठीऐं
ठीभौंह॥४३॥टीका॥ यहनाइकामानवतीसषीकौ
वचननाइकासौं॥४३॥कवित्त॥ कैतौमनुहारिक
रिहार्यौनंदलालब्रजवनितानिहालहोतिजा
केनैंकचाहतें॥ हीतोतूसयांनीपरिकहाचितऔं
नीएतेरिसकेसमाजविनुकाजअवगाहतें॥
सौंहहेहेरिवेकोंहमकेतीह्याइसौंहहैंनकौतेरीम
तुललकौंनरसकेउमाहतें॥ कियौकहाचाह
तिहैसाईकौंनकहैऐंठीऐंठीभौंहहैंकरिवेठीअ
वकोहतें॥४३॥दोहा॥ निरदईनेकौनयोनिरघि
मयोजगतुभयभीतु॥ यहनकहूंअवलौंसुनी
मारिमारियतुमीतु॥४४॥टीका॥ यहमानवेरहस
षीकौवचननाइकासौंनाइककेपठेकीसषीहै
सोपरकियाहूहोइनाइकाकहियेतौकहियेगु
रुमान॥४४॥कवित्त॥ ऐसौअधीनभयौमनमौ
हनतोविनुनैंकनअंगसम्हारहि॥ तौहिदतोनर ॥८२॥

सावतिवांवरीकौंनकरैमिलिकुंजविहारहहिजे
रीन्योनरहैहितुहेरिदसोजगहौंहूंमरीमयभं
राहा॥ जुलीवैसीसुनीनकहूंगतिआपुमेरेआ
रमीनकौंमारहि॥४४॥मानमोचनदोहा॥हट
तुहेठीलीकरिसकेयहपावसरितुपाइ॥ आंम
गांठिज्योंछुटतिन्यौंमांनगांठिछुटिजाइ॥४५॥टीक
यहमानमोचनप्रसंगविधंससषीकोवचनसषी
सों॥४५॥कवित्त दांमिनिचपलगतिसोकस्यांमघ
नहीसौंमिलिविरहहरतिअतिसोभासरसातिहै
॥द्रुमनसौंलहलहीलतनिकालिवृद्दिरहीसर
हीकेउरप्रीतिरीतिअधिकातिहै॥कैसीयोहठी
लीकोऊरूठनौंनठांनिसकैमदनमरूरनिसोठि
तीअकुलातिहै॥४५॥दोहा॥सतरभौंहरूषेवच
नकेरितिकठिनमननीठि॥कहाकरौंकैजातिह
रिहेरिहसौंहीडीठि॥४६॥टीका॥नाइकाप्रौढा
उतमासषीसिषावतिहैकितूमानकरियाकौना
इकाकौदेषतहीमानरहतनांहीनाइकाकौवचे
नसषीसौं॥४६॥कवित्तनेरौकयौकरिरूसमनोंरां
नतिहारूषरूषीकेतांनतिभौंहैं॥नीठिकठोरक
रौमनऊंमुषहूतेवषांनतिवैनरुषौहैं॥कराेंस
मेरोअलीलचैंलालचीजोअपनीतेकिगोहैं
॥कैसीकरौंमनमोहनकोमुषदेषतलोचनहौ
तहसौहैं॥४६॥दोहा॥जुरेदुहूंनकेद्रगमकिर
केनमेंनिचीर॥हलुकीफोजहरौलज्योंपरतिगो
लपरभीर॥४७॥टीका॥यहमानमोचनसषीकौ

वि०स० वचनसषीकौ॥४७॥कवित्त॥ बैठी अलीगन मैं न
॥८३॥ वनागरि अचांनक आयौ तहां बनवारी॥ लो
कीडीठि बचाइवे कौं मुष घूंघट ओट कियो ना
हारी॥ नैंन सौं नैंन उमगि मिले न रहे पट ओट
किती पचिहारी॥ रोकि सकै न हरोल की फौज ज्यौं
गोल पे आनि परे भरभारी॥४७॥दोहा॥ तोही कौं
छुटि मान गौ देषत ही ब्रजराज॥ रही घरीकलौं
मानु सी मान किये की लाज॥४८॥टीका॥ यह मान
मोचन सषी कौ वचन सषी सौं॥४८॥कवित्त॥ आजु
के रूसनें की अनिसे भाक हाक हौं पांनि कपोल
धरे की॥ आलिनु की विनती हू सुनैं न टरी रिस रा
धिका के हियरे की॥ छूटि गई सु तौ देषत ही घ्रदु
हूरति का कलु नाई भरे की॥ मानु ही सी उरमां
न रही वह लाज घरीकलौं मानु करे की॥४८
॥दोहा॥ चलौ चलैं छुटि जाइगौ हठु रावरे सकौ
च॥ षरे चढाये है ते अब आये लौचन लोच॥
४९॥टीका॥ यह मान छुडाइवे कौ है सषी कौ
प्रयोजन नाइक कौं लै जाइवे कौ है सषी कौ वच
न नाइक सौं॥४९॥कवित्त॥ आनें कौ कान्हि निहारी
पियारी कहा जिय जांनि महा रिस ठांनी॥ केतौ मैं
बात बनाइ मनाइ करी मनुहारि पै एकै न ही मन
मानी॥ कौं हूं कै जान टरै दृग भौंह के छुकुने स्तु
कती अतिमांनी॥ लाल चलौ अब लौ कित है छु
टि जाइगौ मान अबै हम जानी॥५०॥दोहा॥ बिछे
मान अपराध हूं चलि गे बढे अचैन॥ जुरत डीठि ॥८३॥

नजिसषिसीहंसेदुकुनकेनैनं॥५७॥टीका॥यहमा
नमोचननाइकाकेनेत्रतोमानतैंषिचेनाइकके
नेत्रअपराधसोंषिचेहैपैअचैननतैंबिनारहैंयें
रह्यौनजाइयातैंरिसअरुषिसीआपुहीतेंहोति
कैदोऊनुकेनेत्रहंसेसषीकोवचनसषीसों ५८
कवित्त॥ मानकैभामिनिऐंचिरहीदृगरातिक
हूंहरिऐंतवसेई॥याहीतेंमोंहननारिनवाइरहे
उरसोंचसकोचगसेई॥ऊमकहेविनुरहेंघुटू
नुकेमैनअचैनहियेंमरसेई॥डीठिजुरैनजि
सषिसीविविलैंनमिलैसुषपाइहंसेई॥५०॥टी
नुहीकहतिहैंआपुहूंसमाऊनिसवैसयांनु॥
लविमोंहनमनुजौरहेतोमनुराषौमानु॥५
टीका॥यहनाइकाप्रोटासषीकहतिहैतूमानु
करिसुनाइकासषीसोंकहतिहै॥५१॥कवित्त
मानकियेंरमनीजनकेवसपीतमहोतुमतोय
हतेरो॥होंहूंयहैअपनेंचितचैंनतिहोंकरिस्यां
उघनेरो॥तोकरौंमानुरीमोंहनकौंलविजोसवि
हाथरहेमनमेरो॥रूसिवेकोंजीमेंविचारविचारतें
होंपैकहाकरौंत्योरुतेरो॥५१॥दोहा॥मोहिलै
जावतनिरजनरूकलसिमिलैंसवगात॥मानत
हैकैविमलोंमांननजांन्यौंजात॥५२॥टीका॥यह
नाइकाप्रोटामानमोचननायकाकोवचनसषी
सों॥५२॥कवित्त॥तूतोसिषवतिमनमोंहनसोंमा
नकरिमेरेहूंहियेमैंयहविचारठहरातरी॥सिर

र० स०
॥८४॥

घनहूसमघानप रेकी छबीली छबि आपही बिडू
लेसि मिलत सब गातरी ॥ कहा करौं निलजयेमो
हीकौं न जानत हैं कहूं जोपै होइ कहिबे की कछू
तोतरी ॥ मोंनकौं उदोत भयैं आसकनकी सीमां
तिमातु मनमैं तेहौं न जानत बिलातरी ॥५२॥ दोहा
डिगेनि गोडे नैंन डिगि गहैं न चेतु अचेतु ॥ हौं कसु
करि रिसकौं करौं येनि सबे हंसि हेतु ॥५३॥ टीका यु
हभाइकाको वचन सषीसौं ॥५३॥ कबित्त ॥ सहियें
जगके उपहास नितें रहिये गुरलोगनि मोंरूगसें
॥ उरूथ्यांनि यहै अपनें उरही समझाइ रही नहि
नकर्तैसें ॥ अरु रंचक मेरो कह्यो न करै तनहूं म
नहारैं तऊं ऊलसें ॥ यह नैं मुगह्यौ सजनी यननैं
नतु पै हरि हेरि हसें ई हसें ॥५३॥ दोहा ॥ सकुचि न
रहिये स्यांम सुनिये सतरौं हैं बैंन ॥ देत रूषौं हैं चि
तुकैहैं नेह निचौहैं नैंन ॥५४॥ टीका यह प्रथम समा
गम नायका परकिया सषीकौ वचन नाइकसौं ॥
५४॥ कबित्त ॥ नाहीं येमैं हाहे नई रीति है रहांकोयु
है रसिक मननिकौं करति चिति चैंन हैं ॥ यही रूषौ
हैपु चिकनावतु अधिक चितु येई मनमथके बि
लास मुष दैंन हैं ॥ सकुचि न रहिये सुजांन मनस्यां
म सुनौं कहा भयौ जोपै सतराइ कहैं बैंन हैं ॥ प्रीति
सौं सुबोहैं यार बोहै सेहियेकी बातमें हसौंहैं नि
चौहैं ये कहैं ईं दैत नैंन नहैं ॥५४॥ दोहा ॥ कहां लेऊं ॥८४॥

गये ललपेत जो अर पटी वान ॥ मै कहसो ही है मई मो है सो है षान ॥ ५५ ॥ टीका ॥ यह नाइक को और सों आसक्ति जो नि नाइका नें मानु कियो नाइक मना वन आयो सु राही नाइका को नाम मुह तें निकस्यो सो सषी नाइक सों या को मान छुडाइवे को परिहास को प्रसंगु चलायो सषी को वचन नाइक सों ॥ ५५ ॥ कवित्त ॥ हांसी नो कीजिये ना सों ललाजु है सेतु षपाइ न ये ति्य श्री सी ॥ वार ही वार लै और के नाम कु काढोइ कौं न जो वांनि अने सी ॥ या परिहास पैल्लै हौ कहा हरिये तो इते कहि कौं मुरि बैसी ॥ सौं हैं किये मई नीठि हसों हीये भौं ह कमान मनो अकी जैसी ॥ ५५ ॥ सनेह के अंग के ॥ दोहा ॥ घनेव टइ बलु करि थके कटै न कुवनेकु ठार ॥ आलवाल उरझाल री षरी प्रेम तरु डार ॥ ५६ ॥ टीका ॥ यह सनेह की दृढता सषी सों नाइका अथवा नाइक कहै ॥ ५६ ॥ कवित्त ॥ देषत ही सुर जि मधुर मन मोहन की नैनु के मिले मिल्यो मनु अबदातु है ॥ आलवाल उरतें प्रगट भयो प्रेम तरु दिन दिन झालर न अमित रसातु है ॥ नाहि हू सकि रिवे कौं कितनें बल्ल नि षगि कु वत कुठार गहि की नौं उत पातु है ॥ कहै कवि षेहसस वैया के अनि वलु करिनैं क घटनस्यों स्यों इ ढहीत जातु है ॥ ५६ ॥ दोहा ॥ करतु जातु जेती कट नि वढि रस सरिता सोतु ॥ आलवाल उर प्रेम तरु तितो तितो दृढ होतु ॥ ५७ ॥ टीका ॥ यह सनेह के अं

गमैं इष्ट नाना काकौ अथवा नाइकै कौ वचन
सषीसौं सषी नाइका नाइक हूसौं कहै ॥५७॥ कवि
आलवाल उर मैं मनोज्ञ वयो नेह बीज नातें भयो
आली पेम अंकुर उदोतु है ॥ सुरति सलिल सींचोय
हीनेउ मगि फूल फल परग औ विरजु आनपोतु है ॥ क
हैकवि कलस सौं ज्यौं उमगि शुचल सरकरतु कटनि र
से सरिता कौ सोतु है ॥ नैं कन डिगतु वाकी त्यौं ही त्यौं
जमति जर झालरतु मोंरतु घरोई इष्ट होतु है ॥५७
॥दोहा॥ जद्यपि सुंदर सुघर ऊस गुनौ दीपक देऊ
तऊ प्रकासु करैं तितो भरियो जितो सनेऊ ॥५८
टीका यह सनेह बढाइबे कौ सषी नाइका सौं कहै
नाइक हू सौं कहै ॥५८॥ कवित्त ॥ जद्यपि चातुरग है वि
कनाई सुढार ढरयौ सुघरौ किनि होऊ ॥ कहै
बड़ मंडित कै गुन जो निज गाइ धरौ पुनि सोऊ ॥
है यह बात प्रसिद्ध सबै जग ये कसी रीति निवाहन
होऊ ॥ नेकु भरे बिनु दीपक देऊ प्रकासु करै न कि
तौ करो कोऊ ॥५९॥ दोहा सरस सुमिलि चितनु रा
गकी करिक रिष अमित उठान ॥ गोइ निवाहें जीति ये
षेल पेम चौगान ॥६०॥ टीका यह सषी नाइका कौं सने
ह की इवनावना वृत्ति हे अरु प्रयोजनु नाइका सों मि
लो पुकरायो चाहति है सषी को वचन नाइका सौं
प॥ कवित्त सरस तुरंग अति सुमित विमल चितु
ताहि चाहित जैनैं सो चुटकि चलाइवौ ॥ लोकलाज
वांग साधि इष्ट अनुराग करि अमित उठांव नीकै
रिंकरि धाइवौ ॥ कहै कवि कलस अभिलाष घेरी हाथ

गोइ लिर बौ है तन बनी निपट पइयौ ॥ षेलि बौक
छु नु यह पं मचेव गांन षेल चितु षिलार मैंन नु
पांहरिमा इयौ ॥ ५८ ॥ प्रीति कौ उपालंभ दोहा ॥
जानि मरी बिछुरी घरी जल सफरी की रीति ॥ नित
प्रति होति षरी षरी अरी जरी यह प्रीति ॥ ६० ॥ टीका
यह नाइका पुरकीया ओढा नाइक के वियोग में
परी व्याकुल है अरु प्रीति निवट ति है सु सषी सों
कहै ॥ ६० ॥ कवित्त ॥ नैंन अघात नहीं निरषें निर
षें बिनु चैंन परे न घरी है ॥ व्याकुल है तनु स्या
ह परी न लेषे बिनु नीर मनों सफरी है ॥ मैंन मरु
र बिथा चित ही नित हो नित होति षरी है ॥ स्याम
मरी छिनु के बिछुरें यह प्रीति जरी अरी कौनें क
री है ॥ ६१ ॥ दोहा ॥ तोही निरमोही लग्यो मोही यहै
सुभाउ ॥ अन आयें आवै नहीं आयें आवति आ
उ ॥ ६२ ॥ टीका ॥ यह नाइका प्रोढा है नाइक की नि
ठुरता अरु अपनें हृदय की आसक्ति उराहनों
दे करि प्रगट करति है नाइका कौ वचन नाइक
सों ॥ ६२ ॥ कवित्त ॥ नेह मेरे नैंननु कौ जवतें न जा
नि लीन वही नें चित कौं लगायो आनि बाऊ है
॥ मिलत न मिलत मनु हिलि मिलिये क भयो परै
प्रेम फंद कौ अनोषो उरझाऊ है ॥ कहि न सकति
तेरो हियो निरमोही अति मेरें हियें गयो कहु
चैसो सुभाऊ है ॥ तेरे अन आयें आन आवै कै
रहै यह तेरे आयें आइ जात प्यारे तन आऊ है

वि॰सं॰ ॥८६॥ ६१॥ दोहा॥ लोचन नसलौंनैं अरुर हे अनिसनेह
सों पागि॥ ननकक चाई देनि दुखु रुखरनलौं मुह
लागि॥ ६२॥ टीका॥ यह नाइका प्रोढा है नाइक के
अंनेह करन मैं कछू कपटु जानि उराहनैं मैं प्रग
ट करति है नाइका कौ वचन नाइक सौं॥ ६२॥ कवि
त्त॥ नैंक चितै चितु चोरत हौ उरजोरत हौ अनुराग
स चाई॥ रावरे प्रेम प्रबंधनु की जिनि हीनि तही
सु निपैं चरचाई॥ रूपसलौंनैं सनेह पगे हरि प्री
ति के रंग मैं बुथिर चाई॥ रुखरन लौं मुह लागिन
कै दुखु देनि लला यह नैं ककचाई॥ ६२॥ नाइका
कौ उराहनौं दोहा॥ मोहि दियौ मेरो भयौ रहतु जु
पिय जिय मिलि साथ॥ सो मनु बांधि न सौंपियै सौति
नु के हाथ॥ ६३॥ टीका॥ यह नाइका प्रोढा परकिया
उराहनौं नाइका कौ वचन नाइक सौं॥ ६३॥ कवित्त
जो मन मोहि मया कै दियौ तुम मो जिय सौं मिलि
कै रस भीजै॥ मेरो रह्यौ न सरूप प्रभु भाइ मैं पेम पियू
ष सदा मिलि पीजै॥ मैं अपनौं करि जांन्यौं यही अ
व अंतर होत छिनै छिन छीजै॥ सो मनु जोरावरी
करि मोहन सौतिनु के कर बांधि न दीजै॥ ६३॥ दोहा
भये वटाउ नेह तजि वादि बकत बेकाज॥ अव अलि
देत उराहनौं उर उपजत अति लाज॥ ६४॥ टीका
यह नाइका परकीया प्रोढा उराहनौं नाइक के वि
छुमान नाइका सखी सौं कहति है॥ ६४॥ कवित्त॥
नैन नु सौं नैंन सौं मन सौं रहते ईमिले लहते सब
साज नि॥ भूलि गई सब बेब तियें हित पूजनि की ॥८६॥

वऊ भांति बिराजति ॥ येन जिने रुकटोक मये स्व
र्दुवारि विकैं मनुजनी बिनु काजति ॥ देति कुराह नैं
चैसैं नुकौं अपनैं उरहीं च पियै अति लाजति
६४ ॥ दोहा ॥ आप दियौ मनु फेरि लै पलटैं दीनी
पीठि ॥ कौन चाल यह रावरी लाल लुकावत डीठि
६५ ॥ टीका ॥ यह नाइका प्रौढा उराहनौं देति है ना
इका कौ बचन नाइक सौं ॥ ६५ ॥ कबित्त ॥ नेह लाल
मलै उरमाइ हियौ अब देखिबे कौं तरसावत हौ ॥
अब तौ हम कौं यह जांनि परी इहि लाज इतै न हि
आवत हौ ॥ तुम मोहि दियौ अपनौं मनु आपुही
फेरि लैबौ सिर नावत हौ ॥ अब ता पर लैरत पीठि
दई हरि काहे कौं डीठि लुकावत हौ ॥ ६५ ॥ दोहा ॥
बिरह बिथा जल परस बिनु बसियतु मो हिय तालु
॥ कछु जांनत जलथंभ बिधि दुरजोधन लौं लालु
६६ ॥ टीका ॥ यह नाइका प्रौढा उराहनौं नाइका कौ ब
चन नाइक सौं ॥ ६६ ॥ कबित्त ॥ हरि मो हिय प्रेम सरो
वर मैं बसिबौ निसिबासर ठांनत हौ ॥ नेह नीरु बि
योग बिथा सु निदै न उपाउ कहा उर आंनत हौ
॥ कबि हैम कहै अपनैं उर कौं हम सौं पिय भेद न
मांनत हौ ॥ कछु जांनि परी दुरजोधन लौं जलथं
भन की बिधि जांनत हौ ॥ ६६ ॥ दोहा ॥ दखि न पिय
कै बाम बस बिसराई निय आंन ॥ ये के बाघर कैं बि
रह लागे बरस बिहांन ॥ ६७ ॥ टीका ॥ यह नाइका प्रौ

ढाहै सु नाइक कौ उरांहनौं देति है दछिन पिया
नें चतुर पिय सें बोधन जां नियें दछिन नाइकु वै
नें ॥ ८७ ॥ कबित्त ॥ रसरीति नागर हौ चातुरी के साग
र हौ कोरि काम कला निधि उपमान परसे ॥ सब
सुष देन हौ निकाई के निकेत हौ तु में देषत ही षी
झि सव ही के उर सरसे ॥ दछिन सनेही हरि ऐसे
भये वाम वस विसराई और तिय देषिवे कौं तरसे
॥ कहै कवि इन्द्र से कै भवन वसि रहे हम ध्यांन त्य
गी विरह विहांन लागी वरसैं ॥ ८८ ॥ दोहा ॥ फिरत सु
घटकत नैंनि वितु रसिक सरस सुन षियाल ॥ अनन तु
वतन नित नित सुनित हित सकुचेत न हि लाल ॥
८९ ॥ टीका ॥ यह नाइका प्रौढा उराहनौं नाइका कौ
वचन नाइक सौं ॥ ९० ॥ कवित्त ॥ हम सें उतनु प्यारे ज
करे गु जानत तिहारे गुन गूढ नउघारे ऐसी ढर निढ
ही रत हौ ॥ सब कौं भावतु हौ रसिक कहावत हौ रसुन
रसीले नातु ष्यालसौ करत हौ ॥ अटकत फिरत
जगनि वितु दौर दौर प्रेम पतु सांचौ ये कहूं उघरत
हौ ॥ अनत अनत नित कीजत न न वजने हरं च कहू
हियमें न सकुच धरत हौ ॥ ९१ ॥ दोहा ॥ तुम कत भयो
तु वं गुनक न नु पच यौ कुवत कुचाल ॥ क्यौ धौं दा
स्यौं ज्यौं हियौ दरक तु नाहि न लाल ॥ ९२ ॥ टीका ॥ यह
नाइका प्रौढा उरांहनौं नाइका कौ वचन नाइक सौं
९३ ॥ कबित्त ॥ मो उर में अनुराग के फूल नैं यो पर नी नि
कली प्रगटी ज्यौं ॥ रावरे औगुन केकन काहू कके ॥ ९४ ॥

वकुल्लासंग न्हरिभरेल्यौ।।वं वक नाईकी बात नि
सौंकविलास कहैं परिपक्क भयौ औ।। आवत मोहि
परैपौ यहै अव दोहिमलौं दरके न हियौ क्यौं।।६९
।।दोहा।। सदन सदन के फिरन की सदेन छुटै हरि
राइ।। रूचै तितै विरहन फिरै कत न विहरन तैर आइ
७०।।टीका।। यह नाइका प्रौढा उतरा है नौं नाइका कौं
वचनु नाइक सौं।।७०।।कवित्त।। डोलत न लालय घनैं
घर जाकत पंम कौं आं कुक हूं न उघारौ।।जो लि
परैं अवनोवकसो उरहीं केरहैं है मध्यान निह
रौ।।वां निपरीसु नवयौं है छुटै मनु मांनैं न हीन
विमानि पधारौ।। मांवती सेजविहारी हियौ कि
नयौं कि ननैं इन आइ विहारौ।।७०।।स्वाधीनप
तिका।।दोहा।। छिनकु चलति ठठकति छिनकु
भुज पीतम गल डारि।। चटी अटौ देषनि घटावि
अ छुटा सी नारि।।७१।।टीका।। यह संजोग स्रृंगार
नाइका स्वाधीनपतिका सषी कौ वचन सषी सौं
७१।।कवित्त।। मेलि भुजा मनमोंहन के कंठ चलै उ
ठुकै उमगे सुषु भारी।। नाष्ठ विपै कविलास कहैं
घन दामिनि कौ रिकै बलिहारी।। कुंदन से तन स्वौ
निकसी वनी सारी सुरंग लसै लह कारी।। कारी घटा
छुवि सौं अवलोकति सांवुन सां फ अटा चढ़ि प्या
री।।७१।।दोहा।। टनि हाई सवटौल मैं रहीजु सौनिक
हार।। तुनैं अैं खि पौ च्या पुल्यौं करी दोषिल आर अ
७२।।टीका।। यह नाइका स्वाधीनपतिका सषी कौ

बि॰स॰ ॥ वचननाइकसौं ७२ ॥ कवित्त रातिदिन ताकी कि
॥८८॥ याही के धाम पग्यो स्याम मैं रहत तो सुषदाई ॥ पास परो
स सबै करती यह वीसविसै निय है तू निहाई ॥ तेरे
वनें गुन रूप की रासि सुसील सुहाग सुगोंन हियाँ
ई ॥ प्रांन पती अपनैं बसकै तैं भली कीनी सो तिको
छो निबहाई ७२ ॥ दोहा ॥ तो पर वारों उरवसी तु
नि राधिके सुजांन ॥ तू मोहन कै उरबसी कै उर
वसी समांन ७३ ॥ टीका ॥ यह नाइका स्वाधीनप
तिका सषी को वचन नाइका सौं ७३ ॥ कवित्त रू
प की उज्यारी व्रषभांन की दुलारी राधे तेरी गुनि
काई है रिझो नि सब हारी है ॥ तेरे गुन गाइवे कौं
तेरी प्रीति रीती कौ पन गह्यौ गिरधारी है ॥ तेरो ना
म रटे ध्यांन तेरोई हिये मैं धरे नेरे रस बस उडि या
र है विसारी है ॥ तु ही उरवसी कै कैं मोहन सी मोह
न के तेरी छवि पर कोटि उरसी वारी है ॥ ७३ ॥ दो
हा मोहन मन गडि रही गाढी गडनि गुवालि उ
दै नित सदा न टसाल लौं सौ तिनि के उरसालि ॥ ७४
टीका यह नाइका स्वाधीनपतिका सषी को वचन
नाइका सौं ॥ ७४ ॥ कवित्त बीन परीव दिपान सो पे
टके रौ रच्यौ है कुचकी कवि लवैं नी ॥ कंचु सौ कंठक
लो धर सो मुष को रुक्या छवि नु की अनि पैनी ॥ सम
न मोहन के मन मै गालि रही गडि के विकलासु वर
नी ॥ सौतिनु के उरमांझ सदा न टसाल लौं सालति
है मृगनैनी ॥ ७४ ॥ वामकसज्या नाइका दोहा ॥ ॥८८॥

कुकिकुकिऊपकौंहैंपलंनिफिरिफिरिजुरिजमु
हाइ ॥ बीरपियागममैंनीदमिमिसवैषलीउठा
इ ॥ ७४ ॥ टीका ॥ यहनाइकापरकीयावासकसज्या
सषीकौवचनसषीसौंकियाविरंग्घासंभवै ॥
७५ ॥ कवित्त ॥ जांनिसमैपियआगमकौचतुराई
करीचितचाहकेचाइकै ॥ सैंकरिआधिकन्ह
इकैंआंषिऊंकीसीकरीपलकेंचपकाइकै ॥ जो
रिभुजाननतोरिनियाअंगिरानीवरीअरसा
यजंभाइकैवैरीऊनीढिंगआइअलीतुरइस
बऊठमहीसौंउठाइकै ॥ ७५ ॥ उत्कंठितादोहा ॥
नभलालीचालीनिसाचटकालीधुनिकीन ॥
रतिपालीआलीअनतआयेवनमालीन ॥ ७६
॥ टीका ॥ यहनाइकाउत्कंठितापरकीयानाइकाकौ
वचनसषीसौं ॥ ७६ ॥ कवित्त ॥ आजुमनमोहनकौ
मगुनिरषतमेरेपलकनलागेपीनिउरतैंनहाली
हीं ॥ भईनभलालीदैषिफीकीपरीनषतालीसु
नियतधुनिचिरकालीनिसाचालीहै ॥ काहुरम
नीकींठाषिमरगजैवालीनासौंजांनियतिरीझि
वनमालीरहेपालिहै ॥ कहाकहौंआलीइनम
दनविपतिघालीपालीनिजभईजैसीष्यालीवि
करालीहै ॥ ७६ ॥ अभिसारिकादोहा ॥ निसिअंधि
यारीनीलपटपहिरिचलीपियगेह ॥ कहैंदुरा
ईयौंदुरैंगीपामिघामीदेह ॥ ७७ ॥ टीका ॥ यहनाइका

वि०स० ॥८९॥ कृस्नाभिसारिकासषीकीसिछ्याअंगदीसिकैआ
धिक्य॥७७॥कवित्त॥कारीनिसाकीअंध्यारीमहा
अरुनैसीयैस्यामघटानकीआई॥प्यारीनकुंज
विहारीपैजानिसजीननमैंचकसारीसुहाई॥घू
घटमैंअबचंदमुराइकहैकविहूलसकरीचतुरा
ई॥देहकीदीपतिदीपसिषासीकहैयहकैसेंदु
रेगीदुराई॥७७॥दोहा॥अरीवरीसटपटपरीवि
धुआधेमगुहेरि॥संगलगेमधुपनईभागनु
गलीअंधेरि॥७८॥टीका॥यहनाइकाकृस्नाभिसा
रिकाअपनीरातिकीबातनसषीसौंकहतिहैवाट
मेंचंद्रोदयभयोसुभौंरनुगलीछाईलीनीयाप
दतेंरूपगर्विताहभई॥७८॥कवित्त॥स्यामनिसा
लषितेसोईसाजिसिंगारकैहौंपतिपासबेनी
री॥तौंअधगेलउदोतुभयोससिरैचितमोमलि
सोवरलीरी॥पंकजछांडिसुगंधकेलोभलगी
संगभौंरनुकीअवलीरी॥ताहीसमैंममभागि
निआइकैछाइलईजनुकुंजगलीरी॥७९॥दो
हुप्योहुपाकरछितिछुयोतमससहरिनसहार
॥हंसिनिरहंसतिचलिससिमुषीमुषनेअंचलडा
रि॥७९॥टीका॥यहनाइकाशुक्लाभिसारिकारा
हमेंचंद्रास्तभयोदेषिसकुचितभईतबसषीस
मोधानकरतुहै॥८०॥कवित्त॥मेरेकहैंसजिसुभ्र
सिंगारचलीअलिहौंमहिकैंगनिमंदहि॥आंथ ॥८९॥

यौ सोम चली अथवी चहीदे षिछ पेछितिपैन
मंहूंद हि॥ घूंघट कौ पट दूरि कै प्यारी उघारि है तू अ
पनैं मुष चंद हि॥ सोम सनैं मनि ज्यों करहै सीकरि
यौं वलि कै मिलि रीनंदनंदहि॥ ७९॥ दोहा॥ उठि कै
ठकुयैतौ कहा पावस कै अभिसार॥ जानि परैगी
देषियौ दामिनि घन अंधियार॥ ८०॥ टीका॥ यह सषी
नाइका सौं कहति है कि अभिसार कौ सहज ही स
मय है नाइका परकीया॥ ८०॥ कवित्त॥ कौंनै तन
नीलनि चोल सजै सषि कौं मृग मेद कौ ये नैनौ
विचारु कहा चित मांझ धरैगी॥ कुंज कै भौंन नि
संक ह्वै क्यौं न चलै हरि कैं न ह्वै अंक भरैगी॥ स्यां
म घटा की अंधेरी मैं तेरी न दुतिदामिनि ज्यों निप
रैगी॥ ८०॥ शुक्लाभिसारिका॥ दोहा॥ जुवति जो
न्ह मैं मिलि गई नैंक न होति लषाइ॥ सौंधे कें डो
रै लगी अली चली संग जाइ॥ ८१॥ टीका॥ यह ना
इका शुक्लाभिसारिका सषी कौ वचन सषी सौं॥ ८॥
कवित्त॥ तन की गुराई तरुनाई की निकाई छाई जो
की उजराई तें उज्यारी उजरति है॥ सारद निसा मैं प्या
री विसद सिंगार सजैं गजगमनी की नीकी सोभा
सरसाति है॥ चली अनुरागी मनमोंहन कै मिलि
वे कौं चांदिनी मैं मिलि गई क्यौं हूं न लषाति है॥
लपट सुगंध की अछेह उपटति अंग नाही की
तें संग लागी सषी संग जाति है॥ ८२॥ अभिसारिका
दोहा॥ गोप अथाइनु तें उठे गोरज छाई गैल॥
चलि वलि अलि अभिसार कन नीन संझौ षमै

वि०स० ल ॥८२॥ टीका ॥ यह नाइका संध्या अभिसारिका
॥२०॥ सषी कौ वचन नाइका सौं कि ऐसे समैं अभिसा
र करि ॥८२॥ कवित्त ॥ छोडि आयौ रनु गो सलई
कौं उठी सब गोपनु की अंवली है ॥ छीन भई रनु
षहीर विकी छबि गोरज रविकिरिन गैल गली है ॥
चंद कला प्रगटी न अजौं चलि क्यौं न करे अ
लि रंग रली है ॥ मानि सुहाग लिलमे रौ कह्यौ अभि
सार की सिल संमौ षी भली है ॥८२॥ खंडिता दोहा
पल सौं है पगि पीक रंग महल सौं है सब बैन ॥ बल
सौं है कत कीजियत ये अलसौंहै बैन ॥८३॥ टीका
यह नाइका प्रौढा अधीरा षंडिता नाइका कौ वच
न नाइक सौं ॥८३॥ कवित्त ॥ सौंहे तिसिषि लगान पा
रस मे पागे निसि जागे तातें और रस के हार ढरि
यतु है ॥ बैनतुतयान अं गिरा तमु रवेरषेर फेरि
फेरि हेरि हहरियतु है ॥ बैन सुनें छल सौं है पीक
पगे पल सौं है देषें छुवि डगनि अनंद भरिय
तु है ॥ कहा प्रान प्यारे अमुकाहे कौं करत ये तौ
अलसौंहे नैन बलसौंहे कं ग्रियतु है ॥८३॥
दोहा ॥ कत लपटैयतु मो गरें सौं न जुही निसि
सैंन ॥ जिहिं चंपक बरनी किये गुल्लाला रंग
नैंन ॥८४॥ टीका ॥ यह नाइका प्रौढा अधीरा षं
डिता फूलनु के नाम सवद कौ चमत्कार है ॥८४॥
कवित्त ॥ मोगरैं न्हालति न लागियै लालन सौं न जु
ही निसि सैन में प्यारी ॥ जाकौ लसै तनु चंपक सौ २०

इसनारलिकुंदकलीन्हुविथारी ॥ लोचनला
लगुलालनकौरंगकरैजिनिरैनिजगाइविहारी
॥ निंदतहैंअरिविंदनिकीछ्विपीजिपरागभ
रेभरुभारी ॥ ८४ ॥ दोहा ॥ कनकहितडुषदैनकौ
रचिरचिवचनअलीक ॥ सबैकहाउरयोलपै
लालमहावरलीक ॥ ८५ ॥ टीका ॥ यहनाइकाधी
राअधीराषंडितानाइकाकौवचननाइकसौं
८५ ॥ कवित्त ॥ आजुमयाकरिमेरैंपधारेलसीछ
विरैंनिविहारविहारैं ॥ क्यौंकहियेडुषदैनकौ
बैंनवनाइवनाइसतैरहिहारे ॥ घूमतलोचन
नींदभरेउघरेरसमैनपचिकनिहारैं ॥ औरक
हाउरयोसबुनालललितारसमहावरलीकनि
हारैं ॥ ८५ ॥ दोहा ॥ पटसौंपोंछिपरीकरौषरीभ
यौंनुकवेष ॥ नागिनिकैलागीडसा तुनागवेलि
रसरेष ॥ ८६ ॥ टीका ॥ यहनाइकाप्रौढाअधीराष
डितानाइकाकौवचननाइकसौं ॥ ८६ ॥ कवित्त ॥
आजुमयाकरिमेरैंपधारेफुलीवडेभागिनिकी
सुपसीहै ॥ पीनमयेपटछोरसोंपोंछिपरीकेरे
मेरेमनिहैरिहरीहै ॥ लागतिहैममनैनतुकौअ
हिभांमिनिसीमयभूरिमरीहै ॥ केलिनमैंआहि
वेलिकैरंगकीरेषनिमेषनिपैउघरीहै ॥ ८६ ॥ दो
पलनुपीकअंजनअधरधरैंमहावरभाल ॥
आजुमिलेसुभलीमलेबनेहोलाल ८७ ॥ टी

वि०स० यहनाइकाधीरा अधीरा पंडिता नाइकाकोवच
॥१९॥ ननाइकसों ॥८७॥कवित्त॥ पीकपगीपलकैंढुलन
कैंछबिनैंननुमैंअरुनाईधरीहै॥ अंजनुचा
रुफब्यौअधरानिलिलारमहावररेखापपरी
है॥ लालबिनागुनमालहियैंसुमकीनिअंने
कप्रभांतिभरीहै॥ नीकेबनैंइहिबांनिकआ
जुमयाकैमिलेसुभलीयेकरीहै॥८७॥दोहा॥ डि
हिभांतिसिंगारचौचरनमहावररभाल॥७
हीमनौअखियांरंगीओदतुकेरंगलाल॥८८
टीका यहनाइकाधीराअधीरापंडितानाइका
कोवचननाइकसौं॥८८॥कवित्त॥ वाहीकैनैंन
कोकाजरअोठपैनीकोबन्यौंजिनियौंछबिकेषो
ऊ॥ वाहीकेपावकोजावकरंगुलिलारमहाछ
बिदेतहैसोऊ॥ ऐसोबनाइसिंगारुकैंरयोजि
हिहैवहलालविचछनकोऊ॥ जांनतलाल
रंगीउनहीअखियांअधरानिकेरंगमैंदोऊ ८८
॥दोहा॥ वाहीकीचितचटपटीधरतअटपटेपा
इ॥ लपटबुझावतिबिरहकीकपटभरेहूआ
इ॥८९॥टीका॥ यहनाइकाधीराअधीराधीरानाइ
काकोवचननाइकसौं॥८९॥कवित्त॥ अनतव
सेकैहौनोबिलगुनमांननहैंसबरेसवसकि
सोचाहैवऊनाइकैं॥ नाकेभागजागेजाकेसंग
निसिजागेमेरैंभोरभयैंआयेहितुहियकोंसना ॥१९॥

इकैं ॥ जानियतु बाही कीलगी है चितचटपटी
चटपटी चैरंन परतेउ गुलाइकैं ॥ रूपरचुगा
वनहौ विरहह्रुतासनकी कपटमेरे प्रांनप्यारे
रतिआइकैं ॥ ९ ॥ दोहा ॥ गहकिगांसऔरेगहे
रहे अधकहेवैन ॥ देषिषिसौंहैं पियनेयनकियै
रिसौहैंनैंन ॥ १० ॥ टीका ॥ यहनाइका षंडितानाइकु
सुरतकेचिह्नदेषिकैं याकै आयौ यहबात
रनलागी वतरातमैं नाइककेनैंनलजौहैंभ
ये सषीकोवचनसषीसौं ॥ १० ॥ कवित्त ॥ आवत
प्रांनपतीहिविलोकिसुधासमनेहकीरीति
सौंहेरे ॥ धाइकैंआ...कैआइलियेहियमैंउम
गेसुषपुंजघनेरे ॥ आधेसवैनकहेररहे सुषगां
सगहेउरकोपकरेरे ॥ लालकेनैंनविसातविलो
किरिसाइकैंराधेनहीडगफेरे ॥ ११ ॥ दोहा ॥ नेहन
रेरेसोरूकरिकतकरियतुडगलोल ॥ जीकन
हीयहपीककी सुनिमनिमलकेकपोल ॥ ११ ॥
॥ टीका ॥ यहनाइका सापराध जांनिनाइकानेवच
नकरतिहै सुनीइककी सषीनाइकाकेचितको
अभुनिवारनुकरतिहै सषीकोवचन नाइकासौं
नाइकासषीसौंकहैतौन्हतसुरतगुमापरकीया
होइ ॥ १२ ॥ कवित्त ॥ औफुलविषयहकहूऔरैभां
तिनेरीगनि आंननपैउमगिलगाईनेलकति
है ॥ वक्रुरीकुटिलभ्रितिनेहसौंतनैंनीमईनैन
नुमैं रिसकी तरंगझलकतिहै ॥ कहैकविदेम

यहधोषौ हियहांतोकरियीकर्ल । कजांनिन्हूनु
वोलवलकतिहै ॥ ललितक पौंपरनीकेंकें
विलोकिस्रुति भूषनकी मुनिकीमलकमल
कतिहै ॥ ९१ ॥ दोहा ॥ पावकसौंनैंननुलगतुजाव
कलाग्यौभाल ॥ मुकरूहोऊगेनैंकमैंमुकरुवि
लोकौलाल ॥ ९२ ॥ टीका ॥ यहनाइका धीरा
अधीराषंडितानाइकाकोवचेननाइकसौं ॥
९२ ॥ कवित्त ॥ नीकेरमनीकेह्वैकैंरसकेलिकी
नीवाहीकीसुगंधअंगमदकिरहीरसाल ॥
होतकहामुकरेयेनइहैंनइरायेंविकअंजैंन
अधरदीयेविनुगुनहि माल ॥ पावकहसौंल
गतुजगरमम नैंननुकोहूलमप्रांनप्यारेलल।
ग्योजावकतिलकभाल ॥ केसीआजुराजति
हैसारसतैंसरसयेआरसमगन आंषिआर
सीलैदेषोलाल ॥ ९२ ॥ दोहा ॥ आये आपभली
करीमेटनमानमरोर ॥ दूरिकस्योयहदेषियतु
छलाछिगुनियांछोर ॥ ९३ ॥ टीका ॥ यहषंडिता
नाइकाकीसषीनाइकसौंकहतिहै ॥ ९३ ॥ क
आजुमयाकरि आयेभलीकरीआजुकोवानि
कुमोमनमोहै ॥ देषुतरावरीमोहनीहरतिमा
नमरोरधरेंगरकोटै ॥ काहुछबीलीकोछोटो
छलायहछोरछिंगुनीकेछाजतुजोहै ॥ देषिनि
साइगीहूरिकरोकछुजांनतहोअनषाइलसो
है ॥ ९३ ॥ दोहा ॥ लालनलहिपायेदुरैंचोरीसौं ॥ ९४

हकैरैंन॥ सोसव्य पनिहां आगटकहेंपुकारेंनें
नें ९४॥ टीका॥ यहनाइकाओटा अधीरा षंडिता
नाइकाकौ वचनेंनाइकसौं॥ ९४॥ कबित॥ आये
उनीदे संभात नऊ केछूभे हुन ज्ञानौ हियेंकी
में भोरी॥ वाकु ब ककुंकुम केलि में चिक्क मिलाइ
हियेंमस के ज्ञिहि भोरी॥ लालनलही अबनैंास
वृवातहुरेन हिसों है करौ कि लि कोरी॥ सोसव
दे पनिहां होंयेंनेंनपुकारिकहैरतिरंगकीचो
री॥ ९४॥ दोहा॥ तुरत सुरत केसें दुरत मुरत नैंनें
न जुरनीठि॥ डौंडी देगुनरावरे कहै कनौंडी दी
ठि॥ ९५॥ टीका॥ यह ... इकाओटा अधीरा षंडि
तानाइकाकौवचनेंनाइकसौं सषीकौवचन
नाइकासौं॥ ९५॥ कबित॥ चिक्क अंगअंगकेउ
राये वचुराइकैपै आरसमगनगातहुरि ढहना
तहै॥ प्रेमरुधापांनकेऊलासतें मु दितमनमें
न सुषसनें अनवैंन तुनरातहैं॥ तुरत सुरत क
हो केसें केदुरति लालननीठि जुरि मुरत नयन
तुलजात॥ कलमषांनप्यारे यह डौंडी दै कनौंडी
डीठि प्रगटस्करतिरतिवारीवातहै॥ ९५॥ दोहा
मरुकत भाजनसलिलगत इंदुकला केवेष॥
झीनझगामें झलमलें स्यामगात नषरेष॥ ९६॥
टीका॥ यहनाइकाओटा अधीराषंडितानाइका
कौवचननाइकसौं॥ ९६॥ कबित॥ आये हामेंरैंम
याकरिमोंहनराजतिमूरतिरंगभरीहै॥ पंकज

बि॰स॰ वैंनीकेपांनिकीआजुहियेंमषरेषभलीडघ
॥९३॥ रीहै ॥ मीनैंम्रगामैंविराजतियोंछविछाजति
मोमतिहेरिहरीहै ॥ नरमैंनीतुमनीकौसिला
नलरंइकेलामनौतापेंधरीहै ॥ ९६ ॥ दोहा ॥ न
षरेषासोहैंनईअमलसोंहैंसबगात ॥ सोहैहो
ननेनंनयेतुमसोंहैंकतबात ॥ ९७ ॥ टीका ॥ यहनै
इकाप्रौढाअधीराषंडितानाइकाकौवचनैंना
इकसौं ॥ ९७ ॥ कवित्त ॥ हरिजांनिपरीहम्हपेमया
पगधारेइतेंरतिकेलिकियें ॥ तुमनौसवकेसुष
दाइकहोसवहीकौंवचें[illegible]पुंजहियें ॥ तुकरा
२ जिनियेंषुगरेलषियेंतुरसीटिकीनषरेषहियें
॥ द्रगसोंहैंनहोतसकोचनितें अवकाहेकौं
सोंहइतीकरियें ॥ ९७ ॥ दोहा ॥ नरुनकौकन्दवर
नवरेभयेअरुननिसिजागि ॥ वाहीकेंअनुरा
गद्रगरहेमनौंअनुरागि ॥ ९८ ॥ टीका ॥ यहनाइका
प्रौढाअधीराषंडितानाइकाकौवचननाइकै
सों ॥ ९८ ॥ कवित्त ॥ कमलप्रानप्यारेप्रातप्रीतिके
पधारेमेरेदेषेमेंनम्रहरतिविरकैगयोभागिकें ॥
मरगजेवागेरसपागेलटपटीपागेंआरसमैं
नअंगरहेअंकलागिकैं ॥ मेरेजांनप्रांनपतिवा
हीप्रांनप्यारीकेपरमअनुरागमेंरहेहैंअनुरा
गिकैं ॥ ९९ ॥ दोहा ॥ सोहतुसंगसमानसौंयहेकहै
सवलोगु ॥ पांनपीकअोठनुवनैंकाजरनैंननुं
जोगु ॥ ९९ ॥ टीका ॥ यहनाइकाप्रौढाषंडितानाइ ॥ ९३ ॥

काकौवचननाइकसौ ॥३९९॥ कबित्त ॥ ग्रंथनिमें यह बात प्रमान है यौं चलि आवौ मनौ सबही कौ ॥ जैसे कौ तैसौ ईस्त्री गुन रैन वही तुम हासु पदाइकजी कौ ॥ जो बिपरी ति बिपरी निबिलौ कियें संगु कुटंगन ही रंगु लागनु पी कौ पांन की पीक वनें पिय ओठनु आंषि निहूं लगै काजरु नीकौ ॥३९९॥ दोहा ॥ प्रांन पिया हियमें बसी नषरेषा ससि भाल ॥ भलौ दिषायौ आंनि यह हरि हर रूप रसाल ॥४००॥ टीका ॥ यह नाइका की प्रोहाधीरा अधीरा षंडिता है नाइका कौ वचन नाइक सौं ॥४००॥ कबित्त ॥ प्रेम सौं प्रांनपिया रि बसाइ हियें हियरौ हुलसायौ ॥ भाल नई नषरेष बिराजति सोई मयंक कुलसे छबि छायौ ॥ लोचन रागु रजोगुन राजतु धूमत नैंन तमोगुन पायौ ॥ ब्रीतम प्रात ही आंनि भलौ हरि कौ हरि कौ धरि रूप दिषायौ ॥४००॥
दोहा ॥ प्यांन चलै वलि रावरी चतुराई की चाल ॥ सन षहियें नषिन बिन नरते अनष वदा वन लौल ॥४०१॥ टीका ॥ यह नाइका प्रोढा अधीरा षंडिता नाइका कौ वचनें नाइक सौं ॥४०१॥
कबित्त ॥ प्यांन चलै कछु रावरी लाल चलाव तजे चतुराई की चालौ ॥ छाती नषछत नपीक सुगाल धरें अनि रंगु महावर भाल ॥ पान कनेपर सो हगु पाल हियें उमगावत कौ रिसजा

बि॰ प्र॰ ॥९४॥

ल॥ भागवडे उहि भामिनि भाल हियें उपटीजि
हि मेटन माल॥४०१॥ दोहा॥ वे सियैजा नीपर
ति रंगा ऊजरे माह॥ मृगनैंनी लपट निजु यह
वैंनी उपटी वांह॥४०२॥ टीका॥ यह नाइका प्रो
ढा अधीरा पंडिता नाइका कौ वचन नाइक
सों नायक के विद्यमान सषी सों कहै॥४०२॥ क
का है कों करत चतुराई के चरित्र लाल सां रहै में
रे तू रेति वगर पेषियतु है॥ सो हैं जिनि करो नैं
नैंन किनि सौ हैं करो सो हनी सी सो भाल रंग
अंगन लेषियति है॥ उरज जाने प्यारे कुच कुंकु
म की छाप रही छाती पर यह रेषिय यहै अवरे षिय
ति है॥ मृगनैंनी लपटन उपटी षियें पैंवैं नीऊ
जरे रंगा में अरगट रेषियति है॥४०२॥ दोहा
नकहू न उरस तुजगु कहू न कत वे काजल जा
न॥ सो हैं की जें नैंन जो सांची सौं हैं पान॥४०२
टीका॥ यह नाइका प्रोढा अधीरा पंडिता नाइ
का कौ वचन नाइक सों॥४०३॥ कवित्त॥ मो हितें ला
गत नीके महा तुम आये प्रभात प्रभा सु रसों हैं
जो करियें नाहियें उरियें विनु कियें कितें डरि
ये उरसों हैं॥ क्यों विनु काजु सकोचु भरो उर का
हे कों कीजत नैंनन लजों हैं॥ जो तुम सांची सी सों
ह करो हरि तौ इत क्यों न करो दृग सों हैं॥४०३
दोहा॥ रह्यो चकित चहूं घा चितै चितु मेरो म
ति भूलि॥ सूर उदै आये रही दृगनु सांझ सी फू ॥९४॥

लि॥४०४॥टीका॥यहनाइकाप्रोढा अधीरा षंडिता
नाइकाकोवचन नाइकसोंहोइसषीसोंहोइ॥
४०४॥कवित्त॥देषतरावरीमोहनीमूरतिमोहिर
वेसुधिभूलिरहीहै॥आजुमहाछविछाजतिभो
रनिकाईसवै अनुकूलिरहीहै॥बाहिरयौचढ़
यौ बकिसोंचतु आचिरजैमतिझूलिरहीहै॥अ
येहैसुहरउदोतभयैं वियनैंनेनतुसोंफैसीफूलिर
हीहै॥४०४॥दोहा॥कतवेकाज चलाइयतिच
तुराईकीचाल॥कहैंदेतयहरावरेसवगुनविन
गुनमाल॥४०५॥टीका॥यहनाइकाप्रोढा अधी
राषंडितानाइकाकोवचननाइकसों॥४०५॥
कवित्त मोतिकेधामविरामकेआइप्रभानइतै
पगधारतहौजव॥मैनछकीछविसैंनदिषा
इअनंदहियेंउपजावतहौतव॥क्योंविनकाज
चलावतहौचतुराईकीचालनलालहमसोंअ
व॥मालविनागुनकीउरपैउपटीगुनरावरे
तिकहैंसव॥४०५॥दोहा॥डुरैननिघरघयौदि
येंयेरावरीकुचाल॥विसुसीलागतिहैवुरीहंसी
षिसीकीलाल॥४०६॥टीका॥यहनाइकाप्रोढा
अधीराषंडितानाइकाकोवचननाइकसों॥
४०६॥कवित्त॥जानतिहौंहियकोहितसोंजुनही
कैवकैसुषसोंनिसिनासी॥भोरकैंहेंभ्रमम्ह
लिकैंलालपधारेइतैकछुकीनीहपासी॥ही
यौंदियैकहौकैसेंडुरैयहओरहीनैंसुकुचाल

वि०प्र० प्रकासी ॥ जागति वीस विसे विसुसी सुष सों यन
॥९५॥ के मुह आव तिहां सी ॥४०६॥ दोहा ॥ गडे बडे छबि
छाकि छके छिगुनी छोर छुटैन ॥ रहे सुरंग रंग रंगि
उही नु हदी महदी नैंन ॥४०७॥ टीका ॥ यह महदी
कौ वर्नन है अरु जो नाइका कौ वचन नाइक सौं
होइ तौ षंडिता होइ जो नाइक कौ वचन सषी सौं हो
इ तौ सुमिरनु जानियें ॥४०७॥ कवित्त ॥ वा की छबि प्री
छिगुनी के छोर छुये सब चिपु जनियें ई नये हैं ताप
रवारू उमैं न हदी महदी ह्वै लवि [illegible] डुम जी निल
ये हैं ॥ ता की महा छबि के सरछाकि छुटै न अजौं
गडि अैसे गये हैं ॥ ये विपलोचन वा ही के रंग मैं
राचि कैं मनों सुरंग भये हैं ॥४०७॥ दोहा ॥ कत सकु
चत निधरक फिरौ रतियौ षोरि तुम्हैं न ॥ कहा करै
जो जांहि ये लगे लगौं हैं नैंन ॥४०८॥ टीका ॥ यह ना
इका धीरा षंडिता नाइका कौ वचन नाइक सौं ॥
४०८॥ कवित्त ॥ ढस जां न प्यारे आजु प्रीति कै
पधारे है तौ तन मन वारौं करौं कलस बधाई है
॥ नैंक निरषत लगे जा हि जौ लगौ है नैंन ता कौं तु
म कहा करो यौ वन नवाई है ॥ कैसें राष्यो जात मो
रि मनु वंध्यो पैं मडोरि तु मतन न षोरि कै हहरं चकौ
न पाई है ॥ काहे कौं सकुचं कीजे रचे तिन सुषरी
झे अलि कै तिसे करस लीजे जहां पाई है ॥४०९॥
॥ दोहा ॥ अनन वसे निसि कौ रिस नु उरवारि रही वि
सेषि ॥ तउ लाज आई झुकनि षरे लजौं हे देषि ॥ ॥९५॥

४०९॥टीका॥ यहनाइकाप्रौढाधीरासखीकों
वचनसखीसौं॥४०९॥कवित्त॥रातिकहूंअनतै
बितईमनमोहनकेलिकलासुखसोंहैं॥नातैंहि
येंआनिहीरिसबोइरहीअनखाइकैंमोंहैं॥मो
रहीआवतदेखिकहूंकहिवेकोंमईकुकिवैनक
प्रौंहैं॥आईतऊअनिलाजहियेंनिरषेसबलाल
षरेईलजौंहैं॥४०९॥अन्यसंभोगदुष्यतादोहा
बिलषीलषैषरीषरीभरीअनषवैराग॥म्रगनैं
नीसैंननिभजैलषिवैंनीकेदाग॥४१०॥टीका
यहनाइकाअन्यसंभोगदुष्यतासखीकौवचन
सखीसौं॥१०॥कवित्त॥ साजिसिंगारकुलासमसौ
आईबिलोकिरहीचकिहूरहीसैंकहि॥सोति
कीचीकनीचोटीकोदागुलग्योटटकोपति
केपरजंकहि॥ठाढीअंकोंसीकपोलधरैंकर
रोसभरीभ्रकुटीकरिवंकहि॥सोचसनीबि
लषैम्रगलोचनिलैतिउसासनेआवतिअंक
हि॥१०॥दोहा॥रहीपकरिपाटीसुरिसभरैंमौंहचि
तैंन॥लषिसपनैंपियआनरतिजगतहुलग
तहियैंन॥११॥टीका॥यहनाइकानैंस्वप्नमैंनाइक
अंन्यासक्तिदेष्योनपजागतहूंमाननांहीछोड
ति अंन्यसंभोगदुष्यतासखीकोवचनसखीसौं॥११
कवित्त॥दंपतिकेलिकलोलपगेतुरलागेईसोइ
गयेपलिकाहीं॥ऐसेमैंप्यारीलष्योसपनेंहरिआं
नबधूसौंकियेगलवांहीं॥पाटीसोंलागिरहीम्रगें

वि०स०
॥९६॥

मैंनिंभरीरिसनैंनैंनुभोंहनुमांही॥चौंपयहैचि
नपागीमहातियजागीनकुहियेलागनिनांही
११॥दोहा॥गयोअबैलोबोलियोआपपठैव
सीठ॥डीठिचुराईदुऊनुकीलखिसकुचौंहीडी
ठि॥१२॥टीका॥यहनाइकाअन्यसंभोगदुष्यता
सषीकोवचनुसषीसों॥१२॥कवित्त॥आपनी
प्यारीअलीकौंपठैपियप्यारेकौंआपुहीबो
लिपठायो॥आगेंकैंआइलियोहितसोंहिय
राकुलस्योनियरेंजबआयो॥एतेमैंदुहुंदृ
नुकीदीठिलजोंहीलषीउरनेहतबाध्यो॥बा
लकोभारीमलोलौभरयौजियकासोंकहेंअप
मौंडहकायो॥१२॥दोहा॥छलापरोसिनिहाथ
तैंछुलुकरिलियोपिछांनि॥पियहिदिषायो
लखिबिलखिरिससूचकमुसिकांनि॥१३॥टीका
यहनाइकाअन्यसंभोगदुष्यितासषीकोवचन
सषीसौं॥१३॥कवित्त॥पैखिपरोसिनिकेकरप्या
रीकरीचतुराईकीबाहकलाहै॥मांगिलियो
कछुऊठमसोंबुकुकैमनुहारिहेलाउभलाहै
॥पीतमसोंमुसिकाइकहीकोबिछलाकहैरव
रोसरसाहै॥नैंकइतैलषियेमनमोंहनआनु
मलोहमपायोछलाहै॥१३॥दोहा॥नयेबिरह
बढतीबिथापरीबिकलजियबाल॥बिलषिप
रोसिन्योंहरषिहंसीतिहिकाल॥१४॥टीका॥यहना
इकाअन्यसंभोगदुष्यताएकलोनाइकयासौंहि
तुनाहीकरतुतानैंबिकलहैदूसरैपरोसिनिष ॥९६॥

ब.दै.

सन्न देषी ताही समैं नव सपरी विलषी अहनाइ
कु याकौ परोसनि सों रतु है सु याकौं विलषी है
विपरोसिनि उसन्न भई ॥१४॥ कवित्त ॥ बालम की
हितु आन वधू सों है न कहूं यर एक घरी है ॥
ता दुष बाल महा जिय व्याकुल काम षरी कल
कांन करी है ॥ वाही विथा अति डाढी सी डोल
ति गांढी वियोग की गाढ परी है ॥ त्यों विलषी प्र
गनैंनी षरी पै परोसिनि कौं लषि मोद भरी है ॥
१४ ॥ दोहा ॥ सुरंग महावर सौति पग निरषि रही
अनषाइ ॥ पिय अंगुरिनु लाली लषें उठी ष
री लगि लाइ ॥१५॥ टीका ॥ यह नाइका अंन्यसं
भोग दुष्यता सषी कौ वचन सषी सौं ॥१५॥ कवि
पषि सुरंग महावर सौति के पाइनु बाल रही अ
नषांनी ॥ याहि विलोकि विकाइ गो मोहन वा
न यहै अपनै उर आंनी ॥ एते मैं प्रीतम की अं
गुरी ललाई विलोकि षरी विलषांनी ॥ पावक ज्वा
ल सी जगी उर मैं सु रूमाति महारिस मैं अकुला
नी ॥१५॥ दोहा ॥ विथुर्यो जावक सौति पगु नि
रषि हंसी गहि गांसु ॥ सलज हंसौंही लषि लियो आ
धी हंसी उसास ॥१६॥ टीका ॥ यह नाइका अंन्यसं
भोग दुष्यता सषी कौ वचन सषी सौं ॥१६॥ कवित्त ॥
बाल हंसी कछु गांस गहैं नु विफेल्यो महावर सौ
ति के पाइनु जानि यहै अपनैं जिय मैं यह लाल नि
जहू सिंगार के भाइनु ॥ एते मैं मोद भरी मुसका
न लजौंहीं विलोकनि देषी सुभाइनु ॥ आधी वे

बि० स०
॥८७॥

हांसी उसास भरी अकुलानि परी बिसरी चितचा
रु॥ ६॥ दोहा हठि हितु करि प्रीतम लियो कियौ
जु सौतिसिंगारु॥ अपनैं कर मोतिनु गुह्यौ भयौ
हरा हर हारु॥ ७॥ टीका यह नाइका अन्यसंभो
ग दुष्यिता या कौ हार नाइक नैं ले कैं सौति कौं पहि
रायौ सु नाइका सषी सौं कहै है सषी सषी सौं कहै है
७॥ कवित्त मांगि लियौ हितु कै हठि प्यारे नैं हा
रु तु वारु प्रभा निसौं पाग्यौ॥ ना हि लै लाल चौ
ला नु गयौ कहूं सौति के धाम नहीं अनुराग पै
॥ वाही कौं रीझि सिंगारु कियौ लषि यक हियैं
अन बाहट जाग्यौ॥ आपनैं हाथ बनाइ गुह्यौ
मुकता कौ हू राह रहारु सौ लाग्यौ॥ ७॥ दोहा पा
ग्यौ सोरु सुहाग कौ इनि बिनु ही पिय नेह॥
उनदौंहीं अंषियां कहैं अलसौंहीं देह॥ ८
॥ टीका यह नाइका सौतिकौं आलस बलित दे
षि अरु रससमसी आंषि देषि सषी सौं अथवा ना
इक सौं ध्वनि करि कहै है अन्यसंभोग दुष्यि
ता है इहर्ष करि कहै है तौ वनैं मानवती है सषी
नाइका सौं कहै तौ अपराधु ठुराइवौ जौं पिय ना
इका कहै तौ ईर्षा संचारी है॥ ८॥ कवित्त॥ सौ
करि आंषि उनींदी करी अध ऊतर सौं मुष बोल
उचार्यौ॥ बार रही वार जंभाइ कै बाँही धरी नन
आरस कै हटरी लौ स्यौं॥ झूठी जतावति है सुष सैंन
जगी यह जामिनि जामिनि चार्यौ॥ देषितौ प्रीत ॥८७॥

मकी विनु प्रीति सुहाग कौ मोर किनौ हि पार्यो ॥
१८ ॥ दोहा ॥ लषि सोहति गोपाल कैं उर गुंजनि की मा
ल ॥ बाहरि लसति मनो पियें दावानल की ज्वाल
१९ ॥ टीका ॥ यह नाइका कौ वचन सषी सौं ॥ १९ ॥
भागवड़े निरष्यौ यह वौ निकुंज आजु की हौं वलि
जौं तें घरी की ॥ औन प्रभा लबिलगति है कछु मो
हितौ मैंन की हरनि की की ॥ द्रिपिरी मो हन के उ
र भां वती माल विराजति गुंजनि की नीकी ॥ पाई
फ़ती प्रगरी जनु सुतौ वा हिर ज्वाल मनो वड़वान
लही की ॥ १९ ॥ प्रवत्स्यत पतिका दोहा ॥ अजौं
न आये सहज रंग विरह हूवरे गात ॥ अवही कहा
चलाइयति लालन चलने की बात ॥ २० ॥ टीका
यह नाइका प्रवत्स्यत पतिका सषी कौ वचन ना
इक सौं नाइका हू कौं वचन नाइक सौं होइ ॥ २०
कवित्त ॥ चलन मैं कहूं का कहयो तुम का लि
हो जो हैं चरावनगाई ॥ सो सुनि कैं उहि हीरा घन
सम रो सव अंग परी पियराई ॥ ना हिने कौ बा
न वेनी के अंग मैं आजु हूं लौं न मिटी दुवराई
॥ लाल रहौ अवन बोले कहा अवही चरचा व
लिवे की चलाई ॥ २० ॥ दोहा ॥ विलषि डभकौ
है चषनु पियलषि गवनु वराइ ॥ पियगहरवरि
आयो गरें राषी गरें लगाइ ॥ २१ ॥ टीका ॥ यह नाइ
का प्रवत्स्यत पतिका मध्या की यह दसा है दे
षि नाइक हू नैं गवनु वराइ कै गरै सौं लगाइ राषी

सषीकोवचनसषीसौं॥२१॥कवित्त पतिप्रांनपि
याबिछुरैंनकहूंसुषसौंरहैं प्रेमपियूषपियैं॥हि
तुमांमिबिदेसुकौंहौंनविदाहरिआयोप्रयान
कोसाजुकियैं॥निरषीउभकौंहूंसेनैंनकियेंलषी
षगलोचनेसासलियैं॥नकहीचलिवेकीकछूव
तियांछतियांभरिलीनीलगाइहियैं॥२१॥दोहा
ललनचलनसुनिचुपरहीबोलीआपुनईठि
॥राष्योगहिगाढैगरोमनोंगलगलीडीठि॥२२॥
॥टीका यहनाइकाप्रवत्स्यतपतिकासषीकोव
चनसषीसोंमध्याप्रवत्स्यतपतिका॥२२॥कवि
प्यारीकेंभवनआनिहितुकरिप्रांनपतिआयौ
विदाहौंनपरदेसकोंउमहिकैं॥ललनचलन
सुनिरहीअनबोलीतियओलीहूनवचनसु
नायौकछूकहिकैं॥चकितसीभईचकचौहदु
सौछायौचितुआवतुसलिलुदोऊनैंननुतैंव
हिकैं॥गलगलीडीठिकरिहेरीहरिसनमुषमे
रेजांनराष्योवैंहीगाढौगरोगहिकैं॥२२॥दोहा
ललनचलनसुनिपलनुमेंअसुवाझलकेआ
इ॥भईलषाइनुसषिनुहूंझूठैंहीजमुहाइ॥२३
टीका॥यहनाइकामध्याप्रवत्स्यतपतिकासषी
कोवचनसषीसोंक्रियाविदग्धापरकियाहू
होइ॥२३॥कवित्त॥षेलतिहीसजनीगनमेंव्र
षभांनकुमारिसरूपसौंसांनी॥काहूकहूंकलि
करैंगेपयानुसुनीयहकाहूकेआंननबांनी॥औ ॥९८॥

चितुमैं अनुरागु लेके यह भेद की बात अली हूं न
जानी ॥ यों गुरु लोग्नि मांहि जैं भाइ वे कौं कारि ऊंट मुपो
छ तिनैं न सयानी ॥२३॥ दोहा ॥ रहि है चंचल प्रा
न ये कहि कौंन की अगोट ॥ ललन चलन की
चित धरी कल न पलनु की ओट ॥२४॥ टीका
यह नाइका प्रवत्स्यत पतिका नाइका कौ वचन
सखी सौं ॥२४॥ कवित्त ॥ मैं न सुख संगनि मैं नेह की
न रंगनि मैं अंग अंग पागि रहे है रंग मैं उमहि है
॥ हलस प्रान प्यारे तैं न छिनौ भरि न्यारे भये और
हीतिं अब सभये असी वांनि गहि है ॥ पलनु की ओ
ट भयें कल न लहत नंको हूं जैसी गति होति सो धों
आव तिन कहि है ॥ ललन विचारी चित चलन
की बात अब कौंन की अगोट ये चपल प्रान रहि
है ॥२५॥ दोहा ॥ बाहभरी अति रसभरी विरह
भरी सब बात ॥ को रि संदेसे दुहुंन के चले पो रि
लौं जात ॥२५॥ टीका यह परदेस कौ गमनु दोऊ
नु के हित की अधिकाई सखी सखी सौं कहति है ना
इका प्रोषित पतिका ॥२५॥ कवित्त कौन हूं काज
कौं कांकर कीनौं पयांनु महूरत साधि मलेई ॥
अंतर होत दुहुंन कौ ज्यौं अकुलात वियोग के द
ल स लेई ॥ बाहभरी अरु पीनि भरी रस रीति भरी
बतियां निरलेई ॥ पौरि लौं जात दुहुंन के औरतैं
आली री को रि संदेसे चलेई ॥२५॥ दोहा ॥ मिलि
चली चलि मिलि चलत आंगन अथयौ भांनु

वि० स० भयौमहूरतभोरकौपौरीपथ्यममिलौनु ॥२६॥
॥ ९९ ॥ टीका। यहप्रदेसप्रयांनकोसमयसषीसषीसों
कहतिहै ॥२६॥ कबित्त ॥ रमनगमनपरदेसकौ
विचारचित्तसाधिसुभलगनगनेसकौमनायो
है ॥ साहसुकैउरप्रांनप्यारीहूंकछूनकह्यौम
गलहरैइंगहवरैंगरैंगायोहै ॥ चलतमिलनमि
लिचलतचौलिमिलतिचलनिमिलिचलन
मिलतयौंहीवासरबितायोहै ॥ भोरकौमहूर
तभवनहींमैंसांझभईपौरिपथ्यममिलानठ
हरायोहै ॥२६॥ दोहा ॥ वामाभामाकामिनीकहि
बोलौप्रांनेस ॥ प्यारीकहतलजातनहिंपावस
चलतविदेस ॥२७॥ टीका ॥ यहनाइकाप्रौढाप्र
वत्स्यतपतिकानाइकाकोवचननाइकसों ॥२७
कबित्त ॥ आयेहौमागममोपैबिदाइतपावसके
घुमडेघनकारे ॥ कामिनीभामिनीवामकेबोल
हूप्यारीकहोजिननंदडुलारे ॥ रंचकहूंनलजा
तहियेहितुकेअववेदुपरीजनभारे ॥ ऐसेमैंछौ
डिविदेसचलेकरोमेरीकहागतिप्रांनपियारे
२७ ॥ प्रोषितपतिकादोहा ॥ पियप्रांननकीपा
हरूकरनजतननअतिआपु ॥ जाकीदुसहदसांप
हैसोसौतिनहूंसंतापु ॥२८॥ टीका ॥ यहनाइकाप्रो
षितपतिकासषीकोवचनसषीसों ॥२८॥ कबित्त ॥
तापतयीविरहानलकेबिलषीवहनागरिषीन ॥२९॥

निहारी ॥ आंषि नुही मैं रहे अब आंनिकै प्रांन
सवै सुधि आंन बिसारी ॥ सोतिसवे उपचार क
रैं गनिकैं पिय प्रांनतु कीरषवारी ॥ २८ ॥ दोहा
पावकनरतें मेह नर दाहक दुसह बिसेषि ॥ द
हे देह वाके परसे याहि दृगनिही देषि ॥ २९ ॥ टी
येह नाइका प्रोषितपतिका बिरहनी नाइकाकै
वचन सषीसों उरदेवेगतें नाइकु है सषीसोंक
हेतौ संभवे ॥ २९ ॥ कवित्त ॥ धूंमधरैं धुरवा गर
रैं चत्रुअंमृरहरि मही अवगाहें ॥ देषिरी पा
वककी झरतें यह मेहकी ज्वालकरालमहा हैं
॥ वाहि मटपरसें दहे यह नैंननुहीं निरषैंन ही
नदाहें ॥ गिरधारी बिनां बचिवे कौ नुहीक
हि औरउपाव कहा है ॥ २९ ॥ दोहा ॥ कहें तु बच
न वियोगिनी बिरह बिकल अकुलाइ ॥ किये न
को अंसुवा सहित सुचातिक बोल सुनाइ ॥ ३०
टीका ॥ यांह नाइका प्रोषितपतिका बिरहनी
सषीकौ वचन सषीसों ॥ ३० ॥ कवित्त ॥ प्रांनपती
बिनु वानिय कौं इकसाथ सबै दुष आंनि परैं हैं
॥ वाकी दसा लषि पासके वासी उसास भरैं गह
रेंग हरे हैं ॥ जे कहें बैंन बियोगिनि नैं अकुलाइ
बियोग बिथा न भरे हैं ॥ वे बतियां अब बोलि सु
सामवही अंसुवांनि समेत करे हैं ॥ ३० ॥ दोहा
दुसह बिरह दारुन दसा रहै न और उपाइ ॥ जान

जानऔं राषियतु याकौ नामसु नाइ ॥ ३१ ॥ टीका
यह नाइका प्रोषित पतिका विरहनी सषीकौ व
चनै सषी सौं दस अवस्थानु के भेद मैं आजिन
नियें ॥ ३१ ॥ कवित्त ॥ षांन पियापर है सुकियौ ति
य अंग अनंग तरंग विनाये ॥ सीरी कैं नांतेज
रे कव हूं उपचार विचार जिते सव छाये ॥ इति
निधा इ षेवा सिहित नु सुरझा इर हीन भये मन भा
ये ॥ ऐसें कहै जो व चैतो व चै कहो गा उत भांउ
ते मोहन आये ॥ ३१ ॥ दोहा ॥ रयौं ऐ चि अंतु
तन लहै अवधि उसासनु वीरु ॥ आली वाट
नु विरह ज्यौं पं चाली कौ चीरु ॥ ३२ ॥ टीका यहना
इका प्रोषित पतिका प्रौढा नाइका कौ वचन स
षीसौं ॥ ३२ ॥ कवित्त चैन परत है जीउ रहै दिन
नैंननु मांझ रहै जल छायो ॥ भा रैन भोजनु मैं
नु सु हाइन हा इ हियो परितापत वायो ॥ ऐंच
नु औधि उसासनु वीरजु कौ वलं कै तऊ अंत
न पायो ॥ वाहरि कैं विछुरें विरहा अव द्रोपदी
कै पट ज्यौं अधिकायो ॥ ३२ ॥ दोहा ॥ तिय हिय
नियजु लगी चलन पियम घरेष षरौंट ॥ सूष
न देते न सरसई षोंटि षोंटि षत षोंट ॥ ३३ ॥ टी
यह नाइका प्रोषित पतिका सषी कौ वचन सषी
सौं ॥ ३३ ॥ कवित्त सेंनमैं संगर मीरसरंग अनंग
तरंगउ मंगि सुहाई ॥ काझरकै करकी नपरे ॥१००॥

षकहं तियके उर मैं लगि आई ॥ पीयर देस ग
यो जबतैं तबतैं उनि नीधन कोधन पाई ॥ वेष
२ नषोटै षरौं टिषरौं टिन सूषन दे त्रिवहै सरसा
ई ॥ ३३ ॥ विरह ॥ दोहा ॥ मरिवेकी साहस ककै व
ढे विरह की पीर ॥ दौरति है समुहीम सहि सरसि
ज सुरभि समीर ॥ ३४ ॥ टीका ॥ यह नाइका प्रोषित
पतिका सषीको वचन सषी सौं ॥ ३४ ॥ कवित्त ॥ श्री
मनमोहन सौं जबतैं विछुरी नवतैं न पलो कलपा
वति ॥ नीर विना मकरी ज्यों परी ये परी नल फैलस
ई दुवरी अति ॥ साहस कै मरिवे कों सषी सुउघा
रिकैं आनन तु जो कमैं आवति ॥ दौरति सामुहैं सी
र समीर सरोजनि लै हियरा सौं लगावति ॥ ३४
॥ दोहा ॥ वसिस को वदन सवदन वसं सा वषिया
वति वाल ॥ [illegible] यज्यों सोधनि तियतन नहि लगै
आगनि की ज्वाल ॥ ३५ ॥ टीका ॥ यह नाइका के लग
नि के लगै नेसनेह की अधिकाई है याते आगिनि
भई है सु याको इसो सषी नाइकसौं कहति है ॥ ३५
कवित्त ॥ जा दिनातैं लग्यो नव नेह मनभावन सौं
ता दिनाते मैं न कीम रू रनि मरति है ॥ चातु गुरुलो
गनु के सासनि सकनि भरिये क आस लागी निसि
वासर भरति है ॥ वसनि सको वदस वदन के वस
वाते कछु न वसा तिथ्या उपति कौ धरति है ॥ ल
गनि की ज्वालनि मैं बाल निज देह कौ सियालै
वह सोध उकरनि है ॥ ३५ ॥ दोहा ॥ [illegible]री विरह मैं

वि॰ सं॰ १०१

सीतलअंगेलनछांडतुनीचु॥दीनेहूंचसमांच
षतुचाहेतहेनमीचु॥३६॥टीका॥यहनाइका।
प्रोषितपतिकासषीकोवचननाइकसौंविरह
निवेदनुअरुसंषीहूसौंकहे॥३६॥कवित॥कौ
ऊकेहौकहौंकंजमुषीकोंतिहारेवियोगकी
तापमनावति होतिघरीइवरीविनहीविनदे
विद्सानअलीकेपलपावति॥ऐसीकरीन.
ऊगैलनछांडतुऔरकहाकहियेकहनावति
॥देषतुआंषिनुदेचसमातऊटैहूंमीचुकी
डीठिनिआवति॥३६॥दोहा॥औधाईसीसी
सुलषिविरहविकलविललजा॥विचहीसु
किगुलाबगौछीटोबुईनगात॥३७॥टीका॥य
हनाइकाप्रोषितपतिकासषीकौवचननाइ
कसौंसषीहूसौंकहेतौवनै॥३७॥कवित॥वा
लवधूमनमोहनसौंविछुरैविलषीदुषदंद
नवाई॥नीरविनासफरीज्यौंपरीतलंफैबऊ
भांतिवियोगदवाई॥सीतलजांनिसषीकरू
नाकरिसीसतैंसीसीगुलाबकीनाईवीचही
नीरुविलाइगयौसवएकहूछीटनअंगलौं
आई॥३७॥दोहा॥ज्ञिषिनिराधचुपहरमईर
हतिमाघकीराति॥निहिंउसीरकीरावरीष
रीआवरीजाति॥३८॥टीका॥यहनाइकाप्रोषि
तपतिकाविरहनिवेदनसषीकोवचननाइ
कसौंसषीहूसौंसमवे॥३८॥कवित॥लालतिहा

रे वियोग नैं बाल बिहाल न षरीत लपै सकरी
सी ॥ बान न ब्रास के ना पनि नैं सषि को उत न जा
इ के हो निपरी सी ॥ कै रहे जे टकी बाल नि मैं ज
हां माह की रातिनु सार भरी सी ॥ ना हि उसीर
के धां म मैं बाम सु जाइ की रातिन रही सुवरी सी
३८ ॥ दोहा ॥ सीरि जतननु ससि रारितु सहि रा हिनि
नन तापु ॥ बसिबे कों ग्रीषम दिननु परयो परो
सिनु पापु ॥ ३९ ॥ टीका ॥ यह नाइका प्रोषितपति
का [illegible] सषी को बचन नाइक सों विरह
सषी कौ बचन सषी हू सों संभवे ॥ ३८ ॥ कबित्त
का कनि हारी वियोगिनि की गति देषत मेरो हि
यो अकुलायो ॥ हो सुकुमार सरीर सुतो अब
ऐसो वियोग कृसानु तनायो ॥ सीत मैं सीर उपा
इनु सो घिस ज्यों तननापु मनो वह रायो ॥ ग्रीषम
घौसनि कैं ब्रां बसिये पास परोसिनु को अब पाप
सो आयो ॥ ३९ ॥ दोहा ॥ गननी गनिवे ते रहे छत
हे अछत समान ॥ अब अलि ये तिथि ओं म नों
परे रहे न न ग्रान ॥ ४० ॥ टीका ॥ यह नाइका प्रोषि
तिपतिका नाइका कौ बचन सषी सों ॥ ४० ॥ कबि
दे षिरी कैसी करी मनभांवन ऐसी धौं वाहि के
हा वनि आई ॥ औधि हू बीति गई न लई सुधि
एती घरी उर मैं निठुराई ॥ ता गनिती गनिवे तें
रहे न भये सेमये बितु बासु षदाई ॥ येतिथि औं

वि० स०
१०२

मलौं छैल के सामलैं प्रान परे नन रहो माई ॥
४०॥दोहा॥ आउदै आलै वसन जाडे हू की राति
॥ साहंस करौ कै सुनेह वस सषी सवै ढिंग जाति
४१॥टी०॥ यह विरह निवेदनु प्रोषितपतिका ना
इका कौ वचन नाइका सौं सषी सषी हू सौं करै ॥
४१॥कवित्त॥ लाल वन माली विछुरे ने ब्रजबा
ल भई निपट विहाल विथा उर सरसाति है ॥
आनन सताई वाके नन कीत ना ई दैपै ब्रष के न
रनि हू की किरनि सिराति है ॥ करनि उपाइ हा
रहा इकैहि वार वार मोडि करति निपट अकु
लाति है ॥ आउदै वसन आलै जाडे हू की राति मा
ह साहस कै नेह नौ तें सषी ढिंग जाति है ॥४१॥
दोहा॥ सुनत पथिक मुह माह निसि लुवैं च
लति उहि गाम ॥ विनु हूछै विनु ही कहैं जिय
ति विचारी वाम ॥४२॥टी०॥ यह नाइका प्रोषितप
तिका विदेस में पथिक के मुष की बात सुनि ना
इक नैं अटक रनैया की दसा जांनि सषी कौं वच
न सषी सौं ॥४२॥कवित्त॥ सीत समैं हू की राति मैं तु
वैं चलें उहि देस कृतासन सौं नी ॥ आपुस मैं ब
तरात वटोही अचानक कांन परी यह वांनी ॥
छांडि दये सब काज विदेसी की बुद्धि नहीं घर कौं
अकुलानी ॥ प्रान पियारी की त्याइ गई सुधि जी
व निहैं तिय मैं यह जांनी ॥४२॥दोहा॥ मास सुमा १०२

रुकरीडरीमरीमरीहिनमारि ॥ सीचिंगुलावघरीघरी
वारीवरीहिनवारि ॥ ४३ ॥ टीका ॥ यहनायकाप्रोषित
पतिकाउद्वेगदसानाइकाकोवचनसषीसौंअंतरंग
सषीसषीहूसौंकहैतौवनै ॥ ४३ ॥ कवित ॥ बालन
वियोगतेंविकलअतिप्रानकेछूसरुतुनआन
वनैहुषरीकोदाउरी ॥ औरउपचारकरिमारिमा
रिनमरीकोजोरिद्वहैतौलरूमप्रानप्यारेकौं
मिलाउरी ॥ घरीघरीसीचिगतिगुलावकेसलि
लसौंतकियौकहाचाहतिहैमोहधौंवताउरी
भरतिघरीयेमारीमारकोडरीयेविरहागिनिव
रीयेअववारिजिवाउरी ॥ ४३ ॥ दोहा ॥ पलनुप्रग
टिवरुनीनुवढिनदिकपोलढरात ॥ अंसुवा
परिछतियांछिनकुछनिछनाइछपिजात ॥
४४ ॥ टीका ॥ यहनाइकामध्याप्रोषितपतिकास
षीकौंबचनसषीसौंनाइकहूंसौंनिवेदनुकरै
तौसंभवै ॥ ४४ ॥ कवित ॥ वालनंदलालकेवियो
गतेंविकलयातेंपलपलविधिकेउसासरविहा
तहै ॥ विरहततताईकीवढनिवरुनीनिजातिराति
मौनतवैवाकेकुसुमसेगातहै ॥ पलनुतेंप्रग
टिवढतवरुनीनिहूंतेंपरतकपोलयेतुरतढरि
जातहै ॥ सलिलकीबूंदतातीछिनछतियेपरतिछै

सेछाती परि अंसुवा छनकि छ्पि जात हैं ॥ ४४ ॥ दोह
फिरि सुधि सुधि आइ ज्यौं तुहि निरदई निरास ॥ नई न
ई व ऊरे भई दई उसासनि उसास ॥ ४५ ॥ टीका ॥ यह
नाइका प्रोषितपतिका याकी अवस्था सखी सखी
सों कहै है ॥ ४५ ॥ कवित ॥ आली वियोग वनमाली
कौं व्याकुल बाल षरी अकुलाइ ॥ पाहन की पुतरी ह्वै
परी उपचार विचार कछू न बसाइ ॥ ऐसे मैं वा हि
दई सुधि दै सुधि आइ पियो तु घरा सिज गाइ ॥ वा नि
रदै सौंक दा कहियै जिन प्रेम मरूर की पीर न पाइ ॥
४५ ॥ दोहा ॥ विरह जरी लषि जीगनन कह्यो न उ
हिं के वार ॥ अरे आउ भजि भीतरी वरसत आजु
अगार ॥ ४६ ॥ टीका ॥ यह नाइका प्रोषितपतिका
उदवेग अवस्था सषी कौं वचन सषी सों ॥ ४६ ॥ क
वित ॥ विरह विकल मृग लोचनी विवस भई हरि वि
नु तन मन प्रान तरसत है ॥ पल पल वरत न छूत तर
ती क धीर अधिक अनंगा दुष दंद सरसत हैं ॥ नै न
नांनि हारि वार वार यों पुकारि कहै आली ये अ
नो षे जुगनु पात दरसात है ॥ अरे भजि आव वे गि
भीतर भवन देषि अंवर तें आजु तो अंगार वर
सत है ॥ ४६ ॥ दोहा ॥ इत आवति चलि जात उत
चली छसातक हाथ ॥ चढी हिंडोरे सेर हैं ल

गीउसासनुसाथ॥४७॥टीका॥यहनायकाप्रोषि
तपतिकाव्याधिअवस्थासखीकोवचनसखी।
सों॥४७॥कवित्त॥मोहनलालतिहारेवियोगर
हीहजनागरिचित्रकढीसी॥होतिछिनेछिनअ
हीरगअनंगकीवेदनिअंगगवढीसी॥वातन
आईइतीउवरायसखीलखिसोचसमूहमढीसी
आवतिजातिछसीतकहाथउसासकेसाथ।
हिंगुरेंचढीसी॥४७॥दोहा॥नेंकनुफुसीविरह
झरनेंहलताकुम्हिलाति॥नितनितहोतिह
रीहरीषरीफालरतिजाति॥४८॥टीका॥यहना
इकाप्रोषितपतिकानाइकानाइककोवचन
४८॥कवित॥नंदद्दुलारेन्यारेभयेजबहीतेंतब
हीतेंवहतातीकैकैंछातीअकुलातिहै॥सुधि
आयेंघरीघरीसूलसेसलतउरप्रानपरेंपरबस
कछुनबसातिहै॥तारूनविरहझरजदपिसने
हलताफुरसीतदपिनेकहूंनकुम्हिलातिहै॥
दिनदिनछिनछिनउमगिअधिकहोतिहरी
हरीषरीफालरतिजातिहै॥४८॥दोहा॥या
केउरऔरकछूलगीविरहकीलाइ॥पजरै
नीरगुलाबकेंपीकीवातवुझाइ॥४९॥टीका॥
यहनाइकाप्रोषितपतिकाकीअवस्थासखी

सखीसोकहतिहै॥४९॥कवित॥ऐसीहमासों
पियहौंअकुलातिकितौतउपचारविचारिप्रकीरी
आनिमिलोलेनप्रोलेविलोचनहूवरीहोतिलिहैं
छिनपीरी॥याकेहियेंकछूऔरेअनौषीबियाग
हुतासनज्वालगिरी॥नीरगुलावकेहूनीवरे
पियप्यारकीवातहिंहोतिहैसीरी॥४९॥दोहा॥
होंमतिसुषकरिकामनातुमहिंमिलनकीवा
ज्वालमुखीसीजरतिलषि॥लगनिअगनिकी॥
ज्वाल॥५०॥टीका॥यहनाइकाकेलगनिकीज्वा
लकीअधिकाईकहतिहै॥५०॥कवित॥कमप्रा
नप्यारेलालजबहीतेंभयेन्यारेतबहीतेंकम
प्यारपलकनधरतिहै॥ससकिससकिआतिदी
रघउसाससलेतितलफितलफिसुधिबुधिबिस
रतिहै॥बिरहहुतासमनकीनिरधिप्रबलज्वाला
निहचैहियमेंज्वालामुखीकोधरतिहै॥ललि
वेकीकामनाहियेमेंकरिहूंइमुखीअवसबसुष
सुषनकोहोमसोकरतिहै॥५०॥दोहा॥नितसं
सोहंसोवचनतुमनेंासुइहिअनुमानु॥विरह
अगिनिलपटनिसकैजपटिनमीचमिचानु
५१॥टीका॥यहनायुकाप्रोषितपतिकासखि
खीकोवचनसखीसोंजोनाइकसोंकहैतोवि

रहनिवेदनुहोई ॥ पर ॥ कवित विछुरैंतिहारैमनमो
हनपियारेवालनिपटकछियीनकरीमदनसताइकै
सबदीकेरदतुहियेमैंयहीसंसौवहहरमौं थेबला
गिकैंसरह्येगहराइकैं ॥ जानियतुयहीतनमान
ताकेवचिवेकोआनिपाविदासौआनगनैलितउपा
इकै ॥ ॥ विषमलपटलषिविरहऊतासनकीरूप
टनिसकलुसिचांनुमीचआइकैं ॥ पर ॥ सोरठा विर
हजुकाईदेह ॥ नेहकियोअतिउहहदो ॥ जेसेंवर
सेंमहजरेजवासोजोजमैं ॥ पर ॥ टीका यहनाइका
प्रोषितपतिकाविरहकीअरुसनेहकीअधिका
ईसषीसोंकहतिहैअरुनाइकहूसषीसोंअप
नीअवस्थाकहैतोसंभवै ॥ पर ॥ कवि· देषोवियो
गनेंनेहसुषाइकरीउवरीषस्योमांसुनमांसो ॥ ने
हलताजलनहाइहरीकरैहेरिसषीनुहूंकेपस्यो ॥
सांतो ॥ आवतिहैजियमैंउपमाकविरूपमकहै
यहदेषितमांसौ ॥ ज्योंवरसैंघनपावंसकैंसव
हूषजमैंजरेआकजवासो ॥ पर ॥ दोहा ॥ विरह
विथादिनपरतहीतजेसुषनुसवअंग ॥ रहिअ
वलोंधोषोभयोचलोचलोजियसंग ॥ प३ ॥ टी
का ॥ यहनाइकाप्रोषितपतिकानाइकाकोव
चनसषीसोंसषीकोवचननाइकसोंअरुसषी

वि·स· सषीसोंकहैतोसमवै ॥ ५३ ॥ कवित्त ॥ जौलोंप्रा
१०५ ननाथकेसमीपरहैतौलौंअंगअंगमरसानेमु
षतेमेमित्रमातिकै ॥ न्यारेहोतिप्यारेकेवियोगवि
थावाढततहीनातो[illegible]करिहैंतोवेअंगसुगयेभागि
कें ॥ इसकीनिकाईकछूवरनीनजातिमांईरातो
इसहोनकरै ॥ ह्यांप्रेमयागिकैं ॥ येनभयोही
नोरी[illegible]लोमा[illegible]रीनोंअवचलिवोविचारयोसं
ग[illegible] ॥ दोहरा ॥ छतौनहकाम
[illegible]कूं ॥ विरहतव्योउपस्यो
८ [illegible]
[illegible]
[illegible]
समीपर[illegible]अपना[illegible]मायो
[illegible]जमहूनजीयकोजदपि
[illegible] ॥ नेकहूतोईकुतोदियका
[illegible]ई ॥ सेंरहकेसो
लिपाव[illegible]विरहा[illegible]
५४ [illegible]नेकुचाहतवियोगकीवि[illegible]
चननीर[illegible]मोरहियारहैतव्योउसासस
मीर ॥ ५५ ॥ [illegible] ॥ इहअवस्थाविरहकीनाइकु
अथवानाईकाअपनीअवस्थासषीसोंकहै २५

५५ ॥ कवित्त ॥ सबही तें कठिन सनेह की लागय
हकिनि सुषपायो मनु प्रेम मपषुदा धिकें ॥ जाके
तन लागे सोई जानतु है मद [illegible] विषिकों
तुम कतु सम्हारिकें ॥ कहे हैं कैविहरु [illegible] यह [illegible]
दमुतमतिय जस्योवियो ॥ [illegible] व ह्राइगवारि
कें ॥ तऊ देषो आगें जांम अग्नै ईरहतु हियो
दारघु उसासनु की प्रबल बियारिकें ॥ ५५ ॥ सो
रा ॥ मेल विनारी ज्ञानके [illegible]
वृहई रोगुनि [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
मवे ॥ ५६ ॥ [illegible] ॥ [illegible]
रुवषाउ पवारनु तैतनु [illegible]
कत्योनिर धारंल है यह [illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ [illegible] २९
[illegible] हा ॥ ५७ ॥ [illegible] तयाग्र
वृत्यतिविरहाकी रैंह्योप मरम मीजि ॥ नैंन
नु के मगजलु व है हियो पसीजि पसीजि ॥ ५७
[illegible] ॥ यह नाइका की [illegible] वानाइक को

बि॰स॰ १०६

बिरहकीअवस्थासषीसषीसोंकहतिहै॥
५७॥कवित्त॥नादिनतेंब्रजनागरिकोमननंद
किसोरकेनेहनह्योहै॥नादिनतेंनहिंरनिद
रैंअसुवातिनकोयहमेडुलह्योहै॥औचंत
ज्योविरहानलकीतिद्‌केस[illegible]तिमीजि
रह्योहै॥तातेपसीजिपसीजिह्यियोबियूतेंन
नुकैमगनीरुवह्योहै॥५७॥दो॰कोंनसुनैंका
सोंकहौंसुरतिबिसारीनाह॥वदावदीज्योलै
तहैंयेवदरावदराह॥५८॥टीका॥यहनाइका
प्रोषितपतिकाविरहकीदसअवस्थाभेदमैं
चितनाइकाकोवचनसषीसों॥५८॥कवित्त॥
कासोंकहौंकोनुयहजानैंउरअंतरकीसुरति
बिसारीसुषकारीहरिनाहरी॥कुसमप्रानप्यारे
वीडुहाईनसुहाइकछुवरसतुनेंननुंवैसलि
लप्रवाहरी॥अंगदेहतुविकलअनगतनता
वतुहैवेदनिदहतिचितचाहरी॥रातेपरबरें
ज्योनमानेंक्योंहूंप्रांनलेतवदावदीवदरानि
पटवदराहरी॥५८॥मुसतदोहा॥स्यामसु
रतिकरिराधिकातनकतिगतरनिज्ञातीरु॥अ
सुवनिकरतितरौसकोंषिनकुघरौहैंनीरु
धरै॥टीका॥यहनाइकाप्रोषितपतिकादस १०६

अवस्थाभेदमेंस्मृतिसषीकोवचनसषीसों॥ ५९
॥ कवित्त॥ श्रीमनभावनकेबिछुरेंवृषभानसुता
अतिहीअकुलानी॥ भोजनुकोनसषीनसुहाअसु
हायवेंरैनिसिवासरवानी॥ सूरसुतादिनिहारि
रहीजनहारसिकैछबिहरिकीपहिचानी॥ आसुनि
केपरिवाहकस्योपिनयेकपरोहोंतरोसकौंपा
नी॥ ५९॥ दोहा॥ सोवतजागतसुपनवसरस
रिसबैनकुचैन॥ सुरतिस्यामघनकीसुरति
बिसरैंहूबिसरैन॥ ६०॥ टीका॥ यहनाइकाअ
नेंचितकीप्रीतिसषीसोंकहतिहैदसअवस्था
नुकेभेदमेंस्मृतिजानिये॥ ६०॥ कवित्त कछू
नसुहातनिसिद्योसविहातनक्योंहूंकहाक
हौंबातपरवसपरेमनकी॥ सोवतहूंजागतहूं
सपनैंहूचितवदीरदैचितवदीवानिप्रीतिपन
६९ की॥ रसहूमेंवादमेंबिसरहूमैंबैनहूंअबैनहू
मेंकौनहूमेंवागरहूमेंवनकी॥ भूलनिसुरतिनि
जतनहूकीतऊवदभूलतिनकेसेहूंसुरतिस्या
मघनकी॥ ६०॥ उदवेगदोहा॥ भोयहअसोइ
समोंजहांसुषदुषदेत॥ चेतवोदवीचां
दिनीदारतिकैंअचेत॥ ६१॥ टी॥ यहनाइका
प्रोषितपतिकादसअवस्थानुमेंउद्वेगना

वि॰ स॰ २०७

नाइकाकोवचनसषीसों ॥ ९२ ॥ कवि॰ ॥ ब्यालभई
अवमालतीमालसमीरतेंपीरहियेंसरसाई ॥ पा
वकंपुंजअंबपकुचंदनचंदकुचंदलषोनसु
हाई ॥ चेतुहरेंचितचेतकीचांदिनीवधतुवान
नुकामकसाई ॥ ध्यानबन्योंअवअैसोसमोदु
षदेतसवैजुरूतेसुषदाई ॥ ९२ ॥ दोहा ॥ होंही
बोरीबिरहबसकेबोरोसबगाउ ॥ कहाजांनि
येकहतहेंससिहिसीतकरनांउ ॥ ९२ ॥ टीका ॥
यहनाइकाप्रोषितपतिकानाइकाकोवच
नसषीसों ॥ ९२ ॥ कवित्त ॥ कुंभजहूंअवयोसु
पवयोनयाहीतेंउगलिजउचोतमहूउरपिवि
षकंदसों ॥ दोषीअवलनिकोकलंकीहैबढायो
सीसईसकदांजांनिहितुकीनोंमंतिमंदसों ॥
कैधोंसवहीकीमतिहीनभईमेरीआलीकेधों
होंहीबोरीभईबिरहकेदंदसों ॥ देषियतुपाव
कतैविषबिसषवेषसीतकरकाहेतेकहतअै
सेचंदसों ॥ ९२ ॥ दोहा ॥ औरभांतिभयेवराबौ
सरचंदनुचंदु ॥ पतिबिनुअतिपारतुविपतिभा
रतुमारुतमंदु ॥ ९३ ॥ टीका ॥ यहनाइकाप्रोषि
तपतिकादसअवस्थामेंउद्वेग ॥ ९३ ॥ कवि २०७
त ॥ वेमोहितुकरिअवअैसीबिसराईनिठुरा

ई बाक क्षोई कीन कहति बनति है ॥ जेई हैं सुष
द तेई भये दुषदाई अब कहा करौं माई अकुला
ई अति मति है ॥ चंदन सरोज चंद चोस रूसिवा
रु चारु चंपक हू चंद्रिका की ओर भई गति है ॥ म
यो निरदई मंद मारुत हूं मार तुहै प्रानपति बिनु
अकुलाई अति मति है ॥ ६३ ॥ दोहा ॥ इति आव
त बलि जात उत बली छसात कदाष ॥ चढी हिं
डोरे सेर हैं लगी उसास तुसाष ॥ ६४ ॥ टीका ॥ यह
नाइका प्रोषितपतिका क्रमता को अधिकार
सषी को बचन नाइक सों सषी सषी हू मोंक है
तो हो इद सं अवस्था नुमें व्याधि स्वास संचा
री सुकुमार तान सं भई ॥ ६४ ॥ कवित्त ॥ मोहन ला
ल तिहारे बियोग रही ब्रज नागरि चित्र कढी
सी ॥ होति छिनै छिन और ही रंग अनंग की वढ
नि अंग वढी सी ॥ बातन आई इतौ दुवराई सषी
लषि सोच समूह मढी सी ॥ आवति जात उसा
त कहा घट उसास के साथ हिंडोरे चढी सी ॥ ६६
॥ दोहा ॥ हरि हरि कि रवि रविरि उगति कर किरि
ष की उपाइ ॥ वाको जु रुक लिवेद ज्यों तोर स
जाइ तो जाइ ॥ ६५ ॥ टीका ॥ यह नाइका प्रोषित
पतिका व्याधि अवस्था बिरह निवेदन सषी

कोवचनसषीसों ॥ ६५ ॥ कबित्त ॥ हरिहारिरहतिव
ढतिविथाछिनुछिनुवरिवरितैवाकेनैंनजात
जरियै ॥ करिकरिथकीहैउपाइसवआलीअव
कछूनवसाइउरसोचभारभरियै ॥ लहोवलि
वेदअवरावरसुरसहीवचैतोवचैवालचलिवा
कीपीरहरियै ॥ तौपौतापुटारियैधर्मउरधारि
यनिवारियैगहरुकरुनाकेढारुढरियै ॥ ६५ ॥
जउतादोहा ॥ मराउरीकिटरीविथाकहाघरी
चलिचाहि ॥ रहीकराहिकराहिअतिअवमुष
आहिनआहि ॥ ६६ ॥ टीका ॥ यहनाइकाप्रो
षितपतिकादसअवस्थामेदमैंजडतासषी
कोवचनसषीसों ॥ ६६ ॥ कबित्त ॥ ऐसीकोछा
डिविदेसगयोहरिजोकवहूविछूरीनघरीहै
हाययहेरटलाइरहीगतियाकीलषेमतिम
रीहरीहै ॥ वालवियोगवजागिमरीवेकौंरहन
व. कौंअवैंहीविसरीहै ॥ पीरटरीकिपरीहैमरीचलि
देषिअरीकहाहूरिषरीहै ॥ ६७ ॥ दोहा ॥ मरुन
भलोवरुविरहतेंयहविचारुचितजोइ ॥ मर
नमिटैरुषुयेककोविरहदुऊंदुषहोइ ॥ ६८ ॥
॥ टीका ॥ यहनाइकाप्रोषितपतिकानाइका
कोवचनसषीसों अरुनाइकहूकोवचनसा 

षीसौंसंभवै ॥ ६६ ॥ कवित्त ॥ नैंकहीकेबिछुरेंसब
हीसुषसाजभयेदुषदायकमारे ॥ नैंननुनीकफरी
बरसैतरसैछतियाबिनुप्रानपियारे ॥ आलीबि
योगबिथाबरिवैंतंभलोमरिवोमतमान्योंहमारे
ताककोदुष्षमरेंमिटिजातुबियोगजुजियमेंतुदो
तुहैंदोउदुषारे ॥ ६७ ॥ बिरहनिवेदनदोहा ॥ क
रकैंमीडकुसमलौंगईबिरहकुंम्हिलाइ ॥ सदास
मीपनिसिषनहुनीवपिछानीजाइ ॥ ६८ ॥ ॥
यहनाइकाप्रोषितपतिकासषीकोवचनसषी
सोंसषीसषीहूसौंकहै ॥ प्यारेनंदनंदनतिहा
रेबिछुरेंमोपैकहतबनैंनजैसीभईवाकीगतिहै
आलीजेरहतिनिसिवासरसमीपतिहूपैपहि
चांनीवहनीविरहीपरतिहै ॥ वासदेछिपासजे
वोछ्रुअोपासवानिनुहूएतेमानमदनऊतास
नवरतिहै ॥ कामलकुसुममानोंमीडअोकस्वर
करिअैसैकुंमिलाइमुरझाइगईअतिहै ॥ ६९
॥ दोहा ॥ नैंकनजांनीपरतियोंपर्योबिरह
तनुछामु ॥ उठतिदियेंलौंनादिहरिलियेंति
हारोनामु ॥ ७० ॥ टीका ॥ यहनाइकाप्रोषितप
तिकाबिरहनिवेदनुसषीकोवचननाइकसों
ह ७१ ॥ कवित्त ॥ लालतिहारेबियोगतेंवाके

वि॰स॰ १०९

विहातिघरीविधिवासरकीसी॥छामभयोअ
तिहीतनुवामकोंकामदहेसुधिबुधिरहरीसी
मेजमैंनेकहूजानिपरेनहिदेषियेकंचनरष
लिषीसी॥रावरोनामसुनेइकवारहीनाहिंजैवे
ठुतिदीपकहीसी॥६९॥दोहा॥जोवोकेतनकी
दमाहेछ्याचाहतआयु॥तोवलिनैंकविलोकि
येचलिअवकोउपचायु॥७०॥टीका॥यहनाइका
प्रोषितपतिकाव्याधिअवस्थासषीकोवचन
नाइकसोंनाइकलेचलिवेप्रयोजन॥७०॥कवि
त॥पाहनकीपुतरीज्योंपरीवरसेंअमुवासरसे
तनतावे॥ज्योंज्योंकरउपचारवैरत्योंपसोह
मलोगनुकोंअतिपावे॥वाकीदसाअवऐसी
भईहरिजोअवलोकोईचाहतआवे॥तोवह
मोचलहेनवलाइल्योयोंअवकोचलियेउपु
चावे॥७१॥दोहा॥तजतुअगौंननदवपोसम
वमतिष्योगेजाम॥भयोवामवावामकोरहत
कामवेकाम॥७२॥टीका॥यहनाइकाप्रोषित
पतिकाविरहनिवेदनुसषीकोवचननाइक
सोंसषीसषीसोंकहेतोसंभवे॥७२॥कवित॥
लालमनभावनतिहारेविछुरेतेंज्वालवि
रहअगानिमैंवरतिनाऊनाथहैं॥वेहीकाम १०९

कामवामदेवकेभरमभूलित्योंवारीवांमसों
विषमवेरूवांधेहैं ॥ सवमतिहवमपिदयातर
परहरिआगेजामराहतमरोसमसरसांधेहैं ॥
कीजेंधोंकहाउपाउछोडउतुनआटपाउतके
हानिवेकोदाउलागोइहीवांधेहै ॥ ७२ ॥ दोहा
वालवेलिसूषीसुषदइहिरूषीसुषघाम ॥ फेरि
उहहरहीकीजियेसुरससींचिघनस्याम ॥ ७२ ॥
टीका ॥ यहअनुरागानिवेदनुसषीकोवचनना
इकसौंपुरुषमानकेअंगमहमेंसमवे ॥ ७२ ॥
कवित ॥ हितुकरिजाकोहरिलीजेचितुलाल
यहकितहै ॥ उचिततातिहिरातोउषुदीजियै ॥ जा
नतहोप्रीतिरीतिकोप्रवीनपनुकीजेनगहेरू
सुषदैकेसुषलीजियै ॥ ताकेरुउसदइहरूषेरू
षघामहोसोंवालवेलिसूकीजातिनिरषतछी
जियै ॥ प्यारेघनस्यांमजगजरनिनिवारतहोमीं
चिकैंसुरसपेरिउहहुहीकीजियै ॥ ७२ ॥ दोहा
लालतिहारेविरहकीअगनिअनपअपार
सरसेवरसेनीरहूकरहूमिटेनझार ॥ ७३ ॥ टी
का ॥ यहनाइकाप्रोषितपतिकासषीकोव
ननाइकसोंविरहनिवेदनु ॥ ७३ ॥ कवित ॥ म
सभ्रांनप्यारेलालविछुरेंतिहारेवालअलिहो

बि० स० बिकलमलिनु बेकौं तरमति है ॥ सीरा होति ताते
११० उपचार मीडै ताती छिन छिन अकुलाति छा
ती पीर निसरति है ॥ वाके तन गाव रे बियोग की
आगनि औसी अद्भुत लगति सो अपार द्रैसी ति २४
है महा झर हूते झरसीरी न परति यजरति ज्यों
ज्यों नीर की भर निवरमति है ॥ ७३ ॥ दोहा ॥ देषा
ति बुरै क पूरलौं उपे जाइ जिनि लाल ॥ छिन छि
न जाति घरीघरी छीन छबीली बाल ॥ ७४ ॥ टीका ॥
यह नाइका अनुराग निवेदन सषी कौ वचन ना
इक सों बिरह निवेदनु है होइ ॥ ७४ ॥ कवित ॥ बि
छुरैं ति हारे लाल बिलषी बिकल बाल परी बि
ललात क्यों हूं धीर न धरातु है ॥ एते मान हूं सम
मई परे पर जंक पर नौ बिनी बिनिरष्यो परतु वा
कौ गातु है ॥ कान्हि ही सु आजु नाहि आजु ही
सु अबना हियाते परि तनु कौ जीउ अकुला
तु है ॥ औसी छिन छिन जिनि बिलाइ जिनि जाइ
बाल ज्यों कपूर वांनी तें कपूर उड़ि जातु है ॥
७४ ॥ दोहा ॥ हंसि उतारि हिये तें दई तुम जु तिहि
दिन लाल ॥ राषति प्रांन कपूर ज्यों वहै चुहु
टनी माल ॥ ७५ ॥ टीका ॥ यह अनुराग निवेदनु है सष
षी को वचन नाइक सौं ॥ ७५ ॥ कवित ॥ दूवरी ११०

अमीमई विछुरें तियसेज ह्वैमेंन्हनषी परेसा
वो ॥ आलीविलोकिकेंमीउतिहाथ्यगयोइक
सांथ्यसवैसुषजोतो॥ वीमविसेजइज्जातेकपूर
लोंधरायतोप्यारीकेप्रांननुकोतो॥ जोवहेलाल
तिहारोदयोघुंघचीकोहराउरमांफन होतो॥७५
॥दोहा॥ कहाकहोंवाकीदसाहरिप्रांननुकेईस
विरहज्वालजरिवोलषेंमरिवोभयोअमीस॥७
६॥टीका॥ यहनाइकाप्रोषितपतिकासषी
कोवचननाइकसों॥७६॥कवित॥ प्यारेमनमें
हनतिहारेविछुरेतेंवृषभानकीकुंवरिभईवरी
कलकानहै॥ जलविनुमीनज्योंविकलतलफ
तिअतिकहेंकविकम्मअमीहोतिआंनवानि
है॥ ज्योंज्योंकरियतुउपचारनुकीभारत्यौंत्यों
परतहूनीपीररहेआंषिनहूप्रांनहैं॥ विरहकी
ज्वालनिसोंजरिवेकेलेषेंवाकोमरिवेकोवच
नअमीसकेसमांनहैं॥७८॥दोहा॥ यहविनस
तनुराषिकेंजगतवडोजसुलेऊं॥ जरीविष
मजुरज्याइयेआइसुदरसनदेऊं॥७९॥दोहा
यहनाइकाप्रोषितपतिकाव्याधिअवस्था
सषीकोवचननाइकसों॥७९॥कवित॥ जरीहै
विषमजुरागिरीहैअचेतव्हघिरीहैचहूंया

व्याधि ह्वै रहनि मैं परि है॥ के तन सैं तन को अंतन व्रषा वार तुहेर तनु उवारिये जतन नहीं करि है॥ ऐसी गति देषैं होतौ मरति परै षैं दुष वढ्यौ अनलिषै वाके ने रैजातडरियै लौ जियै जगतु जसु कीजियै धरम सुष हदी जियै सुंदर सनु वाको ता पुहरियै॥७३॥दो॰
मैं लै दयौ लयौ सुकरु छुवत छन किगयो नीरु॥ लाल तुम्हारो अरगजा उर कैलग्यो अवीरु॥७५॥टीका॥ यह नायका प्रोषितपतिका सषी को वचन सैं नाइक सौं॥७५॥कवित्त
तुम्ह प्रान प्यारे लाल विछुरे तिहारे अव हियौ व्रजवाल को अनंग दुष दाग्यो है॥ के वरी निपट कुं मिलाइ गई फूलि जिमि दुषु अनुकूल मौ सम सुल सुष भोग्यो है॥ तुमु तु पठायौ सो मैं दीनो जाइ वांहि उन लीनो अति हितु करि चितु अनु राग्यो है॥ कर परसत ही छिन किगयो नीरु अरगजा वाके उर मैं अवीर ह्वै कैलग्यो है॥७५॥दोहा॥ प्यौ कीजतु न अनेक करि नेक निछाइ तिगोलु॥ करी परी दुवरी सु लगि तेरी चाह चुरैलु॥७९॥टीका॥ यह नाइका की लगन सिसषी

को वचन नाइक सौं ॥७८॥ कवित ॥ रोमनि सो
मनि भोइ गई हिय मैं धसि प्रांन नु मांझ ष
गी है ॥ हो करिया की उपाइ सबै हरि जंत्रनि
मंत्रनि हून उगी है ॥ देह सुषाइ करी ऊंवरी
ऊरी बावंवरी ज्यो सुधि बुद्धि भगी है ॥ एते पै
वाकी न छाडति गैल चुरैल ह्वै रावरी चाह
लगी है ॥७९॥ दोहा ॥ पिय के आनग ही गही
रही वही ह्वै नारि ॥ आपु आपु ही आरसी
लषि रीझति रिझवारि ॥८०॥ टीका ॥ यह नाइ
का की लगनि तनमयाता सषी को वचन स
षी सौं ॥८०॥ कवित ॥ नेकु लग्यो मन भांवन
सौं उहि तौ अगई यह बानि नई है ॥ ध्यांन
हो ध्यांन मैं आजु कछु वृषभान सुता मई
कान्ह मई है ॥ आरसी मैं लषि आपनी मू
रति आपु ही रीझि निहाल भई है ॥ ऊरन प्रे
म की जोति जगी उर आंन सबै सुधि भूलि
गई है ॥८१॥ पुरुषवियोग ॥ दोहा ॥ औरै पौरै
न करै हियो जरै परै पर जार ॥ लाव तु घो
रि गुलाव सो मिलै मिलै घनसार ॥८२॥ टीका
यह नाइका प्रोषितपतिका नाइका को
वचन सषी सौं ॥८३॥ कवित ॥ काहे कों तं घ

नमारुगुलाबमेघोरिघनै।घसिचंदनला
वै॥काहूकोंमीयूरेनीरभिगाइउसीरपषा
निसमीरुदुलावै॥तोहिकहाजकओसीपरी
पजरीउरअागिघरीपंजरावै॥येउपचार
परैनकरैकलजातेंपरैकिनितांहिमिला
वै॥८१॥पाती॥दोहा॥रंगरातीरातेहियैंपीत
मलिषीबनाइ॥पातीकातीबिरहकीछाती
रहीलगाइ॥८२॥टीका॥यहपातीसषीकोंवचै
नसषीसों॥८२॥कवित॥नवतैंवियोगभयो
लालमनभावनसोंतवहीतेंप्यारीतंल
फलिमुरझाइकैं॥नैनजलबरसतिमिलि
वेकौंतरसतिसरसतमदनमरूरवकुआ
इकै॥अतिअनुरागसोंबनाइलिषीप्रान
पतिऐसेंमेंगअखानकहीदीनीकाहूआ
इकैं॥हितअकुलातीसुतौबिरहकीका
तीजानिरातीपातीरहीतातीछातीसों
लाइकैं॥८३॥दोहा॥कहाभयोजोबीछुरे
तोमनतोमनसाथ॥उडीजाकुकितहूं
डीतऊउडाइकैंहाथ॥८४॥टीका॥यहनाइ
ककीपत्रीनाइकाकों॥८४॥कवित॥जोकर
तारस्वीसुसहीबिधिग्रोरविचारअका ११२

रथहीहे॥ वेदपुरानपुरानेमुनीसवकोतुक
हेयहगाथहीहे॥ अंतरवीचपर्योतोकहा
भयौमोमनुतोमनुसाथहीहे॥ जांकुंगुडी
कितकुंउडिडोरिउडावनहारेकैहाथही
हे॥८३॥ दोहा करलेचूमिचढाइसिरउरल
गाइभुजभेटि॥ लहिपातीपियकीलषति
वांचतिधरतिसमेटि॥८४॥ टीका॥ यहनाइ
काकीपत्रीआईताहिदेषिकनाइकाकी
जुदसआनईसुसषीसषीसौंकहतिहै॥८४
कवित॥ मोहनकैविछुरेमगनैनिचकी
सीफिरैउरमैंअकुलाती॥ प्रीतिकेप्रीतम
आपुलिषीकहूंऐसेमैंआईअचांनक
पाती॥ चूमतिचाइकैनैननुलाइकैसी
सचढाइहियैकुलसाती॥ वांहनिभेटति
चौंपसौंचाहतिवांचिसमेटतिछावति
छाती॥८४॥ संदेस॥ दोहा कागदपरलि
षतनवनतुकहतसंदेसलजात॥ क
हिहैसबुतेरोहियोमेरेहियकीबात॥८५
टीका यहपत्रीनाइककीअपकीनाइका
कीपरकाया॥८५॥ कवित॥ पातीमैलिष
तकैलैबनतिजितीहेचाहसागरकौस

लिलुचुरुमेंकेसेकीजिये॥कहतिसदेसे
उरआवतिहैलाजअति—अधिकअदेसे
अहीछिनछिनदीजिये॥मनुअसेंमांन
सुमिलेनकोऊमधिपातीजासोंसमुझ
दूजीकोंमेदुकहिदीजिये॥यातेप्रीतिरीति
अवदातमेरेहीकीवातआपनेहियेतें
नीकीभांतिजानिलीजीये॥८५॥दो॥तर
फुरसीउपरपरी॥कन्तलजलछिरका
इ॥पियपातीविनुहीलषीवांचीविरह
वुलाइ॥८६॥टीका॥यहनाइकाप्रोषितप
तिकाविरहकीअधिकाईपत्रीलिषिवे
तेंजांनिगई॥८७॥कवित॥प्यारेकोसंदेसु
लषिवेकोवैसाहसुकेलिषतनवन्योंन
मतिविरहमलीनकें॥ऐसीयेलपेटउ
निसोंपीसजनीकेहाथउविजाइसोंहि
प्रानननाहुहाथदीनहे॥तरगतिपीनि
केपरसजरीऔरऊपरतेगरीअंसु
वनिजलभीनीहे॥वोलतहीपातीपिय
ताकीसुरतिकरिछातीमहवरिआई
आंषिभरिलीनीहे॥८६॥दोहा॥विरहवि
कलविनुहीलिषीपातीदईपठाइ॥आंक

विरूनीयोंसुचितसनेवाचतजाइ॥८७॥ ही
यहनाइकाप्रोषितपतिकापत्रीआईया
तेदीतनुकाविरहकीअधिकाई तेएसंग्या
जानिये॥८७॥कवित विरहमदूरतेंनतंनकी
तनकसुधिवालअतिव्याकुलअचेतऐ
सीकैगई॥ लिषिवेकोलईपातीलिषत
नंवनैनकधूवेसियेलपेटिप्रांनपतियेप
ठैदई॥वाकोविकलाईकीकहालोंअधिका
ईकहों एकसीरुऊकीगतिएकैवेरहैमई
चपरीप्रवीनीयहजकुंअकहीनीतऊवां
चिसनेहियकेंलगाइछातीसोंलई॥८७
चलतचलितलोलेचलेसवसुषसंगल
गाइ॥ग्रीषमवासरसरसा लिषिपीयोपा
सवसाइ॥८८॥टीका यहस्वीनाइकाकी
नाइककों॥८८॥कवित रेनिदिनारहतेई
झिलरसरंगऊमंगनभेमनुहारैं॥ऐसोंस
नेंकुवढाइकेंदेपिरीकेसीकरीऊहिका
कूंप्यायारैं॥लैगयोसंगलग...वेसुषद
गयोमोचुनरेनहीटारैं॥इसकोजामिनि
जेठकेंग्रीसवसाइगयोअवपासहमारें
८८॥ऊधोकोवचन॥दोहा गोपिनुअरुव

निमरिसराआमोसअपार॥ उगरउगरने
फिरही वगरवगर कै वार॥८९॥ री यह व्र
जकोविरहनिवेदनुश्रीकृष्णसों सषीकोब
चनसषीसों॥८९॥ कवित॥ श्रीजदुनाथनिहा
रिवियोगकहीनपरैब्रजकीजुदसाहै॥ जो
पिनुके आयोवरसैंसरसैंअसुवानितेंनी
रप्रवाहै॥ गोलगलीसवपूरिकैंभूरिनदी
वढिहोतिअपारअथाहै दैषततधीरजको
नधरैहरिवांहगहेविनुकोअवगाहै॥८९
आगमपतिका॥ दोहा॥ कियोसयांनीस
षिनुसोंनहिसयानयहभालि॥ दुरैदुराईफू
लकीजोपियआगमफूलि॥९०॥ टीका आ
गमोसवनाकासोंसषीकोवचन॥९०॥ क
वित॥ ललितकपोलआजुमदमुलकनला
गे आननपैभईकैआंरैअहनाईरी मे
तोवूझीसुषमानितैंकै रुषाईतानि घूंघ
टमेंढाकिसुपडीठि कैंचतुराईरी॥ नाहिंनसे
यानपनु चसेभ हेसयांनीसजनी
निसोंकजोचतुराईरी॥ फूलकीसुवासुर
लीविकासुपहिलेंहीहोतुफूलहरिआगकी
कैयांदुरैदुराईरी॥९०॥ दोहा॥ आयोमीतविदे 

सतें कान्ह कही पुकारि ॥ सुनि फूलसी
विकसी हसी दोऊ कुंअन निहारि ॥ ९० ॥ ४
यह नाइका उपपति सौं दोऊनु को ने
हु है ताकें आगम दोऊनु कें हर्ष भयौ यां
ही तें परस्पर जानि परी सषी कौ वचन स
षी सौं ॥ ९१ ॥ कवित ॥ कान्हर कें विछुरैं व्रज
बाल दुबी मन ही मन ही मन मैं मुरझानी
ढूं लक हैं वहराइवे कौं मनु वैठि दु फूमि
लिवौ परसांनी ॥ मौंहं नु मीतु विदेश तैं आ
यौ पुकारि कें काहू कहीज ववांनी ॥ सो
सुनि दोऊ दुहू नि विलोकि लसी विल
सी फूल सी मुसिकांनी ॥ ९ ॥ दोहा ॥ मग
नैनी हग की फरकउ रजु छाहरनि फू
ल ॥ विनु ही पिय आगम उमगि पलट
न लगी दुकूल ॥ ९२ ॥ टीका ॥ यह नाइका
आगम स्पतिका सषी कौ वचन स
षी सौं ॥ ९२ ॥ कवित ॥ वाल परी अकुला
नि हियें नंदलाल वियोग [illegible] याउरज
नी ॥ ओस मैं आइ ज्यौं चांनन फू[illegible] फूलसी
छतीया सु धरी अनुरागी ॥ वां म विलो
चन के कर कैं मग लोचनि जाव उछार

निपागी॥ फूलभरी बिन ह्वै पिय आगम
चारु कूल चुनावन लागी॥ २२॥ टीका॥ म
लिन देह एई बसन मलिन बिरह के रूप
पिय आगम औरे रही आनन आप अनू
प॥ २३॥ टीका॥ यह आगम पतिका सखी
को वचन सखी सौं॥ २३॥ कबित॥ लालमन
भावन के बिछुरे मयंक मुखी अति ही बि
कल चित परयो चिंता कूप है॥ अधिक अ
गपी रती रसी छाती हिये चांदिनी लगति
जैसी ग्रीषम की धूप है॥ कीनो न सिंगार
चारु बेनी सिर मलिन देह बसन मलिन
नही बिरह के रूप है॥ कहे कबिंद सपिय
आगम सुन भई औरे आप आनन पै
उमग्यो अनूप है॥ २३॥ टीका॥ रहे बरोठ मैं
मिलत पिय प्रानन के ईसु॥ आवत आव
त कीनई बिधि की घरी घरी सु॥ २४॥ टीका॥
आगमोत्सव नाइका को वचन सखी सो
संचारी को नाम भेओ ल खपजानियै २४
कबित॥ [illegible] बिदेश तें प्रानपती ये सि
या की सुने छतिया सियराई॥ नैन तुला
गि रही दिवसा घ मनोज उमंगि हियें भरि
आई॥ बड़ भाग के है मिलि वि कह का रू सो पा

रिमझोलोंरह्योसुषदाई ॥ आवतआवत
कीसुघरीविधिवासरहूतेंघरीसरसाई
९४ ॥ दोहा ॥ कहिपठईजियभांवतीपियआव
नकीबात ॥ फूलीआगनमेंफिरैंआगनआ
गसमात ॥ ९५ ॥ टीका ॥ आगमोत्स वसषीकी
वचनसषीसोंसंचारीहर्ष ॥ ९५ ॥ कवित ॥ क
लवियोगमलीनमहाविसरीसुधिहा
सविलासरूमूले ॥ एतेमेंऔधिवितीत
भईउरयेकहीसाध्यसवेंदुषऊले ॥ आव
नसोंमनभांवनकोंसुनिकेंउमहेसुष
पुंजसमूले ॥ आंगनमेंफूलसीफिरेंसं
ग्रआंगुनआंगसमानलफूले ॥ ९५ ॥ दो
हा ॥ नाचिअचांनकहीउठेविनेपावसवं
नमोर ॥ जांनतिहोंनिंदातकरीयहदि
सिनंदकिसोर ॥ ९६ ॥ टीका ॥ यहआगमोत्स
वनाइकाकोवचनसषीसषीरूकोवच
ननाइकासोंहोइ ॥ ९६ ॥ कवित ॥ राधायेवि
साषासोंकहतिज्योंकोंरूपमोहिवारुचि
तेंचदऱ्यवरेषतेंदिषायोरी ॥ ॥ तुवही
चितचोरुनंदकेतुधतुआलीहिकान
नहूतेंगाजुआयोरी ॥ लहलहीहोंति
वकूकालकीसुषानिवेलिफूलतुसमन

ऐसो वनु छवि छायो री ॥ विनउ नऐहू घन
भये हरषित मन नाचि नाचिं मोर नु कुला
हलु मचायो री ॥ ९६ ॥ दोहा ॥ वाम बाऊ फरकत व
मिलै जो हरि जीवनि मूरि ॥ तौ तो ही सो भेटि
हौं राखि दाहिनी हूरि ॥ ९७ ॥ टीका ॥ यह आगमे
सब भुज फरकत ही नाइका को वचन वा
म भुज प्रति ॥ ९७ ॥ कवित ॥ कौ रू विसासी वि
दे सराखो वसि मैं नद ही वकु भांति हिये हो
वाम भुजा फरकी तौ भूलें अब हो कु यहै
नि हर्वे पन के हौं ॥ कैसें उ वामन भांवत्रा
कौं अब जो भरि आंषि न देषिन पैहौ ॥ रा
षिहौ हू पिया दाहिनी वांह कौ तौ ही सों ग
है अलि[illegible]न दे हौं ॥ ९७ ॥ दोहा ॥ विछुरे जिये स
को च इहिं बोलत वैने न वैन ॥ दोऊ दौरि
लगें हियें किये निचौहैं नैन ॥ ९८ ॥ टीका ॥ यह प
रदेश ते आगम दोऊन के हित को अधि
कु सषी को वचन सषी सौं ॥ ९८ ॥ कवित ॥ द
पति आपु में कहत पसु आंट भयें पलु सा
न रहै ना ॥ आयो विदेस विते वकु वासर
नंदलला अति छेम को ऐना ॥ ये तो विछे
ह भयें हू जिये इहि लाजतें बोलत वैन व
नैना ॥ दोऊ लगे लपटाय हियें पै निचौहैं कि

येसकुचौंहेसेनैना ॥ ९५ ॥ दोहा ॥ जदपितेजरो हालवलपलंकोंलगीनवार ॥ तऊग्वैडी छरकोभयोपैंडकोसहजार ॥ ९९ ॥ टी ॥ यह परदेसतेंआगमु आगतपतिकानाइकी नाइकाऔत्सुकसंचारी ॥ ९८ ॥ कवित ॥ कौंनु हूंकांजकौंप्रानपियापरदेसमेंरहेते वितयोहे ॥ राधिकाकौंसुधिकेंकविहूम्य तिहीछिनभौनकौंगौनुठयोहै ॥ जदपिते जतुरीनियरोघरुतदपिकोसहजारमयोहै गवैरकौंपेडोनकाटयोक्रहेंअभिलाषसमू हहियेकौनयोहे ॥ ९९ ॥ अपक्षकनिष्टा ॥ दोहा ॥ मसहीमिसआतपदुसहदईऔरवहरा इ ॥ चलतिललनमनभांवतिहितनकी छांहछिपाइ ॥ ५०० ॥ टीका ॥ परकीयाकनि ष्टनाइकाकेभेदमेंसवैसषीकोवचनुस षीसों ॥ ५०१ ॥ कवित ॥ कान्हसुजानकेमा पैकछूरसरीतिकैमेदकहिनहिजाहीं आतपुकोमिसुकैवहराइदईसंगऔ रनितीवनिताहीं ॥ छैलगहीलहगोलमंगु जमुनातटकेलनिकुंजजहांहीं ॥ राधि कापारीकीलैचलीसंगकियेअपनेंतनुकी कीपरछांहीं ॥ ५०२ ॥ दोहा ॥ छरकेनाहनचोर

वि·स·
९७

छाकरिपिचकीजलजोर॥रोचनरंगला
लीभई वियतियलोचनकोर॥प·१॥टीका॥प
हलेपिछाकनिछाकोभेउ अन्यसंभोगदुख
ताकूंहोइ सषीकोवचनसषीसौंलछिता
हूहोइ॥प·१॥कवित॥नंदललालललनाग
नमैंजलकेलिरचीसरीतरलाई॥कुमक
लेउछरैवकुंभांतिहुरैमरिम्रंककरीतर
लाई॥ लोचनभांवतीकेछिरकेकरकीपि
चकीजलधारखलाई॥सोतिकेलोचनको
रनुमांफलहीभईरोचनरंगललाई॥प·१
दानलीला॥दोहा॥लाजगहीवेकाजकत
घेररहेघरजाहि॥गोरसचाहतफिरत
होगोरसचाहतनाहि॥प·२॥टीका॥यहदा
नलीलानायकाकोवचननाइकसौं॥प·२
कवित॥लाजकोंनगहोविनुकाजमगघे
रिरहेकाहेइतराइबोलहतअैनेसेहोगो
रसुनचाहतहोगोरसकोचाहतहोमैंली
भांतिजानतिहोकाहेंतुमऐसेहो॥लष
प्रानप्यारेव्रजविदितितिहारेगुनमाषन
केचोरिवेकोंघरघरपेसेहो॥अवइविं
अैसेचलनचलावतहोसोहेलपिहि
मतलसतमनुलेसेहो॥प·२॥गोविनें ९७

न॥ दोहा ॥ पकुलाहार हियेलसैं सुनकी वे
नीभाल ॥ राषतिषेलषरीषरीषरेउरोजन
वाल ॥ प॰ ३ ॥ टीका ॥ यह जोतिवर्नेनु नाइकाकी
वचन ॥ प॰ ३ ॥ कवित ॥ पातरोलांकुकमेरष
रेकुच गोरी अंगमेढिलुनाईभरीहै ॥ मेचूक
पोलिगैरे वडेदृगश्रो हुनुपै ग्रहनाईध
रीहै ॥ हारहियैंपकुलाकोलसेविंदुलीस
नकीपषुरीकीकरीहै ॥ राषतषेतषरीव्र
ज नागरि जोवन जोतिषरी निषरीहै ॥ प॰ २
॥ दोहा ॥ टटकीधोईधोवती चटकीलीमुष
जोति ॥ लसतिरसोईकेवगर जगरमगर
होति ॥ प॰ ४ ॥ टीका ॥ यह जोतिवर्नेनसषी
नाइकाके रूपकी निकाई नाइकसोंनि
वेदनुकरतिहै ॥ प॰ ४ ॥ कवित ॥ वेठीआप
रसब्रजनागरिसरसवेषदेषिमनमोह
नकीसुधिबुधिडगरी ॥ ह्लप्रानप्यारेकै
इहोईरी सुहाईवैसतेसीदईविधिनेसर
केलिसोभामगरी ॥ दमकैवदनजोतिवि
दसवरनश्रोतीपहिरेलसतिसोतीरूप
गुनअगरी ॥ कैरह्योप्रकासुश्रतिजगर
मगरतिहिं वगररसोईकेअपारअोप

गरी॥५०४॥दोहा॥जदपि नांही नाही नहीव
ह्रन लगी जसु जाति॥ तदपि भौंह हांसी भ
री हांसी ये ठहराति॥५०५॥टीका॥यह जाति
वर्नन है॥५०५॥कवित॥बैठी सिंगार सजैं ब्रज
नागरि अचांनक मोहन आयो तहांही पं
नि गह्यो अवलोकि अकेली अलोकिक
केलि कला चित चाही॥ जदपि वा नवना
गरि के मुष लागी यहै जकमान न नांही
तदपि हांसी भरी भ्रकुटीनि मैं बीस विसे ठ
हराति है हांही॥५०५॥दोहा॥ड गाघर को
है अध षुले देह थकी है ठार॥ सुरति सुषि
त सी देषि षति डषित गरभ के भार॥५०८॥
टीका॥यह नाइका जाति वर्नन गर्भवतीना
इका की सोभा सषी नाइक सों कहे सषी
सषी सों कहे नाइक सषी सों कहे॥५०६॥क
वित॥बोलति बैन न्है रै ई हरैं रूमई छवि
आंनन की पियरी है॥ आधे षुले अलसो
हैं से॥ लोचन देह थकी हैं सै ठार रही है
गर्भ को भार धरै सुकुमारि जउ डषि तोन
वनारि धरी है॥ नीकी तऊ अति लागति है
मनो केलि कलोल के रंग भरी है॥५०६॥दो
हा॥जो कर सौं चुटकी चलति ज्यो चुटकी सो ११८

नारि ॥ छवि सों गति सी लीच लति चातुरका
तनिहारि ॥ ५०७ ॥ टी ॥ यह जाति वर्नन नाइ
कौ वचन सषी सो कवि की उक्ति होइ ॥ ५
कवित्त ॥ जैसी करत्तौं ही चले चुटकी उर्थरैं
भुजमूल वढी छवि भारी ॥ चारु कलाई की
मोर निग्रीव की नोर निजी तेटरे नहिटारी
मोहउ चै तिरछै करि लोचन लेति कियौ
गति रूप उज्यारी ॥ पातुर मानौं मनोज मही
प की चातुरका तनिहार निहारी ॥ ५०७ ॥ दो
मुष उघारि ज्यौं लषि रहकर ह्वै नगौ मिस
सैं मु ॥ फरके ओठ उठै पुलक गये उ घरि तु
ति मैन ॥ ५०८ ॥ टीका ॥ यह जाति वर्नन परिहा
स सषा कौ वचन सषी सौं ॥ ५०८ ॥ कवित्त ॥ पां
न पति आवत निरषि मृगलोचनि कै
ल ओट भीनो पोटि रही मिसु करि कैं वा
ट्यौ चौंप चाइ हहरे हरे ढिंग आय मुष नि
र ष्योउ घारि भरि हितु हियें भरि कैं ॥ फूल
श्रीन प्यारे के विलोकत मयंक मुषी सैं न
मैं रह्यौ मनु मिसु गयो टरि कैं ॥ गात पुल
कित भये अधर मुलकि आये लोचन ल
लकि मिले आपु ही उघरि कैं ॥ ५०८ ॥ दो
नहि आकाइ न हि जाइ घर चित चकट्यौ

तकितीर॥ परसि फुरफुरौले फिरति विह
सति धसत्तिन नीर॥ प०९॥ टीका यह जाति
वर्नन नाइका परकीया क्रिया विदग्धा स
षीको वचन सषीसों॥ प०९॥ कवित्त॥ न्हा
वेकों जमुना गई बात ही वनितान की है
अति भारी॥ त्यों ही अवचानक पूछ है कहूं
डीठि परयो नरनागर नीरो॥ चाइ चुभ्यो वि
तु न्हाइस के नु गयो नहि जानुं कपातुसरी
रो॥ अंगुलि नीरु भरै गहि डारति नांक स
कोरि कहै यह सीरो॥ प०९॥ दोहा तुव पष्टा
रि मुह रु निजै सीस सजलकरु छ्वाइ॥ मो
र उचै घू टैनि तैं नारि सरोवर न्हाइ॥१४॥ टी
यह जानि वर्नन कवि कीउक्ति॥१५॥ कवित्त
वैठिकै तीर पषारिकैं आन नहाय निजे ज
लकै सनि छ्वैकैं॥ हलकहै करसौं उमरा
इकं धाय मोसीस को चाहनिजेकें

यो व्रजवाल सरोवर न्हाति महा छवि सों
घुटुवों नितनेकें॥१०॥ दोहा॥ विहसति सकु
चति सी दियें कुच आंचर विच बांह॥ भीजे
पटतट कौं चली न्हाइ सरोवर मांह॥१६॥ टी

यह जाति वरनन कवि की उक्ति सषी नाइ
का की सोभा नाइक कौं दिषाइवे कौ कहे
तो हूं संभवै ॥१०॥ कवित ॥ देवदिवाकर कें
करिवंदनु ह्व लकहे मन हो मनावति ॥ बा
हदिये कुच अंचलवीच लजाय हिये हसि वै
न नवावति ॥ भीजि दुकूल रहे लपटाइ म
हां छवि कंचन से तन छावति यो व्रजनं
गरि रूप उजागरी न्हाइ सरोवर तीर कौं
आवति ॥११॥ दोहा ॥ मुह धोवति एंडी घंस
ति हसति अनगवति तीर ॥ धसति न इंदी
वर नयनि कालिंदी के तीर ॥१२॥ टीका ॥ यह
जाति वर्नन नाइका की चेष्टा सषी सषि सों
कहति है ॥१२॥ कवित ॥ न्हाइवे कों आई
अति रीझि मइराई हियें ह्व लसि प्रान प्यारे
कों सरूप दरसति है ॥ इंदीवर नैनी अन
गवति अनेक भांतिये वह कलिंदी के न
सलिल धसति है ॥ परसि उसारे कर को
रि सोभा निधि नासिका स कोरि मुह मो
रि विहसंति है ॥ वदनु पषारति है वां के
इगटारति है गुलफ घसति अति रंगु
वरसति है ॥१४॥ दोहा ॥ ओट उवें ही सोभ

रीझ्गभोहनुकीचाल॥मोमनकहानसी
लयोपियततमाषूलाल॥१३॥टीका यहज्ञा
तिवरननाइकाकोवचनसषीसों॥१३
कवित॥मेनिरछ्योजबतेतबतेजियकीगति
जानतुकोनुवियोरी॥जोकछ्रूपकीरीझि
बुभीचितजानतिहोहीमेरोहियोरी॥हां
सीभरीलचषमोहनकीछबिओठउचैइ
कभावकियोरी॥पीवतलालतमाषूकेघं
टअोठउनिमो मनपीनलियोरी॥१४॥कवित
अंगुरिनुउचिभरुंभीतिदैउलमिचितैचष
लोल॥रुचिसोंदुरूनुदुरूबुकेचूमेचारुक
पोल॥१४॥टीका यहजातिवर्ननदुरूनकेहि
हितकेपरसाईसषीकोवचनसषीसोंप
रकीया॥१४॥कवित॥आजुमेंब्रजनागरि
नागरकीनोंविलासुमहारससान्यो॥नाह
कीचोपसोंचाहिचहूंधोंवियोजबकोऊ
इतोतनजान्यो॥देभरुअंतरभीतिउवो
उतमेंअंगुरीउचिकोतिगुठान्यो॥चारुक
पोलदुरूनुकेदोऊनुचुंबनुकेअतिहीसु
षमान्यो॥१४॥कवित हासिओठनुबिचकर
उचेकियेनिचोहैनेन॥षरेअरेपियके
पियालगीबिरीमुषदेन॥१५॥टीका यहजा

तिबर्ननना इकाकीसोभासषीसषीसोंकह
तिहे॥ १४ कवित॥ काऊ कही आतिहीहितुकें
तवराधिकाके जियमैंयहआई॥ ग्रीवबंधाइ
कुराइ कपोल कियेतनमैंनकंचुसी कीई
बीरीबनाइलईकरकेंजपवेवेकीमंजुमु
उकसाई॥ योहितुकीसरसाईविलोकिभई
मनमोहनकेमनभाई॥ १५ दोहा॥ नांकमो
रिनाहीककै नारिनिहोरैंलोइ॥ छूवतओ
ठविचआंगुरीनुबिरीवदनप्योदे॥ १६ टी
यहजातिवर्ननसषीकोवचनसषीसों॥ ध
कवित॥ आजुकुकुंकोविलासअलीमैंदुरै
.... कहतेनाहिआवतु॥ नंदलालआ
तिहीहितुकेंव्रषभानकुमारिकौ...
वतु॥ ओठनुसोंविचअंगुलीछैमुसिक्याइ
कैनेनसौंनैनमिलावतु॥ नासिकामोरिमरो
रिकैंमौंहकरैंक्षितिनाहिसुसौंसुषपावतु
१६ दोहा॥ वतरसलालचलालकीमुरलीध
रीलुकाइ॥ सौंहकरैभौंहनुहसैदेनकहैन
टिजाइ॥ १७ टीका॥ यहनाइकापरकियाप्रो
ढाजातिबरननसषीकोवचनसषीसों॥ ६
कवित॥ आजुअलीव्रषभानललीमनमोह

नसोरसषेलंदरीहै ॥ बातनकेचसकेमुर
लीमुरलीहरिकीदवकाइधरीहै ॥ ज्योंज्यों
हेहाकरिमागेललावह त्योंत्यों कछु इठला
तिधरीहै ॥ हैमफहैमुकरेहसिमोंहनुसों
करेरसुभाइभरीहै ॥ १७ ॥ दोहा ॥ गदरानेतन
गोरटीऐपनआडलिलार ॥ हूमोदैइठला
इहगकरतिगवारिसुमारि ॥ १८ ॥ टीका ॥ यहह
जातिवर्नेननाइकाकीसोभानाइकसषी
सोंकहतिहै ॥ १८ ॥ कवित ॥ सोभाकेभरतम
रीरूपकेसेसांचेढरीविनुहीसिंगारुछविक
हीनपरतिहै ॥ ललितलुनाइसनेंगदराने
गातमेंसुरसतरुनाईआनिभरीऔ ति
है ॥ वदुतेसेवदनपेऐपनकीसोहेआडुते
सोयेचिवुकगाडमनकोहरतिहै ॥ सहजसु
भाइइठलाइकैंगवारिगोरीहूमोदैचला
इनैंनघांइलकरतिहै ॥ १९ ॥ दोहा ॥ नांकच
हीसीवाकेरेजितेछवीलाछैले ॥ फिरिफिरि
भलिवहैगहैप्यौककरीलगिल ॥ २० ॥ टीका
यहजातिवर्नेनसषीकोवचनसषीसों ॥ २१ ॥ क
वित ॥ सषिजातचलेदोउनतीरथपंथउराह
नेपाइसुरंगुढेरे ॥ वहप्यारेकारीझिरिझाव

निप्पारी की मों पन को रहि वषानियरे ॥ अति
बालु कछू छैल छबीली तिया जित नीक सको छि
कैं सीवी करैं ॥ कवि दूलह कहे इति चांइ पंजी
तित जानि कैं प्रीतम पाये घरै ॥ २ ॥ दोहा ॥ जा
लरंध्र मृग अंगनु की कछु उजास सो पाइ ॥
डि दियैं जग सों रह्यो डीठि झरोषा लाइ ॥ २० ॥
सहजाति वर्नन सषी को बचन सषी सों ॥ २०
कबित ॥ बालकी देह की दीपति मं
अटा छवि छाइ रही है ॥ जो लद चनु तें
कढि कें बढि कें बढि जोतिनु की समुदाइ रह्यौ
है ॥ लालु भयो अवलोकि लटू ठगा सहरि सी ष
छाइ रह्यो है ॥ पीठि दियें सिगरे जग सों
वह डीठि झरोषा लगाइ रह्यो हि ॥ २१ ॥ जोतिन
नैन चोर मिहचनी ॥ दोहा ॥ दोऊ चोर मिहच
नी षेलनु षेल अघाइ ॥ दुरत हियें लपटा
इ कें छुवत हियें लपटाइ ॥ २१ ॥ टीका यह
जाति वर्नन सषी को बचन सषी सों ॥ २१ ॥ क
वित्त ॥ येइ नहीं पै वनें हित की गति औसी क
हूं अवलो न लही है ॥ दोऊ षरे अति चाइ भ
रे निमिहो सरहे उमहे चित ही है ॥ चोरमिह
चनी षेलहि षेलत कौं न कछू मौं ति अघात

नहीहै॥ ज्यौं कुरैं तौ उरसौं लपटाइ के जो छ
वि तौ लपटै उ रही है॥२१॥दोहा॥ दृग मिहचत
मृगलोचनी भरे उलटि भुज बाथ॥ जानि ग
ई गुननाथ पै हाथ परस ही हाथ॥२२॥टीका॥ य
ह जा तिवरनन सषी को वचन सषी सौं २२
कवित॥ बैठी कुती ब्रषभांन कुमारि अचांन
क आयो तहां गिरधारी॥ प्यारी के लोचन मू
दि लियो नन कही भुज लोटि भल्यो अकवारी
पीतम कै कर के परसैं उमग्यो कर आनंद
बुद्धि विचारी॥ याही तें वाम न भांवन कौं प
हिचांनि हँसी सु विचछन प्यारी॥२२॥दो॥
पीतम दृग मिहचत प्रिया पांनि परस सु
षु पाइ॥ जांनि पिछांनि अजांन लौं नैकु न हो
सि जनाइ॥२३॥टीका॥ यह जा तिवर्नन सषी
कौ वचन सषी सौं॥२३॥कवित॥ षेलत मैं कहुं
पाछिलो घात तें अचांन कहीं चलि आयो वि
हारी॥ मूंदि के पांन पियारी के नैनन रह्यौ चु
पकै रसरीति सचारी॥ जदपि वा मन मोह
न कौ सकु लागत ही उमग्यो सुषु भारी तद
पि जानि कै आपनी गोंहि अजांन भई वृषभा
नदुलारी॥२३॥दोहा॥ दीठि परो सिमिटि दीठि कै 

कहे जुगहै सयानु ॥ सषैसं देसे कहि कह्यौ मु
सिकाहट मे मानु ॥ २४ ॥ टीका यह पर कीया प्रो
ढा सषी कौ वचन सषी सौं २४ ॥ कवित ॥ जाही
परौसिनि के दुपयासौ कुंवौ लिलनारि सजी
व मे ठिगाई ॥ सोई परौसिनि ढीठि ह्वौलै हि
ई ठि... याहि मनावन आई ॥ पीतम के जु
... से कहे सव ही करिके चतुराई ॥ ए ते
पे मानक ह्योमु सिकाइ यहै कहि ...
के रुसाई ॥ २४ ॥ दोहा ॥ चितत र सत मिलत
न वनतु वसि परौस कैं वास ॥ छाती फाटी
जाति पुनि सुनि टटी ओटउसास ॥ २५ ॥ टी ॥ यह
... कीया अनुरागु नाइक कौ अपवाना
... को वचन सषी सौं २५ ॥ कवित ॥ मेन अभि
लेज वतैं त वतैं अति व्याकुल दोऊ रहै हि
तु राती ॥ वासु परौसि पैत्रासुत उ गुरु लोग
नु कौ म ... सिसंचस काती ॥ जो तर मे मिलितै
न वनै स अभिलाषनु की अवली सरसाती ॥
... टी की ओटउसास सुनै न फटि टूंक हजार
कु होति हि छाती ॥ २५ ॥ मद पान ॥ दोहा ॥
... देवो लति हसति प्रौढ विलास अपो
हु ॥ त्यौं त्यौं चलत सु पिय नयन छकये छ

कानवोढ॥२६॥टीका॥यहमदपांनसमयस
षीकोवचनसषीसों॥२६॥कवित॥आजुवा
रुणीकीवारुनीकीमैविलोकीवहसोभाभ
रनैननुमेंअ...नीवसतिहै॥ज्योंज्योंवहढी
ठोदैदैवोलनिसरसवैननागरिनवेली
हेरिहरिकेहंसतिहै॥कहैकविहृदैउर
लागिवेकोंललकतिप्रौढाकेसेसकलप
...विलसतिहै॥त्योंत्योंछकीतियनैन
छकाचैंअसंपीकेनैनपलनुहूंकीगति
भूलीदरसतिहै॥२६॥दोहा॥हंसिहंसिहे
रतिनवलतियमदकेमदउमदाति व
लकिवलकिवोलतवचनललल कि...
...लपटाति॥२७॥टीका॥यहमदपानको
समयसषीकोवचनसषीसों॥२७॥कवित
मोहनकेसंगमधुपानकैनवेलीवालु
करतितमासेकछुसोभासरसातिहै॥ह
सिहसिहेरतिवषेरतिउकूलकचकुकि
कुकिपरतितनकारूजैसकातिहै॥वलकि
वलकिवोलतिमयंकमुषीललकि
ललकिलालउरलपटातिहै॥२७॥दोहा
मिलिचंदनवेंदीरहीगोरोमुहनलषाइ

ज्यौ ज्यौ मद लाली चढै त्यौं त्यौं उघरति जाइ
२६॥टीका॥यह मदनपान समय नाइका की
सोभा नाइकु कहै अथ वा सखी स्यौ कहै॥२७
कवित॥कछु आजु लषी मदपान समै लल
ना की प्रभा जिय तें न टरै॥ कवि देव सकै क
लकै ललकै मनमोहन कौं हसि अंक भरै
इतिचंदन की बिंदुली की रही झलि गोरे लि
लार नजा नि परै॥ अरुनाई चढै मदकी मु
ष ज्यौं ही ज्यौं त्यौं ही त्यौं जोति घरी उघरी॥२८
दोहा॥ निपट लजीली नवल तिय बहकि
वारुनी सेइ॥ त्यौं त्यौं अति मीठी लगै ज्यौं ज्यौं
ढीठौ देइ॥२९॥टीका॥यह मदपान समै स
षी को वचन नाइक सौं॥२९॥कवित॥ल
जभरी अति ही नव नागरि जाकी सु धाइ
सुधाइ कै गाई॥ ताहि छकी छवि देषि वे
कौ पिय प्यारे भु राइ कै वारुनी प्याई ज्यौं
ज्यौं उमगउ है मद की तिय त्यौं त्यौं निसंक है
देति ढिठाई॥ नीकौ ई लागति नीकी महा
वह मानो भरी वकु भांति मिठाई॥२९॥दोहा
वामतमासो करि रही विवस वारुनी सेइ
झुकति हसति हंसि हंसि झुकति झुकि झुकि हं

किहंसिहंसिदेह ॥२५॥ टीका ॥ यह मद पान स
मय नाइका की सोभा सषी नाइक सों कह
ति है सषी सषी हू सों कहे ॥२५॥ कवित ॥ वारु
नी विसेष मन मोहन सुं मानु गनि आजु मै
मलोच नित मासे की लसति है ॥ वारु तरुना
ई मैं निकाई छवि छाई सों त्यों गोरे मुष पर
अरुनाई सरसति है ॥ कवहुं वदन पट घुं
घट कै ढो किलेति कैवहू उघारि देति रंग ब
रसति है ॥ रुकति हंसति हंसि रुकति रुकि
हंसि तिहंसि हसि रुकै रुकि रुकि कैं हसति
है ॥२५॥ दोहा ॥ रूप सुधा आसव छक्यो आस
व पियत वनैन ॥ प्याले ओठ प्रिया वदन
रह्यो लगाये नैन ॥२६॥ टीका ॥ यह मद पां
न समय नाइका की सोभा देषि नाइक छ
कि रह्यो सषी सषी सों कहति है ॥२६॥ कवित
वारुनी को वनि आयो समों कहते न वने
कछु कोतिगु भारो ॥ आवति रंग भरी मृग
नैनि स्यो उतिको भरि मौनउ प्यारो ॥ आस
व रूप सुधा को छकोम धुपी वे को मूलि गु
यो सुधि प्यारो ॥ प्याले सो ओठ प्रिया मुष पै नै
न लगाय रह्यो छवि को मजवारो ॥२७॥ दो

षलित वचनु अधषुलित दृग ललित स्वे
द कन जोति ॥ अरुन वदन छवि मद छकी
षरी छवीली होति ॥ ३२ ॥ टीका ॥ यह मद पा
न समय नाइका की सोभा सषी सों कहति है
३२ ॥ कवित ॥ मैंन कछुउ घेरे से मुदे अरुवेन
नु मैं लि षलाई रसाली ॥ स्वेद के बुंद निसो
रु लके अरुनड ति आंनन पै स्रम की कालि
ते सी थिरू पतु जागरि नागरि सोहति सोमं
स नीगरवीली ॥ चारु जगी तन जोवन जो
ति छके मद होति षरीयें छवीली ॥ ३३ ॥ वस
तु रितु ॥ दोहा ॥ छकि रसाल सौंरभ सनैं मधु
पं माधवी गंध ॥ ठौर ठौर झौरत झंपत भौर
झौर मधु अंध ॥ ३३ ॥ टीका ॥ यह वसंत रितु
समय जो मान वती नाइका सों सषी कहै
तो मनाइवो होइ जो नाइका नाइक सों वै
हे तो सब ये रहत हैं ऐसे नाइक कहू को क
हि वो समवे ॥ ३३ ॥ कवित ॥ फूलनि के रस के
च सकें अब माहि य के सब वेलि जिती व
न ॥ माधुरी के मकरंद गंध सनैं अरविंद प
रागु सों पागि रहे तन ॥ मंजु रसाल के सौर
न सों मिलि मत भये सुर सों न रही मन ठौ

रनिभौरभिभौरभिरूभिरुकेमघुमंड्योघुम
घुमंतकेगन॥३३॥दोहा॥फिरिघरकोंनूत
नपथिकचलेचकितचीतभागिफूले
देषिपलासवनसमुहीसमुझिदवागि॥३४
॥टीका॥यहवसंतसमयहैनाइकाकोवचनना
इकसोंहैइतोप्रवत्स्यतपतिकासषीकोव
चननाइकासोंहोइ॥३४॥कवित॥देषोरितु
राजुकौसमाजुवनबागनिमेंप्रफुल्लितसु
मनरहैहैजोतिजगिकैं॥कुसमपलासके
अंगारजानिचहूंओरचुचेनसोंथिपतब
कोरअनुरागिकैं॥आगेतेंबिलोकिफूलेमं
दरचितऊलेनूतनपथिकभ्रलेभैरमद
वागिकैं॥परीजरुगैलपरदेसकीबिसारी
गैललोटिचलेंघरकोंचकितचितभागिकैं
३४॥दोहा॥वनवाटनुपकवटषरालषिषि
रहिनुमनमेंन॥कुहोकुहोकहिकहिउ
वतकरिकरिरातेंनैन॥३५॥टीका॥यहव
संतसमयसषाकोवचननाइकासोंहोइ
तोमनाइवोनाइककोंवचनसषीसोंहोइ
तोअपनीअवस्था॥३५॥कवित॥मैनमही
पंकोमानिमतोद्रुमडारिचढेचहूंओरनि

दूं कत ॥ दिषत ही विरही जन को करि लोच
न लाल कुहो कुहो कूकत ॥ वीमाविसे वन
वाटनु मैं वट पार वसे पिक मन जित कूकत ॥ प्रा
न पती विनु क्यों वचि वो अव दाउ परे रिपु
क्योंट कं चूकत ॥ २५ ॥ दोहा ॥ दिसि दिसि कु
सुमित दिषियत उपवन विपन समाज ॥ म
नो वियोगनि को कियो सरपंजर रितुरा
ज ॥ २६ ॥ टीका ॥ यह वसंत समय है सषी कि
वचनु नाइका सों होइ नाइक सों हो इतौ प्र
वत्स्यतपतिका होइ ॥ २६ ॥ कवित ॥ आयौ
है मदन छितिपाल को रूक मुपाइ आमि
ल प्रवलु ऐसो अमल चलायौ है ॥ मान
गढ तोरिवे को अधिक प्रचंड देषो सव ही कै
उर अनुराग ठमगायो है ॥ वन उपवनाजि
तितित अवलो कियनु दिसि २ कुसम स
मूह छवि छायो है ॥ वेरु वांधि विषम वि
योगीनु के रोकिवे को मानो रितुराज सर
पंजरु वनायो है ॥ २७ ॥ दोहा ॥ ही और सी कै
गई टरी औध कैं नाम ॥ दूजें करि डारी षरी
वौरी वौरी आम ॥ २७ ॥ टी॰ ॥ यह वसंत सम
य नाइका की अवस्था सषी नाइक सौं क

हतिहै सषी मषी हूं सौं कहै ॥ २७ ॥ कवित ॥ मो
हन सौं विछुरी जब तै तब तै न लही कल एक घ
री है ॥ नैन निनीर हरै निसिबासुर व्याकुल
बाल अचेत परी है ॥ ऐसी दसा पहलें ई हुती
पुनि औरै भई सुनि औधि टरी है ॥ तापर बै
रि रसाल नै देषौ वसंत के मौसर बौरी करी है
२७ ॥ ग्रीषम रितु ॥ दोहा ॥ कहलानैं येकत व
सत अहि मयूर मृग बाघ ॥ जगत तपोवन
सौ कीयौ दीरघ दाघ निदाघ ॥ २८ ॥ टीका ॥ य
ह ग्रीषम समय नाइका कौ वचन नाइक
सौं होइ तौ प्रवत्स्यतपतिका सषी कौ वचन
नाइका सौं नाइक हूं सौं होइ ॥ २८ ॥ कवित
होतौ बर हीन बर हीन हेरैं अहि नुकै अ
हिक रिष्ठ उनुकै रंध्र निगहत हैं ॥ करि करि
रितु के उदर कै नूतन रहरि आइ सो वन स्वपो
वन की रीति निवहति है ॥ हरि नु की छात
तर वैठत हरिन आइ छोडि चित ठाइ नु वि
रोध विसरत है ॥ दिषि रितु ग्रीषम कौं तीक्षन
प्रतापु रहलानै कहलानैं येक तव सत है
२९ ॥ दोहा ॥ वै ठिरहीं अति सघन वन पैठि स
दन तन माह ॥ देषि दुपरी जेठ की छांहौ चा १२६

हति छांह ॥ ३६ ॥ टी ॥ यह ग्रीषम रितु नाइका को वचन नाइक सौं स्वयंदूतत्व ऐसेंही नाइक को वचन नाइका सौं जो नाइका की सषी नाइक सौं कहै सो प्रदेश को निवारनु होइ ॥ ३६ ॥
कवित ॥ सलिल सुषात जलचर अकुलात तपत जीव जंत सकल उछ्रव रवि रिकें ॥ कहै कवि हलास लागी निसि औ वरसनि लागे सव पाव कहीं होति कौन रहै धीरज धरिकें ॥ ग्रीषम के आतप कौं भीषम प्रताप तिक लिटि कि नसके निकरि डीला डोलै डरि कें ॥ सघन विपन तरु मानै कूप कुंजनि मैं छांह हो विरमति करूं छांह ॥ ग्रपट करिकें ॥ ३६ ॥ दोहा ॥ नाहिं नये पावक प्रवल लुवें चलति चहूं पास ॥ मानकु विरह वसंत कें ग्रीषम लेति उसास ॥ ४० ॥ टी ॥ यह ग्रीषम समय नाइका प्रोषितपतिका नाइका को वचन सषी सौं ॥ ४० ॥ कवित ॥ चंडकर मंडल तें मंडि कें अषंड धार वरषत पावक प्रचंड कि धौं इहरी ॥ हाल प्रान प्यारे की दुहाइ कि धौं आइ वडवानल की लुवें ता तें तवति इपहरी ॥ चंदकर मंडल तें पावकु न वरषतु लुवें न चलति जिन्हें देषि मति हहरी ॥ मेरे ज

न प्रीतम बसंत को वियोग भयै यौ सषम विर
ह न्हा उमासे लेति गहरी ॥४०॥ जल केलि वर्ने
न ॥दोहा॥ लै तुम की वलि जाति जित जित
जल केलि अधार ॥ कीजत के सरि नीर सेति
तितं तके मनि नीर ॥४१॥टीका॥ यह जलके
लि सषी को वचन सषी सों ॥४१॥कवित॥ मोह
न सों जल के लि रची व्रषभान सुता हित रंग
मैं वौरी ॥ ह्वै सकहै कविता छवि पैर निकाम
की वारोकरौ रिक जोरी ॥ चूनक लेग हरै
ल ह्लै बालि के जित ही जित जाति कि सोरी के
सरि के जल के सरि के सरि नीर करैं तितही
ति तगोरी ॥४१॥ वर्षा रितु वर्नन ॥दोहा॥ पाव
स घन अंधियार महि रह्यौ भेदु न आनु ॥ रा
ति द्यौस जान्यौं परतु लषि चकई चकवानु
४२॥टीका॥ यह वर्षा समय स्वयंदूत नाइक
को वचन नाइका सों प्रीति नाइका को वच
न सषी सों ॥४२॥कवित॥ अंबर ओनि दिसा
विदिसा सगरे तपही कौं वितान सों तान्यौं
मेवक रंग सबै जग मैं अति मोड़ हियें निहि
वार निमान्यौं ॥ पावस के घन के अंधियार
ने दक छन परैं पहिचान्यौं ॥ द्यौस निसा को वि

वकु सुतो चकई चकवानि के वोलति जो मे
४२ ॥ दोहा ॥ कुढंग को पत जिरं गरली करति
जुवति जग जोइ ॥ पावस गूढ न वात यह बू
ढन हू रंग होइ ॥ ४३ ॥ टीका ॥ यह वर्षा समय
य सषी को वचन नाइका सों मना इवो ॥ ४३
कवित्त ॥ पावस आवत ही जगवुं जानि मोद
सो कूक मचाइ दई है ॥ वाह्म राव कूं भाइ भ
री मिलि रंग रली वनिता निवई है ॥ को पत्र
सनु कुढंग मुनि वारि निहारि घटाउन ई जु नई
है ॥ मूढन है यह वात गुसांई निवूढह दे षिसु
भाम ई है ॥ ४३ ॥ दोहा ॥ धुरवा होहि न अलि
उठे धुवा धरनि चिहूं कोद ॥ जारत आवत
जगत कों पावस प्रथम पयोद ॥ ४४ ॥ टी ॥ य
ह वर्षा समय नाइका प्रोषित पतिका नाइ
का को वचन सषी सो ॥ ४४ ॥ कवित्त ॥ मेरो कहो
मानि जियमि हचे के जानि आली प्रथम मही
पावस के वलउ घर तहैं ॥ सीतल समीर भि
ल्यो नैं सोई सहाइ करु विरही विचारे कहि कै
से जरत है ॥ जगाहि जरावत ये आवत घुम
डि घनता ही त्रास सब गा कुल सार ये करत
है व पला नि चपल ऊरय ह ज्वालनि की

तेईघूमधारयेनघुरवापरतहे॥४४॥दोहा॥वे
ऊचिरजीवीअमरनिधरकफिरीकहाइ॥छि
नुविछुरैजिनकीनहिनपावसंआवसिराइ
४५॥टीका॥यहवर्षासमयसषीकोवचननाइ
कसोंनाइकासोंनाइकाकोवचनसषीसोंक
विकीउक्ति॥४५॥कवित॥घोरघटाघुमडीचहुं
वोरकरैवकुभांतिनुसोरविरावो॥भूमिहरी
वहसीतसमोकगहोगतिमंदसुगंधसुभावै
ऐसेसमैंछिनएकविछोऊभयैंजिनकोंनाइ
छदिनआवो॥वेचिरजीवीभयेजमनेंअजरा
मरवैोंननिसंककहावो॥४५॥दोहा॥आवतजि
नाऊउपाइकोआयोसावनुमासु॥बिलुनर
हिवौषेमसोकेमऊसमकीवासु॥४६॥टीका॥
यहवर्षासमयसोबिलपतिकानाइकाको
वचनसषीसों॥४६॥कवित॥जौलोमनरह्यो
हाथतौलौनउमासीगाथआगयोविरहदु
सुसलनिकोसहिवो॥प्यारेनंदनंदनकुकी
वनअवधिआसतेसेतेसैंरह्योजाउअवक
हाकहिवो॥आयोसषीसावनुनआयोक
नभावनुरीअवतउपाइनिकोंछाडिनचा
वहिवो॥४६॥दोहा॥तियतरसोहिमुनिकिये

करिसरसोंहैं नेह॥थरपरसोंहैं छेर हे झरख
रसोंहै मेह॥४७॥टीका यहवर्षासमयहैकवि कीउ
क्तिअरुस्वयंदूतनाइकाकोवचननाइकसों
४७॥कवित्त॥हरितपुहमिजलभरेवनउपव
नचहूंओरसोंरमकेउमगिउदेरहे॥महमही
लतालहलहीछबिछारहीकुंजकुंजषग
कुलकोलाहलकेरहे॥उमडिघुमडिपरसर
सपुहमिघनसोंहैं सरसोंहैं वरसोंहैं झुमझ्के
रहे॥हेरिहेरिमुनिमनत्तियत्तरसोंहैंहोतइत
घनवृंदअनुरागकेउनेरहे॥४७॥वनविहा
र॥दोहा॥चलितललितश्रमखेदकनकलि
तअरुनमुषलेन॥वनविहारथाकीतरुनि
षरेथकायेनैन॥४८॥टीका॥यहवनविहार
नाइकाकीसोभानाइककीआसक्तिसषी
सषीसोंकहतिहै॥४८॥कवित्त॥सुषमांक
लिततरुनोईकीगुराईमांझउमगिप्रकास
अरुनाईकेसुहायेहैं तैसेईललितश्रमखे
दकेनकलकजगमगिजोतिकेसमूहसरसा
येहैं॥कहेकविरुसदोषरहैंआनिमेषवेकें
नैननवेलोंहूंपगिऐसेंरीझिछायेहैं॥विप
नविहाररसछाकीव्रजवालवाकीथाकित

प्रभा नैं षरे लोचन थका ये हे ॥४८॥ हिंडोराव
र्नन ॥दोहा॥ वरजैं हू नीह ट चढै ना संकुचै न स
काइ ॥ टूटंति कटि डुमचीमचकं लचकि ल
चकि वचि जाइ ॥४९॥ टीका यह वर्षा समय हिं
डोरे की सोभा सषी नाइक सों कहति है सषी
को वचन सषी सों ॥४९॥ कवित ॥ फूलिवे को च
स को लग्यो है इन द्यौसनि मैं छाडि सव और रु
ही ओर ठहरौति है ॥ घर जियें ज्यौं ज्यौं तैसो तैसो
न तिं नये कछ्यो कह हु के चढति सकुंचति न
सकाति है ॥ गात की न सुधि न सम्हार उर अं
चल की हारु विलुलित पिंडुरी नु थहरा
ति है ॥ मचै उहं और के हिंडोरे की मचकि क
टि टूटति सी लचकि लचकि वचि जाति है
॥५१॥ सरद रितु वर्नन ॥ दोहा ॥ घन घेरा छु
टि गो हरषि चली चहुं दिसि राह ॥ कियो सु
चैनो आइ जगु सरद सूर नर नाह ॥५०॥ टी
यह सरद समय राजनीति प्रसंग कवि की उ
क्ति ॥५०॥ कवित ॥ घन घेरा छुटि गयो संपि
यारो मिटि गयो विसद प्रताप जगमग [illegible]
विष्णाइ के ॥ कहै कवि [illegible] निरषि
चले पथिक चहु घा भूरि भय विसराइ कैं १२९

फूले हिय कमल अमल भये जल पलुघ
टे अपचल न उछाह उमगाइ कैं ॥ सरद सु
भट नरनाह की निकाई नीति देषे सब जग
तु सुषे नीकी नींआइ कैं ॥ ५० ॥ दोहा ॥ अरुन
सरोरुह कर चरन द्रग षंजन मुष चंद ॥ सै
आइ सुंदरि सरद का हिमकर तुअ नंद ५१
॥ टीका ॥ यह सरद समय कवि की उक्ति हो
इ ५१ ॥ कवित ॥ सोहत अरुन सरसीरुह च
रन कर जिनहिं जग तु प्रिय सदन गनाव
ई ॥ कला परिपूरन सुधानिधि वदन लसै
जाकी अरद मुंत छवि कहत न आवई ॥ दे
षियत षंजन तरल कजरारे नैन कहै क
वि हुलसदे षे जीउ सनुपावई ॥ सरैसु षपुं
ज सनी सुंदरि सरद आइ कौन केन उर
में अनंद सरसावई ॥ ५१ ॥ हेमंत रितु ॥ दोहा
कियो सबै जग काम वस जीते जिते अजे
इ ॥ कुसुम रहि सर धनुष कर अगहनु
गहें मनु देइ ॥ ५२ ॥ टीका ॥ यह हेमंत समय का
मोदीपनु अधिक होतु है सु नाइक अथवा
नाइका ... सषी सों कहै अथवा सषी कों व
चनु संभवै कवि की उक्ति होइ ॥ ५२ ॥ कवित

सिंगीसेमुनीसमसिद्धईससेसतकेतसेकेते
कीनेविकलगनेयेकहोकाहिकाहि॥ मानि
यतजाकोनोऊखंडमेंअखंडथाकुजीतेमहि
मंडलकेअजीतीजितीकआहि॥ कहोक
विकलजिनफूलहीकेआयुधसोंकेसेकै
सेवलीभेदेसाहसुदतीकुचाहि॥ जीतेजि
हितीन्योंलोकऐसोवलीमनमथुआहे
नुनगहनदेतुसरचापुताहि॥५४॥ दोहा॥ ज्यों
ज्यौंवढतितिभांवरीत्योंत्योंवढतअनंत
ओकओकसवलोकसुषकोकसोकहेमं
त॥५४॥ टीका॥ यहहेमंतसमयकविकीउ
क्तिमुषहेसंयोगसिंगारमैंविनेविप्रलंभ
हूमैंकोककोप्रसंगअन्योक्तिहूजानिये
॥५४॥ कवित्त॥ हिमरितुआईनईसीतसर
साईदेषिभाजिगईगरमउरोजअंचलनु
में॥ वासरकोलघुताविलोकिमुरझानकी
लसूछमव्हैरह्यौतेजुतपनकैतनमैं॥ कैहे
कविहलासज्योंज्योंजरनीवढतित्योंत्योंउम
गतुमोऊअनुरागिनुकेमनमें॥ ओपव्यौ
कलोकलोकघाठतअपारसुषसोकहे
वियोगीकेकिकोकनुकेगनमें॥५३॥ दोहा १३०

मिलिविरहतविछुरतमरतदंपतिअतिरस
लीन॥नूतनविधिहेमैंतसबुजगवैंजुराकीकी
न॥५४॥टीका॥यहहेमंतसमयसषीकोवचन
नाइकासोंहोइतौमानवतीअरुकविकी
उक्तिह्वैहोइ॥५४॥कवित॥दोऊदेषिये
कुंनवीचएकैप्रानहितकीउमंगनईन
ईयेमहाहे॥अतिरसलीनदोऊमिलेहीवि
हारकरैकहैकविकुसांचेतअतिउमहतहे
विछुरैनिमिषह्वैतौजीवेकौभरोसोनाहिंअ
तिअकुलाईमैनविथानसहतहै॥औरये
कदेषोहिमरितुकीनवलरीतिजगतमैंसव
हीजुराफाकैरहतहै॥५५॥सिसिरिरितु॥दोहा
आवतुजातनजांनियतुतेजहितजिसिय
रान॥घरहिजमाइलौंघट्योषरोफूलदिन
मान॥५५॥टीका॥यहसिसिरसमयदोउन
कहितकीअधिकाईहैसुरात्रिदीआछील
गतिहैसुसवदिनकीलघुताकहतिहैविर
हीह्वैंतादिनकोनिंदाकरै॥५५॥कवित॥बाव
नकाह्राकेविभांवरीवतिजौंहीसोहीसौ
।वियोगिनकीहियोअकुलातुहै॥दंपतिउ
मगिअनुरागउझिलतउरयेकैकैरहतुमि

वि॰स॰
१३१

लिइ रुतु को गातु है ॥ इसकों दिवसु लघु
मानभयौ अैसें जैसें ससुर के घर मैं जमाई
सकुचातु है ॥ तिजको न लेसु रह्यौ सीत ल
सुभाव गह्यौ जानतु न कोऊ कव आयौ
अव जातु है ॥ ५५ ॥ दोहा ॥ रहि न सकै सिसव
जगत मैं ससिर सीत कै त्रास ॥ गरम भा
जि गढवै भई तिय कुच अचल मवास ॥ ५६
टीका ॥ यह ससिर रितु को समय कवि की उ
क्ति होइ ॥ ५६ ॥ कवित ॥ ससिर मैं आयो जु रि
सीत कौ प्रवलु जाके त्रास सव ही कपत थ
हराइ कै ॥ ताहि लखि द्दर म हर मैं तें निक
सत जो सर भगर मचली हिये हहराइ कै
अंवर अवनि पौन पानी तजि कलित की
टिक नित हौं ऊस की भगी न हराइ कैं ॥ ऊं
चे ऊंचे अचल उरोज न व नागरी कि कढ
मवास जाइ रही ठहराइ कैं ॥ ५६ ॥ दोहा ॥
तपन तेज तपताप तपति अतुल तुलाई
माह ॥ ससिर सीतु क्यौं मे घटै विनु लप
टैं तियनाह ॥ ५७ ॥ टीका ॥ यह ससिर रितु वा
इका को वचन नाइका सौं सदा ऊं सौं हो
इ कवि की उक्ति हू होइ ॥ ५७ ॥ कवित ॥ मोल

विमालकी ओढिसाला दिनेसकोतेज इ
तपरहोऊ॥ राष रूछाइनिहालिनुमेतनु
पावकपुंज अगीठ सजोऊ॥ माहकोसीत
विहातनकैसेहूं कोउपाय करो किनि
कोऊ॥ जोलगिपाव पियासचुवाइ रहेलि
पटाइने एक केदोऊ॥५७॥ दोहा॥ लगति
सुभग सीतलकिरनिनिसिसुषदिनअव
गाहि॥ माहससीभ्रमसूरत्यों रहतिचकोरि
चाहि॥५८॥ टीका॥ यहससिरसीतुकविकोउ
क्तिमुष्पहै॥५८॥ कवित॥ ससिरमेंसीतनेक
रीहेंओरैरीतिआइ घामरूमेंचांदिनीकेचे
नउमहतहे॥ संपटसरोजगहेकुमुदवि
कासचहेमिलिनसकतकोकविरहदह
तहे॥ सीरीसीरीसुमगवक्तिरनिलमत
पातरातिकेविलाससवद्योसहीलहति
हे॥ ससिकेउदेकोसुषमानिससिताकीअ
रचोपसोंचकोरचितवतहीरहतहे॥५८
फागुनवर्ननं॥ दोहा॥ दियोवपियलषि
नयनुमेंषेलतफागुनवालु॥ बाढतुहूअ
तिपीरसुनिकाढतवनतुगुलालु॥५९॥ टी
महहोरीषेलकोसमयनाइकाकोअनु

वि·स·
रि·

रागकी अधिकाई सषी सषीसों कहति है
॥ ८९ ॥ कवित्त ॥ हरि षेलत फागु वध्यग गव म
ध्य सषा सव केसरि रंग सनें ॥ इत चाइ म
री व्रषभान सुता उमग्यो हरि के तें उत मो
द मनें ॥ जव नैनन मुमें तकि डारयो लला अ
पने करसों वहराइ धनें ॥ अति वांहति है
जऊ पारतऊ वह काढत पेंन गुलाल वं
नें ॥ ८९ ॥ दोहा ॥ पीठि दियें ही नैक मुरि कर घ
घट पट टारि ॥ भरि गुलाल की मूठि सों गई
मूठि सी मारि ॥ ९० ॥ टीका ॥ यह होरी षेल को
समय नाइका की सोभा नाइक कुं सषी सो
कहति है ॥ ९० ॥ कवित्त ॥ मोपे कछु कहते
न वनें करि जे सी हंसी व्रज नारि गई है ॥
पीठि दिये ही हुती मनु लेव ह फागुन षेल
षिलारि गई है ॥ घुंघट को पट टारि कें मो
हउ सारि कें नैक निहारि गई है ॥ यों भ
रि मूठि गुलाल सों प्यारी अचांनक मूठि
सी मारि गई है ॥ ९० ॥ दोहा ॥ ज्यों ज्यों पट झ
टकति हंसति हठति नचावति नैंन ॥ सो
त्यों निपट उदार हूं फगुवो देत न वैन ॥
९१ ॥ टीका ॥ यह नाइका प्रौढ होरी षेल के १३२

समाजु नाइकु॥ सो भा देषिवेकौं लोभभा
ग्यो है सु सषी सषी सौं कहति है॥ ६१॥ कवित
फागुन के षेल कौ समाजु वनि आयौ जैसो
एक रसना सौं कहत वनै न है॥ सौं करोग
ली मैं नंदलाल कौ पकरि वाल मनभा
यें करमं वढावे चित चैंन है॥ ज्यौं ज्यौं नेह
वारूं भरी लोचनन वाइ पटु रूटकि कह
ति हंसि हंसि म[illegible] नहीं॥ त्यौं त्यौं चित्त लाल
न कौं निपट [illegible]रत रू फगुवा कौं देवै दे
वो क्यों हूं मान तु मनै नहीं॥ ६१॥ सोरठा॥ छु
टत मुठिनु संग ही छुटै लोक लाज कुल
चाल॥ लगत डरू न इक वेर ही चलि वि
तु नैनै गुलाल॥ ६२॥ टीका॥ यह होरी षेल
कौ समय सषी सषी सौं कहति है॥ ६२॥ क
वित॥ होरी कौ समाज वरसाने के वगर
आजु कहा कहौं आली वनि आयो नीकौ
ख्याल री॥ इत नु वतीगन मैं राधिका किसो
री उतं सहित सषा निव मैं मदनगुपाल
री॥ छूटत मुठी के संग छूटत है केते वर गुल
जन लोक लाज लाज कुल चाल री॥ कहै
कवि [illegible]सतेसौं ही लागत हरू कत नये कै

वि॰ प्र॰
१२२

सारी वाउ चितु लोचन गुलालरी॥ ६२॥
दोहा॥ ज्यों ज्यों रुकि ऊ पति वदनु विहसति
अति सतराइ॥ त्यों त्यों गुल्ला लमुठी ऊठी
ऊकावत प्योजाइ॥ ६३॥ टीका॥ यह होरी षे
लनाइ कों कीचे षादे षिनाइकुरी ज्यों हे
मुनाइकुं उकतिकरतु है सषी सषी सों
कहति है॥ ६३॥ कवित॥ आजु ब्रजदेष्यो
होरी षेल को समाजुवह सोभा मेरे नैननु
में रही है विहरिकें॥ राधा व लाली को वि
लासुल षिआली सची मघवा को रिक
गुमान जात्त गरिकें॥ ज्यों ज्यों प्यारी रुकि
ऊ पति वदनु विहसति सतराति रिस को
रूपु करिकें॥ त्यों त्यों देषि कवि वे हसि
औनप्यारे लाललफि ऊकावत गुलाल
मुठी कु ठी भरि भरि कैं॥ ६३॥ दोहा॥ रस भि
जये दोउ दुहूनतो टिकि रहे हेरैने॥ छ
विसों छिर कतिप्रेम रंग भरि पिचकारी
नैन॥ ६४॥ टीका॥ यह दोऊ नको परस्परावि
लोकनु है सषी सषी सों होरी के ष्याल की
समता देकरि कहति है॥ ६४॥ कवित॥ आ
जु ब्रषभान की कुंवरि मनमोहन सों नैन १२३

नमे राष्यो होरीको सोरब्यालु करिकैं ॥ भलेहि
तंचाइकोऊ चकत नदाइ टिकि रहे हटकलो
इकोऊ जातु न टरिकैं ॥ निजयेव नाइक्रति
रस मे परस्पर पागे अनुराग के गुलाल रंग गह
रिकैं ॥ कहा कहे छिरकत छवि सों छबीले दो
उ नैंन पिचकाई प्रेम रंग भरि भरिकैं ॥ ६४ ॥ दो
गिरे कें पकछुक छुरहे करू पंसी जियलप
टाइ ॥ लियो गुलाल मुठी भरी छुटत न मुठी
के जाइ ॥ ६५ ॥ टीका यह होरी षेल को समय
सषी सषी सों कहति है दोऊनि के सात्विक भा
उ कहुते है ॥ ६५ ॥ कवित ॥ मेरो कह्यो मानि री उठि तै
ले चलि देखि नेक आजु व्रज धूम होरी षेल
की अनूठी है ॥ के सरि में सने रसिक रसालि
जहां वरषा लहाई सब सुषनु की वूठी है ॥ जंह
विपरस्पर दोऊ मुषमाड़िवे कों लेति अति
चाइ सों गुलाल मंधि मूठी है ॥ कछू करपंक
ज पसाने लपटात कछू कोपे गिरिजात तता
तें पोले होति रूठी है ॥ ६५ ॥ वायु वर्नन दोहा
रह्यो रूक क्यों हूं सु चलि आधिक राति पधारि
हरति तापसव धीसकी लागि लगि उरहि
वयारि ॥ ६६ ॥ टीका यह वायु वर्नन कवि को उ

सि॥ ६६ कवित॥ ऐसी रही हौं कि क्यों हूं आ
वन पाइ जा के बिनु मिलें प्रानन्हु की प्रति छि
कुं लाती है॥ लोचन चकित जा कों आगमु वि
लोकिवे कौं च हूं ओर चितवति छाती होति
ताती है॥ क्यों हूं क्यों हूं चलि कें अवांन कही
आंधी राति आइ गई भार जैसें वया क्लिओ
इ जाती है॥ हरति विपति सब धोसं की हिये
सों लागि कहै हम सुं षासि कुसर साती है॥
६६॥ दोहा॥ चुवत स्वेद मकरंद कन तरु तरु
तर विरमाइ॥ आवत दछिन तें चल्यो ष
को वटोही वाइ॥ ६७॥ टीका॥ यह पवन वरनन
कें विकी उक्ति॥ ६७॥ कवित॥ निझरत जात
जल जेंत्रनि के विमल सलिल परसतु ऐ
सी ढार सों ढरें ढरें॥ कुसम कहै जहां तहां सी
रीछांह देषि विरह तुत रुत रुके तरें तरें॥ सुम
न पराग जपागि रह्यो अंग अंग स्वेद कन
बुंद मकरंद के धरें धरें॥ सुरभि सम हछा
केपी दछिन दिसा तें वायु प्याको सो वटोहीं च
ल्यो आवतु हरें हरें॥ ६७॥ दोहा॥ विकसित नव
मल्ली कुसम निकसित परिमल पाइ॥ पर
सिप जारत विरह हिय वरसि रहे की वाई

९५ ॥ टीका यह पद्य नवर्नन न विरके प्रसंगमें नाइका अथवा नाइकाकी सो कहैमांनके प्रसंगमे सषीनाइकासौं कहैं ॥ ९५ ॥ कवित्त ॥
मंजु लता वेलिनुके सघन निकुंजनि तिविहरे है रेनि कसतिसवहिसुहाती है ॥ सुमनके दूबनकै सुषट परागसनी जाहिमिलि भौरनकी पाति कुलसाती है ॥ मुकलित मल्लिकाके कुसमन्वी मनु ते निकसितसुरभिमहितसरसाती है ॥ वरसि रहे कीसीरी आंदतिवियारिदि पोपरासिपजारतिवियोगिनुकी छातहि ॥ ९५ ॥ दोहरा ॥ कोमांभ करै कुंजमगकरतझौंरिझुकिरातु ॥ मंदमंद मारुततुरंगषूदितु आवतुजातु ॥ ९६ ॥ टीका यह वायुवरननकविकी उक्ति ॥ ९६ ॥ कवित्त ॥ सोहत सिंगरवरूमांशिनुजराउसाजिरंगरंगकुसमतरलअतिअंगुहैं ॥ करिकालललितभ्रमरावलीलसतिमधुपुहपपरागटकौ उमंगिअंगुहैं ॥ ऊकतुसोकरैनिकुंजमगनिरघतुझांझिसीकरतुकरातभसौरंगुहै ॥ छुहीसीकरतुमंदमंदमलयाचलतेआवतुपवनकामदेवकोकुरंगुहै ॥ ९७ ॥ दोहरा ॥

वि.स. पलरीफूहपपरागपटसनीस्वेदमकरंद॥
१३५ आवतिनारिनवोढलोंसुषदवायुगतिमं
द॥७०॥टीका॥यंहपवननवर्ननुकविकीउक्ति
नाइकानवोढाकरिकेंवरनी॥७०॥कवित॥फू
लनकीरजंअंवरमेंनषतेंसिथलोंलपटीछ
विछावति॥स्वेदलसेंमकरंदफुहीलछिनें
ननुसोछतियाहिसिरावति॥हलसकहेंवकु
१ मोतिनुकेतनसौंमेवौहरूदिसामहकावति
मेरगहेगतिनारिनवोढालौंमरिभिकुंज
लगीतनआवति॥७०॥दोहा॥रनितभ्रंगघं
टावलीझरतुदानुमघुनीह॥मंदमंदआ
वतवल्यौंकुंजरुकुंजसमाह॥७५॥टीका॥यह
वायुवर्ननकवीकीउक्ति॥७५॥कवित॥घंटनि
केसवदअषंडतेंईसुनियतुगुंजतुआनंदमै
सौंअलिनुकेवृंदुहे॥सुमनसमूहनुकी
धूरिसौंधुरेहैंगातमदजलउमगिझरतुम
करंदुहे॥रंगरंगफूलतिनिकीझलमेंझपू
येंतनजगतविदितियाकोविक्रमअमंदुहे
मानतरूतोरिवेकोंआवतुगुमानभरयौमं
दगतिपवनमनोजकोगयंदुहे॥७५॥वेरो
दय॥दोहा॥द्वैजसुधादीजतुकलावेह

कली

लषिउाठिलगाइ॥मनौअकासअगस्तियाए
कैलषाइ॥७४॥टीका यहवैंडेदयवर्ननसषी
कौवचनुनाइकासौंअगस्तियाकेतरुतैसंके
तस्यालखस्वनुद्वैजतैमिलिवेकोअवधिसव
नुसाधास्तुतेकविकीउक्ति॥७५॥कवित्त॥दीष
उतैहतियाकेमयंककरकैसोकलाननजो
तिजगै है॥सोछविचाहिचकोरनुकोअवली
कुलसीहियमोदपगीहै॥यौनिरषीअरुना
ईलियेउपमाकविकेउरमेंउमगीहै॥मानौ
व्योमअगस्तिकेरूषहि एककलापहिलेही
लगीहै॥७५॥दोहा॥धनियहद्वैजजहांलषी
तस्योदृगनुदुषदंदु॥तोमागनिपरषदुपे
अहेअपरषचंदु॥७६॥टीका यहचैंडेदय
सषीकोवचननाइकसौंक्योजनुनाइका
दिषाइवौअन्योक्तिरूपहीप्रसंगमेंसभवै
७३॥कवित्त॥सकलंकलानिपदिषरनपियू
षनिधिमोहैअकलंकसबसुषनिकोकं
दुहै॥जाहिदेषिवारिजवदनअरतियन
केसकुचिउरतिऐसीप्रभाकोअमंदुहै॥ध
नियहद्वैजजहांनीकेकैनिरषिपायौदेष
तहीदृगनिकौंगयोदुषदंदुहै॥पूरवकौयौ

वि-स
१३६

रवतुवश्यामसुंदरतनफलुनिसषिअषरवउदित
मयोचंदुहै ॥७३॥ श्रीठाकुरकैध्यान ॥ दोहा ॥ सी
समुकटकटिकाछनीकररमुरलीउरमाल
इहिवानिकमोमनसदावसोविहारीलाल
७४ ॥ कवित ॥ छविसौंफवीसीसकिरीटविन्यो
विसाल लहियेंवनमाललसें ॥ उरकंजदि
मंजुरलीमुरलीकछनीकटिचारुपीतांवर
सें ॥ कविदूलहकहैलषिसुंदरमूरतियोंअ
भिलाषहियेंवरसें ॥ वहनंदकिसोरविहारी
सदाइहिवानिकमोहियमांझवसें ७४ ॥ दो
मोरमुकटकीचंद्रकनुयोराजतनंदनंदु
मनससिसेषरकोअकसकिधेसेषरसतचं
द ॥७५॥ टीका यहश्रीकृष्णकेमुकटकीसो
भासषीकोवचननाइकासोभक्तकोवच
नहैसंभवै ॥७५॥ कवित ॥ आंजुलषोव्रज
राजकुमारसुदेससिंगारवनेसंगरेहै ॥ रू
पकीरीझिकहीनपरेअवलोकविलोच
नमोदभरेहैं ॥ कृष्णकहैसिरसोहतमोर
किरीटविंदाछविपुंजभरेहै ॥ मनोंअकस
ससिसेषरसोंहरिसेपरचंदअनेकभरे
हैं ॥७५॥ दोहा ॥ अधरधरतहरिकेपरतओ १३६

ठडीठिपटजोरि॥ हरितबांसुकीबांसुरीछद
धनुषरंगहोति॥७६॥टीका॥यहश्रीकृष्नकीमु
रली बजावतजुसोभाहोतिहै सुलषीनाइका
सषीसौंकहैहै कविकीउक्तिहोइ॥७६॥कवित
वलिरे विरीवांनिकसौंवनिकैव्रजराजको
लडिलैंश्रावतुहै॥मुषचंदुकीचारुमरीचि
नुसौंअलिनैनचकोरसिरावतुहै॥जयडीठि
कोओठनुकोपटकोमुभिकानिकोरंगुभि
लावतुहै॥ तवबांसुरीबांसुहरेकी[illegible]मु
रचापकेरंगदिषावतुहै॥७६॥दोहा॥मकराकृ
तगोपालकैंसोहतकुंडलकांन॥मनोधस्यो
हियघरसमरड्योढीलसतिनिसांन॥[illegible]॥
टी०॥यह श्रीकृष्नकोध्यानुहै अरुताकुंबाई
आई हृदयमैं कंदर्पप्रवसभयो यहप्रयोज
नु॥७७॥कवित॥मैनिरष्योव्रजराजलाडुति
पुजहियेंहितभ्राजिरहेहै॥कूसकेहै दगदीरघ
दीषिप्रभातकेपंकजलाजिरहेहै॥मंजुलकांन
नकैमकराकृतकुंडलत्योंछविछाजिरहेहै
मनोमनोजधस्योहियमंदिरद्वारनिसांनवि
राजिरहेहै॥७७॥दोहा॥सोहतओढेंपीतपटस्या
मसलौनैंगात॥मनोनीलमनिसैलपरआ

त पुप सो प्रभात॥७८॥टीका॥यह पीतांवरकी
सोभानाइकाकौ वचन सषी सौं स षाकौ वच
न नाइकासौं भक्तकौ वच॥७८॥कवित॥वनि
जाछवि सौं हरि नैननु मैं अरु प्रानन्नु मैं अ
वरी है हुहे॥समताके हंता छविकौ कहिये
...ियोनि कुं लोकमैं कोहतु है॥सषि सुंदर
स्याम के लेवरपै पटु पीतलसै मन मैं ...हे
म निमील कसैल के ऊपर मानौं प्रभातकी अ
तनु ...हतु है॥७८॥भक्तकौ वचन उपालंभ
दोहा॥कव कोटेरत दीनरट होत नस्याम
सहाइ॥तुमकुं लागी जगतगुरु जगनाइक
ज...वाइ॥७९॥टीका॥यह भक्तकौ वचन भ
गवानसौं॥७९॥क...त॥हौ कव कोरट लाइ
रह्यौ गहि दीन सु ...ाइ मनोवचकायक॥नं
दके नं...के हाव तहो हरि काहे तैं हो तनक्या
नि सहाइक॥एतौ विलंव कस्यो क कुं नामय
कुं लक है प्रभु हौ सवलाइक॥नांनि परीतु
म कुं कोक कछु अव मारि लगी जगकी अ
गनाइक॥७९॥

नेकी दई अनाकनी फीकी परी गुहारि
ज्यौं तुमै तारन बिरद बारक यारन तारि ॥८
॥टी०॥ यह भक्त को वचन भगवान सौं ॥८॥ क
वि त ॥ सेवक संकट निवारिवे को सावधान
कहत निहारो। वेद बिरद पुकारि कैं ॥ कहे
क विरुद्ध सौं नीदे षी परतीत साषि दीनन कै
दीने है अनेक उधारि कैं ॥ अनाकनी
नीकी करी मेरी रद की दीकरी लागे न गु
हार रहे निठुराई धारि कैं ॥ जानियतु तारि
वे कौं पै मनुं अब थाक्यौ तुम जौं सु जीते ए कपे
र वार निंतारि कैं ॥८०॥ दोहा ॥ बंधु भये का दी
न के कौ तार्यौ रघुराइ ॥ तूठे तूठे फिरत हौ
झूठे बिरद कहाइ ॥८२॥ टीका ॥ यह भक्त को व
चन भगवान सौं ॥८३॥ कवित ॥ कौन से दी
नपै कीनी दया अपराधी कहौ तुम कौन उ
धार्यौ ॥ कौन अनाथ के बंधु भये प्रभु को वि

बिनुदास भयो तुमता ह्यौ ॥ ऐसेइ केसे प्रतीति
करौ कृबिहह्लसकहे हौं पुकारिकै हाऱ्यौ ॥ रूठेई
तूठेनि सों कोफिरौ प्रभु रूठौ धाकु अनाहक पा
ह्यौ ॥ ८२ ॥ दोहा ॥ योरेहा गुनरी झिते बिसराई वह
बानि ॥ तुम हूं कान्ह मनौ भए आजु कालि के
दानि ॥ ८३ ॥ टीका ॥ यह भक्त को बचन भगवान
सों ॥ ८३ ॥ कवित ॥ कि अति आतुर मैं बिनती के
भांति करी करुनारस भीनी ॥ ह्लसह पानिधि
दीनन के बंधु सुनी असुनी तुम का हेत कीनी
रीझत रंच कही गुन तें वह बानि बिसारि मनो
तुम दीनी ॥ जानि परी तुम हूं प्रभु हू कलिकाल
के दातनि की गति लीनी ॥ ८३ ॥ दोहा ॥ मो हित तुम्हे
मोही बिरह सकौ जी तें जदुराज ॥ अपने अप
ने बिरद की दु अनि [illegible] हूं न लाज ॥ ८४ ॥ टीका ॥ य
ह भक्त को बचन भगवान सों ॥ ८४ ॥ कवित ॥ तुम
जेते तारे ते ते प्रीति न पतित भारे मो सो पूरो पा
पी कोऊ दूसरो न पेषिये ॥ तुम्हें बानि [illegible]री प्रभु
अधम उधारिबे की मेरे येक पाप ही टेक अब
रेषिये ॥ दुहून को काज आपने बिरद की हेरि
री पेज पालिके निबाह नीकी सो षिये ॥ कहे कबि
ह्लस मो सों तुम सों वह सवा ही को नु लही आइ
अब जीते को न देषिये ॥ ८४ ॥ दोहा ॥ ज्यों केहो ओहि

उगो होइ हरि अनीचाल ॥ हहुनके रो आतिक
हि नहै मो तारिवो गुपाल ॥८५॥ टीका ॥ यह भक्त
को वचन अपनो पाप करिवे कौ पनु भगवान
को उधारिवे को पनु उपालंव सों प्रगट करतु
है ॥८५॥ कवित ॥ हौं उनकी गनती मैं नहीं प्रभु
जौ तुम तारे ते आपनी मौंही ॥ हलकै है गुनतै
न [illegible] कछु पापिनु की परमावधि हौं ही हांनी
है जो कछु कै है वह है गति मेरी ये चालकु चाल
नि सों ही ॥ पैलनु है प्रभु मेरो उधारिवो मैं लिन
की जै वृथा हठु यौं ही ॥८५॥ दोहा ॥ कौन भां
ति रहि है विरदु अब देषिवी मुरारि ॥ बीधे मो
सों आनि कै गीधे गीधहि तारि ॥८६॥ टीका ॥ यह
भक्त को वचन भगवान सों यह दीन उपार
न विरदु है सु निश्चै जानि कहतु है ॥८६॥ क
वित ॥ पतित उधारन के [illegible] त सव को ऊ सो ऊ
सो च [illegible] अव वहराइगो वनाइ कै ॥ कहै
कवि [illegible] जनि औरके भ्रम मै भूलौ हौ तौ हौं
गरूव पापी मन वच काइ कै ॥ ताह्यो है पषेरू
एक गीध तातें गीधे तुम सांई जसु राष्यो है ज
गाइ कै ॥ कौन भांति राषिहौ विरदु प्रभु देषि
ये तु कठिन वनी है अव बीधे मो सौं आइ कै ॥८६॥
दोहा ॥ मो हूं दीजे मोषु ज्यों अनेक पतितनु दि
यो ॥ जौ वांध्यौ ही तौ षुसी वांधौ अपने गुननि

सो॥८१॥टीका॥यह भक्त को वचन भगवान सो
कि मुक्ति करी तौ वांधि राख्यो तो अपनो करि रा
खो॥८२॥कवित॥भांति भांति आरत की आरति
निवारत प्रग रपु कारत निगम गन भाषिये
तातें कं विहृ इस हीन वंधु दयासिंधु जू सों वार
वार विनती पुकारियै हे भाषिये॥ अघं म[illegible]
कनि को जो हाद दीनो मोषतु मत्यों हा मोहि मी
परा वो चित अभिलाषियें॥ वांधि वोई जो पेम
न मा सो महाराज तो जू आप ने ही गुभ नु वना
इ वांधि राखियें॥८३॥दोहा॥निज करनी सकुचे
हि कत सकुचावत इहि चाल॥मो हू से नित
विमुषत्यों सन मुषर हि गोपाल॥८४॥टी॰॥य
है भक्त को वचन अपनी विनुवता भगवान
को भक्त नि सों सन मुष रहिवे को आपनें सु प्रगट
करतु है॥८५॥कवित॥जानि परै नां तिहारी प्र
भु गति वेद हू नीके कै भेद न पावत॥ [illegible]
ब्रज ग्वालनि कै मुनि पावे न ध्यान सना दिल
गावत॥ ए कतो है अपनी करतूति नुही सकु
च्यो वकुस्यौ सकुचावत॥ हे तुम सो नित ही वि
मुषे तुम दीनदयाल सनमुष आवत॥८६॥
द्रोपदी को समो॥॥दोहा॥नाह गरजि नां[illegible]
गरजि वोल सु नामो टेरि॥ कसी फेरि जमें वंद १३६

विवहसीसवंतुतनुहेरि॥८६॥टीका यहँक्षेप
दीकोसमय कविकीउक्तिसाधारनतैंयामा
नप्रसंगमेंवंदिमैंहैयेअपनेंपतिकेविक्रम
कोंभरोसोजानिहसीहै॥८७॥कवित्त॥आयुध
अघटसाजेंभटनुकीभारभाग्योचाग्योंओ
रंविकटलियेंइजातघेरिकें॥नाहरकोगर
जगाजरसौंगरजिपतिताहीसमेंपाछेतेंसुनि
योवोलटेरिकें॥वाकेप्रतिविक्रमकोंभरो
वजिंयजान्योंयहजोंतेगोंसमरएकएक
कोंनिवेरिकें॥प्रवलचमूकेवीचवंदिमेंफ
सीहेतऊउमगिउछाहहंसीसवननतहे
रिकें॥८९॥अथअन्योक्ति॥दोहा॥नहिपाव
सरितुराजयहवजितरवरमतिमूल॥अ
पतभयेचिंतुपाइहैकोंनवलफलफूल॥
९०॥टीका यहअन्योक्तिकोरूदाताकेघोंपें
संमर्पेकछुकोऊचाहेनहोंकहियेरुगरेके
प्रसंग...केप्रसंगहूमेंसंभवे॥९०॥कवि
त्त॥मघवाकेजलसोंउमगिअधिकानेंव
कपछिनुकोराख्योतेंवसाइसमुदाईहै॥
छोडिचितमूलवाभरोसेमतिभूलेंअवचे
सोवनकनीठिनीठिवनिआइहै॥पाव
सजोनिरितुराजकोसमाजयहवाहीकें

सैंहरितछबिछाइहै ॥ सुनिमरवरजोलौं
कैहैनअपतुतौलौंनवदलफूलफलसं
पतिनपाइहै ॥ ९० ॥ दोहा ॥ कोछुटयौइहि
जालपरिकतकुलंगअकुलातु ॥ ज्यौंज्यौं
सुरझिभज्यौचहतुत्यौंत्यौंउरझतुजातु ॥
टीका ॥ यहअन्योक्तिसंसारजालअपनी
प्रेमजालकेबंधनमैंकहियें ॥ ९१ ॥ कबित्त
तबतौनजान्यौलगिलालचभुलानौचि
तुअबपरसपरकाहूपछितातुहै ॥ कहै
कबिहलसयाकेबंधनकीइहैरीतिनैक
अटकतअंगअंगबंधिजातुहै ॥ देषौ
तेपषेरूकोऊछूटयौइहिजालपरिकाहे
कौतबावरेकुरंगअकुलातुहै ॥ ज्यौंहीं
ज्यौंसुरझिभज्यौंचाहतुसयानुकरिसौ
हीत्यौंघरीईघरीउरझतुजातुहै ॥ ९१ ॥ दो
इहिद्वैमोतीसुगमछुटननपगरहिनिसांक
जिहिपहिरेजगदृगग्रसतिलसतिहसि
तिसीनाक ॥ ९२ ॥ टीका ॥ यहअन्योक्तिषो
टेरूसेधनसौंअथवागुनसौंअधिकसो
हतुहोइतहांकहियें ॥ ९२ ॥ कबित्त ॥ सुरनि
समेतनाकयाहीतेंकहतमुक्तग[illegible]
तमुकतिपुरीसौंदरसतिहै ॥ कहैक[illegible]

हलसमनमी[illegible]के मोहिवेकौं मोंहनी सिद्धि
मानौं सोभा सरसति है ॥ तोहि पहिरि तें जगन
यन अ सति अति छवि बरसति मानौं नासिका
हंसति है ॥ अहे न थ उर में निसांक नगर कुक
रि हेलि मुकता गथ सहित लसति है ॥ २२ ॥ दो
हा ॥ बेसरि मोती धनि तुही को पूछै कुल जाति
पीवो करि तिय अधर कौं रसु निधरक दिन रा
ति ॥ २३ ॥ टीका ॥ अहे अमोतिकि कोऊ अ छेकुं
ल तें भयो लघु मान है अरु बडौ होइ जो इप
यो होइ तहां कहियै ॥ २३ ॥ कवित्त ॥ कौंन बिना
न करै कुलै जाति को जीवन आपनो ई जग मैं
जानि ॥ है सव तें वड भागी तु ही अरु आइ है ते
ये वात न ली व वि ॥ ते ही लख्यो हत पूरव को
फलु है[illegible] तुही बेसरि के मुकता धनि ॥ द्यौ
स निसा तिय कौ अधरा मृत नीकौ निसांक
ह्वै पीवौ करै छिनि ॥ २३ ॥ दोहा ॥ पाइ तरुनि कु
च उच्च पद चिर ठिग पोस वगांउ ॥ छुटै ठौ
र रहिहै वहे जु हो मोल छवि नांउ ॥ २४ ॥ टीका
यह अमोतिकि कोऊ लघु मान सु वडो ठौ कानें
पाइ बौ तहां कहियै ॥ २४ ॥ कवित्त ॥ सछिम
[illegible]लघो लघुनाउ म ईउ तपति न उतमथां
[illegible]कौं [illegible] भागि लहो घुंघचीन वनागरि

वि॰स॰
१४१

के कुच उन्नत ठिकानौ ॥ याहीतें [illegible]यौ सब जग
कौ मनु तोहि गुमान पर्यौ अधिकानौं ॥ छौर छु
टे रहि जे है वही मुष कालिमा रंग बजार बिक
नौं ॥ ९४ ॥ दोहा ॥ नहि पराग नहि मधुर रस धु न
हि बिकास इहि काल ॥ अली कली ही सौं बंध्यौ
आगे कौन हवाल ॥ ९५ ॥ टीका ॥ यह अन्योक्ति
नायका के तनमें अवही जोवन आयौ ना
ही नाइका आसक्त पहिलें ही अधिक देषी
सु सषी सषी सषी सौं कहति है ॥ ९५ ॥ कवित
नहीं परागु नहीं मकरंदु अजौं प्रगटी न सु
बासु बिकासु र ॥ जानें को आगें धौं कै है क
हां गति ऐसो पर्यौ अवही इक आस र ॥ फू
ली घनी फुलवारि सारिनपै काहू कौं नैं कन
मान तु तातर ॥ री उरली मति कंज केलीपै
अली मइ रमैगौ रहै निसि बासर ॥ ९५ ॥ दोहा
मोर चंद्रिका स्याम सिर चढि कत करति गुमा
न ॥ लषिबी पाइनु पर लुठति सुनियतु राधा
मान ॥ ९६ ॥ टीका ॥ यह अन्योक्ति को उलघु मा
नसौं बडी ठौर पाइ गर्बु करै ताको मान भंगु
होत जानियै तहां कहियै ॥ ९६ ॥ कवित ॥ द[illegible]
मनैं आपनै सीस पै राधा पावनाई कै चाइ [illegible] १४१

धारिहै॥ जिनि धौं कोऊ जी मैं गुमान करै अब तो
सब जो मल पी परिहै॥ कहि काहे कौं मोर की
चंद्रिका ऐसी ढिठाई के ढार रही ढरिहै वृष
भान कुमारि कैं मानस मैं तरवा नित रेलु ढि
वी कारि है॥ ६५॥ दोहा॥ जिन दिन देषे वे कुसु
म गई सु बीति वहार॥ अब अलि रही गुलाब
मैं अपत कटीली डार॥ ६६॥ टीका॥ यह अन्यो
क्ति कोऊ धनवान निर्धन भयो है हित हा
धन के लोभी जाचकु कौ कहिवौ अमर कै प्र
संग करि यातै यौवन हू कौं कहिवौ संभवै ६७
कवित॥ जे बड़े हित तरितु राज कौ प्रताप ती
षो कहै कदि... जाकौं विक्रम अति अपा
र॥ तब इन ... निदेषे है सुषद म्हु
सरस कुसुम भरे अतुल सुगंध भार॥ उही
आस लाग पौ इत आवते चल्यौ को अलि
वह तो बितीत भई ओस वही वहार॥ गंध
म... तुम्ह... ता पराग को न लेस रह्यौ अव
रही अपत गुलाब की कटीली डार॥ ६६॥
दोहा॥ वह कि वडाई आपनी कत राचत तुम
... ल॥ विनु मधु मधुकर के हियैं गड़ै न गु
... फूल॥ ६७॥ टीका॥ यह कोउ गुनहीन है
...गहे अधिक करत है तासौं गुडहर

के फूलको प्रसंग करि अन्योक्ति संभवै ॥२७॥
कवित्त ॥ कहा भयो जो पै पायो सहज अरुन
रंग उमंगि ललित छवि रहीतन छाइ है ॥ व
हकि वह कि चित आपनी वडाई मैं न काहे
को रचतु गरुवाई यो न पाइ है ॥ जाहिर स
लै वेहा कौ चस कै लग्यो है सो कौ सुमन मुग
धत जितो पै मउराइ है ॥ गुउहर फूल इत रा
त कैसो तू फुलि फुलि विनि मकरंद अलै भ
लि रून भाई है ॥२७॥ दोहा स्वारथु सुकृतु
न श्रमु व्रथा देषि विहंग विचारि ॥ वाज प
राये पानि परतूं पछीहि न मारि ॥२८॥ टीका
यह अन्योक्ति कोउ पराई सुसामदि कस्त्रि
दुनै कौ बुरो करै तहां कहिये ॥२८॥ कवित्त
कहि कौं बीरानैं बुरे करतु पराये काज ऐ
सौ पोटो करमु विचारत है काहेकौं ॥ ऐतो अ
मुनाहक सरीर कौं तदे तु अरुदौ रंलो कअ
पनें कि गारतु है काहे को ॥ यामे के धुसु कु
तु न स्वारथ समझि देषि पातक कौ भार सि
र धारत है काहे को ॥ कहा भयो जो पै आनि
पस्यौ ई पराये पानि वाज निठुं पंछिनु तु
र मुहै काहे कौं ॥२८॥ दोहा ॥ जनम जल

निपुविमल मौज गुआगाअपार ॥ रहे गुनी ह्वै
गरपस्यौं नलेन मुकत्ताहार ॥९८॥ टीका यह
अन्योक्ति कोउ सुपात्र रहै मलीछौर रहिबेला
इक अरु छौरी ठौर आनंद सौं रहै तहां कहि
ये ॥९८॥ कवित ॥ जनमु जल पि कुल पानिपु
विमल अति तेरी सुभ सौभा जगामगति मुहा
ई है ॥ सनु कोऊ जगतमै चौपरिचाहि तौ हितै
ही वसकि म्मातिजवाहर मै पाई है ॥ तेरौ संग
पाइ छितिपाल औरु बालनिकौ केसीनी
की देखि इतिरूप की निकाई है ॥ औसौ तुउ
नाकै गरिपरिकै रहतु सुनि मुक ताके हारया
मैं कहा धौ भलाई है ॥९९॥ दोहा ॥ गहे न नेकौ गु
नगरबु हसो मुये संसार ॥ कुच उच्चपद लाल
चर है गरैं परें हू हार ॥१००॥ टीका यह अ
न्योक्ति आछे टेरी हू जा वैं अनादर ह्लै सौ रहै
तासौ कहियो सत्त वै ॥१००॥ कवित ॥ छोरैव
डे कु ... मंद वी गुन की गरुवाई न जी मे
धरे ॥ कौन सवै ह सिबो ईकरै जग पानिप
हानि हू ते न हरै ॥ हार न हाटवि के इहि भा
सु विधायो हियो पन ते न टरै ॥ उच्च उरोज न
... लो भुर है हिय या ति गरै रूप रै ॥१००
... गाधु अति औप्यारौ न दी कूप सखा

इ ॥ श्रोताकोंसागरजहांजाकीप्यासबुझाई
६०१ ॥ टीका ॥ यहअपनोकार्यछोटेहूतेंहोइ
तहांकहियें ॥ १ ॥ कवित ॥ कूपगंभीरसरोवरबा
पीकितीमहिमैंनहिजातवषानी ॥ छोटीनदी
रुवडीसरितानदजोरचनाजगदीसनैठानी
उत्तमाध्यमकोऊन्हायदोउअगाधिके
औथरोपानी ॥ वाकोवहीकविछलसमुझै
जाकीत्रिषाजिहिठौरसिरानी ॥ ६० ॥ दोहा ॥ दि
षमन्रषादितकीत्रषारहैसवेजलसोधि ॥ म
रुधरपाइमतीरहूमारुकुहतुपयोधि ॥ ६०२
टीका ॥ अथअमोल्किअपनोप्रयोजनकाहू
छोटेतेसिद्धिभयोअरुवडेतेकछुकृतसमर्थि
हैअरुअपनेकामनाहीआवततहांकहियें
२ ॥ कवित ॥ ग्रषकीवरषिचोविषमकिरनि
सवसलिलसुकावतहूओछेइरहतेंहै ॥ जी
वजंतजलथलप्रवलअवलसवअकुल
पकलहोतकलमलहतेहैं ॥ आतपकेतापें
अतिप्यासकेसंतापेजलसोधतेफिरतप्रा
नराषिवेचहतहैं ॥ ऐसेसमेपायोकाहूभो
गमेमतीरतासोमारुलोगजलनिधिन्यायकही
कहततहैं ॥ ६० ॥ दोहा ॥ प्यासेदुपहरजेतके
जियेमतीरनुसोधि ॥ अमितअपारअगाधपै जल १४३

लमारौमूडदध्योधि ॥ दं०२ ॥ टीका यह अन्यो
क्ति अपनौं काज जैसैं तैसैं सिद्धि भयें पाछैं स
वै संपन्न मिलै तहां कहिये ॥ ३ ॥ कवित ॥ कौन
काम जगत मैं तास की वडाई जातैं कछु गार
जमई रैन को रूप न मैं ॥ छोटे ही तें आपनौं स
फल होइ काजु तौ पै ची की घटत रु और रु कौन
त्रिभुवन मैं ॥ जाकै पान दारुन निदाघ की त्रि
षा मैं वाम तीरै पाइ वचे सियराई न ई तन मैं
ताकै आगें कहौ कोऊ सागर की वात औ ठौर स
लिल अपार कैसें आवै वाकै मन मैं ॥ दं०३ ॥ सो
कौ कहि सकै वडे न सौं लषे का ओ भूलि दी
नैं दई गुलाव कीं उनडार नु ये फूल ॥ दं०४ ॥
टी ॥ यह अन्योक्ति कोउ प्रवीन महाजन अ
जानें अविवेक कौ काम करै तहां कहिये ॥ दं०४
कवित ॥ कौ यह वात सकै कहि भूलि कैं काम क
रै करतार नैं जैसें ॥ एती करी जग की रचना पै वि
चार विनान करैं नाहि तै सें ॥ देषहु कोऊ उस
सैं न सास वडे जु करै कछु काम अनैसे वैसी
ये कंटक डार गुलाव कौ फूल सुगंध दये म
इ ऐसे ॥ दं०४ ॥ सोरठा ॥ दिन दस आदर पाइ कैं
करि लै आपु वषांन ॥ जौ लगि काग सराध प

षु तौ लगि तौ सन मांन ॥ ६०४ ॥ टीका ॥ यह अन्यो
क्ति कोऊ थोरे दीनन की वठवारि है गरवु करै
तहां कै हियें ॥ ६०४ ॥ कवित्त ॥ धूसर कंठ कठोर म
हा सुर एक ही लोचनु रंग है कारो ॥ नीच कहा
वत पछिनु मैं अरु भछ कौ साजु कुचील निहा
रो ॥ आदर पाइ हि ... कौ अनि मांन वसो अ
पुने चित धारो ॥ वाइस जौ लौ सराध कौ पाषु है
तौ लगि है जगु आधु ति हारो ॥ ६०५ ॥ दोहा ॥ मर
त प्यास पिंजरा परयो सुसुवा समै के फेर ॥ आ
दरु दै दै वोलियतु वाइसु वलि की वेर ॥ ६०६ ॥
॥ टीका ॥ यह अन्योक्ति मनोमानस कौं दुषु दीजिय
रु नीच कौ आदर होइ तहां कौ हियो ॥ ६ ॥ कवित्त
है सो समै को प्रभाउ कौ भावु भयौ जगु औगुन
ही कौ रिझौवा ॥ वूझ्या इगुन हंस नुकौ प्रगटे
अव कूर कुरु पुअ जौवा ॥ प्यासौ मरै पिंजरा
मै परयो सुक है मनु दै न नु कौ जु कहौवा ॥ आद
रु कै वलि दैवे की वेर वुलैयत चाह कै वाइसौ
कौवा ॥ ६०६ ॥ दोहा ॥ इहि आसा अटक्यो रहै अ
लि गुलाब के मूल ॥ ह्वैहे फेरि वसंत रितु इ
न डारनि वे फूल ॥ ६०७ ॥ टीका ॥ यह अन्योक्ति च
हां कछु जानै पायो होइ तहां वैसियै आस लग

ज्यो रहे तहां कहिये काकुध्वनि ते यह होइ कि की
वाही भरो मों कैसे रहे. ॥ छं० ७ ॥ कबित्त ॥ विहसि गुला
नि फूल कूले जिनके रस लैं सब कुसुम लानो ॥
बीति वहार गई तिनकी कुसमाव लिचित्त चु
मैं नही आनो ॥ अेहे वसंत वहार तवे यह वा
सु षसो रमंही को विकरै ॥ आसय है नियमे
धरि भौर गुलाव के मैल रहे मइरानो ॥ छं० ७
दोहा ॥ पदु पाषें मधुकी करें सपरपरे ई
संग ॥ सुषी परे वा पुहमि में ऐके तुही विहंग
छं० ॥ टीका ॥ यह अन्योक्ति जो कोऊ पराधीन
अरु परदेसी न्हाही तहां कहिये ॥ कबित्त
भोजनु का करवो नीके रैन के रेजु अधीन है
काहू की सेवा ॥ पाय नुही के वनेपटु चारु वि
साह कोजमन तु भावनमेवा ॥ नीके रहे घर
नीके सदा सगपूर वधुन्य नुको फलु लेवा को
न कूलतिनु आसपराइ सुषी अव नीपि तु ही
है परेवा ॥ छं० ८ ॥ दोहा ॥ करले सूंघि सराहिहूं
सवै रहे गहि मोनु ॥ गंधी अंध गुलाव को गाव
ई गाहक कौनु ॥ छं० ९ ॥ टीका ॥ यह अन्योक्ति को
ऊ वूझ न करै तहां कहियें ॥ ९ ॥ कबित्त ॥ राषो
है उघारि लै अमोल कै अतरु आकै गेजा के म

गुन्न की

र॰ स
२८५

दुगंधसोंमाहिकरह्योभोमहि ॥ ओरहि ओटि
हाश्यसवहीनेलीनोंदेषियेकोंसुधिसुंघिस
वनंसराहिगंह्योमोनुहै ॥ मोलसुनेसवही
नेहंसिकेमचाइकुकुपयुगाहिअवतक है
तकौनगोंनुहै ॥ अरेगंधाओंधरेहियमेए
तोचेतुकरिगाहि ...लावकोंगंबेलमांउकों
नुहै ॥ ६०८ ॥ दोहा ॥ विनइहोनागरवदेजिनओ
दरतोआंव ॥ फूल्योअनफूल्योभयोगंवर्धना
घगुलाव ॥ ६९० ॥ टीका ॥ यहअन्योक्तिप्रवीना
लोगनुकोसमुदायहोइगुनकोबूझिकोक
नकरैतहां ...हियें ॥ ६९० ॥ कवित ॥ चाइसोंआ
दरुतेरोकरैअरुतोहीसौंराचेहियोअंतक
ल्यो ॥ तामदुसोरभकौरसुलेजिनकेमनमो
दुरहेअतिउल्यो ॥ किमतितेगविबंधघं
नोरिझवारनवेजिनकोतकिंनूल्यो ॥ अरेसग
वारनकेवसवाससेंफूलिगुलाववथाअ
नफूल्यो ॥ ६९० ॥ दोहा ॥ गंधनतुहंरष्योहिये
निधरकलेहितुजाइ ॥ समझिपरेगींसीसप
रपरतपसुननकेपाइ ॥ ९९ ॥ टीका ॥ यहअन्योक्ति
कोउकाहूकोंव्यथातुहोइसुपाछेदेषों
वेतहांकहियें ॥ ९९ ॥ कवित ॥ गुनिकोंलखवी ५८

मुकलगावति गीत कोकिल कंठ सु माइ न
सों ॥ वकु भांति नु बेप कै कान न बनाइ मनो बैस
वे सत भाइन सों ॥ छदंगोयने तें मडु मानि हि
ये वकु भांति पुजाइ त्वे चाइ न सों ॥ परिहै सुधि
को हि स बेल वहीप सुप्रजाहि गोज व पाइ न सों
१९ ॥ दोहा ॥ करि फुलेल को [illegible] बन मा ठो कह
तें सराहि ॥ गंधी अंध गुलाव को आंतरु दिया
वत काहि ॥ २० ॥ टीका ॥ ये ह अन्योक्ति मंषिमानि
वाली चतुराई जावे तासों कहिये ॥ २१ ॥ कवित
नागर के प्यार तें तेरी ऊंची टेर सुनि चोप सों बु
लाइ लीनों के ही आगे आदुरे ॥ बेग लो निक
ट आंति प्रीति सों कुंकुम कीनों सोंधी वेस कि
म चितिको हमहि दिषाउरे ॥ आचमनु करि कें
फुलेल सों कहत मीठो ते नूं अंधों जानो मुंध
राई को प्रमाउरे ॥ काहे को उघारत गुलाब कौ
अंतर गंधी कहैगाई तेरी चतुराई अब बाउरे
२२ ॥ राजा को वर्नन ॥ दोहा ॥ प्रति बिंबित जय
साहि दुति दीपति दरपन धाम ॥ सब जगु
जीतन को कियो काय ब्यूह मनु काम ॥ २३ ॥
टीका ॥ यह राजा की सुंदरताई कौ वर्नन कवि
को उक्ति संषा को बचन नाइ कं सों नाइका को
बचन सखी सों होइ ॥ २४ ॥ कवित ॥ राजतु द

यनुमंदिर मैं महिमंडन श्री जयसिंह सवाई
सौं प्रतिबिंबनु की अवली चहूं ओर लसैं अति
हो छबि छाई॥ किधौं ग्रनेक सरूप धरै रवि रा
जतु मंडली मंडि सुहाई॥ मानेकु जोति वे को
जग तेरच्यनाव पुञ्ज ह की कामवनाई॥२३॥ दो
हा॥ चल तपाइ नि सि गुनी धन मनि मुचि
यमाल॥ भेट भये जय साहि सौं भागु चाहिय
तु भाल॥२४॥ टीका॥ यह राजा को दानु कवि की
उक्ति॥२४॥ कवित॥ दीजत मगाइ कैं तुरंगार
गरगनि के तुरत भडार सिरूपाइ निभाभरि
यैं॥ किम्मति बिसाल साल सुवरन मालला
ल हीरा मुकताहल व कुसिंडा रबैर ....नी
अनगुनी सवकी जति निहाल हाल ता वक
की विपति ग्रनेक भांति हरियें॥ भेट ..ये .
पक्खवाई जयसाहि जू सौं होत ... भाग फल्लु
भागु कहा करियैं॥२४॥ दोहा॥ रहि....रव
जयसाहि यम्हचल दिल्लांष ... को ....
विन राषर रह चल्लेल्लाष नु की मौं..॥२५॥ टी
का॥ यह राजा की स...... सरूदानु कवि की उ
क्ति॥२५॥ कवित॥ कूरम सवाई जयसिंह के अ
भंग जग मग तु दिने सको सोतेज ... जगमैं
लाग्यो ई रह तु नि ... समर विजै .. ..उदानु

करिवे कौ मनुहारतउ मंमै मैं ॥ परत्र सेतु
षन कौ न पकौ वदे तुले [illegible] सुनें सुषरहि नस
कतु र [illegible] गमै ॥ आप रूतु जाने सो उलाष
नु कौ लहतु सरवसु जानै सो अजांचीहोतु
मोज के प्रसंग मैं ॥ १५ ॥ दोहा ॥ सामा सेन सप्त
नमुंष सबै साहि के साथ ॥ वाकु बली जयसा
हि जसकृते तिहारे हाथ ॥ १६ ॥ टीका ॥ यह राजा
को जयसिद्धि वर्नन कवि की उक्ति ॥ ध कवि
[illegible] मग पोदि ली छत्रपति को प्रतापु नवषं
ड [illegible] रदाबे अरिनु के माथ है ॥ ते रेई
उ [illegible] सु वदंड के भरोसे सोऊ [illegible] तु निसंक
[illegible] दात यह गाथ है ॥ सुभट समाज सामं
[illegible] सयांन सुष सबै सब भांतिनु कौ सा
हि [illegible] के साथ है ॥ रहति सवाई जयसिंह न
हाराज सदा समर विजे की सिद्धि रावरे ई हा
थ है ॥ १८ ॥ दोहा ॥ अनी बड़ी उमड़ी लषें अ
सि वाहक भट भूप ॥ मंगलु करि मान्यो हि
ये [illegible] मुह मंगलु रूप ॥ १७ ॥ टीका ॥ यह राजा
की सुरता अरु वीरतु कवि की उक्ति ॥ १७
कवित्त ॥ सांभरि के षेत आये उमडि आमि
त दल में युद्ध सुभट महा विक्रम निधान है
गरजे [illegible] गरे निकट निकट आइ विक

म (८१)

पुत्रंड स[illegible] चित्वरघरवाने ॥ साहसी सत
पुजम साहि नृप औरे [illegible] से वारर म राचौ थि
रु भयो तिहि वा महि ॥ ३ म[illegible] मग
लकै मा मौ हियें वर नुकै [illegible] ग भयो मंगल समा
न है ॥ ७ ॥ दोहा ॥ यों दलकाटि वलक तें तें जय
सिं घमुवाल ॥ उदर [illegible] घासुर के परैं ज्यौं हरि
गा इगुवाल ॥ ८ ॥ टीका ॥ यह राजा की सूरता ग्र
रु पराक्रम कवि की उक्ति ॥ १८ ॥ कवित्त ॥ ये क
सनासीं मोपे कैसें कहे परें जेते विक्रम [illegible] वे
त कीनें न्रपति सवाई तें ॥ के सव व्र[illegible] घ[illegible]
तें रा भ्रो [illegible] सें ऐसें हस न अलाकी दि ली
दिली उगलाई तें ॥ जे [illegible] निवा [illegible] दा
नल सौं प्रवलउ षवलु के विपति हिं [illegible] न
को [illegible] ई तें ॥ काली ज्यौं कुचाली [illegible]
कीने देस मैं ते कीरति प्रकास [illegible] उ
जराई तें ॥ [illegible] दोहा ॥ घर घर नर कि [illegible] की
देति असीस नरा हि ॥ पति तुराषि चाह [illegible] बु
री तेरा षी जयसाहि ॥ १९ ॥ टीका ॥ यह राजा की
पराक्रम सव पे उ[illegible] सुक[illegible] की उक्ति है
कवित्त ॥ आयो छत्तउमडि अजीत सिंघ [illegible]
दलु संगलु विकट सुभ[illegible] के समाज कौ क
हे कविहलदत दिली के प्रवल [illegible] निक से १४५

[illegible]कल साजें सभा के सभन कौं ॥ [illegible] सभैं [illegible]
स वैस को अजान [illegible] सभी तें [illegible] की लाज के
रि के [illegible] ॥ यर घर सुर [illegible] किमी [illegible] नी में
स व रैति हैं असी साजय साहि महाराज कौं ए
हास्यरस ॥ दोहा ॥ रवि विंदी कर जोरि ये सुनै
[illegible]म के वैन ॥ भये हंसी हैं सवनु के अति अन
बीहें नैन ॥ २ ॥ टीका ॥ यह हास्य रस वीरहन कौ
[illegible]मयो सखी को वचन सखी सों कवि की उक्ति
[illegible] ॥ २० ॥ कवित ॥ गोप वधुनी के चीर चुरा
[illegible] धाइ चढ़ै हरि ज्यों ही ॥ हाथ सों गा
त[illegible]पाइ के वेसु कुचीस तराइकैं मागति सों
[illegible] ॥ देवादिदा कर को कर जोरे प्रनामु करौ
[illegible] बात रस्यों ही ॥ यों सुनि कैं विह[illegible] भई
[illegible] की अखिया जु कुलीन अनयों ही ॥ २० ॥ दोहा
परा[illegible]दो[illegible] सुरान सुनि [illegible]लकह सीसु पद्
[illegible] सुंक[illegible] मिस[illegible] आई मुसि
कानि ॥ २१ ॥ टीका ॥ यह हास्य रस पौरानिन को
हा[illegible] कवि की उक्ति ॥ २ ॥ कवित ॥ पंडित राज स
भा जे में [illegible] पुरान प्रसंग में भाषी
[illegible]सुन रे पटवी [illegible] परदार सो जो हित ।
को अ[illegible]लो [illegible] ॥ यो सुनि के मुल की मग लो
चनि [illegible] हीडाडी मिलाइ के राखी ॥ नंद जू

१४८ स

...इष्टिले...नषीउ...ग्रीभसिकानि मरस
...रापी॥ २...॥दोहा॥ ...ति...त मारक जो...नि
भयो भये सुता...॥ फिर...॥ ...यजोति
गीसमझै जारज जोगु॥ २४॥ टीका॥ यह हास्यरस
जोतिगी को परिहास कवि की उक्ति॥ २५॥ क
वित॥ २६ भये इक जोतिगी के ग्रह सोधत
सोचित मै कुलमानो॥ डीठि परयो पितु घात
क जोगु विचारि हिये ग्रति ही ग्रकुलानो
जारतु जो गुन लष्यो तव ही मुल क्यो उर मा...
कुलास सयानो॥ भूलि गयो इक पषफूलि...
मुष श्रानं...नहि हिये ग्र पिछानो॥ २७॥ ...
...ग्रह बले ग्रहि मा...मै पारी दतु मरा...
...धध्न दे सभे रसो रहिनाह मुह चाहि॥ २८
दोहा॥ यह हास्यरस वेद्य को परिहास कवि
की उक्ति॥ २७॥ कवित॥ विप्र पधि...ते...मेदि
निमै इक वैद...सो पूरषारथ ही नो॥ ...
नपुसक को...हकाउ धनो धनु लेव कुते...
हदीनो॥ पारे प्रचंड वन...तु है चितु...लि
कल्लोलकों चाउ...वानो॥ ...ति याप्तु नि
वा की तिया पति के मुष वोर चितेह सि...
२३॥ दोहा॥ देवर फूल ल है...सुत उठ हरषि
ग्रंग फूलि॥ हसी कर ति...पा...लिनु दे १४८

दह दीर नुमलि ॥ २४ ॥ टीका ॥ यह पक्रका
यामुदितादेवरसों ॥ यामुदिता है सषीसषीनि
कहा ... सहचारी है ॥ २४ ॥ कवित्त
षेलनमें देवर ... के वे जहीं जही फूललगो
न वला तन ॥ आनंद फुले उमंगि तही फूलि उ
हैं अति कोमल गातन ॥ देह दीर नमलि
अली उपचार ... रैलहै मेहकी वातन ॥
जानति जो जियकी व ... रस विरपतियां
... हैंरति वातन ॥ २४ ॥ दोहा ॥ ... रस वैर
... रसति गावति भरी उछाह ॥ तुही वकु
विलषी फिर व्याह ... के ब्याह ॥ २५ ॥ टीका ॥ य
... नायका बरकीया गुर जनको वचन है
... प्रीति यह व्यंगि ॥ २५ ॥ कवित्त ॥ यस व
... तैअनेक सिंगार वनी ठनी डोले ... अली
... माहि ... वें हसें दरषें वरषे सुष काहु
सठ माहि ... 
की ... धरी चितना है ॥ ... में मंगल साज
... वकू सो रैल है नवसा ... चाहे ॥ देव
र है ... व्याह व ... विलषी सी तुही लषि
... ॥ दोहा ॥ समे
ये कहि ... के ... मरस ॥
... टिपल टैप्र ... तिको न तजे निजु चाल
मो अकरुन कठना करें ... कर तक
लिका ... ॥ टीका ॥ यह परम्ला व में करि

वि·स·
१८९

[illegible]भक्तेर[illegible]वचनको वचने[illegible]॥२६॥कवित्त [illegible]
ग्रोपुकारक[illegible]वि न लीइहे सार भयो सिय[illegible]जे
गजोउ॥ जा[illegible]ति[illegible]लै[illegible]सो[illegible]रकौ
न सुभाउ[illegible]सब कोउ[illegible]आरत सिंधु दया
को समुद्र अनाथको नाथु कहाव तु होउ
[illegible]गयो देषे महामनि रहे कलिकाल क[illegible]रि
आवत सोउ॥२५॥दोहा॥[illegible]रघ सा सले ह
दुषसुष न्हाई हिन[illegible]न॥दई दई कियो करतले
दइ दई सु[illegible]लि॥२५॥टीका॥यह करु[illegible]
स भक्तको वचन अपने मनसों॥२५॥क[illegible]
जो नृदु पल है तो ल[illegible]अकुलाइ लेने
दे[illegible]सास वित वितामिन इलिरे॥सु[illegible]र
जै[illegible]लहे तौ सब[illegible]सावधान रहिं[illegible]ति
म[illegible]के के रबिन फूलिरे॥फिर नर[illegible]त
ये तौ सुषदु षहो[illegible]जात कृ[illegible]करुनामय
की रतिन म[illegible]॥काहे को व[illegible]र तव्य[illegible]सा
तु रहु दई दई दई जो दई सो मली भांतिसों
कबूलिरे॥२६॥दोहा॥[illegible]सुसीस च[illegible]
इले आछी भांत अ[illegible]जा[illegible]सुष चाह
तत्यो ताले दु[illegible]हिन फेरि॥२६॥टीका॥य
ह भक्तको वचन अपने मनसों॥२६॥कवित्त

[illegible]पित ताको कि[illegible]सु[illegible]ये[illegible]ति[illegible]

सि[illegible]नटैरै ॥ रं का[illegible]इ[illegible]पे[illegible]के मे जो

ह नै[illegible]पा[illegible]रिह ै ॥ जे[illegible]न[illegible]ह्लो हिदियै

जगदीस सु[illegible]सब[illegible]इ के[illegible]न[illegible]रै रे

जा पैलयो सु पचाहत है अवता के दयेउ

पकों जिनि के[illegible] ॥ २८ ॥ दोहा ॥ को जे चित सो

इ फिरे जिहि पा[illegible]नु के साथ ॥ मे गुन

[illegible]गुननि कों ग[illegible]न[illegible]पी नाथ ॥ २८ ॥ दो

[illegible]भक्त के कौ वचन भगवान सों ॥ २९ ॥ क

[illegible]निम प्रकार तदीन के बंध ही तु

म[illegible]कौन[illegible]निहारियें ॥ असर

न[illegible]नतुष दह भता ते तेरा द र वा[illegible]

डि[illegible]नमो पुकारियें ॥ जे[illegible]मत[illegible]रे[illegible]

तनु के[illegible]कपुं ज[illegible]है क[illegible]सत स

मो[illegible]कौं उधारियें ॥ को[illegible]चित सो ई जा

[illegible]हो इवि रवा[illegible]प्रभु मे रौ[illegible]अगुन क

छु न[illegible]धारियें ॥ २९ ॥ दोहा ॥ भजन क[illegible]ये

तातै म[illegible]भजै न[illegible]बार ॥ हर भज

[illegible]तिक[illegible]सो[illegible]गवार ॥ ३० ॥ दो

यह भक्त को वचन अप नै मन सों ॥ ३१

[illegible]वि[illegible]ति[illegible]सु[illegible]नी[illegible]सु नी कौ[illegible]

वि॰स॰
१५०

...न मे ...स... प्यो ॥ मे कही वानि
मलीवि... मजि तु ... हित मजि ...
रे ॥ जाति कही ... तिहू रिम ... हि ... तैं म
ज्यो हि तु स... जन यो रे ॥ ... कहै यह स्या न
पु तैं स व ए ... ही वे र ... कहां ते लियो रे ॥ ३० ॥ दो
हा ॥ मे सं मु ... नि रधा ... ह ... गु का ... कां
वसो ॥ ए के रू ... भांति वि वि त ल षि
यै जहां ॥ ३ ... टीका ॥ यह ... ति र स स र्व म ...
वही दे षि ये ॥ ३१ ॥ कवित ॥ नि पट ... सा
... को ... गा रू ... भांति ...
म नु के भा र है ॥ सां ... सो ... ता ...
... हारि य तु जो जो ... यतु सो ...
... रहे ॥ ... यों तो मन मांझ मे तो ...
विचार करि ये ... ज ... मैं ... कां वो नि
रधा रहे ॥ जि त ... त ... रहै ... र न ... ष
वह ए के रू प ... तहां प्राति वि वि त ... रहै ॥ ३२ ॥
दोहा ॥ मे त प ... ताप ... हि ये ... मा ...
म ति क ... हां ... क ... जस्या
मु ॥ ३३ ॥ टीका ॥ यह भक्त को व च न ॥ ३४ ॥ कवित
गावै गुन सेस ... को ध्यावत महेस मु नि
साधि ति समाधि ... भांति ... कैं

ऐसी कोउ विधि मो पै ... ति ...
वसहु रहि त्रिभुवन पति की ... ।। एक वा
स्तुरथा ... हे हमा मु
नि हूं ता पसी तत्वाइ कै ।। व हव ... नाम प्रक
लव कु है दीन वंधु मनि कू रुप ल कु पभि जि
... इ कै ।। ३२ ।। दोहा ब्रज वासिनु को उचितु
धनु जो धन रुचि ... को इ ।। सुचित न ऊधो
सुचित ही क हो कहां ते ... ।। ३२ ।। टीका यह
... वचन प्रयोजनु यहे है ... श्री हु
... नसु चिताई नाही ।। ३३ ।। कवित ।। जा
की त ... पीत पट
... छवि ... है ।। लोचन नल लि
त ... रस कुं चित अलक लि
... सुहाई है ।। ऐसो ब्रज वासिनि को
चितहै धनु ... मति विशेष
रचाई है ।। को ... जियतो लोजो
... वाई है ।। ३२
वार ।। दोहा ।। लोप को पे ... पलय
... गोपी गोपा
ल ।। ३४ ।। टी ।। यह वो ... न गोव
ह न धुरि ... व्रज वासी स ... ।। ३४ ।। कवि
त ।। लोपे ... भागु सुनि सुनि कोपो

वि॰स॰
१५१

[illegible]सुरप[illegible] [illegible]ला के उमगि गुमान मघ[illegible]
योहै ॥ ग्रा[illegible] करि कर[illegible]वारि वाह सव[illegible]कत है
ब्रज को व[illegible] [illegible] चल[illegible] लागे है ॥ मंड
गो राधा[illegible] रखत विकरा[illegible] मू मानो महा
प्रलै ए के [illegible] चलि आये हैं ॥ ऐसे समैं नंद
के सुवन कर गिरिधरि गोप ग्वाल गाइ व
छ सब ही वचाये है ॥ ३[illegible] दोहा ॥ प्रलै करन
वरसन लगे जुरि जलधर इक साथ ॥ सुर
पति गर्व हर्यो हरषि गिरधर गिर[illegible]
२५ ॥ टीका ॥ यह वीर रस गोवर्धन को [illegible]
हरषि पाप दते उ[illegible] सुख ॥ २५ ॥ क[illegible] ॥
प्रलै[illegible] घुमंडि घन आये व्रज मंडल पे गाढे
के ग्रेषे धार[illegible] कल्पनि को ॥ नि[illegible] वि
कल भये सबै गाइ ग्वाल सबका[illegible] के हि
ये मेर [illegible] धीर[illegible] नरतिको[illegible] ताही समें जसु
दा को लाल[illegible] लालु देखि हरषित[illegible]
भयो ब्रज की विपति कों ॥ पातलो उठायरा
ख्यो गिरिवर [illegible] कीनी सलगार
वु सुरपति को ॥ २५ ॥ [illegible] दोहा ॥ कहत
तन देवर की कुवत कुलतिय कलह डरी
इ ॥ पिंजर गत मंजार ढिग कुकलो मुकति १५१

ड ॥ ३६ ॥ टीका ॥ यह भय रस देव को भ
ता सखी को वचन सखी सों ना[...]स कीया
३६ ॥ कवित्त ॥ दे बाहु पत्र चित्त उर में कुमा
र धरि के हमें सुनै सी वात या[...] दिन राति
है ॥ कहै कवि देव यह परम सुसील बाल
क ब्रिर मन ही में सकुलाति है ॥ कहन स
कति काहू आ[...] हिय को भेद उकुलाति
युक टंम के कलरहउ[...]हैं ॥ निकटी किल
व[...]क पिंजरा को जैसे ओसें यह बाल
[...]दिन सकी जाति है ॥ ३६ ॥ अद्भुत रस ॥
॥ दोहा ॥ मोहन मूरति [...] की आति अद्भुत ग
ति [...] ॥ वसति सुचित [...] तरत उ प्रति बिंवि
त [...]होइ ॥ ३७ ॥ टीका ॥ यह अद्भुत रस [...]गव
न की व्यापकता वर्ननन कवि वचन ॥ ३७
कवित्त ॥ ओसान ओरति[...] पुर में ह विजैस
मानंद कि सा[...]पेषी ॥ ताहि विलोकि मनो
ज की मूरति को नरबै आति [...] पविपोषी औ
र कहा कहों सुंदर स्याम की अद्भुत रीति ष
[...]परिषी ॥ अंतर बाबिंद सा[...] हिये को तउ
[...] प्रति बिंवित देषी ॥ ३७ ॥ दोहा ॥ तिय क
न कमनै ती पनी विनु जिहि मोहे कमान
चलचित चैपी चुकति न हि वंक विलोकन

सांवरु ॥ ३८ ॥ [illegible] ॥ यह [illegible] लक्षसखी कोवच
नाइका [illegible] कौं की कचन नाइके सौं सखी
हू सौं संभवे ॥ ३४ ॥ कवित ॥ सी पीत कहा तेश्र
ति ध्रुनुतगा तियह तेरी कम नेतो वरनतम
च नैनि है ॥ कहे कवि [illegible] एती प्रगट विलो
कियति [illegible] टीक मान जिहि विनां हीत नै
ति है ॥ तिन तें कै [illegible] कुटिल कटोह
सर चूंक तिन चं [illegible] तवे रु कोहनति है [illegible]
री याविलो कनि की निरपि [illegible] नौ [illegible] रीति भ
रीमति [illegible] तिहि तं कौ निगमनति है ॥ ३ ॥ दोव
[illegible] उर झनदूट तें [illegible] सौ चतुरी [illegible]
प्रीति ॥ परनि गांठि [illegible] जिन हिये [illegible]
हरीति ॥ ३ ॥ टीका ॥ यह अंतर मद्धनुरा
गनाइका [illegible] वानाइका को वचन सखी
सौं ॥ ३९ ॥ कवित ॥ [illegible] हिमन नौमें दिखसा [illegible]
दई यह रीति [illegible] धांतै ॥ लोचन पीतम
की छबि सौं उरम सवरं [illegible] मै कौ नातो
[illegible] कहै अति चोप [illegible] जु हिय कौ
यह हितु न होतो ॥ वैरिनके उरमै परे गांठि
अनोषि निहा [illegible] समेह कौ नातो ॥ ३ ॥ दोहा
[illegible] मन जो लही [illegible] तिक तीन जो [illegible]
[illegible] उरझौ तक उरझौ रहे हि मराति ४० 

॥टीका॥ यह अद्भुत रस है [illegible] सो नाइका
के वचन नाइका सों ॥४०॥ कवित्त ॥ तेरे उम
गे जैसे उपमांन को कुच [illegible] सो छवि पुंज ति
न पुर मैं न हतु है ॥ ता मैं औरु अद्भुत रीति
तेरे की ताहि सुमिरि अचिरजु उमहतु है ए
तेरे सेनां ते मैं पे कहत [illegible] बैने नैंनो हू तोहि
लषि मेरो मन ज[illegible] बिलहतु है ॥ जद पि अ
ग सखी गीते जी गाइग[illegible] मनु तऊ देख्यो अ
[illegible] अद्भुतु हौ ई रहतु है ॥४०॥ दोहा ॥ या अद्भु
[illegible]त की गति समुझै नहि कोई ॥ ज्यों ज्यों
बी[illegible] सुरंग त्यों त्यों उज्जल होइ ॥४६॥ टीका
यह अद्भुत रस [illegible] वचन [illegible] नाइका
कौ वचन सखी सों है ॥ तरु संमनबै ॥४७॥ क
वित्त ॥ नैननु मा[illegible] सुमि कै बहनै द कि
सोर की ऊ[illegible] सुहाई ॥ प्रान नु मैं तउ माल
ति है कवि [illegible] कहै सुधि [illegible] नं भुलाई या
अनुराग पग चित की कछु अद्भुत रीति
कही नहि जाई [illegible] स्यांम मै सों
ज्यों ज्यों त्यों त्यों गहै [illegible] ललताई ॥४८॥ सा
तरस ॥ दोहा ॥ जम के [illegible] हत रहै रीप लो
इ हिय रहि हरि चितु लाइ ॥ विषय बाप र
हे [illegible] नैन रहि हरि के गुन गाइ ॥४९॥ टीका ॥ य

हसांतरम नक्रकोवचनमनुसोमयस
चारी॥४१॥कवित॥रसरूदिसानमावेरु
मांरुमापिरहोजाकोयाकुकहोवाकोवि
क्रमवौकहांलोप्रभाउरे॥तिनुकालोंतो
रेतीनोचोककेसकलवलोकोउपेनव
चोवकुबिवियेदुउपाउरे॥ऐसेकालक
रिकेपल्योतुमुहतरहोहूसकेहेयहध्व
रिचितलाउरे॥नारिमांनिविसयत्रषानि
परिहरिमननरहरिदेवकेसमरगुनमा
उरे॥४२॥परस्ताविक॥दोहा॥हरिभजेन
मृपोछैगुनविस्तरनकाल॥प्रगटत
निसुननिकटरहेचेगारंगमूपाल॥४३
टीका॥यहभक्तकेवचनगुनानिमानुहै
तवपातेप्रनुहरिहैअरुनिर्गुनलहेतहे
प्रगटहेयहरीतिकलिकालकेराजानु
कीकहियेवोसंभवे॥४३॥कवित॥छलक
हेकविताकसीरीतिप्रेमुअरुचातुरीसाह
नसोउ॥पोछिदेहारहीहरिभजेगुनकोवि
स्तारकरेजवकोउ॥नीकेहाकीयोनलहेगु
नमुक्तकेसोचुकेवादिपचोमतिकोउ
निर्गुनताप्रगटेजवहीअतिहीनिकटेप 

मिटै तव दोऊ ॥ ४३ ॥ दोहा ॥ जोगमनेक ओगुन नरी चहिये याहिं वलाइ ॥ जौ पति संपति दृष्टि मात्र ऊपति राषै जाइ ॥ ४४ ॥ टीका ॥ यह परलोकिक संपति बिना ही रहत तिय हमेश ॥ ४४ ॥ कवित ॥ ओगुन भवुजे नभिमति चंचल याहि कहौ जियको बधि न राषि ॥ नंदकिसोर कृपा करिकैं वह संपति हू विन जौ पति राषै ॥ या विनु काज कछू न सरै मनकी ऊयहै निहचै मति मन जानियै है चित चाहत याहि उपायु कैं वह कुता कन पायै ॥ ४४ ॥ दोहा ॥ या भव पारावारकें उलंघि पार को जाइ ॥ तिय छवि छाया ग्राहनी गहै वीवहि आइ ॥ ४५ ॥ टीका ॥ यह परलोकिक संसार सागर कै पार कैवे को एक स्त्री अवरोधै है ॥ ४५ ॥ कवित ॥ लोभ मोह वीस नाम या न क न व रजहीं असुर मनोज जाको विक्रम महतु है ॥ ऐसो भव सागर अगाध विकसर महाकहै कावहस को ऊलंधि निहहतु है ॥ साहस हिये सेधरि जत न अनेक करि सब को उपाय हि तरि पार भी चहतु है ॥ तरुनी की छवि छाया ग्राहिनी विकट गहि राषति प्रवल तातिसी चहीरहतु है ॥ ४५ ॥ दोहा ॥ जगत जनायो जिहि सकल सो हरि जान्यो ना

हि ॥ ज्यो ज्याविनु जगु देषिये त्याँ षिन देषी
जाहि ॥ ४६ ॥ टीका यह संतरसमक्तकोदृच
ननिर्वेदस्याई भाव ॥ ४६ ॥ कवित ॥ ताहि त
जिकेपाल भ्रम भूल्यो भटकतु बौरेजातेल
हि षेतु लषसुषनकोजातु है ॥ मानिगुन हू
चि हरि भजै जु पियसव साडे जां निवृत्ति वि
षयविषमै जिषजातु है ॥ जिनसव जगते
जे नायो मेली मेली भांति वहे व्यये नजा
नीं जैसी मोहकी उदोतु है ॥ देषो न निश्च
षि नु ही सब दरसायो तिन ज्याषि नु को का
हू भांति देषिवो न हो तु है ॥ ४६ ॥ दोहा कोउ
कोटिक संग्रहौ कोउ लाष हजार ॥ मो संप
ति जउपति सदा विपति विदारन हार ॥ ४७
टीका ॥ यह संतरस भक्त को वचन ॥ ४७ ॥ क
वित ॥ संग्रह कोऊ करौ रिकरौ भरो कोऊ
लछि के लछि भंडारो ॥ कोऊ हजार कजो
रि धरै वकु मोतिल है मन मैं हंकारो ॥
हौ रस रूपा निधि हीनकौ वंधु मुरारु मदैनि
प्रताप उज्यारो ॥ संपत्ति मेरै वही जदुपति
विपति सदा जु विदारन वारो ॥ ४७ ॥ दोहा
जात जात वितु होतु है ज्यो चित मैं संतोषु

होत होत जो होइ तो होइ घरी में सो पु ॥ ४८ ॥

टीका यह परस्ताविक कवि की उक्ति है ॥ ८ ॥ दं

कवित ॥ सुरत के अंत समें जे सोया को मन नु

म व ठोर तें सम टि रहे ग्यान ही वी टेक में

ऐसो मन सदा जो पैर है एक रस आपै को ह

को भ्रम तु [illegible] है चे [illegible] सी घ्र [illegible] टेक में ॥ संपति

के जात जात जे सोया को चित्र तुटुरि आवतु हैं

समझि संतोष के विवेक में ॥ [illegible] है कवि ह्व

ले [illegible] होत होत होइ तो पि होइ अनया

से [illegible] मुक्त घरी एक में ॥ ४९ ॥ दोहा यह व

रियां नहि और की तर्कै रिया वह सो धि पां

हे नाउ चढाइ जिहि कों नै पार पयोधि ॥ ५० ॥

सों तर सभक्त को वचन मन सों ॥ ५१ ॥ कवित

सागर स्य थाह और भारी विकराल गाह ज

हां पि पहार हू तें दोर घने हारि है ॥ देखि नड

राहि के नराहि मति बार बार बावरे तऊ न

[illegible] के कछु वे विगारि है ॥ वां [illegible] जिन सिंधु

[illegible] दीन नु को बंधु [illegible] नापति कुं जर

की कीनी धरहरि है ॥ राम महाराज धर्त वि

रद की लाज सोइ साजि के जिहाज कों न

वाहि पार करि है ॥ ५१ ॥ दोहा पति वारी मा

नां प्रकार और न कछु उपाउ ॥ तारसंभ

वि॰स॰ रपयोधिकोंहरिमावैकरिनाउ॥प०॥दोहा॥सां
२५५ तरभक्तकोवचनमनसों॥प०॥कवित॥ज
हांकांमक्रोधमदरोरूनतिमिंगिलहेसक
तुनक्रोहपाप्पहिरिवेकोउरे॥सोचुमसो
सलिल हरितामेंलोभकाहिग्रहआवि
करालभारीभौरतृकौभाउरे॥हूसकहे
पसीत विकेदेवसागरमेंग्रवकछूकै
रुउपाउचित लाउरे॥मेरोकहै मानिया
हिसुषहीतेरोपतवारीकरिम..।।हरि
मावैकरिनाउरे॥प०॥दोहा॥हरिकीजतमु
मसोयहैवीनतीवारहजार॥जिहितिहि
भांतिहरैरहोपरोरहोदरवार॥प०॥दोहा॥
सांतरसभक्तकोवचनभगवानसों॥प०॥
कवित॥दीनमतिगौरुमकोऊदयानिधि
तेरीइएकनरोसागहैहौ॥वेदपुरानतु
म्हीसुनिसाषिहैवैधसिंधासकलोमल
हेहौ॥री नउमारनवारहीवाप्योंहा[illegible]
नतीकरजोरिकहहौ जेसेहूतेसेउस्यो
रूपसोदरवारमुयारतिहारेरहेहौ
प०॥दोहा॥मनमोहनसोमोहकरितूघन
स्यामसम्हारि॥कुंजविहारीसोंविहरिगि
धारीउरधारि॥प०॥टीका॥यहभक्तको २५५

वचन न मन सो ज्ञ हृ मान पती नाइ कासों
संषी को वचन कहे तो समवै ॥ प ॥ [illegible]
मेरो कह्यो मानि मन मोहन सों मोकू क
रि सुंदर व [illegible] घन स्याम के सोंस म्हारि ले
ब्रजवन कुंज के विहारी सों विहारु कू
गिरिवर धारी [illegible] कार उर धारि ले
मूलि क्यू के चित व्यथा वा [illegible] चावै म मि
क है [illegible] यह सुमति विचारि ले ॥
थिर न रहतु धन जोवन न मन तन तनु जा
नि व्रजजीवन सों प्रीति पतुरूपारिले ॥ प ॥
दो ॥ जप माला छाप तिलक सरै न एको
काम ॥ मन कांचे नाचे वृथा सांचे राचे
राम ॥ प ३ ॥ टीका ॥ यह परस्वा विक जो ले
मन में कचाई है तो ले ऊपर को म्बा एक
मना होउ आवै ॥ प ३ ॥ कवित्त ॥ टीके मनो
हर माल वनाइ के माल धरी उर मैं फि
नि सीलो ॥ छाप निसी व न नौ सिडि त ध ग
ह्यो न लगाइ रह्यो किन कोली ॥ ना
चे लु नाच वृथा के वि [illegible] कचाई रही
उर मै भरि तोलो ॥ काज कछू इहि जैप स
रे नहि सांच रच्यो मति नाहि नै जो लो ॥

॥दोहा॥ अपने अपने मन लगे बादि मचा
वत सोर ॥ ज्यों त्यों सब को सेइबो एकै नंद
किसोर ॥५४॥ टीका॥ यह भक्त को वचन अ
रु सर्व वेदान्ती को एक सिद्धांत है यह
सिद्धांत ॥५४॥ कवित ॥ जग में अपने अप
ने मत लागि करें वाद अपने अपने मैं स
बको वह सेइबो नंद को नंदन व्यापक है
जु चराचर मैं ॥ बरसैं न मते कि[illegible] रकं
हूं सब ग्यानि समातु है सागर मैं ॥ जिय
सोच मैं काहू की सेव करो परि आइ मि
लैं नट नागर मैं ॥५४॥ दोहा॥ पाइ ल पाइल
गी रहै लगे अमोलक लाल ॥ भोउ दहू की
भासि है बेदी मिनि भाल ॥५५॥ टीका॥ यह
अन्योक्ति नीचु है अरु धनि कुहे पैवं है नी
चि पैथे रहै है गो जे रूप लैमान सु है अरु
निर्धन है तउ उंचे ही रहे है गो ॥५५॥ कवित
जो जाहि होर के लाइक है तिहि को बस
तु तिही पल कै है ॥ देषो निहारि सिंगार के
भेद मै देषियै बात प्रतछ यहै है ॥ जद पि
लाल अमोल लगे तऊ पाइल पाइ नु
पी लगि रहै है ॥ है वह मोड इस्की विंदुली तऊ

नामिनि भा नही दैछवि पै है ॥ ५५ ॥ दोहा
असौ तहयो नाइ रह्यो अंकनु मे वतइ के ग
नाक वासु वैसर रलिह्यो वसिमुकतन के
सग ॥ ५६ ॥ टीका यह परस्त्री विवा भक्त की
वचन प्रयोजन यहै इकरंग ... तिस व
तरयो सुत स्यो नाही ... वै ... रिजु का ह
के समान ही तिम नाक वा ... वापी का कु
ध्वनि ... तै वद को दोष ... होतु है अगु
का ... कहै तो संभवै ॥ ५६ ॥ कवित ॥ संग
लाग्यो एक रंग ... तिहा को सेव तुम रोसो
धरि धरि जिय ऐसो नै सुलह्यो है ॥ कहै क
विलु ... तासो सब को कहै तु है अजहू लो
त स्यो नाही त स्यो नाही रह्यो है ॥ प्रेम के प्र
माउ की इहा लो ... भिका ई जाके चित आ
ई तिन ही परम पद गह्यो है ॥ विमल सुदार
मुकतनि संग वास ल ... नाक को निवार
... वी वेसरि हू गह्यो है ॥ ५६ ॥ दोहा ॥ अनि
यारे दीरघ दृगनि किती न तरुनि समान
वह चितवनि और कछु जिहि वस होत सु
जान ॥ ५७ ॥ टीका यह परस्त्री विकल्प मो ति
हू मै वनै कवि की उक्ति सषी को वचन न
इकसो ॥ ५७ ॥ कवित ॥ जगत मे मवसो

वि·स·

रतसबप्रीतिकि[illegible]पैप्रीतिरीतिजानतजेप्री
ति[illegible]निधानहै॥ऋतुसिंगारहूरचिपचिसब
कोउपैसिंगारकरिबेकेभेदभाउमैबिना
नहै॥ग्रनियारेकजरारेदीरघदृगनिवा[illegible]
केतौनत[illegible]निमहिमंडलमैंश्रानहै॥प्रेम
भरीबिहचितचनिकछूश्रोरहीहैहोतबस
जाहिनिरषतहीसुजानहै॥५७॥दोहा॥जो
चाहेचटककै[illegible]घटैमैलोहोहिनमित्र॥रज
राजमनछुवाइतौनेहचीकमै[illegible]॥५८
॥टीका॥यहपरस्ताविकमित्रतामैंरजोगुन
नलागैतौसुद्धहैमित्रकौवचन॥५८॥क
बित॥जगतमैंसबहीतैंमहँगाहैप्रीतिए
कसांबिनुकोऊताकौलेसहूनदरसैय
हीहैजतनकबि[illegible]याकेपालिबेकौ
मानौमतिहोसुजानत्र्याबिहूनदरसैजो
नेहचीकनेहियेकीयेकरससुछैवाह
तेचटक[illegible]उजराईअतिसरसै॥तापैका
हूभांतियाहिमैलैनतिकरैमातश्रेसो
षिजैसैरजराजमनपरसै॥५८॥दोहा॥जोसि
रधरिमहिमामहीलहियतिराजाराइ॥
प्रगटतिजडतात्र्यपनियेसुमुकटुपहि
राइ॥५९॥टीका॥यहअन्योक्तिजोग्राछो

मानुसु है भलेग्या दरसाइके ताहि निरा
दरसौं राषैं तहां कहियै ॥ ५४ ॥ कवित ॥ गौवु
रूभांति जवाहरनलेवकूं भांतिसूं भोप्रति
हीशुषविछाई ॥ जाकी जगम्मगद्योति प्रभा
मनि। जाहि लषै सबकोल लचाई ॥ जाहि
धरे सिरभूपनु की महिमंडल मैं प्रभुता स
रसोई ॥ ता मुकुरै पगमें पहरै प्रगटै तवु
वारी बैठार रषताई ॥ ५५ ॥ दोहा ॥ समतिमा
नै मुखनतजी दियें कपट चित कोटि ॥ जो गु
न हीं तो राषियें आंषिनु मांझ अगोटि ॥ ५
॥ टीका ॥ यह पर स्लाविक राजनीतिमें संभवै
अरु नाइकानेदमें सषी को वचन नाइका
सौं कि तू या हिष्णा ईमति आंषिनु मे राषे
६० ॥ कवित ॥ मुकत ईमां निये नृदेइ जो क
पट वितु को टिकी तऊ छोरिवो नं आंमि
ला षियै ॥ की जिये हमारो ह घो ही जिनु
आनि कहू वार वार वात तमभरू इय है
मांषियै ॥ कहै कविकृष्ण ही कहत स
याजै सब देषौ राजनीतिनके ग्रंथमें सा
षियै ॥ जांनियै जो गुन हीं तो आंनियै न
आदरनीके ही अगोटिकरि आंषिनु
मैं राषियै ॥ ६ ॥ दोहा ॥ उचितें चित हल

नचलतिहमतिनहुकतिविचारि॥लष
तोचित्रपित्रलषिचितैरहीचित्रंलोनारि॥
६१॥टीका॥यहनाइकानाइककोचित्रनेष
तदेषिचकितह्वैरहीहैसुसषीसोंकहति
है॥६१॥कबित॥ठाढीठगीसीहलेनचलैजि
यसोचगहेवहुभांतिविचारति॥मेरोईहैवि
धोत्र्यानवधकोयहैनिरधारहियेनिरष
रति॥योचितमैंउचिताईगहेनहलेनहुके
सुतिमेषनटारति॥चित्रविलोकतयोंचि
वलोकिरहीतियचित्रलिषीसीनिहार
ति॥६१॥दोहा॥दहलैजपोढिंगगेहपतिन
ऊनेंहुंनिबाहि॥नाकोउंत्र्यंषियनुहीइतैग
ईकनषियतुचाहि॥६२॥टीका॥यहनाइ
कापरकीयाचेष्टानाइकुसषीसोंकहतु
है॥६२॥कबित॥मोपैसुधरुकहतेनवंनेचि
तचारुरीजैसीविहारिगईहै॥मैजवतेनि
रषीतबतेउरमैनकेसाइकमारिगईहै॥
यासुजरूपतिदेहलग्योतकूरीतिसनेह
कीपारिगईहै॥वाचीयेत्र्यषिनुसोंइहित्र्यो
रकनोषीचितौंनिनिहारिगईहै॥६२॥दोहा
नेलगियामनसदनमैंहरित्र्यावेकिहिवा

ट॥ विकल जटे जो लौ नि पट खुटेन कपट कपाट ॥ ६३ ॥ टीका ॥ यह सो लरस भक्त को बचन ॥ ६३ ॥ कवित ॥ सरल सु भाउ अहिसं तनु के सग सहिसं ग्रहि धर मु लागि भगतु के घाटरे ॥ ग्रो छी सो रुपाइ गुन गाइ कत नाम पके पहिं सम गाइ तो सो क हतु निरा टरे ॥ क हि का बि हल हि दे खि ग्ये विथ रि मिन मंदि रमिहरि ते लों आवे विं हिवा टरे ॥ जटे है वि क ट ग्रे ष्या वाद के जे जोर नु सो जो लो थे षु ट तन नहि कपट कपाटरे ॥ ६३ ॥ दोहा ॥ करो कुट तजग कुटल ताल नैन दीन दयाल ॥ अभी हो कस सरल हिय बसत त्रि भंगी लाल ॥ ६४ ॥ टीका ॥ भक्त को बचन भगवान सो ॥ ६४ ॥ कवित ॥ चाह तहो अपने हि यमां भ बसायो तुम्हे प्रभु जैसे कुते से ब्यानकु वात कहो भिगो जग सो मिल एक लत आवेन बैसे हो कुटिला ई तजो नक पानिधि जानत हो अपने जिय ग्रैसे ॥ दीनद[illegible] केसे वत हो उन मधो भगे बसि हो तु कैसे ॥ ६४ ॥ दो हा ॥ सो त्यो सु सरव धु पुरुह थी जानि कनै टि बो सो त्यो मु सरव धु पुरुह थी जानि रूपरह चटै लगि लत्यो मागन सबु जग ग्रोनि ॥ ६५ ॥ टीका ॥ यह परस्त्रा वि कम मने

कीनीतौसरफायेबरचग्रधिकमयोम
दिलोउत्ति॥६५॥कवित॥सुंदरीसुहाईसु
कुमारससिवदनीकीसोभाकीनिकाईक
विकहेकोवपानिकें॥ननटजितनीलसु
निरपरीहानितसवैग्रतिहीसंगमानिहैया
केवैसवानिकें॥मनुरसैसरफाविचारि
सुषमानिहियेकनहैबोसोभोवहुथुरी
थीजानिकें॥कहेकविहलसवाकोरूपग्र
वलोकिवेकोलोभलषिमांगननमतुल
ग्योग्रानिकें॥६५॥दोहा॥सवैसुहायेईलग
तसवैसुहायेठाम॥गोरेमुषवेदीलसैंग्ररु
नपीतसितस्याम॥६६॥टीका॥यहग्रमोक्ति
ग्राछैगोरकौप्रभाउजुप्रापतहोइसुग्रा
छोहीलगे॥६६॥कवित॥नीकेकेसंगग्रलीं
कोउनीकोलगैयहवातप्रतछिनिहारी
ठौरसुहायेवसेतेंसुहायेनगींसवहीउम
गैछविभारी॥कैसोवढावतिमोउहियेनव
नागरिके साहमेंगारी॥गोरेलिलार
लसेविंदुलाससितरातीहरीपियरीग्ररुका
री॥६६॥दोहा॥सीतलतरुसुवासुकेघटैन
महिमामूर॥पीनसवारेज्योतज्योंराजानि
कपूर॥६७॥टीका॥यहग्रमोक्तिकोउग्राछि

गुनी है भलौ मान न सुरेश जू को ऊन करनै वा को
सत कारन कियौ तहा कहियै ॥ ६७ ॥ कवित्त ॥
जो सब भांति रच्यो गुरु वी विधि ता को वैठे
जात ते सोई तौरा ॥ कुल कहे विनु जानै अ
जानन कै पैव हू आयु थल है न हियौ रस पी
न सरोग ते को हू कत नै छांड़यो कहू जो १
जानि के सो रा ॥ सोत लताई सुगंध घटे य
ह को उ करै जिय मैं जिनि भोरा ॥ ६७ ॥ दोहा ॥ कै
से छोटे नर सुतै सरत वडेनु के काम ॥ मठो
र मां मो जात क्यों कहि चूल्हा के चाम ॥ ६८ ॥
टीका ॥ यह परस्ताविक छोटे ते वड़े की गरज
न सरै कवि की उक्ति ॥ ६८ ॥ कवित्त ॥ जा को १
जितो जगदीस रच्यो वलु ता के फवैसि है ते
सोई भारौ ॥ वात विचार यहै अपनै जिय को
उ हृपा मति सो चु विचारो ॥ छोटे से काम स
[illegible]नसरै वंर कैतो ऊसा हृगु कै पचि हारो
को टिक रै पर चूड़ा के चोमखी क्यौं हू मठो
[illegible] जात नगारौ ॥ ६८ ॥ दोहा ॥ [illegible]पति के स
[illegible]सनर नंवत ऊ कु नु इक वानि ॥ विनव
[illegible]तर कुच नीचें नर न मैं विभो की हानि ॥ ६९ ॥ टी
यह परस्ताविक कवि की उक्ति ॥ ६९ ॥ कवित्त

वि॰स॰
९६

केसवोसुदेसमंतरहेसदाएकरसकहिक
विन्हलगहेएकसीपेवानिहे॥ज्यों ज्योंवढ
वारिलहेत्योंहात्योंनघटितोऊसकलप्र
वानयहबातकरआनिहे॥औरदेषोंब
नऊरोंजेप्रकनाचनरअकेरेरहतकरैको
स्कीनिकानिहे॥सेपतिमहतत्योंत्योंरह
ततनैनैंफेरिआपुहीनरमहोतभयेविनी
होंनिहे॥९९॥दोहा॥वडेनऊजतुविनुगुननु
विरदवडाईपाइ॥कहतधतूरेसोंकनकु
गहनेगढ्योनजाइ॥१००॥टी॰॥यहपरस्तावि
ककविकीउक्ति॥१॥कवित॥वडोजोवना
योजगदीससोववोईकेहैताहीसवुजगु
नाहेआदरुवडाईकैं॥कहेकविउसंवढ
तिसोईलहतुमोलुकंचनकोदेषोकोनकै
योवेरताईकैं॥छोटीजोपेवडेगुनविनुयो
हीवडोहोतुनाउकीवडाईहहिमंडलमें
पाईकैं॥तोपेवहकनकधतूरोऊकहावतु
हेकोनपहरतकोऊगहनोंगढाईकैं॥१॥
॥दो॰॥गिरतेंऊंचेरसिकमनवूडेजहांहजार
वहेसदापसुनरनकोप्रमपयोधिपार
१०१॥टीका॥यहपरस्ताविकसमुद्रकीआंषों
काईकविकीउक्ति॥१॥कवित॥जाकोप्रमा

१६४

न परै कुछ ग्राजु लोकाहू न पार लहाहि छ
मक है सु ग्रगाध इहाल गिंछ मे हू कोन न
पावतु था है ॥ मेह तैं उचे रसा पनु के मनु बू
डुग्रने कै ग्रचंभो महा है ॥ सोप सुपा मूरलो
ग नु कौं व हं से म स मुंदु प गा र सदा है ॥ ७१
दोहा संगति दोषु लगै सब नु कहै ति साचे
बैन ॥ कुटिल बंक भ्रु संग भए कुटिल बंक
गति नैन ॥ ७२ ॥ टीका यह पर स्तावि क संगति
कौ दोषु लग्यौ या ह स्टांत कवि की उक्ति ॥ ७२
कवित ॥ ग्रौर तैं जैसे ई संग रहै जु गहै सु भल
विधि वानि बहियै ॥ संगति दोषु लगै सब
कौं विधि है यह ग्रादि ग्रनादि सहियैं ॥ छ
मक है जग मे यह बात प्रत छ प्रवीन नि
ग्रवहियै ॥ बंक भ्रकुटिनु कौ संग पायकै
नैननु हूं गति बंक गहियै ॥ ७२ ॥ दो॰ संगति
सुमति न पावहीं परै कुमति कै धंध ॥ राषह
मेलि कपूर मैं हींग न होइ सुगंध ॥ ७३ ॥ टीका
यह प्रस्तावि क जो ड बुद्धि के ठौर मैं पर्यौ
ताकौं संगति तैं सुबुद्धि नाहीं होति ताकौ द
ष्टांतु कवि की उक्ति ॥ ७३ ॥ कवित ॥ जो गुन र
हत कु होइ तौ गुन गहै जो वाहि सो गुन मि

खाइ ये तो ओगुन गहा करै॥ लोक लीक लै
पै एक पाप ही की पोक जाहि ठौ कवात ए
को नाहिं चोक नै रहा करै॥ लाज न कहै को
एकी नै को नहीं दूकी न कटे की औरु सुनो।
औवंदियै महा करै॥ संगति प्रसंगतै बुरी ऊ
मत लौंहो इ देवी वै सेवा ऊँ असगत कौ संग
ति कहा करै॥७३॥दोहा॥ वढत वढत संप
ति सलिल मनु सरोज बढि जाइ॥ घटत घ
टत सुन फिरि घटै वरु समूल कुम्हिलाइ
७४॥टीका॥ यह परेस्ताविक कविकी उक्ति॥७४
कवित्त॥ मदन सरोवर मैं सुष को हिलोर तु
सौं संपति सलिल ज्यौं ही ज्यौं ही सरसातु है यं
ह तो प्रगट संबु जगतु वषानतु है मन रूप सरे
ज सौं ही सौं ही अकुलातु है॥ जब आनि प
रै कोऊ आनत फुआरि नित वजल को प्रमान
फिरि निघटतु जातु है॥ कहै कवि हलवह
क मन वढ्यो सुवढ्यो वपो हूं पे न घटतु स
मूल कुम्हिलातु है॥७४॥दोहा॥ समै समै सुंद
र सवै रूप कुरूप न कोइ॥ मन की रुचि जेती
जितै तित तेती रुचि होइ॥७५॥टीका॥ यह पार
स्ताविक कवि की उक्ति नाइका पे रहमैं सषी
कौ वचन नाइक सौं॥७५॥ कवित्त॥ सुंदरूप

कहो किहिं कामहे जो अपने चित में न हि
आवे ॥ जो चित मांझ कुरूप बुझ्यो तो बहेउ
रकै अनिमो दव ढावे ॥ हो तिसमे ही समेंस
बसुंदरि रूप कुरूप न को कुलषावे ॥ जाकी
जितीजिहि और व ढै रुचि सो तिहि ठौर रति
ती रुचि पावे ॥७५॥ दोहा ॥ मूड चढायें हू रहे
पर्यो पीठि कच भारु ॥ रहे गरें परि राषिबो
तऊ हियें पर हारु ॥७६॥ टीका ॥ यह परस्त्री वि
कक विकी उक्ति ॥७६॥ कबित ॥ काहू कें मूड
चढै रहि येन महे गहिये चित में चतुराई ॥
नीको मनो रहियें जो गरें परि तौ लहियें अ
धिकै गरुवाई ॥ मूड चढे हू पूरे रहे पाछें
कि वंधन कीमति कें सुनि पाई ॥ देष्यौ रहे
जो गरें रूप स्यौ तौ बिहार करे छतिया पे ह
मई ॥७६॥ दोहा ॥ मो परि रिस्मन भाव रि में रैंक
री को षिकं वादु ॥ अपनी अपनी देव को
छुटे न सहज सुभाउ ॥७७॥ टीका ॥ यह पर
स्त्री विकक विकी उक्ति ॥७७॥ कबित ॥ काहू
बुरे लगो काहू भलै लगो खोटी परी जि
य में धरो सोऊ ॥ लाष नु क्यों न करो वक वाउ
लोक कि लोक जु होइ सु सोऊ ॥ और तें

वि॰स॰ जाकौपर्‍योजुसुभाउवहैनिवहैनिवहैजग
१६२ जोऊ॥आपनीटेवकौसिद्धसबाउछुटैनकि
तोकरोकोऊ॥७५॥दोहा॥जितीसंपतिक्रपनि
केतेतीसुमतिजोरु॥वढतजातज्योंज्योंउरज
त्योंत्योंहोतकठोर॥७६॥टीका॥यहपरस्तावि
कक्रपनकैजितनीसंपतितितनीयेक्रप
नताताकौदृष्टांतकविकीउक्ति॥७७॥कवित्त
कौनहूंभागप्रभाइकेदायसौंसंपनैजोक
हूंसंपतिपाई॥त्योंवहहोतपुरोईकठोर
विलोकियेसूमविकीभरसाई॥ताहिनिहा
रिकलोचहियेकछुवातयहैकविकेजिय
आई॥ज्योंज्योंउरोजवढैतियकेउरत्योंत्यों
गहैअतिहीकठिनाई॥७८॥दोहा॥पियविछु
रनकोदुसहदुषहरषुजातन्योसार॥दुरजो
धनलौंदेषियतितजतप्रानउहिवार॥७९॥
टीका॥यहपरस्ताविकहरषदुषदोउएकत्र
कविकीउक्तिनाइकाभेदमैंसषीकौवचन
सषीसौं॥८०॥कवित्त॥नेहलग्योमनभावन
सौंवसिवोससुरारिकौजामैंसुहानौ॥नेह
रतेकोऊआयोचलावनताहीसमैंसुनिजो
अकुलानौ॥त्योविछुरेदुषुहोतमहासुष १६२

माइ केकों बिलसोचसमानों ॥ प्रातकों पंक
जु मैं तिय कों मुष फूल्यौ कंकछक क छंकु जि
लानों ॥ ७९ ॥ दोहा ॥ वर घर डोलेत दीन कै ज
न जन जाचन जाय ॥ दियै लोभ बस माच
बनु तषु पुनि वडौलमाय ॥ ८० ॥ टी ॥ यह
परस्ताविक लोभ की अधिकाई कवि क
हत ॥ ८० ॥ कवित्त ॥ ठौर ही ठौर रचि घातकि
ये लषु ताजित ही तित आपु प्रकासे ॥ जाच
तु हैं सब ही पर जोइ वनाइ हियें वकु भांति
दुरासे ॥ लोभ कों ऐसो धरैं च समान रूनै
न नुपेम अ टफै सुवक्र पासैं ॥ जदपि है ऐसो विल
छिन रूं वह याहित ऊपाति दीरघ वासे
८० ॥ दोहा ॥ काल वृत तु इती विनाजु रै नग्यान
उपाइ ॥ फिरि ताकैं टारेलसें पाकें पेमल
टाइ ॥ ८१ ॥ टीका ॥ यह प्रस्ताविक नीति प्र
सके परिवक्त करिवे कों उपाइ कवि की उ
क्ति ॥ ८१ ॥ कवित्त ॥ मंदिर लटा उ कों बनायो
चाहै कोऊ सो तौ विनु कालवृत कैसो हूं ब
नत नु बानि है ॥ सो ही प्रेम मंदिर कों काल
वृत इती ताहि वीचि दियें विनु कहो कैसे
ठिकतानि है ॥ कहै कवि हस्त परिपक्व
हो हि दोऊ तन वस कल प्रवीन यह बात

उरझानि है ॥ कालकूट हती वीचु राखिये
न एकु आक टरिये न जो लों तो लों सुख हो
की हानि है ॥ ८१ ॥ दोहा ॥ वसिहि किनइ हिय हिलिं
पुली जब तव बीरु विनासु ॥ वचै न केहीं स
वी लहु चील्ह घोंसुवा मासु ॥ ८२ ॥ टीका ॥ यह
परस्ताविक रूपी को वचन नाइका सों ॥ ८
कवित ॥ आपनी गों सब कोऊ विचारतु मे
द कें छूय ह पायो है तें हुं ॥ होइ जै पाछे परे
पछितातो ओरी याते कं घोस मृगा इकें मेर
मूलति या वहि यां पुत्ली के हिय केतन फेरि
मिले सपने हुं ॥ कैसे हू राखौ पै चील्ह के
घोंसुवा मासु अछूतो वचै न हि कें हूं ॥ ८२
दोहा ॥ गुनी गुनी सब कोऊ कहे निगुनी गु
नीन होतु ॥ सुन्यों कहुं तरु आरक तें आर
क संमानउ दोतु ॥ ८३ ॥ टीका ॥ यह परस्तावि
क है कछु नाही अरु सब कोऊ कहैं सो कह
त है महाक हिये कवि की उक्ति ॥ ८ ॥ कवित
विनु करतुति रूढी पदवी लही तो वेह नी
को न लगति उपहास पेषियतु है ॥ गुनी गु
नी सब कोनु कंहत पुकारि कहुं निगुनी
गुनीन मांझ लेषे लेषियतु है ॥ जागतवि
दित जासों मीठो कहियतु सोई निपट वि ५

षमविभुखबरेप्रियतुहै ॥ जऊपेऊप्राक
कोकहावतुअरकुतऊअरकसमोनको
उदोमुहेहिषियतुहै ॥ ८३ ॥ दोहा ॥ मीतनतीतम
लीनकि जोधरियेधनुजोरि ॥ बाग्रेषरचे
जोतुरेतोतोरियेकरोरि ॥ ८४ ॥ टीका ॥ यहप
रस्ताविकजोसमक्कैधनुजोरेतोउचि
तनाहीयातेबाइवीषरचिवोमुष्यहै ॥ ८४
कवित ॥ जौपैलगीतमयेहीजुरैधनुतौष
हजो रिवौ काहूनभावै ॥ तोउसुनैसवभ
तहकै भाजतकोजगमैं अतिसमकहावै ॥ भी
तमतौजियमैंधरिकैं यहजोरिकरौ रिष्रौ
जेवमित्रभावे ॥ बाग्रेदियेषरचैंजुजुरैकै
घूसोअतिमोदहियैंउमगावै ॥ ८५ ॥ दोहा
जदपिसुंदरसुघरकौंसगुनीनायकदेह
तऊप्रकासकरोतितौ भरियजितौसने
ऊ ॥ ८६ ॥ टीका ॥ यहपरस्ताविकहेअरुनी
इकाभेदमेंसषीकोवचननाइकासौंकि
तेरोसुंदरतनुहैगुनमंडितहैपैनेकुचाहि
यतुहैअैसैनाइकंहूसौसषीकोवचनस
मझे ॥ ८५ ॥ कवित ॥ यद्दपिचारुगहैचिकन
नाईसुठारहृौसुघरोपुनिहोऊ ॥ छलके
हेवकुमंडितकैगुनजोतिजगाइधरौकि

निसोऊ॥ हेयवबातप्रसिद्धसबै जगएक
सीरीतिनीवाहतदोऊ॥ नेकुमरेविनदीप
कुदेकुप्रकासकरेतकितोकरोकोऊ॥ ८५
दोहा॥ अैपरेषोकोउकरेतुहीविलोकिवि
चारि॥ किहिनरकिहिसरराषियोअैबढे
परिवारि॥ ८६॥ टीका॥ यहपरस्त्रीविकसंसार
आहारपेंअतिबढेतेंमदेष्यौंके विकाउ
क्ति॥ ८६॥ कवित॥ केतेभयेनरकेतेभयेस
तजातकछगननानहिभाषौ॥ ज्योंज्योंबढे
अनुमानुगहेमनजादरहेतवहीलगिया
षौ॥ कोनकोनपरेषोकरेपरमानुकहा
परतछकोसाषौ॥ पेअतिकोबढवारभयें
अपनापरिपारिकहोकिहिराषौ॥ ८६॥ दोहा॥
पिअमनरुचिकेवोकठिनतनरुचिहो
तसिंगारु॥ लाषकरोआबिनबढेवहे
वढायेवार॥ ८७॥ टीका॥ यहपरस्त्रीविक
नायकाकोवचनसषासोंसोतिकोंसिंगा
रुदेषियाकेंगर्वभयोसुईषासोंकहति
हेअरुसषायाकेचित्तकोभ्रमुनिवारेन
करेतोसंभवे॥ ८७॥ कवित॥ वेव्योंकुंज
सदनविलोकतुहेतुवमगुतेरोनामभेो 

न
हमनेहूं बार बुझाली||उठि चलि हैं लि
मिलि मानि रंग रागौली लीजै ली मेरो कह्यो
मानि मन गवाति कहीं रहौ||पियमन व
स करिबे ही है कठिन ग्रह तनके जुति मर
सति साजै हूं सिंगार ही||कहै कवि हम
कीजै लाष कुजतन तनकै लोचन नै वह न
त वढायो वढै वार ही||८७||दोहा||नीच
हिये कुलसे रहे गहे गौरके पोत||ज्यौं ज्यौं
माथे मारियतु त्यौं त्यौं ऊंचे होत||८८||टीका
परस्तावि करकविकी उक्ति||८८||कवित्त
जनमते कवहूं न लाई सौ नतें टराई ज
गत मै कोटि कधिकार धारियतु है||मह
जमुआइ परका जलै विगारि डारे जो
ए न गहत गुन पुंजहारियतु है||नाचन
र एते प्रिय हिये मैं कुलसे दूर है गौ दकै सुभ
ऊ गहे यो निहारियतु है||जित ही विका
ढूढै तित ही दुरकि जाहि ऊंचे होत तो
त्यौं ज्यौं ज्यौं माथे मारियतु है||८८||दोहा
कोरि जतन कौउ करो परै न प्रकृतिहि
बीचु||नलवल जल ऊंचौ चढे अंत नीच
को नीचु||८९||टीका||यह हष्टांत कि जाकी

वि॰स॰
१६४

सु भाउ नीच होइ सो पीव ढ वारि कि होइ
पे तु भाउ न छूटै कवि की उक्ति ॥ ८ ॥ क
वि त ॥ और तें जे सो सुभ उपम्यो वह सार
प्रकारन के सेउ कै है ॥ कोरिक कौ ग उपा
इ करे क बिद्रुम के है निरधार यहै है मे
जग मे लखियें परतछ करो जल जंत्र नि
ते मिहचे है के तो ऊंचो चढे नल कें व
ल नीर तक ढुरि नीचो ई ऐ है ॥ ८९ ॥ दोह
जाके एक न एक हूं जग व्यो साइ न कोइ
सो निदाघ फूले फले आक डहडहो होइ
९० ॥ टी ॥ यह अन्योक्ति का हू के धन काम
नाही आवतु तहां कहियें ॥ ९० ॥ कवित ॥
ग्रीहम ना का हू के च ढिवे जो गन छीर ग्रैप
को उपेट भरे ॥ फूलन नौ तें फलनि तें दलनि तें
जग मे न हि का हू को काजु सरै ॥ जौ ए तुम
लिये ० उहि और पथिकन को ऊ बरा
म करे ॥ हो तुहस्यो यह आकुनिका हु निदा
घ समे व ह फूलै फरै ॥ ९० ॥ दोहा जो कौन
ही यह तमु वे हैं कियें जुं जगत निकेत ॥
हो तु उदे ससि को भयो मानो ससि हरि से
तु ॥ ९१ ॥ टीका ॥ यह चांदिनी को वरनन वि

योगिनि कौ वचन कवि कौ उक्ति है ॥ २१ ॥ क
वित ॥ [illegible]रि रह्यौ ग्रंथ धवरथमें धाग्रमें स्यौ
जि[illegible] रूठयौ है ॥ ज्यौं ही विलोकि वियो
गी उ[illegible] नु रागिनु कौं मनु मोद मयौ है
हो सन जो कवहे तमु है यह जो नैसवेज
गु छाय लयौ है ॥ हौं तु उदौतु लख्यौ सखि
कौ गेहिं सुकमनौ तनु संतु मयौ है ॥ [illegible] ॥
दोहा ॥ चटक न छोडतु घटत हूं सज्ज
न नेहु गंभीर ॥ फीको परै न वरु फटै रंग्यौ
चोल रंग चीर ॥ २२ ॥ टीका ॥ पर स्वाधिक कौ
विकौ उक्ति ॥ २२ ॥ कवित ॥ सज्जननिके जो
हौं सरचैं तिनकौ इक वा विसदारौं नेव
है ॥ सील सुभाउ गहै सहजैं अनुराग स
मुद्र हियैं उपटै ॥ नेकु कवैं सुखवरौ कहरी
उन हूं[illegible] घटै ॥ चोलके रंग निचोल रंग्यौ
गुन कौ परै फट तैहूं फटै ॥ २२ ॥ दोहा
कनक कनकु तें सौगुनौं मादकता अ
धिकाइ ॥ वह षायें वौरातु है इहिं पायें वौ
राइ ॥ २३ ॥ टीका ॥ परंस्वाधिक कौ विकौ उक्ति
है ॥ २३ ॥ कवित ॥ कनकु धतूरो सोनौं दोऊ यक
हौ वत है सोने कौ धतूरे तैं प्रमाउ सरस

तुहे ॥ कहेकविहलन बाहि चाह तनको
ईषाहि निरषि निराषु जाई तरसतु है
सोनैमारू सो गुमौ धूतरैतै सरस मदुनो
हतो प्रतछ सबको ऊ दरसतु है ॥ वो हिज
व षाइत वबोराइ प्रकासे कौतु बावरो
तुरत याहि आई परसतु है ॥ ८३ ॥ दोहा ॥ इ
क भीजत चहलै परे बूडे बहे हजार कि
तेन औगुन जग करति वै नैचढ ती वार
८४ ॥ टीका ॥ यह परस्ताविक कवि की उ
क्ति अन्योक्ति … वि ॥ ८४ ॥ कवित ॥ एक
पूरते ऊसे चहले इक नी भिरहे इक बूडि
गये है ॥ एक बहे तिनकी न लही सुधि ए
क निधार न छाडि दिये है ॥ बारि दइ पहि
ली भयजाइ बिलो कि किते नय पीतन
ये है ॥ वे सनदी चढती व रियां जग औगु
न वैने कितेक नये है ॥ ८४ ॥ दोहा ॥ सुष
सो वतो सव … सा मनु सो ये इक सा पा
म कामे लिग है सु छिनु हाथ न छोडे ऊ
हाथ ॥ ८५ ॥ टीका ॥ यह प्रस्ताविक कवि कै
उक्ति नाइका भेद मै परकीया को हाथ पर
स की सुष मान्यो ताही सो रात्रि वैसे ही बी

तीसबै सषीसों कहातिहै ॥ ९५ ॥ कवि
रं तिमितीतन भई मिगरी अति चाइ धै बैचि
तपेमुष हूटै ॥ होउन के मोद मोद वटे
अमिलाषन के इंद्रवधन षूटै ॥ सोयम
नोंमिलिकै इक साथ हीयै विझुमावि
हियै मुषलूटै ॥ मूकामें मेलिदई इकबो
रसुहाथतें हाथकिनोंन रहि छूटै ॥ ९५ ॥ सोहा
जोंन जुगतिपियमिलन की धूर मुक्रीति
मुहदीन ॥ जोलहियै सो मजन तो धर
कनरक हूकोन ॥ ९६ ॥ टीका ॥ परस्त्रीविके
अनुरागीको वचन ॥ ९६ ॥ कवि ॥ देव हैऔर
नीको जहां मिलिवो है ताकी माति यहैम
तुठीक मेरेजीको अवदातुहै ॥ पायोजी
मुकत नपद हरसौ न प्रेमप्यारी सर
सौ अधिक दुषदेष्योन सहातुहै ॥ कहतु
वंमे नक्यों हूं जातनांअनेकभांतिभांति
नुकौं त्रासु अधिकातुहै ॥ रविवोवैने जोम
नभांवनसोंमिलितौपैनरकनिवास हू
तौ मनन सकातुहै ॥ ९६ ॥ दोहा ॥ गठस्वना
वस्नीअलकाचितबनि मोहकमांन ॥ श्रा

धुवेकाई ही वढे तेता तितुरंग गय तं व ॥ ६७
टीका यह परस्नाविक काविकी उक्ति ॥ ६७
कवित ॥ गटकौ व नाउवा कौ होइ तौ घ
डाइ पावे ग्रंथनि मैं बात यह वरनी प्रस
न की ॥ सुधि काई दोषिये निकाई कौ व
काई ही तैं पलक चितौनि भौंह वरुनी
कमान की ॥ कहे कवि लस रीति जानंत
प्रवीन त्यौं ही तरुनी कौ तुका कौ तुरंगम
कौतान की ॥ वांके ही तें पालकाके वास
कौ वहन मोल वाकी रज हुती लहे कीर
ति कपान की ॥ ६७ ॥ दोहा वसे बुराई जासु
तन ताही को सनमान ॥ भलौ भलौ करि
छोडिये षोटे ग्रह जप दांन ॥ ६८ ॥ टीका प
रस्नाविक कवि की उक्ति ॥ ६८ ॥ कवित ॥ जा
तन मांझ बुराई वसे कछु सो जेमें सन
मान हि पावे ॥ वाही को जो मैं सदेउ मान तें
दें षोउवा मैं सब छप भावे ॥ जो तिगा जो य
ह भाषे भलो तो भले ही भलें कहिके वह
रावे ॥ जो पैवहे ग्रह षोटो तु नैन दशा तु के
ग्रह जाप करावे ॥ ६८ ॥ दोहा पुनि तिर्हि
गुन गुन वढत मात मोह कौ सोतु ॥ जा तु १६७

कहिनके अतिमदिरा रवनी मन नवनीतु
त्य॥ ही ॥ यहपर स्वाविकक कविकी उक्ति नायु
का नेरमें सषीको बचन नायककी सषी सों
कि नायकके आगु नेते नाइकाको मनक
ठिन होतहै॥ ८८ ॥ कबित॥ सेमे पति आय
नहीं बढतु है मानुजैसे ईतु गुन सरको सी
तसर सातुहे॥ मानके नये तें तिय मनु क
ठिनातु ऐसो हीसीतके नयेते नवनीतु क
ठिनातु है॥ दोऊ नु मैंन दोऊ अतिमदुहैम
भउत अपार मानिप्रेहतिको मातुहर
सातुहै॥ कहै कविहल स्यरीति जानतसब
नेयहै विनयतताई तें तुरत सबघिलातु
है॥ ८८ ॥ दोहा॥ कहतयहै श्रुतिसुमतिस्म
वेपुराहलनलोग॥ तीनदवावे नीचके पा
तकसंजारोग॥ ७०० ॥ टीका॥ यहपर स्वाभि
ककविकी उक्ति॥ ७०० ॥ कवित॥ कहै यहै
श्रुतिओ रसकलपुरानैं लोगसुमति पु
राने निमैं सुनैंई हेतहै॥ कहै कविहलस्य
हजगत विदितिवात सबनतसकलनी
सुमतिनिकेतहै॥ रिपु राजा रोगअरु पा
तकु रहनए तो एकेवानिगहै ऐसें बाधेनै

मनमें है ॥ जहां देषै बलु तहां करै न भ्रम
॥ जहां देषै न बल काई गल हां ई उपदेत है॥
७०० ॥ दोहा ॥ श्रोछे बडे नु कैसकै लगो मत रे
कै गैन ॥ दीरघ होहि न नैक हूं फारि निहारो
नैन ॥ ७०१ ॥ टीका ॥ यह परस्ताविक कविकी
उक्ति ॥ १ ॥ कवित ॥ जैसें गदीसर चौ जिहि भाइ
वैते सिई दासें घटैं न चबैनी ॥ श्रीक हियें धी
मंद गहो गति पेव गहे सकोमोल नहै ना ॥
श्रोछे सो कैसें हूं होत बडे न बेकाइ श्रवा
ई सौं कि गिगे ना ॥ [illegible] निहारो कि [illegible] करि
हारो पूं दारघ होहि न कैसें हूं नैना ॥ ७०१ ॥
दोहा ॥ मैं मिस हीसो योस मझि मुह चुम्यो रि
गजाइ ॥ हसी षिसानी गलु गहो रहे गरे
लपटाइ ॥ ७०२ ॥ टीका ॥ यह परस्ताविक ना
इका को वचन सषी सौं ॥ ७०२ ॥ कवित ॥ कुं
वर कं न्हाई सुषदाई चतुराई करि पौ
ढ्यो मिसु करि ठौरि सखी बनाइ कैं ॥ हित ग्र
पि काई की उमंग बढि आई जिय मैं तो सी
यो जानि मुह चुम्यो ढिग जाइ कैं ॥ आनं सु
मेंठारि तनु रंच कउघारि नैन भाइ दीना बा
हगरै उहि मुसिकाइ कैं ॥ कहा कहो आलं
ही तो हसि हूं षिसाई तव श्रोर न उपाई रही

गरेलिपटाइकैं॥७०१॥ दोहा॥ नयेविसायेये
लखिनयेंदुर्जनतु महसुभाइ॥ आंटपासें
नतुहरतकांटेलोगाइपाइ॥७०२॥ सोरठा॥ यु
हस्वाभाविकनाइकाकौवचन सषीसों
धर्मनारकुअधीरानाइकाराजनीतिके
प्रसंगामेसंभवै॥७०३॥ कवित॥ ऊपरतादि
खियतअधिकभलोईनरेअंतरकेदुसह
वुराईकिनिकेतहे॥ कहैकविहलधवकृव
तनवनाइकहेदासपरजैसेवनेतैसेइ
धरितुपे॥ देषतहैमघतकमानतलियधी
नयेमलतनकोहूंजेविचारमैसदेषे
कांटेकौसीरीतिदुरजनकेसुभाइकौअ
टेपरैपाइनकूंलागिपानेलेतहै॥७०४॥
दोहा॥ तंत्रीनादकवितरससरसमगराति
रंग॥ अनबूडेबूडेतरेजेबूडेसवअंग॥७०५
टीका॥ यहपरस्वाभाविककविकीउक्ति॥७०६
कवित॥ तंत्रीकीमधुरधुनितालकेविवि
धिभेदरागजामेसुरलषोविविधितरंगहे
बहेनविलासचतुराईकेप्रकासबाहके
वितासुदेसलहैरसकौउमंगहै॥ वागके
वहारनवनागरीसौंहिलिमिलिवहिर

तिय वीरत सुरत प्रसंग है॥ जातें बूडे
अन बूडे ऐसें भ्रम में इन बातनु में तरे ते
जे ई इत बूडे सब अंग अंग है॥ ७०४॥ दोहा॥ सबे
हंसत करतार दे नागरता के नाउ। गयो
गरब गुन रूप को वसे [illegible] बेरे गाउ॥ ७०५॥ टी
यह अन्योक्ति पर स्ताविक है में संभवे क
विकी उक्ति॥ ७०५॥ कवित्त॥ कोस मुकेरसरी
ति के में दहि कौन सुनें नृपनीति उ[illegible]पा
न कौं न करे च स्वाज ही म[illegible]ठ ताके हि
त सौ मन धारे॥ नागरताई कौ नाम सबै [illegible] सव
दै करतारी हंसे किलकारें॥ हरि गुन गानन ग
यो गुन रूप कौ वा सुभ यौ अव गाउ कुगवा
रे॥ ७०५॥ दोहा॥ उस हदु राज प्रजानु कौं की
न वटै दुषदंदु॥ अधिक अंधेरो जग करत
मिलि मावस रवि चंदु॥ ७०६॥ टीका॥ यह पर
स्ताविक कविकी उक्ति॥ ७०६॥ कवित्त॥ [illegible]
र जाई सुनें प्रभु दे तमोगुन कौं वक्र
ति बढावत॥ दोउ महाउ दुषदंदु प्रजान कौ
और सबै सुभ का[illegible] वकावत॥ दूलह कै
दिननाथ निसाकर एक ही मंडल मैं ज
व आवत॥ दीपो प्रतछ अमावस कौ अंधि
यारी कि तौ जग मैं सरसावत॥ ७०६॥ छ्

दोहा ॥ होय विनकु सब कवितु के चौरन को
मूल तिरनाइ ॥ आगर करी तिनकु लोक क
कवित भजि नव कृपा २ ॥ २ ॥ सो कविता है
भांति है आर पुरो सपजो मै ॥ आर पद र
अरु सु [illegible] नु हृत [illegible] कृत वो रुप मो [illegible]
मेरु पक विलास तिविधि है कविक रहि व
षानि ॥ प्रथम [illegible] नी वक्र करि प्रोक्त त
म आजानि ॥ ३ ॥ हि समेद तैं होम सो भ भाव
कृत प्रकार ॥ बरनैं तहैं तिन सब बनि मैं ला
ग [illegible] सम सार ॥ ४ ॥ जे भाषा भाष
ले सुर [illegible] नी सम तूल ॥ तो हि विष [illegible] क
ल कवि जानि महा रसमूल ॥ ५ ॥ ब्रज [illegible]
बरनी कवितु वक्रतु छवि [illegible] विलास ॥ स
व कै भूषन सतसै करी बिहारी दास ॥ ६ ॥
जो कोउ रसरीति को समुझो चाहे सार ॥ प
ढै बिहारी सतसै कविता को सिंगार ॥ ७ ॥ उ
[illegible] अस्त लौं अबनि [illegible] तकै याकी चाह
सुनत बिहारी सतसै सबही के रसराह
८ ॥ [illegible] ति भांति [illegible] अरु [illegible] वक्रपा मैं गूढ अ
र्थ ॥ जा हि सुनै रस [illegible] तिको मगु समुझत
अति महा ॥ ९ ॥ विविध नाइका भेद अरु
अलंकार नवनीति ॥ पढै बिहारी सतसय

बि·स
१५०

जा[illegible]के कवि सवरी ति ॥ १० ॥ रघुबंसी राजा प
[illegible]टपुह मि धर्म अवतार ॥ विक्रम[illegible] थिज
यसा हिरिपु डंडु विहंडन हार ॥ ११ ॥ सुकवि
विहारीदास सै जिनकी [illegible] निपात ॥ बकु
[illegible]त सुनमौ नुकरि [illegible] ल [illegible] अपार
१२ ॥ राना श्री जयसिंघ के प्रगटे तेज समा
जु [illegible] मसिंघ गुन रा[illegible] नन्द पतिगो[illegible]
निवाजु ॥ १३ ॥ छतसिंघ तिनके भये [illegible]
सिराजकुमार ॥ बि[illegible] सिंघ तिनके [illegible] वेस
[illegible] अवतार ॥ १४ ॥ महाराज [illegible]
कु[illegible] धुरंधर [illegible] ॥ प्रग[illegible] भयो [illegible] माहि
नृप सुमति सवाई बीर ॥ १५ ॥ प्रगट सवाई
नृपके मंत्री भे [illegible] सुघ माह ॥ सागरु गुन
सतसी लकौ [illegible] कप [illegible] दीन ॥ १६ ॥ सा
थामलु [illegible] तप जग सोहतु जसु ताहि
राजा कीनौ करि कृपा महाराज जय साहि
१७ ॥ मनक्रम बच [illegible] चौ भगलु हरि [illegible]
कौदासु ॥ देवबचे [illegible] धर्म कौ जाकै दृढ
विश्वास ॥ १८ ॥ छ [illegible] कुलाछि [illegible] तिपे [illegible] बै
री जग विष्यात ॥ परकुप बैरी षंडनौ [illegible]
गुनक स्रवदात ॥ १९ ॥ लालदास अतिलालि
त गुन प्रगट भये तिहि बंस ॥ रामचंद तिन १५

मैं नयै [illegible] कौ जत अवतंस ॥२०॥ [illegible]
जतिन [illegible] कै मयो जिन कौ जस अवदात ॥ २
पुनि ताव [illegible] मनि तप [illegible] तिन [illegible] त्तात ॥२१
ति [illegible] क [illegible] तो [illegible] स्तु मा [illegible] क्रम बुद्धि पिये
न ॥ २ [illegible] बांभन पाइ कै नितु आनंदा [illegible]
मान ॥ २२ ॥ राजा [illegible] थी महा नगर [illegible]
सुसिवदास ॥ ला [illegible] राइ [illegible] दास जन [illegible]
न [illegible] रूपि प्रकास ॥ २३ ॥ लीला तनु [illegible] के सो
र कौ सकौ होइ निकेतु ॥ राजा आया मन [illegible]
कौ [illegible] कवितासो है [illegible] ॥ मायुर [illegible]
[illegible] की र कुल [illegible] बिन [illegible]
कहे सब कवि [illegible] की वस [illegible] मधुपुरी [illegible]
२४ ॥ राजा मल कवि [illegible]
के दार ॥ भांति भांति विपदा हरी दीन [illegible]
रिझवार ॥ २६ ॥ [illegible] कवि सो न पु
नि [illegible] कही कौ जात ॥ [illegible] हा प्रति करी
[illegible] तनु बुद्धि अवदा [illegible] २७ ॥ पहले हूं मैं
यह हिय मैं कसो विचार करौ न [illegible] कौ नेद
कौ [illegible] बुद्धि [illegible] २८ ॥ जि कीमैं हर
[illegible] नु सरस ग्रंथ सुध दाइ ॥ तिन हि घ्रा
उमेरै कवित को पढि है मनु लाइ ॥ २९ ॥ जो
नियहै अपने मनै हिये कियो नग्र थ प्रका

स॥ [illegible] को प्राइ सुपाइकै हि[illegible]यो॥६॥
[illegible]स॥३०॥ करे षात से [illegible]हरा सुक[illegible]बिहा
रीदास॥ सब को [illegible]न को पै [illegible]नि गु
वित [illegible]॥ छ॥ व[illegible] भरो [illegible] जो [illegible] गा हि[illegible]
[illegible]य॥ वा ते इन दो [illegible] नु संग [illegible] नि कवि
त [illegible]इ॥ [illegible]॥ अति [illegible] के दोहा नु की पू
रजो [illegible]बीन॥ करे [illegible] कवित मै [illegible]
[illegible]क [illegible] प्रवीन॥ ३१॥ मैं अति ही दी [illegible]री
[illegible] कि कुल सब लघु पाइ॥ भूल चूक कछु
हो [illegible]जो [illegible] कि [illegible]ना इ॥ ३२॥ संवत
स[illegible] आगरे [illegible]बरस १८०२ रविवार
[illegible]सम पद्दिनी [illegible]नु [illegible] कवित सकल
र[illegible]सार॥ ३[illegible]॥ इति श्री बिहारी सतसही
कवित सहित सं[illegible]। ॥ ॥